# हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्दों का भाषातात्त्विक अध्ययन

डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया

हिन्दुस्तानी एकेडेमी
इलाहाबाद

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी,
इलाहाबाद

●

प्रथम संस्करण : १९६७
मूल्य : सोलह रुपया



●

मुद्रक
प्रकाश प्रिंटिंग वर्क्स,
३३, दिलकुशा, नया कटरा,
इलाहाबाद

श्रद्धेय डॉक्टर सुमित्र मंगेश कत्रे
की सेवा में
समर्पित

# प्राक्कथन

किसी भी भाषा के शब्द भण्डार तथा उसकी ग्राहिका-शक्ति की समीक्षा के लिए आगत शब्दों के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाषा-तात्त्विक दृष्टि से यह पता लगा लेना उपयोगी होता है कि कितने विदेशी शब्द किसी भाषा के विकास-क्रम के साथ गृहीत हुए हैं। काल के प्रवाह के साथ हिन्दी में तुर्की-अरबी-फ़ारसी तथा पुर्तगाली-फ्रांसीसी-अँग्रेजी के बहुतेरे शब्द गृहीत हुए हैं। अरबी-फ़ारसी की शब्दावली पर तो पहले कुछ कार्य हो चुका था, पर अँग्रेजी की शब्दावली पर डॉ० धीरेन्द्र वर्मा के निबन्ध के अतिरिक्त और कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ था। अतएव जब मैंने क० मुं० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ के संचालक का पद-भार सँभाला तो इस दिशा में कार्य करने के लिए विद्यापीठ के तत्कालीन अनुसंधान-सहायक श्री कैलाशचन्द्र भाटिया को प्रेरित किया। बड़ी लगन और परिश्रम से वे इस कार्य में जुट गये। भाषा-विज्ञान में भाटिया जी की सहज रुचि है। समय-समय पर वे मुझसे इस विषय में परामर्श लेते रहे और थोड़े ही समय में उन्होंने बड़े मनोयोग से मेरे निरीक्षण में सफलता के साथ इस कार्य को सम्पन्न किया।

आज मुझे भाटिया जी के 'हिन्दी में अंग्रेजी आगत शब्दों का भाषा-तात्त्विक अध्ययन' नामक इस शोधप्रबन्ध को प्रकाशित होते देखकर गौरव तथा प्रसन्नता का एक साथ अनुभव हो रहा है। इसके कई कारण हैं। इस प्रकार का अध्ययन हिन्दी में ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं में संभवतः पहला है। इस विषय के सम्बन्ध में सभी उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करके तथा अनेक विदेशी और भारतीय भाषा-वैज्ञानिकों से विचार-विमर्श करके भाटिया जी ने इस शोध-प्रबन्ध के तथ्यों का प्रतिपादन किया है। पूना के ग्रीष्म तथा शरत्कालीन अनेक सत्रों में वे सम्मिलित हुए। इन सम्पर्कों से उनके अध्ययन में विशेष परिपक्वता आ गई है। यह अध्ययन उस समय किया गया था, जब भारतीय भाषाओं में वर्णनात्मक भाषा-विज्ञान का सूत्रपात ही हुआ था। इसके प्रणयन में व्यावहारिक शैली को ही प्रधानता दी गई है। मुद्रण में अनेक प्रकार की बाधाओं के कारण यह इतने विलम्ब से प्रकाशित हो रहा है। यदि यह प्रबन्ध अब लिखा जाता तो विद्वान् लेखक के द्वारा संभवतः कुछ भिन्न शैली में प्रस्तुत किया जाता।

इस अध्ययन को पूरा करने से पूर्व लेखक ने काफ़ी बड़ी संख्या में साहित्य तथा बोलचाल की भाषा से आगत शब्दावली को इकट्ठा कर लिया था। उस सामग्री का विश्लेषण कर इस अध्ययन को वर्णनात्मक, विवेचनात्मक तथा साथ ही तुलनात्मक पद्धति में प्रस्तुत किया गया है। दूसरे प्रकार से इस शोध-ग्रन्थ में अँग्रेजी तथा हिन्दी की ध्वनि-प्रक्रिया के तुलनात्मक अध्ययन के विषय का भी समावेश हो गया है। खासकर अँग्रेजी-वर्णन्यास (स्पेलिङ्ग) पर किया गया कार्य स्वतः मौलिक है। अँग्रेजी शब्दावली लगभग समान रूप से सभी भारतीय भाषाओं में गृहीत हुई है। इस दिशा में विस्तृत कार्य की आवश्यकता है, जिसका सूत्रपात लेखक ने इस शोध-ग्रन्थ में कर दिया है। शब्दावली का कितना भाग अधिक घुल-मिल गया है, इसका आधार आवृत्ति है। लेखक ने इस पर भी विचार किया है। इसके द्वारा भविष्य में केवल आवृत्ति के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत करने की ओर शोधार्थियों का ध्यान आकर्षित होगा।

आज के पठन-पाठन तथा शासन-सूत्र में अँग्रेजी की अत्यधिक प्रधानता है। अतएव इस अध्ययन की उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। २०-२५ वर्ष बाद पुनः इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता पड़ सकती है, जब अँग्रेजी से आगत शब्दों के अनुपात में अपूर्व घट-बढ़ हो सकती है।

अन्त में मैं इस ग्रन्थ के प्रकाशन के उपलक्ष्य में हिन्दुस्तानी एकेडेमी के अधिकारियों को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने टाइप तथा मुद्रण की अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी इसको प्रकाशित किया है। मुझे आज इसलिए विशेष प्रसन्नता हो रही है कि यह विद्यापीठ के प्रथम दीक्षान्त-समारोह (सन् १९५८ ई०) का पहला तथा अकेला शोध-ग्रन्थ है। इस सफल तथा बहुमूल्य कृति के लिए मैं अपने सुयोग्य शिष्य डॉ० भाटिया को पुनः बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि विद्वत्-समाज में उनके इस पाण्डित्यपूर्ण प्रयास का समुचित स्वागत होगा।

**डॉ० विश्वनाथ प्रसाद**
एम० ए०, पी-एच० डी० (लन्दन)
अध्यक्ष
वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग,
शिक्षा-मंत्रालय, भारत-सरकार
भूतपूर्व संचालक,
क०मुं० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ,
आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

# प्रस्तावना

भाषा की समृद्धि में अन्य स्रोतों के साथ आगत शब्दों का अपना निजी महत्त्व है और भाषा-तात्त्विक दृष्टि से यह देख लेना आवश्यक है कि भाषा के प्रवाह के साथ कितने विदेशी शब्द गृहीत हुए हैं। इसी दृष्टि से डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने एक खोजपूर्ण लेख 'हिन्दी में अँग्रेजी शब्द' सन् १९३२ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय स्टडीज़, भाग ८, के लिए लिखा था। इस विवेचन से प्रेरणा प्राप्त कर मेरी भी इच्छा हुई कि क्यों न इस दिशा में कार्य किया जाय। 'हिन्दी में फ़ारसी और अरबी के शब्दों पर तो विचार-विमर्श हुआ है, किन्तु अँग्रेजी शब्दों की ओर अधिक व्यक्तियों का ध्यान नहीं गया था, जबकि अँग्रेजी शिक्षा के बहते हुए प्रवाह के फलस्वरूप अँग्रेजी शब्दों का आगम अधिकाधिक बढ़ता ही जा रहा है। इस विषय पर अब तक केवल कुछ महानुभावों ने ही ध्यान दिया, इनमें उल्लेखनीय हैं श्री सत्यप्रकाश का एक लेख जो सन् १९३८ में 'सुधा' में 'इंग्लिस्तानी या खिचड़ी बोली' शीर्षक से प्रकाशित हुआ, दूसरा कार्य डॉ० विश्वनाथ मिश्र का सन् १९५० में प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रस्तुत 'हिन्दी भाषा और साहित्य पर अँग्रेजी प्रभाव' शीर्षक शोध-प्रबन्ध और तीसरा प० अ० बारान्निकोव का 'हिन्दी शब्दावली में अँग्रेजी से आए शब्दों का स्थान' शीर्षक शोध-निबन्ध जो नागरी प्रचारिणी सभा पत्रिका के चन्द्रबली पांडेय स्मृति-अंक में प्रकाशित हुआ। अँग्रेजी के आगत शब्दों का भाषा-तात्त्विक विवेचन अब तक नहीं हुआ था, इस अभाव की पूर्ति की ओर यह एक लघु प्रयासमात्र है।

कालान्तर में जब हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ में प्रवेश लिया तो विद्यापीठ के तत्कालीन संचालक श्रद्धेय डॉ० विश्वनाथप्रसाद तथा ध्वनि-विज्ञान के प्रो० गोलोकबिहारी धल से इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन मिला। प्रो० धल से ध्वनि-विज्ञान और विशेष कर अँग्रेजी ध्वनियों का

अध्ययन किया तो अँग्रेजी शब्द अपने मूल रूप से बहुत दूर दिखाई देने लगे, जिसका परिणाम यह हुआ कि राह चलते हुए बस-स्टैंड व रेलवे-स्टेशन तथा बाजारों और दुकानों पर लगे साइनबोर्डों की ओर ध्यान गया और उनकी वर्तनी अटपटी लगने लगी। नेत्रों के साथ-साथ कान भी सावधान हो गये और प्लेटफ़ार्म, बस-स्टैंड, बैंक तथा पोस्ट-आफ़िस के काउण्टरों पर खड़े लोगों की भाषा के उच्चारण को सुनकर सामग्री संचित होने लगी। यही है इस अध्ययन की संक्षिप्त गाथा और पृष्ठभूमि।

शब्दों के संकलन के लिए जैसा मैं कह चुका हूँ, मैंने जनता द्वारा प्रयुक्त शब्दावली तथा आफ़िसों में क्लर्कों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली को सुनने और समझने का प्रयास किया। साथ ही लिखित साहित्य से भी शब्दों को छाँटने का क्रम चलता रहा। हिन्दी साहित्य के सभी अंगों के प्रतिनिधि साहित्य से शब्द छाँटे गये। शब्दों का 'वर्णनात्मक रूप' में अध्ययन प्रस्तुत करना ही ध्येय था, अतएव उनके ऐतिहासिक पक्ष पर अधिक बल नहीं दिया गया है, फिर भी कहीं-कहीं गुत्थियों को सुलझाने में अवश्य ऐतिहासिक पक्ष की सहायता ली गई है। इस दृष्टि से ऐतिहासिक अध्ययन भी विवरणात्मक अध्ययन का पूरक मात्र ही है।

पुस्तक साहित्य के साथ-साथ व्याख्यान तथा समाचारपत्रों से भी शब्दों को इकट्ठा किया गया। यह भी देखने का प्रयत्न किया गया कि हिन्दी के प्रतिष्ठित दैनिक पत्रों के सम्पादक अपने सम्पादकीय में कहाँ तक अँग्रेजी शब्दों से बच सके हैं? सतर्क रहते हुए भी सम्पादकीय में सामयिक शब्दों का आ जाना स्वाभाविक है। पत्रों के माध्यम से प्रतिदिन अनेक नवीन शब्द जन-मानस में प्रवाहित होते रहते हैं, जिनसे कम से कम आज के युग में बच सकना सम्भव नहीं है। शब्दों की संख्या की दृष्टि से इस अध्ययन को पूर्ण नहीं कहा जा सकता। यहाँ तो मेरा लक्ष्य केवल उन दिशाओं का निर्देश करना मात्र है जिनके माध्यम से अँग्रेजी शब्द गृहीत होते जा रहे हैं।

इस संक्रान्तिकाल में जबकि हिन्दी को अधिकाधिक रूप में क्रमशः अँग्रेजी का स्थान लेना है, यह अध्ययन और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। जो शब्द जनता के अन्तरंग में प्रविष्ट हो चुके है, उनके रूपों को तो हिन्दी से पृथक् करना कोई सरल कार्य नहीं है। इन आगत शब्दों को स्वयं हिन्दी ने अपने आँचल में ऐसा छिपा लिया है कि उनका पहचानना भी कठिन है और मूल रूप को ढूँढ़ना भी कठिन है, जैसे 'प्लास','गन्जी'। इससे भी विकट समस्या है,

उन शब्दों की खोज जो हिन्दी में लोक-निरुक्ति के आधार पर अपने रूप में आमूलचूल परिवर्तित हो गये हैं। राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द' के मतानुसार 'ब्रेकवान' हिन्दी में रेलवे वालों के द्वारा 'वृखभान' और 'सिगनल', 'सिकन्दर' बन गया था।

आगत शब्दों को हिन्दी में हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार चलना होगा और उन्हीं प्रवृत्तियों का विवरणात्मक दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करना ही इस शोध-प्रबन्ध का लक्ष्य है। निश्चित रूप से राजभाषा के रूप में विकसित हिन्दी में जहाँ एक ओर क्षेत्रीय भाषाओं से शब्द आयेंगे वहाँ सम्पूर्ण भारत में व्यवहृत फ़ारसी तथा अँग्रेजी शब्दों का भी अपना विशिष्ट स्थान रहेगा। इस वैज्ञानिक युग में, विशेष रूप से वैज्ञानिक शब्दावली के क्षेत्र में भारत को अँग्रेजी शब्दों से कब मुक्ति मिल सकेगी, यह एक विचारणीय प्रश्न है? अँग्रेजी विचारधारा से अधिक अँग्रेजी भाषा की शब्दावली भारतीय भाषाओं के रोम-रोम में पैठ चुकी है।

भारतीय भाषाओं में गृहीत अँग्रेजी शब्दों का तुलनात्मक अध्ययन इस दिशा में एक प्रयास है। अंग्रेजी शब्दों का एक बड़ा भाग नगरों तथा शिक्षित वर्ग तक ही सीमित है, पर शासन एवं अन्य माध्यमों से उसका एक भाग ग्रामीण जनता तक भी पहुँच गया है। 'टैम', 'टिकट', 'रेल', सिनेमा' आदि शब्द आज जनता के अपने हो चुके हैं, और अनेक कोशों में उन शब्दों के पर्यायवाची और पारिभाषिक शब्द गढ़ने पर भी अब उनका निकालना संभव नहीं। 'मनीआर्डर' के स्थान पर 'रूप्य-प्रेष्य' न चल सका और अब 'धनादेश' चलाने का प्रयत्न किया जा रहा है। 'तकनीकी शब्दावली' के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अभी तक सभी क्षेत्रों में अँग्रेजी के शब्द ही शत-प्रतिशत अधिकार जमाये हुए हैं। यह भी एक समस्या है कि इस विशाल शब्दावली को क्या 'आगत शब्दावली' मान लिया जाय? स्व० प्रधानमन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू तो इस पक्ष के ही समर्थक थे, दूसरी ओर अनेक कोशकारों, मान्य संस्थाओं एवं राजकीय शिक्षा-मन्त्रालय द्वारा इस दिशा में लाखों शब्द गढ़े जा चुके हैं, वे कहाँ तक चल सकेंगे, यह समय बतलायेगा। ऐसी शब्दावली को इस अध्ययन में प्रमुखता नहीं दी गई है। इस दिशा में अनेक गढ़े हुए शब्द गढ़े हुए ही रह जायेंगे।

हिन्दी की ग्रामीण बोलियों और उपभाषाओं में एक ही अँग्रेजी शब्द के कैसे रंग-बिरंगे रूप हो गये, इसका दिग्दर्शन कराने का प्रयत्न भी मैंने एक

परिशिष्ट में किया है। यह दिशा-निर्देशन मात्र ही कहा जायेगा, अन्यथा 'आगत शब्दावली' को निश्चित करने के लिए ग्रामीण जनता की शब्दावली को ही कसौटी मानकर अनुशीलन करना एक पृथक् महत्त्वपूर्ण विषय है।

अध्ययन के सम्बन्ध में भी दो शब्द निवेदन करना अप्रासंगिक न होगा। शब्दावली के सम्बन्ध में जहाँ पूर्णता का दावा करना संभव नहीं है, वहाँ दूसरी ओर यह निश्चय करना कभी-कभी असम्भव हो जाता है कि अमुक शब्द जनसाधारण की कोटि का है अथवा शिक्षित जनवर्ग में भी बोला जाता है। इस सम्बन्ध में कोई सीमा-रेखा खींचना संभव नहीं है। स्थान-स्थान पर इस प्रकार का विभाजन केवल सुविधा की दृष्टि से ही किया गया है, और उसमें पुनरावृत्ति की भी गुंजाइश है।

अँग्रेजी के शब्दों का प्रवेश निम्नलिखित कारणों से माना जा सकता है—१. शिक्षा (उच्च अँग्रेजी शिक्षा तथा माध्यम के रूप में), २. समाचार-पत्र, ३. ईसाइयों का प्रभाव, ४. राजकाज की भाषा, ५. रेडियो, सिनेमादि के माध्यम से ६. अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व तथा ७. व्यापारिक भाषा के रूप में अँग्रेजी का बढ़ता हुआ प्रभाव।

शब्दों के उच्चारण के सम्बन्ध में यह बता देना भी आवश्यक है कि हिन्दी-क्षेत्र की विशालता के कारण उच्चारण की एकरूपता आज हिन्दी की भी एक समस्या बन गई है, फिर भी सामान्यत: हिन्दी के उच्चारण मेरे अपने निजी हैं (पश्चिमी हिन्दी के रूप में) और अँग्रेजी के सभी उच्चारण अँग्रेजी के परिनिष्ठित रूप (डेनियल जोन्स) से लिये गये हैं। हिन्दी तथा अँग्रेजी ध्वनियों के विवरण के लिए मैं अधिकतर क्रमश: डॉ० धीरेन्द्र वर्मा और डेनियल जोन्स पर अवलम्बित रहा हूँ, दोनों महानुभावों के प्रति में हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ।

वाक्य-विचार तथा शब्दानुवाद पर अँग्रेजी के प्रभाव का प्रस्तुत प्रबन्ध से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है, फिर भी इस दिशा में प्रवृत्तिगत विशेषताओं का विश्लेषण करने की चेष्टा की गई है।

अध्ययन अपने में कहाँ तक पूर्ण हो सका है, इसका निश्चय तो विद्वान् तथा सहृदय पाठक ही कर सकेंगे, फिर भी इतना स्वीकार करते हुए मुझे सन्तोष होता है कि हिन्दी के व्यंजन-गुच्छ, आक्षरिक स्वरूप, बलाघात, सुर आदि विवादास्पद तथा सर्वथा अछूते विषयों पर मैंने यथाशक्ति प्रकाश डालने की चेष्टा की है।

आक्षरिक स्वरूप के विवेचन की दिशा में तो थीसिस के प्रस्तुत करने के समय तक कोई संतोषजनक कार्य नहीं हुआ था और फिर भाषाविद् अक्षर-विभाजन में एकमत भी नहीं है। ऐसी स्थिति में हिन्दी में यह मेरा प्रयास मात्र है। इस दिशा में ही आगे लेखक ने विस्तृत अनुसन्धान किया जो डी० लिट्० की उपाधि के लिए स्वीकृत हो चुका है।

'शब्दों की आवृत्ति' एक पृथक् विषय है। इस दिशा में भी कुछ आँकड़े जानने की मुझे जिज्ञासा हुई और प्रेमचन्द-साहित्य को मैंने अपने इस अध्ययन का आधार चुना। प्रेमचन्द की भाषा में अधिकतर जन-शब्दावली के ही दर्शन होते हैं, जिससे कम-से-कम यह ज्ञात हो सकता है कि किस प्रकार की शब्दावली जनता अधिक अपनाती है और कौन से शब्द अधिकतम आवृत्ति में प्रयुक्त हुए हैं। गत १५० वर्षों के सतत प्रयत्नों के फलस्वरूप आज अँग्रेजी भाषाभाषी केवल एक प्रतिशत के लगभग हैं, इस तथ्य को भी ध्यान में रखना होगा।

स्थान-स्थान पर नवीन पारिभाषिक शब्दावली भी मुझे गढ़नी पड़ी है, शब्द अभी नये हैं अतएव कुछ अटपटे लगें, तो कोई आश्चर्य नहीं। इस सम्बन्ध में मुझे डॉ० प्रसाद द्वारा सम्पादित कोश से पर्याप्त सहायता मिली है। नागरी में नवीन ध्वनि-चिह्नों को भी बनाना पड़ा है। अधिकांशतः ये चिह्न देहरादून में हुई भारतीय हिन्दी परिषद् की समिति द्वारा स्वीकृत हैं, कुछ प्रेस की सुविधानुसार नये भी हैं। स्थान-स्थान पर स्पष्टता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि-चिह्नों को भी रखा गया है, जिनमें कहीं-कहीं प्रेस की सुविधानुसार अदल-बदल भी है और अमेरिकन प्रणाली का मिश्रण भी। अनेक ध्वनि-चिह्नों के नवीन टाइप ढलवाने पड़े हैं, फिर भी कुछ स्थलों पर प्रेस को मुद्रण में विशेष असुविधा रही।

शोध-ग्रन्थ के अनेक अंश विविध शोधपत्रों में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रकाशित सामग्री पर प्राप्त सुझावों से मैं लाभान्वित हुआ हूँ।

विषय के तात्त्विक अध्ययन के लिए मैं कई बार 'दकन कालेज पूना' द्वारा संचालित लिंग्विस्टिक स्कूलों में गया। समर स्कूल १९५६ के परीक्षाफल के आधार पर ही मुझे दकन कॉलेज की फ़ेलोशिप प्रदान की गई जिससे उत्साहित होकर इस कार्य म जुट गया। दकन कालेज के डाइरेक्टर डॉ० सुमित्र मंगेश कत्रे की महती कृपा से मुझे पुनः शरत्कालीन स्कूल तथा विचार-गोष्ठी में

आमन्त्रित किया गया। इन दोनों स्कूलों में सर्वश्री डॉ० फेयर बैंक्स, डॉ० विलियम ब्राइट, डॉ० उदयनारायण तिवारी, डॉ० लुई लेविन, प्रो० ग्लीसन, डॉ० मसूद हुसैन खाँ ने अमूल्य सुझाव दिये। इस समय ही सुप्रसिद्ध भाषाविद् डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या से भी इस विषय पर विस्तृत चर्चा हुई। उनके बहुमूल्य सुझावों से दिशा-निर्देश ही नहीं मिला वरन् बल भी प्राप्त हुआ। समर स्कूल १९५७ में श्रद्धेय डॉ० धीरेन्द्र वर्मा तथा डॉ० बाबूराम सक्सेना ने मेरे सम्पूर्ण कार्य को देखकर आवश्यक सुझावों के साथ प्रोत्साहित किया।

डॉ० हरदेव बाहरी ने 'अर्थ-परिवर्त्तन' से सम्बन्धित सामग्री पर ठोस सुझाव दिये। सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा ने मेरे पूर्व प्रकाशित निबन्ध अँग्रेजी 'ट' और 'ड' पर अपनी सम्मति भेजकर मेरे उत्साह को द्विगुणित कर दिया। अन्नामलाई विश्वविद्यालय में सन् १९५७ ई० के सेमीनार में लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् डॉ० पी० बी० पण्डित तथा डा० घाटगे से भी लाभान्वित हुआ। आगत शब्दों की ध्वनि-प्रक्रिया विषयक सेमीनार में भाग लेने वाले सदस्यों के सुझावों के प्रति भी मैं विशेष आभारी हूँ। विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन का अध्याय वस्तुतः इसी सेमीनार के फलस्वरूप पूरा हुआ।

उच्चस्तरीय शिक्षा-व्यवस्था के लिए अपने ढङ्ग की अपूर्व संस्था क० मुं० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ के संचालक और अब 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' के अध्यक्ष श्रद्धेय डॉ० विश्वनाथ प्रसाद ने समय-समय पर मेरे प्रबन्धांश को पढ़कर समुचित परामर्श देकर 'भारतीय साहित्य' में प्रकाशनार्थ स्तर तक लाने के लिए उत्साहित किया। प्रो० गोलोकबिहारी धल के प्रति किन शब्दों में कृतज्ञता प्रदर्शित करूँ जो मेरे निर्देशक ही नहीं, पथ-प्रदर्शक भी रहे। श्रद्धेय डॉ० सत्येन्द्र ने प्रत्येक संकट के समय में धैर्य बँधाया। अपने जीवन के प्रारम्भ से ही मैंने उन्हें अभिभावक के रूप में पाया है। अनेक स्थलों पर जटिल समस्याओं को सुलझाने में डॉ० रामविलास शर्मा से सहायता मिली है।

अन्त में अपने सभी मित्रों एवं सहयोगियों के प्रति भी आभार प्रदर्शित करना चाहता हूँ। डॉ० मुरारीलाल उप्रेतिः, डॉ० रमेशचन्द्र मेहरोत्रा तथा डॉ० देवीशंकर द्विवेदी ने थीसिस को अन्तिम रूप देने में पर्याप्त सहायता दी। डॉ० ब्रजवासी लाल श्रीवास्तव, डॉ० उमापतिराय चन्देल तथा श्री उदयशंकर शास्त्री ने जिस सद्भाव के साथ सहायता कर मेरी समस्याओं का

समाधान किया है, वह चिरस्मरणीय रहेगा। हिन्दी की बोलियों में प्राप्त अँग्रेजी शब्दों के रूपों को भी मैं अपने अन्य मित्रों—डॉ० चन्द्रभान रावत, डॉ० अमरबहादुर सिंह तथा श्री द्वारिकेश के सहयोग से ही प्राप्त कर सका। हिन्दी विद्यापीठ के अधिकारियों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अनुसन्धान-सहायक-वृत्ति प्रदान कर मुझे यह प्रबन्ध प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। उन पत्र-पत्रिकाओं के लेखकों तथा सम्पादकों के प्रति जिनसे मैंने विभिन्न रूपों में सहायता ली है, अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। यदि इस शोधग्रन्थ को अपनी सहधर्मिणी श्रीमती हर्षनन्दिनी के त्याग और तपस्या का मूर्त्त रूप कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी।

अन्त में थीसिस के प्रकाशन के सम्बन्ध में भी दो शब्द आवश्यक प्रतीत होते हैं। सर्वप्रथम अनन्य साथी डॉ० भोलानाथ तिवारी ने मुझे प्रेरित किया कि इस शोध-प्रबन्ध का प्रकाशन एकेडेमी से करवाया जाय। विभागीय अध्यक्ष डॉ० हरवंश लाल शर्मा भी इसके शीघ्र प्रकाशन के लिए बल देते रहे। डॉक्टर साहब ने अनेक बार मुझे इलाहाबाद जाने की सुविधा प्रदान की। हिन्दुस्तानी एकेडेमी के अधिकारियों के प्रति भी मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ—विशेष रूप से डा० सत्यव्रत सिन्हा तथा प्रकाशन-अधिकारी श्री शिवचन्द्र ओझा के प्रति जिन्होंने ब्लाक और टाइपादि की अनेक असुविधाओं के होते हुए भी किसी प्रकार विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त कर इसको प्रेस से आखिर मुद्रित करवा ही दिया। एकेडेमी के अध्यक्ष श्री बालकृष्ण राव तथा सचिव प्रो० उमाशंकर शुक्ल की महती कृपा का ही यह परिणाम है। अशुद्धियों से बचने की चेष्टा तो की गई है पर इतने अधिक तकनीकी विषय को अशुद्धियों से बचाना, जबकि लेखक प्रेस से बहुत दूर हो, संभव न हो सका, जिसके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। अन्त में इस प्रार्थना के साथ मैं यह शोध-ग्रन्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ कि विद्वत्-जन अपने बहुमूल्य सुझावों से मुझे लाभान्वित करेंगे।

नन्दन,
मैरिसरोड, अलीगढ़
नवम्बर १९६७

कैलाशचन्द्र भाटिया

# विषय-सूची

## अध्याय १

### भूमिका



## अध्याय २

### हिन्दी में अँग्रेजी के आगत शब्द

## अध्याय ३

### अँग्रेजी और हिन्दी की ध्वनियाँ तथा अँग्रेजी की ध्वनियों के हिन्दी में विभिन्न रूप

## अध्याय ४

### ध्वनि-प्रक्रिया, आवृत्ति तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अँग्रेजी के आगत शब्दों का तुलनात्मक विवेचन



## अध्याय ५

### रूप-विचार

**अध्याय ६**

अँग्रेजी के आगत शब्दों का अर्थ-परिवर्तन



**अध्याय ७**

आगत शब्दानुवाद



**अध्याय ८**

## परिशिष्ट

# रेखाचित्रों की सूची



---

# ध्वनि-संकेत चिह्न

## स्वर ध्वनियाँ

| | | |
|---|---|---|
| i: | ई | अग्र संवृत दीर्घ स्वर |
| i | इ | अग्र ।संवृत्त ह्रस्व स्वर : अँग्रेजी । इ । हिन्दी । इ । की अपेक्षा कम संवृत है । |
| e | ऍ | अग्र अर्द्धसंवृत-विवृत ह्रस्व स्वर |
| e: | ए | अग्र अर्द्धसंवृत-विवृत दीर्घ स्वर |
| ɛ | ऍ | अग्र अर्द्ध विवृत मान स्वर |
| ɛ: | ऐ | अग्र अर्द्ध विवृत ( हिन्दी ) दीर्घ स्वर |
| æ | ऍ | अग्र अर्द्ध विवृत ( अँग्रेजी ) स्वर |
| a | अऽ | अग्र विवृत मान स्वर |
| a,ə | अ | मध्य अर्द्ध विवृत ह्रस्व स्वर ( हिन्दी ) |
| a: | आ | पश्च विवृत दीर्घ स्वर |
| ə | अ॑ | मध्य अर्द्ध विवृत ह्रस्व स्वर ( अँग्रेजी बलाघतहीन 'अ' ) |
| ʌ | अ | मध्य विवृत ह्रस्व स्वर ( अँग्रेजी बलाघातयुक्त 'अ' ) |
| ə: | ए॑ | मध्य अर्द्ध विवृत-संवृत दीर्घ स्वर |
| ɔ | ऑ | पश्च अर्द्ध विवृत ह्रस्व स्वर |
| ɔ: | ऑ | पश्च अर्द्ध विवृत दीर्घ स्वर ( अँग्रेजी ) |
| ɔ̣ | औ | पश्च अर्द्ध विवृत दीर्घ स्वर ( हिन्दी ) |
| o: | ओ | पश्च अर्द्ध संवृत दीर्घ स्वर |
| o | ओ | पश्च अर्द्ध संवृत ह्रस्व स्वर |
| u | उ | पश्च संवृत ह्रस्व स्वर |
| u: | ऊ | पश्च संवृत दीर्घ स्वर |

---

नोट : 'e' तथा 'æ' के लिए पृष्ठ ६४-६५ पर एक ही नागरी चिह्न 'ऍ' प्रयुक्त हुआ है जब कि दोनों पृथक् हैं।

## व्यंजन ध्वनियाँ

| | | |
|---|---|---|
| p | प | द्व्योष्ठ्य अघोष स्पर्श |
| b | ब | द्व्योष्ठ्य सघोष स्पर्श |
| t̪ | त | दन्त्य अघोष स्पर्श |
| d̪ | द | दन्त्य सघोष स्पर्श |
| t | ट् | वर्त्स्य अघोष स्पर्श |
| d | ड् | वर्त्स्य सघोष स्पर्श |
| ṭ | ट | मूर्द्धन्य अघोष स्पर्श |
| ḍ | ड | मूर्द्धन्य सघोष स्पर्श |
| k | क | कंठ्य अघोष स्पर्श |
| q | क़ | अलिजिह्वीय अघोष स्पर्श |
| g | ग | कंठ्य सघोष स्पर्श |
| ph | फ | द्व्योष्ठ्य अघोष महाप्राण स्पर्श |
| t̪h | थ | दन्त्य अघोष महाप्राण स्पर्श |
| ṭh | ठ | मूर्द्धन्य अघोष महाप्राण स्पर्श |
| kh | ख | कंठ्य अघोष महाप्राण स्पर्श |
| bh | भ | द्व्योष्ठ्य सघोष महाप्राण स्पर्श |
| d̪h | ध | दन्त्य सघोष महाप्राण स्पर्श |
| ḍh | ढ | मूर्द्धन्य सघोष महाप्राण स्पर्श |
| gh | घ | कंठ्य सघोष महाप्राण स्पर्श |
| tr | ट्र | पश्चवर्त्स्य अघोष स्पर्श-संघर्षी |
| dr | ड्र | पश्चवर्त्स्य सघोष स्पर्श-संघर्षी |
| tʃ | च़ | तालव्य-वर्त्स्य अघोष स्पर्श-संघर्षी ( अँग्रेजी ध्वनि ) |
| dʒ | ज़ | तालव्य-वर्त्स्य सघोष स्पर्श-संघर्षी ( अँग्रेजी ध्वनि ) |
| ʧ | च | तालव्य-वर्त्स्य अघोष स्पर्श-संघर्षी ( हिन्दी ध्वनि ) |
| ʤ | ज | तालव्य-वर्त्स्य सघोष स्पर्श-संघर्षी ( हिन्दी ध्वनि ) |
| ʧh | छ | तालव्य-वर्त्स्य अघोष महाप्राण स्पर्श-संघर्षी |
| ʤh | झ | तालव्य-वर्त्स्य सघोष महाप्राण स्पर्श-संघर्षी |

---

१. नोट : नागरी में व्यंजन ध्वनि को बिना स्वर के लिखने के ( ् ) का प्रयोग होगा ।

| | | |
|---|---|---|
| f | फ़ | दन्तोष्ठ्य अघोष संघर्षी |
| v | व़ | दन्तोष्ठ्य सघोष संघर्षी |
| θ | थ़ | दन्त्य अघोष संघर्षी |
| ð | द़ | दन्त्य सघोष संघर्षी |
| s | स | वर्त्स्य अघोष संघर्षी |
| z | ज़ | वर्त्स्य सघोष संघर्षी |
| r | ऱ | पश्च वर्त्स्य सघोष संघर्षी |
| x | ख़ | कंठ्य अघोष संघर्षी |
| h | ह़ | स्वरयन्त्रमुखी अघोष संघर्षी |
| *h* | ह | स्वरयन्त्रमुखी सघोष संघर्षी |
| m | म | द्वयोष्ठ्य सघोष अनुनासिक |
| ɱ | म) | दन्तोष्ठ्य सघोष अनुनासिक |
| n | न | वर्त्स्य सघोष अनुनासिक |
| ñ | ञ | तालव्य सघोष अनुनासिक |
| ṇ | ण | मूर्द्धन्य सघोष अनुनासिक |
| ŋ | ङ | कंठ्य सघोष अनुनासिक |
| mh | म्ह | द्वयोष्ठ्य सघोष महाप्राण अनुनासिक |
| nh | न्ह | वर्त्स्य सघोष महाप्राण अनुनासिक |
| l | ल | वर्त्स्य सघोष पार्श्विक |
| *l* | ल़ | वर्त्स्य सघोष कृष्ण पार्श्विक (अस्पष्ट) |
| ḷ | ल | मूर्द्धन्य सघोष पार्श्विक |
| r | र | वर्त्स्य सघोष लुंठित |
| ṛ | ड़ | मूर्द्धन्य सघोष उत्क्षिप्त |
| ṛh | ढ़ | मूर्द्धन्य सघोष महाप्राण उत्क्षिप्त |
| w | व़ | द्वयोष्ठ्य सघोष अर्द्धस्वर |
| *ʋ* | व | दन्तोष्ठ्य सघोष सप्रवाह |
| j | य | तालव्य सघोष अर्द्धस्वर |
| ʃ | श | तालव्य-वर्त्स्य अघोष संघर्षी |
| ʒ | झ़ | तालव्य-वर्त्स्य सघोष संघर्षी |
| tɹ | ट् | 'ट' का र-युक्त रूप |

| | | |
|---|---|---|
| β | ब़ | द्व्योष्ठ्य सघोष संघर्षी |
| ṣ | ष | मूर्द्धन्य अघोष संघर्षी |
| c | च़ | दन्त्य स्पर्श-संघर्षी |

## अन्य चिह्न

| | |
|---|---|
| n̩ | आक्षरिक व्यंजन |
| ~ | अनुनासिकता |
| ̥ | अघोषत्व ( स्वर के नीचे ) |
| ː | दीर्घता |
| ˑ | अर्द्ध दीर्घता |
| ˈ | प्रथम बलाघात ( अक्षर के प्रारम्भ में ऊपर ) |
| ˌ | द्वितीय बलाघात ( अक्षर के प्रारम्भ में नीचे ) |
| ... | उच्च स्वर ( सुर ) |
| — | निम्न सुर |
| ˎ | आरोही ( ऊर्ध्वगामी ) सुर |
| ː̣ | अवरोही ( अधोगामी ) सुर |

अध्याय १

# भूमिका

## १. १. हिन्दी-प्रदेश

शब्दार्थ की दृष्टि से हिन्दी का अर्थ 'हिन्द का' है। इस अर्थ में भी 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग हिन्दी या भारत में बोली जानेवाली किसी आर्य अथवा अनार्य भाषा के लिए हो सकता है, किन्तु व्यवहार में हिन्दी उस बड़े भूमि-भाग की भाषा मानी जाती है जिसकी सीमा पश्चिम में जैसलमेर, उत्तर-पश्चिम में अम्बाला, उत्तर में शिमला से लेकर नेपाल के पूर्वी छोर तक के पहाड़ी प्रदेश, पूरब में भागलपुर, दक्षिण-पूरब में रायपुर तथा दक्षिण-पश्चिम में खंडवा तक पहुँचती है। इस भूमि-भाग के निवासियों के साहित्य, पत्र-पत्रिका, शिक्षा-दीक्षा, बोलचाल आदि की भाषा हिन्दी है।[१] शिष्ट बोलचाल के अतिरिक्त स्कूली शिक्षा की भाषा एकमात्र खड़ीबोली हिन्दी ही है।[२] "भाषा-शास्त्र की दृष्टि से ऊपर दिए हुए भूमि-भाग में तीन चार उपभाषाएँ मानी जाती हैं। राजस्थान की बोलियों के समुदाय को 'राजस्थानी' के नाम से पृथक् उपभाषा माना गया है। बिहार की मिथिला और पटना-गया की बोलियों तथा उत्तर-प्रदेश की बनारस-गोरखपुर कमिश्नरी की बोलियों के समूह को एक भिन्न 'बिहारी[3] उपभाषा माना जाता है। उत्तर के पहाड़ी प्रदेशों की बोलियाँ भी 'पहाड़ी भाषाओं' के नाम से पृथक् मानी जाती हैं। इस तरह भाषा-शास्त्र के सूक्ष्म भेदों की दृष्टि से 'हिन्दी भाषा की सीमाएँ' निम्नलिखित रह जाती हैं :—

---

१. डॉ० श्यामसुन्दर दास—हिन्दी भाषा, सन् १९५४, इण्डियन प्रेस प्रयाग, पृ० २९-३०।

२. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १९४९, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, पृ० ६०।

३. बिहारी से तात्पर्य है—बिहार राज्य में बोली जाने वाली उपभाषाओं का समूह।

उत्तर में तराई, पश्चिम में पंजाब के अम्बाला और हिसार के ज़िले तथा पूर्व में फ़ैज़ाबाद, प्रतापगढ़ और इलाहाबाद के ज़िले। दक्षिण की सीमा में कोई परिवर्तन नहीं होता और वह रायपुर तथा खंडवा पर ही जाकर ठहरती है।[1]" हिन्दी और हिन्दी-प्रदेश का अभिप्राय यहाँ व्यापक अर्थ में ही किया गया है। हिन्दी भाषा से तात्पर्य देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली साहित्यिक खड़ी-बोली से है और यह भारत के निम्नलिखित राज्यों की राजभाषा है। १. बिहार २. उत्तर प्रदेश ३. मध्य प्रदेश ४. राजस्थान ५. दिल्ली ६. हिमाचल प्रदेश ७. पंजाब का हरियाना प्रदेश। दूसरे शब्दों में हिन्दी-प्रदेश का विस्तार, उत्तर में शिमला से लेकर दक्षिण में रायपुर तक और पश्चिम में जैसलमेर से लेकर पूर्व में भागलपुर तक है।[2]

## १. २. हिन्दी-प्रदेश पर अंग्रेजों का अधिकार और शासन

### १. २. १. यूरोपीय यात्रियों का प्रथम-प्रथम आगमन

हिन्दी-प्रदेश पर यूरोपीय यात्रियों का आगमन अंग्रेजों के शासन के पूर्व ही आरम्भ हो गया था। यूरोपीय जातियों और विशेषकर अंग्रेजों का भारत में आगमन व्यापारियों के रूप में हुआ था। ये जातियाँ सर्वप्रथम समुद्रतटीय प्रदेशों पर आकर जमीं। हिन्दी-प्रदेश में समुद्र तट का अभाव होने के[१] कारण

१. वही, पाद टिप्पणी, संख्या २, पृ०, १।

२. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी-प्रदेश और उसकी उपभाषाएँ—साहित्य संदेश, भाग १६, अङ्क १-२, पृ० ८६।

१. हिन्दी-प्रदेश में समुद्रतट न होने से यहाँ के निवासियों में विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने और सामुद्रिक जीवन की साहसिकता का अभाव मिलता है। किन्तु देश के समुद्रतट ने सर्वप्रथम उसके राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास में परिवर्तन उपस्थित किया। सन् १४६८ में वास्को-डि-गामा द्वारा केप ऑव गुड होप वाले मार्ग का पता लग जाने के बाद यूरोप के कई देशों ने भारतवर्ष से व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने शुरू किये और तटों पर अपने छोटे-छोटे उपनिवेश बना लिये।

इन जातियों से कोई सीधा सम्पर्क स्थापित न हो सका। फिर भी जिन अंग्रेजों का हिन्दी-प्रदेश पर प्रथम-प्रथम आगमन हुआ उनमें से जान न्यूबरी, राल्फ़ फ़िच, तथा विलियम लीड्स उल्लेखनीय थे जो जुलाई सन् १५८५ में व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए आगरा पहुँचे।[१] इस समय सम्राट् अकबर का कार्यकाल था। इससे पूर्व यूरोप से पुर्तगाल देश के कुछ मिशनरी भी आये, जो गोआ से मार्च १५७८ ई० में अकबर के दरबार में फतहपुर सीकरी पहुँचे, जिनमें से जुलियन पेरियर का नाम उल्लेखनीय है।[२]

सन् १५८० में एक मिशन फतहपुर सीकरी आया जिसमें रुडोल्फ अकुविवा, अन्टोनियो मोन्सरेट (Antonio Monserrat) तथा फ्रेन्सिस हेनरीक्वैज़ (Francis Henriquez) थे। सन् १५८२ में मिशन के प्रथम व्यक्ति को छोड़कर शेष दोनों लौट गये। सन् १५६० में प्रीस्ट लिओ ग्रिमन तथा १६०२ में जेरोम ज़ेवियर महोदय भी आये जिन्होंने सन् १६०४ में एक चर्च भी बनाया।

सन् १६०३ में जोन मिल्डन हाल नामक एक व्यापारी एलिज़ाबेथ से एक पत्र लेकर आया था। तीन वर्ष बाद उसको जहाँगीर से एक फ़र्मान प्राप्त हुआ जिसके आधार पर भारत में व्यापार की स्वतन्त्रता मिली।

सन् १६०८ में केप्टन विलियम हॉकिन्स इंगलैण्ड के राजा जेम्स प्रथम से पत्र लेकर आया जिसके साथ निकोलस नामक एक और व्यक्ति भी था।

---

*** अंग्रेज *** बंगाल के निचले हिस्से पर अधिकार प्राप्त करने में सफल हुए। हिन्दी-प्रदेश की पश्चिमी भौगोलिक परिस्थिति जिस प्रकार आक्रमणकारियों के मार्ग में कोई बड़ी रुकावट नहीं थी उसी प्रकार उसका पूर्वी द्वार भी किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं करता था। मैसूर मराठों और सिक्खों के विरुद्ध युद्धों में भी प्रकृति ने अंग्रेजों के मार्ग में रुकावट न डाली। अन्त में वे गङ्गा और सिन्धु घाटियों के कोने-कोने में फैल गये। इस प्रकार भारतवर्ष के साथ-साथ हिन्दी-प्रदेश भी सर्वप्रथम सुदूरस्थित नाविक शक्ति से विजित हुआ — डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय—आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका, सन् १९५२, पृ० १६।

१. Locke, J. Courtenay—The First Englishmen in India, 1930, Page 13 & 102

२. आगरा गज़ेटीयर, भाग ८, सन् १९२१, पृ० १४६-१५०।

हॉकिन्स का शाहंशाह द्वारा सम्मान किया गया। वह आगरा में तीन वर्ष तक रहा और सन् १६११ में उसे सूरत लौट जाना पड़ा।[1] वह भी जहाँगीर से एक फ़र्मान प्राप्त करने में सफल हुआ था जो बाद में पुर्तगालियों के प्रयत्न से रद्द कर दिया गया।

हॉकिन्स महोदय के बाद एक दूसरा मिशन पाल केनिंग की अध्यक्षता में आगरा सन् १६१२ में पहुँचा। केनिंग की मृत्यु भी आगरा में ही हो गई। इसके दूसरे ही वर्ष कम्पनी द्वारा केरिज महोदय भेजे गये। इसी वर्ष पर्शिया जाते समय सर राबर्ट शिरले अपनी पत्नी के साथ आगरा भी आये।

सन् १६१४ में पहली बार आगरा में अंग्रेजों के प्रयत्न से एक फैक्टरी स्थापित की गई और विलियम एडवर्ड इसके रेजीडेन्ट नियुक्त हुए। लेकिन यह कम्पनी सन् १६१७ में ही बन्द कर दी गई।[2] सन् १६१५ में सर टामस रो भारत में प्रथम अंग्रेज राजदूत नियुक्त होकर आये। आपने जहाँगीर के दरबार का विस्तृत वर्णन किया है और यह भी लिखा है कि इस समय तक ६० क्रिश्चयन यहाँ पर थे। आपने एक आज्ञा-पत्र भी प्राप्त कर लिया था जिससे सूरत में अंग्रेजों की स्थिति फिर से सुदृढ़ हो गई। आगरे के अतिरिक्त अहमदाबाद, बड़ौच, पटना आदि स्थानों पर भी फैक्टरियाँ स्थापित की गईं।[3] औरङ्गज़ेब इन सबके विरुद्ध था जिसके फलस्वरूप ईसाइयों के गढ़ एक बार जमकर भी फिर से उखड़ गये।

सन् १६३४ की २ फरवरी को फिर इन विदेशियों को फ़र्मान मिला, जिसके द्वारा बंगाल में व्यापार की सुविधा प्राप्त हुई।[4] फलस्वरूप पुर्तगालियों के पैर उखड़ गये। सन् १६४० में हुगली में और दो वर्ष बाद बलसौर (बालेश्वर-उड़ीसा) में फैक्टरी की स्थापना हुई। १६५४ ई० में गैबरील बॉटन ( Gabriel Boughton ) नामक एक सर्जन ने शाहजहाँ से कम्पनी के लिये विशेष अधिकार प्राप्त किए। लखनऊ में फैक्टरी की स्थापना कब हुई इस

---

१. आगरा गज़ेटीयर, भाग ८, सन् १९२१, पृष्ठ १९३।

२. आगरा गज़ेटीयर, भाग ८, सन् १९२१, पृष्ठ १९४।

३. Smith, V. A.—Oxford S. History of India, 1954, Pages 159, 193,194 & Imperial Gazetteer, Vol. VI, 1886, Page 301, 367.

४. इम्पीरियल गज़ेटीयर, पृष्ठ ३६८।

बात की कोई निश्चित सूचना प्राप्त नहीं हो सकी है पर इतना निश्चित है कि सन् १६५३ में इसको बन्द कर दिया गया ।[1]

बम्बई प्रेसीडेन्सी की स्थापना सन् १६८७ ई० में[2] हुई तथा कलकत्ता की १६८६ में । इस अवधि में अंग्रेज अपनी स्थिति को भारत के अन्य भागों में सुदृढ़ बनाते रहे और कम्पनी का शासन बढ़ता गया ।

प्लासी के युद्ध के पश्चात् अंग्रेजों का हिन्दी-प्रदेश पर अधिकार शनैः-शनैः सन् १७६४ से प्रारम्भ हुआ । यह स्पष्टतः वह समय-विभाजक-रेखा है जिसके पूर्व अंग्रेजों और यूरोपीय जातियों के यात्रियों का सम्बन्ध प्रेम एवं सद्भावना पूर्ण था जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों ने भारत में व्यापार के केन्द्र स्थापित किये और जिसके बाद उनका आगमन एक आक्रमणकारी के रूप में हुआ जिसके फलस्वरूप उनका शासन उत्तर भारत में स्थापित हुआ ।

## १. २. २. अंग्रेजों द्वारा हिन्दी-प्रदेश पर अधिकार करने के लिए युद्ध

सन् १७६४ में बक्सर के युद्ध से एक वर्ष पूर्व पटना में भीषण हत्याकाण्ड हुआ ।[3] अक्टूबर सन् १७६४ ई० में मेजर मुनरो ने अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सँभाला तथा सेना के अनुशासन की व्यवस्था को ठीक किया और नदी पार कर शत्रु को हरा दिया । मुनरो के बाद सेना का नेतृत्व फ्लेचर ने किया और अवध पर धावा बोला । उसने इलाहाबाद तथा चुनार पर अधिकार भी कर लिया । शाहआलम ने अंग्रेजों से सन्धि करने की प्रार्थना की । प्लासी की विजय से कहीं अधिक बक्सर की विजय को भारत में अंग्रेजी-शक्ति का शिलान्यास करने का श्रेय है ।[4] स्मिथ महोदय के अनुसार बक्सर के युद्ध से एक ओर प्लासी के युद्ध द्वारा प्रारम्भ किया गया कार्य समाप्त हुआ और दूसरी ओर बंगाल और बिहार पर पूर्ण शासन की स्थापना हुई ।[5]

६ अगस्त १७६५ ई०को इलाहाबाद में मुगल सम्राट् शाहआलम से क्लाइव

---

१. इम्पीरियल गज़ेटीयर, पृष्ठ ३६९ ।

२. बम्बई अंग्रेजों को दहेज के रूप में सन् १६६१ में मिल चुका था । वही, पृ० ३७० ।

३. इम्पीरियल गज़ेटीयर, भाग ६, सन् १८८६, पृष्ठ ३८६ ।

४. सी० एस० श्रीनिवासाचारी— आधुनिक भारत, सन् १९५३, पृष्ठ ७३ ।

५. स्मिथ, वही इतिहास, पाद टिप्पणी, संख्या ३, पृष्ठ ४, २५४ ।

मिला। शाहआलम की लाचारी से लाभ उठाकर क्लाइव ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लिए बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी प्राप्त कर ली। मुगल सम्राट् ने उस एक आदेश द्वारा तीन प्रान्तों की दीवानी के साथ-साथ अपनी स्वतन्त्रता को भी तिलाञ्जलि दे दी। हम कह सकते हैं कि भारत में मुगल साम्राज्य के अन्त और अंग्रेजी साम्राज्य के प्रारम्भ का पहला दिन ६ अगस्त १७६५ है।[1] यह दिन हिन्दी-प्रदेश पर अंग्रेजों के प्रथम चरण के रूप में स्मरणीय रहेगा। यह बात ठीक है कि इसके बदले नवाब वज़ीर को (लड़ाई का खर्च लेकर) उसका अवध वापिस कर दिया गया और इलाहाबाद तथा कड़ा (दुआब का एक बड़ा भाग) देहली के शाहंशाह को लौटा दिया गया।[2]

सन् १७७१ में शाहआलम ने फिर से देहली में सिन्धिया की सहायता से प्रवेश किया। वारेन हेस्टिंग्ज़ ने यह घोषणा की कि अब बादशाह मराठों का गुलाम हो गया है इस कारण उससे की गई सन्धि विच्छिन्न समझी जाय। कड़ा और इलाहाबाद का सौदा ठीक करने के लिए वारेन हेस्टिंग्ज स्वयं शुजाउद्दौला से मिला। सन् १७७४ में नवाब ने अंग्रेजी सेना की सहायता से रुहेलखण्ड पर आक्रमण करके उस पर अधिकार कर लिया। सन् १७७५ में कम्पनी की अधीनता बनारस के राजा चेतसिंह ने स्वीकार कर ली।[3] इसी समय शुजा-उद्दौला की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी आसफ़उद्दौला ने बनारस, जौनपुर, गाजीपुर को अंग्रेजों को समर्पित कर दिया। इस प्रकार यह अंग्रेजी राज्य की स्थापना का दूसरा चरण था, जो शासक के रूप में हिन्दी-प्रदेश पर रक्खा गया। जिस अंग्रेज जाति ने भारत में व्यापारी बनकर पदार्पण किया था, वह अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारत के शासन की हक़दार बन गई।

सन् १७८० में पोफ़म ने बड़ी कुशलता से धावा बोलकर ग्वालियर का दुर्ग जीत लिया जिसमें कोई भी व्यक्ति नहीं मरा। इस कार्य से अंग्रेजों का मान काफी बढ़ गया। उधर सिन्धिया इस हानि से परेशान होकर मालवा की ओर चला गया। सन् १७८७ में कम्पनी और नवाब वज़ीर के पारस्परिक

---

१. इन्द्र विद्यावाचस्पति, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त, सन् १९२६, पृ० ३४।

२. इम्पीरियल गज़ेटीयर भाग ६, सन् १८८६, पृष्ठ ३८७।

३. उपर्युक्त पाद टिप्पणी, सं० १, पृष्ठ ५३।

लाभार्थ लार्ड कार्नवालिस ने एक समझौता किया। यह तय हुआ कि अंग्रेजी सेना अवध में रहेगी और उसके बदले अवध को ५० लाख रुपया प्रतिवर्ष देना पड़ेगा। सन् १७९८ में सर जानशोर, जो पहले नवाब के असली पुत्र वजीर-अली को उत्तराधिकारी मान चुके थे, बनारस में उसके भाई सादतअली से मिले और उन्होंने उसको शासन का अधिकार देकर बदले में इलाहाबाद को कम्पनी के लिए ले लिया। सन् १८०१ में सादतअली को एक नई सन्धि करनी पड़ी जिसके फलस्वरूप दोआब और रोहिलखण्ड के जिले कम्पनी को प्राप्त हुए।

हिन्दी-प्रदेश पर अंग्रेजों का अन्तिम चरण प्रारम्भ होता है सन् १८०३ से जबकि लार्ड लेक दुआब में स्थित कानपुर से एक बड़ी सेना लेकर उत्तर की ओर चले जिसमें लगभग १०,५०० आदमी थे। उन्होंने सीधे कन्नौज और मैनपुरी के मार्ग से जाकर अलीगढ़ पर अधिकार कर लिया। ४ सितम्बर को लेक महोदय सीधे दिल्ली की ओर चल पड़े। ७ सितम्बर को ही उसने पेरन के अधिनायकत्व में युद्ध करने वाली फ्रान्सीसी सेना को शीघ्रता से भङ्ग कर दिया और ११ सितम्बर को ही देहली के निकट उसने बोर्क्वेन को पराजित किया और राजधानी पर तीन दिन में ही अधिकार जमा लिया। २४ सितम्बर को उसने दक्षिण की ओर क़दम बढ़ाया और वह २ अक्टूबर को मथुरा आ लगा। यहाँ पर फिर फ्रेन्च कमांडर ने आत्मसमर्पण किया और उसके दो दिन बाद ही उसने आगरा के समीप सिकन्दरा में अपने खेमे गाड़ दिये। इस स्थान पर भरतपुर के जाटों से जमकर युद्ध हुआ। लार्ड लेक के इस युद्ध का विस्तृत वर्णन श्री इन्द्र ने किया है।[1] लार्ड लेक आगरा से २७ अक्टूबर को चल दिये थे। ३० दिसम्बर को अंजेनगाँव में सन्धि हुई जिससे आगरा और उसके समीपवर्ती स्थल कम्पनी को सौंप दिये गये।[2] दिल्ली के कठपुतली सम्राट शाहआलम को पहले ही पकड़ लिया गया था।

लार्ड लेक के सफल अभियान के फलस्वरूप लगभग समस्त हिन्दी-प्रदेश अंग्रेजों द्वारा अधिकृत हो गया। कालान्तर में शेष भाग भी इसमें मिलते गये जिसमें उल्लेखनीय सन् १८५३ में झाँसी का सम्मिलित होना है।

---

१. इन्द्र विद्यावाचस्पति—भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अन्त, पृ० १२६-३०।

२. आगरा गज़ेटीयर, भाग ८, सन् १९२१, पृष्ठ १६६-६८।

सन् १८५७ में प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध के पश्चात् तो सारा भारत ही लाल हो चुका था और शासन की बागडोर कम्पनी के हाथ से पार्लियामेंएट के हाथों में चली गई।

यूरोपीय भावों और विचारों का सर्वप्रथम प्रभाव बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मद्रास,बम्बई आदि स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है। हिन्दी-प्रदेश दूर पड़ता था पर सन् १८५७ से तो पूर्णतया अधिकृत होने पर अंग्रेजी सभ्यता का प्रभाव इस प्रदेश पर भी तेज़ी से पड़ने लगा। प्रारम्भकालीन अवस्था में निस्सन्देह अंग्रेजी का प्रभाव बंगला पर पड़ा और हिन्दी का सीधा सम्बन्ध बंगला से होने के कारण हम भी अंग्रेजी विचारों एवं भावों से सम्बन्धित अंग्रेजी शब्दों को भी बंगला के माध्यम से लेते रहे। धीरे-धीरे यातायात तथा संचार साधनों का प्रचार होते ही हिन्दी-प्रदेश तक नवीनता आने में देर न लगी। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित वर्ष उल्लेखनीय हैं।[1]

| | |
|---|---|
| रेलों का निर्माण | सन् १८५३-५४ |
| प्रमुख सड़कें | सन् १८४३-५३ |
| डाकखाने | सन् १८३७-५०-५४ |
| तारघर | सन् १८५१-५३-५५-५७ (आगरा में सन् १८५३) |

प्रेस और नवशिक्षा[2] के विकास तथा साथ ही यातायात के साधनों के फलस्वरूप धीरे-धीरे हिन्दी-प्रदेश अंग्रेजों से प्रभावित होता रहा। इस प्रकार दो जातियों के एक दूसरे के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप शब्दों के लेने का क्रम १९वीं शताब्दी पूर्वार्द्ध से पहले ही प्रारम्भ हो गया था, उत्तरार्द्ध में और तेज़ी के साथ नये-नये शब्द ग्रहण किये जाने लगे।[3]

## १. ३. हिन्दी-प्रदेश में मिशनरियों का प्रवेश

सन् १५७९-८१ के मध्य टामस स्टीवेन्स, जान न्यूबरी, मास्टर जान एल्फ्रेड तथा रेल्फ़ फ़िच आदि मिशनरियों ने भारत में प्रवेश किया। अकबर के समय में पुर्तगाली, अंग्रेज आदि अनेक ईसाई आये थे और उन्होंने गिरजा-

---

१. डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय—आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका, सन् १९५२, पृ० १३०-३२।

२. आगे पृथक् से विवेचन किया गया है।

३. डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय—आधुनिक हिन्दी साहित्य, सन् १९५४, पृ० १२३।

घर भी बनवाये थे। सन् १६०० में फ़ादर ऐन्तोनियो द आन्द्रोदे भारत में आये और उन्होंने आगरा को अपना केन्द्र बनाया। ३० मार्च १६२४ को वे जहाँगीर के साथ आगरा से दिल्ली तक आये थे।[१] पर इन लोगों के सब प्रयत्न औरङ्गजेब के राज्यकाल में समाप्त हो गये। रेवरेण्ड हेनरी मारटिन सन् १८०६ में भारत आये। वह कलकत्ता, दीनापुर तथा कानपुर के चैपलन थे।[२] दक्षिण में हिन्दी-क्षेत्र से बाहर एक 'सोसायटी आव् जीसस' की स्थापना की गई और श्रीरामपुर में ईसाइयों का विशाल केन्द्र स्थापित हुआ।

ज्यों-ज्यों अंग्रेजी राज्य गङ्गा की घाटी में उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ा त्यों-त्यों बापटिस्ट मिशनरी सोसायटी, चर्च मिशनरी सोसायटी, बाइबिल सोसायटी तथा अन्य अनेक सोसायटियों का प्रचार क्षेत्र भी विस्तृत होता गया।

आगरा से भी पूर्व पटने में सन् १८०९ में मूर महोदय ने एक मिशन की स्थापना की। इसके दूसरे ही वर्ष आगरा में बापटिस्ट मिशन की स्थापना कर दी गई। सन् १८११ में सिकन्दरा में डेनियल कोरी ने मिशन की स्थापना अब्दुल मसीह के साथ की।[३] सन् १८२९ में आगरा चर्च मिशन एसोशियेशन की भी स्थापना की गई।[४] सन् १८४० में आगरा मिशन पर्याप्त प्रगति कर चुका था। अन्य प्रकार की शिक्षा के अतिरिक्त अंग्रेजी की भी शिक्षा यहाँ प्रदान की जाती थी।[५] इस मिशन को रे० टामसन महोदय से विशेष सहायता प्राप्त हुई जो सन् १८३७ में उत्तर पश्चिमी प्रान्त के सेक्रेटरी नियुक्त हुये। वह सन् १८४३ से इस प्रान्त के प्रथम लेफ़्टीनेन्ट गवर्नर भी थे। उस समय उत्तर-पश्चिमी प्रान्त की राजधानी आगरा थी।

रोमन कैथोलिक ईसाइयों का यद्यपि दक्षिण भारत में ही विशेष जोर रहा

---

१. डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय—आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका, सन् १९५२, पृ०, ४५१।

२. सेन्ट जान्स कालेज, आगरा ( १८५०-१९३० ), सन् १९३२, पृ० २।

३. सेन्ट जान्स कालेज, आगरा ( १८५०-१९३० ), सन् १९३२, पृ० ३।

४. मेकब्रिज, सिकन्दरा, सन् १८४०-१९४०, सन् १९४०, सी० एम० एस० प्रेस, पृ० १ व ६।

५. मेकब्रिज, सिकन्दरा, सन् १८४०-१९४०, सन् १९४०, सी० एम० एस० प्रेस, पृ० १६।

तथापि १८८५ की रिपोर्ट के अनुसार आगरा में ८,४००; पटना में १०,००० और पंजाब में ५,९०० रोमन कैथोलिक थे जिनका कुल योग २४,३०० था।[1]

आगरा के बाद उत्तर में दूसरा केन्द्र मेरठ में सन् १८१६ में तथा तीसरा केन्द्र पूर्व में स्थित बनारस में सन् १८१७ में स्थापित किया गया। इस प्रकार सन् १८७२ तक हिन्दी-प्रदेश में ७० केन्द्र स्थापित किये जा चुके थे।[2] मिशनरियों द्वारा विभिन्न ट्रैक्ट तथा सोसायटियों की भी स्थापना की गई जिनमें उल्लेखनीय निम्नलिखित हैं—

बनारस ट्रैक्ट सोसायटी।
नार्थ इण्डिया क्रिश्चियन ट्रैक्ट एण्ड बुक सोसायटी।
क्रिश्चियन वर्नाक्यूलर लिटरेचर सोसायटी।
क्रिश्चियन लिटरेरी सोसायटी।
बाईबिल ट्राँसलेशन सोसायटी।

इस प्रकार ईसाइयों का दक्षिण में विशेष प्रभाव होते हुए भी हिन्दी-प्रदेश में भी कम प्रभाव प्रतीत नहीं होता; प्रमुख मिशनरियों में हेनरी मार्टिन लाट, हार्नली, ओवेन, बुडेन, पर्किन्स, स्टुअर्ट, कोरी आदि उल्लेखनीय हैं। सन् १८८१ तक इनकी संख्या उ० प० प्रान्तों में ही ४७,६४६ तक पहुँच चुकी थी।[3]

## १. ४ हिन्दी प्रदेश में अंग्रेजी शिक्षा का विकास तथा प्रसार

अंग्रेजी भाषा अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ-साथ आई। अंग्रेजी भाषा के साथ अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी साहित्य, अंग्रेजी विचार एवं अंग्रेजी

---

१. इम्पीरियल गज़ेटियर, भाग ६, सन् १८८६ (कुल संख्या उस समय १,०,७०, ३३४ थी), पृ० २४८।

२. डॉ० विश्वनाथ मिश्र, हिन्दी भाषा और साहित्य पर अंग्रेजी का प्रभाव : १८७०-१९२०: मूल थीसिस (अंग्रेजी) प्रयाग विश्वविद्यालय, सन् १९५०, पृ० ७२-७४।

३. इम्पीरियल गज़ेटीयर, भाग ६, सन् १८८६, पृ० २६४।

सभ्यता भी आई। हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र में अंग्रेजी शिक्षा तथा भाषा का कैसे प्रसार हुआ इसका संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करना आवश्यक हो जाता है। यह जानने के लिए कि अंग्रेजी साहित्य, सभ्यता, संस्कृति एवं विचारधारा का हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र में किस माध्यम से प्रचार एवं प्रसार हुआ तथा किस प्रकार हिन्दी में अंग्रेजी शब्दों का आना प्रारम्भ हुआ।[1]

## १. ४. १ अंग्रेजी शिक्षा का प्रारम्भ

हिन्दी-प्रदेश में शिक्षा का प्रसार सरकार के द्वारा ही नहीं हुआ प्रत्युत कुछ विशेष व्यक्तियों एवं क्रिश्चियन मिशनरियों के प्रयत्न से भी हुआ। भारत में अंग्रेजों से पूर्व विदेशी जातियों—पुर्तगाली, डच, फ्रेंच द्वारा भी शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की गई पर इन सब जातियों द्वारा शिक्षा का प्रसार भारत के समुद्र-तटीय प्रदेशों तक ही सीमित रहा।[2] हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र इससे बहुत दूर था और इसलिए वह इनसे प्रभावित न हो सका। इन भाषाओं के शब्द भी अन्य प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से ही हिन्दी-प्रदेश में प्रवेश पा सके।

अंग्रेजों के प्रयत्न से हिन्दी-प्रदेश में सर्वप्रथम स्थापित संस्था (सन् १७६१ में) बनारस का संस्कृत कालेज है जिसकी स्थापना लार्ड कार्नवालिस द्वारा बनारस के रेजीडेण्ट जोन्थन डन्कन की प्रेरणा से बनारस जैसे पवित्र स्थल पर की गई।[3] इस संस्था का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव अंग्रेजी के प्रसार

१. पश्चिम के संसर्ग से हमने ज्ञान और सत्य का प्रचार करना सीखा। इस उदारता ने हमें भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान पुस्तकों के रूप में प्रकट करने को बाध्य किया, *** परन्तु जब इन विचारों को अपनी भाषा में लिखने की आवश्यकता पड़ी, तब हमें अपनी भाषा का अभाव ज्ञात हुआ। हिन्दी का शब्द-भंडार इतना अपर्याप्त था कि विचार स्पष्टतापूर्वक व्यक्त नहीं किये जा सकते थे और हमें विवश होकर संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी से शब्द लेने पड़े—डॉ० श्रीकृष्णलाल—आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, सन् १९४२, पृष्ठ ११।

२. Bhagwat Dayal, The Development of Modern Indian Education, 1955, Page 29-33।

३. भगवत दयाल, वही, पृष्ठ ४४-४५। इससे दस वर्ष पूर्व कलकत्ते में 'कलकत्ता मदरसा की स्थापना' की जा चुकी थी।

पर न पड़ा। लेकिन इसके दो उद्देश्यों में से एक उद्देश्य था जजों को हिन्दू ला की जानकारी के लिए सहायक प्रदान करना। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से यूरोपियन प्रभाव पड़ता रहा।

अठारहवीं शताब्दी में और विशेषकर उसके अन्तिम दशकों में कुछ अंग्रेजों ने यह सोचना प्रारम्भ कर दिया था कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारतीयों को शिक्षित करने का दायित्व सम्हालना चाहिए।[1] इसी आधार पर सन् १७९३ में चार्टर एक्ट में शिक्षा सम्बन्धी धारा रक्खी गई थी जिसका उद्घाटन जे० सी० मार्शमैन ने सन् १८५३ में हाउस आव् लार्ड्स की सेलेक्ट कमेटी के सम्मुख किया था। पर वह धारा किसी प्रकार बाद में हटा ली गई।[2] इसी बीच कलकत्ते में फ़ोर्ट विलियम कालेज की स्थापना हुई जो उल्लेखनीय है।

शिक्षा सम्बन्धी काफ़ी वाद-विवाद सन् १८१३ ई० तक चलता रहा। इसके फलस्वरूप सन् १८१३ के चार्टर एक्ट में कम्पनी को भारतीय शिक्षा के लिए

---

१. क्या इस महान् देश की जनता को शिक्षित करने का यथायोग्य प्रयत्न करना है ? अथवा इन्हें अपने वर्तमान अज्ञान की अवस्था में रहने के लिए छोड़ देना है। अर्थात् जहाँ तक अपने गोरे मालिकों को सहायता देने का सम्बन्ध है अवश्य ही उनका [ बृटिश शासकों का ] पहला कर्तव्य था कि ऐसा प्रबन्ध करते कि न्यायालयों की भाषा और लिपि वही हो जो देश की भाषा और लिपि है। उनका दूसरा कर्तव्य स्कूलों की स्थापना करना अथवा कम से कम जो स्कूल पहले से ही वर्तमान हैं उन्हें प्रोत्साहन देना जिससे जनता की शिक्षा उसकी अपनी भाषा और लिपि में ही हो सके, उनका तीसरा कर्तव्य ज्ञान की पुस्तकों के देशी भाषा में अनुवादों को प्रोत्साहित करना और उनका चौथा कर्तव्य था जिनको अवकाश है अथवा जिनमें अभिरुचि है उन सबको अत्यधिक ज्ञान भंडार अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त करने का वे साधन प्रदान करते। सर जानशौर, सन् १७९३-९८, डॉ० शारदा वेदालंकार, भारतेन्दु से पूर्व हिन्दी (लंदन विश्वविद्यालय) थीसिस का हिन्दी अनुवाद, पृष्ठ १९१ [अप्रकाशित]।

२. B. D. Basu; Education in East India Company, Cal., पृष्ठ ६ पर उद्धृत पु० पा० टि० २, पृ० ५१।

एक लाख रुपया रखना पड़ा । परन्तु वस्तुतः सन् १८२३ तक कम्पनी के कर्णा-धारों ने इस दिशा में कोई ख़ास कदम नहीं उठाया ।[1] इसी समय सर्वसाधारण की शिक्षा के लिए एक कमेटी बनाई गई जिसके सचिव विलसन महोदय थे । इधर बंगाल में राजा राममोहन राय ने अनेक धर्मों का अध्ययन करने के पश्चात् सन् १८१४ में 'आत्मीय सभा' की स्थापना की । उनकी यह धारणा थी कि अन्ध-विश्वास और रूढ़वादिता का अन्त शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है । इसके लिए उन्होंने सन् १८२८ में 'ब्रह्म समाज' की भी स्थापना की पर इससे पूर्व सन् १८२३ में ही उन्होंने बड़े जोरदार शब्दों में माँग की कि जनता की शिक्षा के लिए एक लाख रुपया व्यय किया जाना चाहिए । संस्कृत शिक्षा और उसकी विधि भी कटु आलोचना का विषय बनी रही । उस समय के मनीषियों में राजा राममोहन राय ही थे जिन्होंने अंग्रेजी शिक्षा पर विशेष बल डाला और उसकी उपादेयता की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया । आपको भारत में अंग्रेजी शिक्षा का अग्रदूत माना जाता है । उनका दृष्टिकोण था कि जहाँ एक ओर भारतवासियों को उदार और उन्नतिशील बनाने के लिए अंग्रेजी शिक्षा आवश्यक है वहाँ अंग्रेजी राज्य के ऊँचे पदों पर पहुँचने के लिए भी अंग्रेजी के ज्ञान की आवश्यकता है ।

विदेशियों में सर्वप्रथम अंग्रेजी के महत्त्व को समझने वालों में उल्लेखनीय नाम श्री डेविड हेअर का ही आता है । यह भारत में सन् १८०० में ही आ गये थे और कलकत्ते में स्थापित कलकता बुक सोसायटी (सन् १८१७) के सदस्य भी थे । इन्होंने अंग्रेजी शिक्षा के विकास में काफ़ी योग दिया ।[2]

इस प्रकार स्पष्टतः देश में भारतीयों, और अंग्रेजों का एक ऐसा वर्ग बनता जा रहा था जो अंग्रेजी शिक्षा को नितान्त आवश्यक समझता था । कम्पनी के डाइरेक्टरों का भी यह स्पष्ट मत था कि उच्च शिक्षा के लिये अंग्रेजी के ज्ञान की आवश्यकता है और योरोपीय ज्ञान के प्रसार के लिये भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी को भी साधन बनना चाहिए ।[3] सन् १८२८ ई० में लार्ड

---

१. इन्द्र विद्यावाचस्पति, भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त, भाग १, सन् १९५६, पृ० २०१ ।

2. Bhagwat Dayal—The Development of Modern Indian Education, 1955, page 190-92.

३. वही, पृष्ठ १९२ :

विलियम बैंटिक गर्वनर जनरल होकर भारत आये। आपने प्रधान शिक्षा-समिति को लिखा "मेरा विचार अंग्रेजी को धीरे-धीरे इस देश की राजभाषा बनाना है।[1]"

भाषा के इन दोनों पक्षों आंग्लवादी[2] और प्राच्यवादी विचारकों में काफ़ी मतभेद रहा। ऐसे समय में विलियन बैंटिक ने देश की बागडोर सम्हाली और सन् १८३५ में लार्ड मैकाले की नियुक्ति कानून के सदस्य के रूप में हुई। ये दोनों ही व्यक्ति अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में थे। लार्ड मैकोले ने अपनी वाकपटुता और योग्यता के बल से अंग्रेजी का पलड़ा भारी कर दिया। इसी समय आदम[3] ने अपनी रिपोर्ट में यह लिखा कि अंग्रेजी शिक्षा की ओर जनता का इतना अधिक झुकाव है कि जिस स्कूल में यह नहीं पढ़ाई जाती उसका न चलना निश्चित है।

लार्ड मैकोले को शिक्षा के जनरल कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि जब अन्तिम निर्णय का समय आया तब दोनों ओर बराबर मत आये जिस पर कमेटी के अध्यक्ष लार्ड मैकोले के अतिरिक्त

---

But they regarded the knowledge of English essential for a high order of education while the vernacular languages must be employed to teach the far larger classes who are ignorant of, or imperfectly acquainted with English"........."We look, therefore, to the English language and Vernacular of India together as the media for the diffusion of European Knowledge."

१. श्रीधरनाथ मुकर्जी—भारत में अंग्रेजी शिक्षा का इतिहास, वोरा एण्ड कम्पनी, १९४९, पृष्ठ २४।

२. इसमें बर्ड, साउन्डर्स, बुशबी, ट्रिवेलियन, जे० आर० कौलविन उल्लेखनीय हैं।

३. आप स्काटलैंड निवासी थे। भारत में १९ मार्च सन् १८१८ में आये थे। आपने सर्वप्रथम हिन्दी व्याकरण लिखा था। आपके द्वारा सन् १८२९ में दिया गया स्मरण-पत्र उल्लेखनीय है।

मत से आंग्ल भाषा देश की राज-भाषा और शिक्षा का माध्यम घोषित हुई। लार्ड मैकोले पर विवेचन करते हुए श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते हैं :—

भारत में अंग्रेजी के दौर-दौरे के साथ मैकाले का नाम अटूट सम्बन्ध से जुड़ा हुआ है ………… ……… उस समय की जनरल कमेटी के अध्यक्ष ने अपने अतिरिक्त मत से जो निर्णय दिया, वह अगले सौ वर्षों के लिए भारत के माथे पर मानो 'भाग्य की की रेखा' बन गयी।[1]

अंग्रेजी शिक्षा से तात्पर्य विशेषकर आधुनिक विज्ञान से माना जाता था।[2]

सन् १८३५ के शिक्षा सम्बन्धी विशेष आदेश[3] से पूर्व हिन्दी-प्रदेश में निम्नलिखित स्थलों पर स्कूल स्थापित किये जा चुके थे:—

१. आगरा।[4] ( सन् १८२३ )

---

१. इन्द्र विद्यावाचस्पति—भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त, सन् १९५६, पृ० २१०-११।

2. 'To be desirous of receiving what in India is frequently called an English Education—that is, Instructions in the Sciences of Modern Europe—is very different from a desire to learn English'—Selections from Educational Records, page 7'.

३. सात मार्च १८३५ को निश्चय हुआ 'हिज लार्डशिप' के मतानुसार भारतीय जनता में यूरोपीय साहित्य और विज्ञान की वृद्धि करना ब्रूटिश सरकार का महान् उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा के लिये जितना भी धन स्वीकृत हो वह केवल अंग्रेजी शिक्षा में ही खर्च होना अच्छा है। हाउस आव् लार्ड्स की सिलेक्ट कमेटी के सम्मुख गवाही देते हुए विलसन महोदय का भी बयान ऐसा ही था :—

It is the opinion of the Governor General that all funds which are available for the purpose of Education should be applied to the cultivation of English alone.—बी० डी० वसु द्वारा उद्धृत, पृष्ठ ६४-६५ ( भगवत दयाल, वही, पृष्ठ २१० )।

4. The Imperial Gazetteer of India, Vol. VI, 1886, page 473.

२. बनारस।[1] ( सन् १८१७ )

३. देहली।[2]

उक्त तीनों ही स्थानों पर अंग्रेजी की कक्षाएँ सम्मिलित थीं या उसकी पृथक् से व्यवस्था थी। सन् १८३३ से तो तीनों ही स्थानों पर अनिवार्य रूप से अंग्रेजी की कक्षाएँ जोड़ दी गईं।

## १. ४. २. अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार

सन् १८३५ के आदेश में निम्नलिखित चार बातें थीं[3] :—

१. यूरोपियन साहित्य और विज्ञान की शिक्षा भारतीयों को दी जाय।

२. प्राच्य शिक्षा के लिए कोई छात्रवृत्ति न दी जाय।

३. प्राच्य भाषा कार्य के लिए कोई धन न दिया जाय।

४. सारा स्वीकृत धन अंग्रेजी के निमित्त रहे।

प्रेस की स्वतन्त्रता, अंग्रेजी जानकार भारतीयों की उच्च पदों पर नियुक्ति, फ़ारसी के बदले अंग्रेजी का राजभाषा होना अंग्रेजी के विकास के प्रमुख कारण बन गये।

सन् १८२५ से १८३७ तक विभिन्न स्थलों पर आठ स्कूल खोले गये।[4] सन् १८३७ में स्थापित आगरा बुक सोसायटी द्वारा जो प्रकाशन प्रारम्भ हुए वे हिन्दी-प्रदेश के पहिले प्रकाशन थे। सोसायटी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से अंग्रेजी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।[5] इस सोसायटी द्वारा अंग्रेजी में भी साहित्य प्रकाशित किया गया। तत्कालीन इन सोसायटियों में कलकत्ता

---

१. जयनारायण घोषाल ने बनारस में इस स्कूल की स्थापना सन् १८१७ में की, बनारस गज़ेटियर, १६२२। आपने इस कार्य में मिशनरियों का भी सहयोग लिया। मेकब्रिज, सिकन्दरा, सन् १८४०, पृष्ठ १०७ तथा गज़ेटियर, वही।

२. वास्तव में प्रथम स्कूल की स्थापना देहली में कब हुई इसका ठीक पता नहीं लगता। डॉ० मिश्र, थीसिस, वही पृ० ६२ [सन् १८२५]; डॉ० शारदा वेदालंकार थीसिस, वही, पृ० १६८ [सन् १८२८] डॉ० वार्ष्णेय आधुनिक हिन्दी साहित्य १६५४, पृ० १२ [सन् १८३० के लगभग] द्रष्टव्य है।

३. डॉ० विश्वनाथ मिश्र, थीसिस, वही, पृ० ६०-६१।

४. इम्पीरियल गज़ेटीयर, भाग १, सन १६०८, पृ० १३०।

५. उदाहरणार्थ हिन्दी प्राइमर, हिन्दी स्पेलिंग बुक, ज़मीदारी एकाउन्ट्स।

और बनारस की बुक सोसायटी उल्लेखनीय हैं। कलकत्ता स्कूल बुक सोसायटी यूरोपीय मिशनरियों, हिन्दुओं और मुसलमानों का मानो सङ्गम थी। बनारस [ १८३३ ] से आदम साहब द्वारा प्रकाशित गणित प्रकाश, तीन भाग, इस प्रकार की पहली ही पुस्तक थी। तत्कालीन अंग्रेजी-विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर डॉ० शारदा वेदालंकार ने निम्नलिखित टिप्पणी दी है[1] :—

"अंग्रेजी विभाग के प्रकाशनों के विषय में दो-चार शब्द कहा जाय तो असङ्गत नहीं होगा। अंग्रेजी में बहुत सी रचनाएँ छापी गयीं। ऐसा जान पड़ता है कि बाद में शिक्षा का माध्यम बनने वाली अंग्रेजी की नींव बस इसी समय डाली गयी थी। यूरोपियन, क्रिश्चियन और एंग्लोइण्डियन बच्चों के लिए प्रान्त में इने-गिने स्कूल चल रहे थे जिनमें अंग्रेजी माध्यम का व्यवहार था। हिन्दू कालेज के लिए सभी आवश्यक पाठ्यपुस्तकें सोसायटी के अंग्रेजी-विभाग द्वारा दी जाती थीं और उनमें से कुछ यूरोप से भी मँगवाई जाती थीं क्योंकि स्कूल के लिए उपयुक्त पुस्तकें बहुत कम मिलती थीं।"

सन् १८४३ से शिक्षा की बागडोर केन्द्रीय सरकार से प्रान्तीय सरकार के हाथ में आ गई।[2] इस समय तक इलाहाबाद, मेरठ और बरेली में हाइ स्कूलों की स्थापना की जा चुकी थी। पहला इञ्जीनियरिङ्ग कालेज रुड़की में सन् १८४७ में खोला गया।

इस समय कुछ सरकारी पदाधिकरियों को छोड़कर यूरोपियनों की संख्या नगण्य थी।[3] सन् १८६१ से १८६५ तक कुछ तहसीली स्कूल भी खुले जिनमें अंग्रेजी शिक्षा दी जाती थी।

---

१. डॉ० शारदा वेदालंकार, थीसिस, वही, पृ० १६२।

२. यह उस समय उत्तर-पश्चिमी प्रान्त कहलाता था, और आगरा इसकी राजधानी थी। श्री थामसन महोदय जो भारत में सन् १८२२ में आये थे, सन् १८३७ में सरकार द्वारा इस क्षेत्र के सचिव नियुक्त किये गये। आप ही इस प्रान्त के प्रथम लेफ्टीनेन्ट गवर्नर नियुक्त हुए थे। यह आदेश सुप्रीम-कोर्ट के ( २६ अप्रैल सन् १८४० ) द्वारा जारी किया गया। ऐसा ही उल्लेख इम्पीरियल गज़ेटियर, भाग १, सन् १६०८, पृ० १३० में भी है।

३. उस समय तक 'अंग्रेजी की स्थिति' का ज्ञान प्राप्त करने के लिए थामसन

इस समय तक दूसरी ओर ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त हिन्दुओं को अन्य हिन्दुओं से भिन्न समझा जाने लगा था।[1] इस नवीन प्रान्त में शिक्षा संस्थाओं की संख्या इस प्रकार थी[2] :—

---

महोदय का यह कथन—रिव्यू आव पब्लिक इन्स्ट्रक्शन सन् १८३६-४१, पृ० १८ पठनीय है :—

"There are here very few European residents, except the functionaries of Government. There is no wealthy body of European merchants transacting their business in the English Language and according to the English method. There is no Supreme Court where justice is administered in English, no English Bar or Attorneys, no European Sea-borne commerce, with its shipping and English sailors and constant influx of foreign articles and commodities even in the Public Service,the posts are very few in which knowledge of English Language is necessary for a discharge of their functions."—Selections from Educational Records, Part I, Chap. VI, page 228.

१. The Hindus who had received English education considered themselves to have escaped from the degrading supertitions of Hinduism. "Due to inception of English Education many of the tortuous practices displayed in the name of religion were being gradually abhored." G. W. Johnson, The Stranger of India, Vol. I, London, 1843, Page 190.

डॉ० वार्ष्णेय, आ० हिन्दी साहित्य की भूमिका, सन् १९५२, पृ० १३३।

२. Selections from Educational Records, Vol. I, Chap. VI, Page 228.

कालेज— ३ स्कूल— ६

इससे यह स्पष्ट प्रकट होता है कि अन्य प्रदेशों एवं प्रान्तों को देखते हुए इस क्षेत्र में अंग्रेजी के प्रति उत्साह कम था। ऐसा भी उल्लेख है कि अपरिचित भाषा अंग्रेजी का ठीक-ठीक ज्ञान होने से पूर्व ही निर्धनता के कारण विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन के लिए विद्यालयों से उठा लिया जाता था।[१]

प्रान्त के आठ जिलों में तहसीली स्कूल स्थापित किये गये—बरेली, शाहजहाँपुर, आगरा, मथुरा, मैनपुरी, अलीगढ़, फरुक्खाबाद, इटावा। इस प्रकार सन् १८५४ तक कुल हल्काबन्दी स्कूलों की संख्या अधिक न होते हुए भी उनमें १७००० विद्यार्थी पढ़ते थे,[२] जिनमें से अंग्रेजी पढ़ने वालों की संख्या नगण्य थी।

सन् १८५४ के चार्ल्स वुड डिस्पेच[३] का अंग्रेजी की शिक्षा पर विशेष प्रभाव पड़ा। इसने भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महान् क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। इसने यूरोपीय कला, विज्ञान, दर्शन और साहित्य का अंग्रेजी के माध्यम से भारत में प्रसार किया। आगे चलकर सन् १८५७ में भारत में सर्वप्रथम तीन विश्वविद्यालय स्थापित किये गये—कलकत्ता, मद्रास, बम्बई—और इनमें से कलकत्ता विश्वविद्यालय का सम्बन्ध ही हिन्दी-प्रदेश के बनारस, आगरा, बरेली के कालेजों से था। देहली कालेज तो सन् १८५७ में बन्द कर दिया गया था।

बाद में लखनऊ, इलाहाबाद तथा अलीगढ़ में स्कूलों की स्थापना हुई जो कालान्तर में चलकर विश्वविद्यालय के रूप में बदल दिये गये—

---

१. Selections from Educational Records, Vol. I, Chap. VI, Page 228.

२. Selections from Educational Records, Vol. I, Chap. VI, Page 230-31.

३. कोर्ट आफ डाइरेक्टर आव् ईस्ट इण्डिया कम्पनी, सं० ४६, दि० १६७-१८५४ तथा वही, ३६४ धाराएँ ७, ११, १३, १४ अंग्रेजी से सम्बन्धित एवं उल्लेखनीय हैं।

सन् १८६४ में कैनिङ्ग कालेज, लखनऊ ।
सन् १८७२ म्योर सेन्ट्रल कालेज, इलाहाबाद ।
सन् १८७५ मोहम्मडन एंग्लो ओरिएन्टल, कालेज अलीगढ़ ।

सन् १८७७ में आगरा और अवध, दोनों प्रान्तों को जोड़ दिया गया। सन् १८८२-८३ में एक कमीशन की स्थापना हुई जिसने अबतक की प्रगति का सिंहावलोकन किया। डॉ० मिश्र ने[1] हंटर रिपोर्ट के आधार पर विभिन्न भाषाओं के पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या निम्न दी है :—

| अंग्रेजी | उर्दू | हिन्दी |
|---|---|---|
| १४२३ | १०१५ | ७३६ |

सन् १८८१-८२ में स्कूलों की संख्या अधिक हो चुकी थी। इस समय के कुछ और आँकड़े भी द्रष्टव्य हैं[2] :—

| | सन् १८७८ | सन् १८८२ ८३ |
|---|---|---|
| पुस्तकों की कुल संख्या | ४६१३ | ६१६८ |
| अंग्रेजी या योरोपीय भाषाओं की पुस्तकें | ५७६ | ६५५ |
| अन्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकें | ३१४८ | ४२०८ |

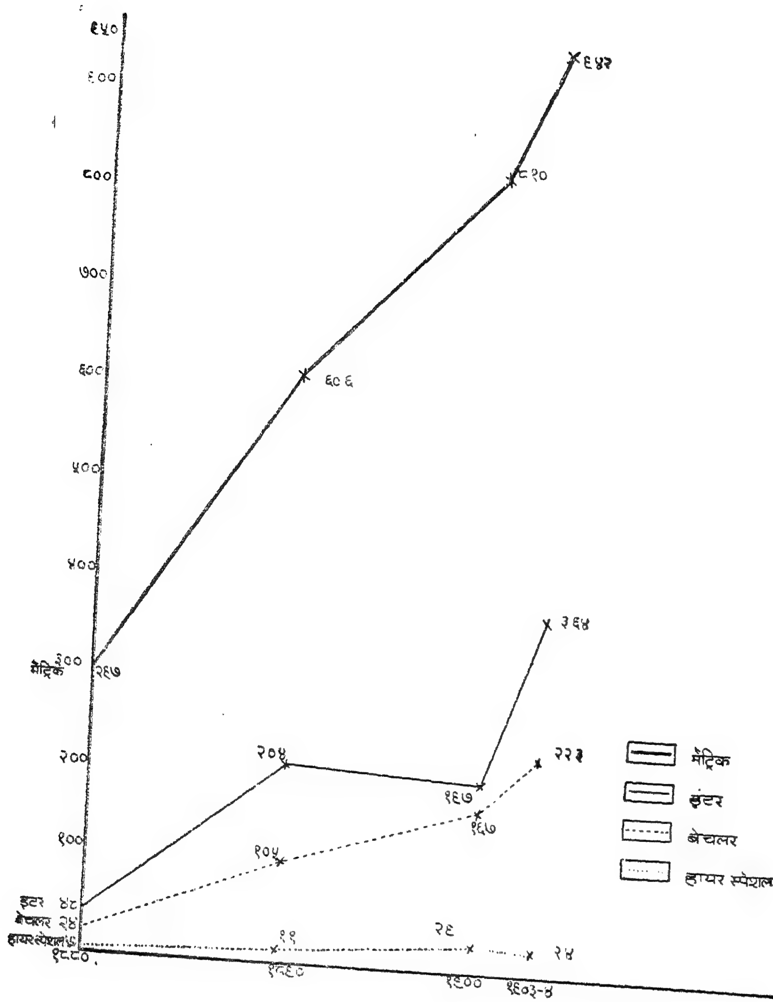
सन् १८८१ में हिन्दी-प्रदेश में अंग्रेजों की संख्या निम्न थी :—[3]

| पंजाब | उत्तर पश्चिमी प्रान्त और अवध | मध्य प्रान्त |
|---|---|---|
| १७५६० | २०१८४ | २७७४ |

गजेटियर भाग १ में कुछ और उल्लेखनीय आँकड़े हैं:—[4]

| परीक्षा | १८८०-८१ | १८६०-६१ | १६००-१ | १६०३-४ |
|---|---|---|---|---|
| मैट्रीक्यूलेशन | २६७ | ६०६ | ८१० | ६४२ |
| इण्टरमीडिएट | ४८ | २०४ | १६७ | ३६४ |
| आर्डीनरी बेचलर डिग्री | २४ | १०५ | १६७ | २२३ |
| हायर-स्पेशल डिग्री | ७ | ११ | २६ | २४ |

१. डॉ० विश्वनाथ मिश्र, थीसिस, वही (अप्रकाशित) पृष्ठ ६२।
२. इम्पीरियल गज़ेटियर, भाग ६, सन् १८८६, पृष्ठ ४८१।
३. इम्पीरियल गज़ेटियर, भाग ६, सन् १८८६, पृष्ठ ६६५।
४. इम्पीरियल गज़ेटियर, भाग १, सन् १६०८, पृष्ठ १३३।



९५०
९००
८००
७००
६००
५००
४००
३००
२००
१००
मैट्रिक
इटर ४८
बेचलर २४
हायरस्पेशल ६
९४२
८९०
६०६
२९७
३६४
२०५
१९७
२२३
१०५
१९७
११
२६
२४
१८८०
१८९०
१९००
१९०३-४
मैट्रिक
इंटर
बेचलर
हायर स्पेशल

हिन्दी-प्रदेश में प्रथम- विश्वविद्यालय का श्रीगणेश इलाहाबाद में सन् १८८७ में हुआ और प्रदेश के सभी कालेज इससे सम्बन्द्ध कर दिये गये। सन् १९०१ की जनगणना के आधार पर अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या केवल आगरा में ३,१९१ थी।[1] इस समय प्रदेश में २८ कालेज थे[2] जिनको निम्न-लिखित प्रकार से तीन भागों में बाँटा जा सकता है:—

| सरकारी | सरकारी सहायता प्राप्त | बिना सरकारी सहायता प्राप्त |
|---|---|---|
| इलाहबाद | लखनऊ-केनिंग तथा वोमेन | आगरा सेन्ट जान्स कॉलेज |
| बनारस | आगरा | लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज |
| | अलीगढ़ | बनारस हिन्दू कॉलेज |
| | बरेली | |
| | गोरखपुर | |
| | कानपुर | |
| | मेरठ | |

सन् १९०२ में इण्डियन यूनिवर्सिटी कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में अंग्रेजी के गिरते हुए स्टैण्डर्ड[3] की ओर ध्यान आकृष्ट किया, जिसके फलस्वरूप सन् १९०४ में राजकीय आदेश में यह स्पष्ट किया गया कि अंग्रेजी का प्रारम्भिक (प्रायमरी) शिक्षा में कोई स्थान नहीं है और न होना चाहिये[4]।

---

१. आगरा गज़ेटियर, भाग ८७, सन् १९२१, पृष्ठ ८३।

२. इम्पीरियल गज़ेटियर, भाग १, पृ० १३२।

३. Students after matriculation are found to be unable to understand lectures in English when they join a college *** the Study of English should not be promoted to begin till a boy can be expected to understand what is being taught in that language. 'Bhagwat Dayal, The Development of Modern Indian Education.

४. वही, पृ० २४२ "English has no place and should have no place in the scheme of primary Education."

इसके बाद तो अंग्रेजी शिक्षा का क्रमशः विकास ही होता गया। आगे चलकर इलाहाबाद, बनारस, लखनऊ, अलीगढ़, आगरा, पटना, बिहार, सागर, जबलपुर, विक्रम, देहली, राजस्थान, गोरखपुर, रुड़की आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्थापित हो गये। हिन्दी-प्रदेश में स्थापित विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, देहली, अजमेर आदि स्थानों पर माध्यमिक शिक्षा के लिये बोर्ड भी बने हुए हैं जिसके फलस्वरूप अंग्रेजी[1] का पठन-पाठन द्रुतगति से होता रहा।

सन् १९५१ की जनगणना के आधार पर हिन्दी-प्रदेश में अंग्रेजी की संख्या निम्नलिखित[2] है:—

| प्रदेश | जनसंख्या | अंग्रेजी साक्षर |
|---|---|---|
| उत्तरप्रदेश | ६,३२,१५,७४२ | ५,१८,३२६ |
| बिहार | ४,०२,२५,९४७ | २,६३,६२५ |
| मध्यप्रदेश | २,१२,४७,५३३ | १,४१,१८५ |
| पञ्जाब | १,२६,४१,२०५ | ३,२४,८१५ |
| राजस्थान | १,५२,९०,७९७ | ६८,३११ |
| दिल्ली | १७,४४,०७२ | १,६२,६७८ |
| हिमाचलप्रदेश | ११,०९,४६६ | ६,७७६ |
| योग | १५,५४,७४,७६२ | १४,८५,७५६<br>प्रतिशत १ से भी कम |

१. संसार में अंग्रेजी भाषा-भाषी लगभग २५ करोड़ हैं और उसके समझने वाले ५० करोड़।
Stuart Chase—Power of Words,phoenix House Ltd. 1955, page 5.

२. Report of the official language Commission, 1956 page 468-69.

## १. ४. ३. ईसाईयों द्वारा शिक्षा का प्रसार

सर्वप्रथम सन् १६२० में आगरे में एक जेस्यूट कालेज की स्थापना हुई ।[१] उत्तर भारत में कलकत्ता और श्रीरामपुर के बाद आगरा तथा बनारस दो प्रमुख केन्द्र रहे । हिन्दी-प्रदेश में ईसाईयों द्वारा एक और स्कूल सन् १८१८ में आगरे में स्थापित किया गया ।[२] इसी के साथ ३४-३५ मील दूर स्थित मथुरा में [१८५५ ई०] भी एक स्कूल की स्थापना की गई । साथ ह मिशनरियों ने बड़े उत्साह से सन् १८४२ तक १० गाँवों में स्कूलों की स्थापना की जिनमें से बहुत से आगे चलकर उपयुक्त शिक्षकों के अभाव में बन्द हो गये ।[३] तथापि आगरा-मथुरा के साथ मेरठ में भी स्कूल की स्थापना की गई । इस समय आगरा उत्तर भारत का एक विशाल केन्द्र[४] था और सभी स्कूल इसी से सम्बन्ध थे । सिकन्दरा में स्थापित इस प्रथम स्कूल में सन् १८५३ तक २० अनाथ बालक और ३० अन्य विद्यार्थी थे तथा बालिकाओं के विद्यालय में ११ अनाथ बालिकाएँ और २० अन्य बालिकाएँ थीं ।[५]

हिन्दी-प्रदेश का अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति एवं शिक्षा का विशाल केन्द्र ईसाईयों द्वारा स्थापित सेन्ट जान्स कॉलेज आगरा था, जिसकी स्थापना सन् १८५० में चर्च मिशनरी सोसायटी द्वारा हुई । इस समय तक केवल आगरा में २०० ईसाईयों द्वारा प्रचार-कार्य में सहायता की जाती थी । सेन्ट जान्स कॉलेज की स्थापना में यह उद्देश्य निहित था कि भविष्य में यह एक विशाल शिक्षा केन्द्र में परिवर्तित हो जावेगा जिसके द्वारा ईसाई-सभ्यता का प्रचार सम्भव हो सकेगा ।[६] मैट्रीक्यूलेशन की प्रथम परीक्षा सन् १८६१ में

---

१. Summary of Important Dates, Indian Antiquary, Vol. XXXII, Page 23.

२. मेकब्रिज, सिकन्दरा (१८४०-१९४०) सन् १९४०, पृष्ठ ९ । आगे चलकर पृष्ठ ६ पर यह सन्देह प्रकट किया गया है कि इस सम्बन्ध में वस्तुतः मतभेद है कि स्कूल की स्थापना सन् १८१८ में हुई अथवा सन् १८२१ में ।

३. मेकब्रिज, सिकन्दरा, पृष्ठ ३६ ।

४. वही, सिकन्दरा, पृष्ठ ५४ सी० एम० एस०, पृष्ठ १६८, भाग २ ।

५. वही, सिकन्दरा, पृष्ठ ५६ ।

६. हिस्ट्री सेन्ट जान्स कॉलेज (१८५०-१९३०) सन् १९३२, पृ० ६-७ ।

## १. ४. ३. ईसाईयों द्वारा शिक्षा का प्रसार

सर्वप्रथम सन् १६२० में आगरे में एक जेस्यूट कालेज की स्थापना हुई।[१] उत्तर भारत में कलकत्ता और श्रीरामपुर के बाद आगरा तथा बनारस दो प्रमुख केन्द्र रहे। हिन्दी-प्रदेश में ईसाईयों द्वारा एक और स्कूल सन् १८१८ में आगरे में स्थापित किया गया।[२] इसी के साथ ३४-३५ मील दूर स्थित मथुरा में [१८५५ ई०] भी एक स्कूल की स्थापना की गई। साथ ह मिशनरियों ने बड़े उत्साह से सन् १८४२ तक १० गाँवों में स्कूलों की स्थापना की जिनमें से बहुत से आगे चलकर उपयुक्त शिक्षकों के अभाव में बन्द हो गये।[३] तथापि आगरा-मथुरा के साथ मेरठ में भी स्कूल की स्थापना की गई। उस समय आगरा उत्तर भारत का एक विशाल केन्द्र[४] था और सभी स्कूल इसी से सम्बन्ध थे। सिकन्दरा में स्थापित इस प्रथम स्कूल में सन् १८५३ तक २० अनाथ बालक और ३० अन्य विद्यार्थी थे तथा बालिकाओं के विद्यालय में ११ अनाथ बालिकाएँ और २० अन्य बालिकाएँ थीं।[५]

हिन्दी-प्रदेश का अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति एवं शिक्षा का विशाल केन्द्र ईसाईयों द्वारा स्थापित सेन्ट जान्स कॉलेज आगरा था, जिसकी स्थापना सन् १८५० में चर्च मिशनरी सोसायटी द्वारा हुई। इस समय तक केवल आगरा में २०० ईसाईयों द्वारा प्रचार-कार्य में सहायता की जाती थी। सेन्ट जान्स कॉलेज की स्थापना में यह उद्देश्य निहित था कि भविष्य में यह एक विशाल शिक्षा केन्द्र में परिवर्तित हो जावेगा जिसके द्वारा ईसाई-सभ्यता का प्रचार सम्भव हो सकेगा।[६] मैट्रीक्यूलेशन की प्रथम परीक्षा सन् १८६१ में

---

१. Summary of Important Dates, Indian Antiquary, Vol. XXXII, Page 23.

२. मेकब्रिज, सिकन्दरा (१८४०-१९४०) सन् १९४०, पृष्ठ ५। आगे चलकर पृष्ठ ६ पर यह सन्देह प्रकट किया गया है कि इस सम्बन्ध में वस्तुतः मतभेद है कि स्कूल की स्थापना सन् १८१८ में हुई अथवा सन् १८२१ में।

३. मेकब्रिज, सिकन्दरा, पृष्ठ ३६।

४. वही, सिकन्दरा, पृष्ठ ५४ सी० एम० एस०, पृष्ठ १६८, भाग १।

५. वही, सिकन्दरा, पृष्ठ ५६।

६. हिस्ट्री सेन्ट जान्स कॉलेज (१८५०-१९३०) सन् १९३२, पृ० ६-७।

हुई। सन् १८६६ तक इसमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार थी[1]—

| सन् | क्रिश्चियन | मुसलमान | हिन्दू | योग |
|---|---|---|---|---|
| १८५५ | २० | २० | २१० | २५० |
| १८६० | ३९ | ५५ | २३१ | ३२५ |
| १८६३ | ३९ | ४२ | ११३ | १९४ |
| १८६६ | ४७ | ९२ | २४३ | ३८२ |

सन् १८५४ में बनारस में एक कान्फ्रेन्स हुई जिससे ईसाई-आन्दोलन को विशेष प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। बनारस में नार्मल स्कूल की भी स्थापना हुई। इस समय तक शिक्षा का विशेष भार मिशनरियों पर ही था। दो स्कूल और एक कालेज को छोड़कर सारी शिक्षा मिशनरियों द्वारा ही दी जाती थी।[2]

इन दो केन्द्रों के बाद मथुरा और मेरठ में स्कूल चलाए गये जिनका उल्लेख हो चुका है। तत्पश्चात् गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ़, जौनपुर, लखनऊ आदि स्थानों पर भी मिशनरियों द्वारा स्कूल खोले गये।

अमेरिकन मिशनरी द्वारा इलाहाबाद में क्रिश्चियन कॉलेज और कानपुर में क्राइस्ट चर्च कॉलेज की स्थापना किया जाना भी उल्लेखनीय है।

मिशनरियों ने देश की भाषाओं और अंग्रेजी को समान रूप से प्रश्रय दिया। वह देश की भाषाओं के द्वारा बाइबिल की शिक्षा का सन्देश जनता तकपहुँचाते थे और अंग्रेजी के माध्यम से पश्चिमी ज्ञान का भंडार।[3]

---

१. हिस्ट्री सेन्ट जान्स कॉलेज, पृष्ठ १८३।

२. Imperial Gazetteer, Vol. I, 1908, Page 131.

३. "It was ernestly expected that in time of this new college would become the centre of a strong educational and influence which would do much to purify public morals and raise the general moral tone of the educated classes. It was ernestly expected that in liberal education through the medium of Christian Culture and the English Language with the usual curricular of western Universities, and given in a distinctly Christian atmosphere would produce a new and higher moral type of

### १. ४. ४. अन्य व्यक्तियों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा अंग्रेजी शिक्षा को प्रोत्साहन

कुछ व्यक्तियों ने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रुचि ली और उन्होंने विभिन्न स्थलों पर स्कूल खोले, जिनमें से बनारस के जयनारायण जी और आगरे के पं० गंगाधर का नाम उल्लेखनीय है। देहली, लखनऊ, इलाहाबाद तथा अलीगढ़ में भी व्यक्तिगत प्रयत्नों के फलस्वरूप ही स्कूल स्थापित हुए।

सन् १८७५ में स्थापित आर्यसमाज ने स्कूलों की स्थापना और सामाजिक जागृति में विशेष योग दिया। कानपुर, अलीगढ़, देहरादून, आगरा, आदि लगभग सभी जिलों में आर्यसमाज ने स्कूलों की स्थापना की। इसके साथ ही सनातन धर्म ने भी कई स्थलों पर स्कूलों की स्थापना की। कायस्थ सभा द्वारा भी अलीगढ़, इलाहाबाद आदि स्थानों पर कायस्थ पाठशालाएँ स्थापित की गयी। अग्रवाल जाति, जाट जाति तथा अन्य जातियों द्वारा भी विभिन्न स्थानों पर अनेक स्कूल स्थापित किये गये।

फिर तो सारे हिन्दी-प्रदेश में स्कूलों का ताँता-सा लग गया। इस प्रकार हिन्दी-प्रदेश की शिक्षा के प्रारम्भिक विकास का सिंहावलोकन किया गया जिसके द्वारा हिन्दी-प्रदेश की जनता अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से अंग्रेजी भाषा, सभ्यता, संस्कृति एवं विचारधारा के सम्पर्क में आयी और उसके माध्यम से हिन्दी भाषा और साहित्य को नवीन प्रेरणा और दिशाएँ प्राप्त हुईं।

## १. ४. प्रेस और पत्रकारिता का विकास

यह अवश्य एक आश्चर्य की बात है कि हिन्दी पत्रकार-कला का विकास हिन्दी प्रदेश में नहीं वरन् बंगाल में उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ।[1] पहले-पहल

---

character. It was part of the intention of original founder of the College that it should be a centre of higher education." History of St. Johns College, Page, 27 तथा Imperial Gazetteer, Vol. VI, 1886, Page 473.

१. डॉ० वार्ष्णेय—हि० सा० की भूमिका, सन् १९४२, पृष्ठ ४८७।

सन् १८१८ ई० में बंगला और हिन्दी भाषा में 'दिग्दर्शन' नाम से मासिक पत्र निकले। दोनों पत्रों के सम्पादक बैपटिस्ट मिशनरी जोशुआ मार्शमैन थे। दूसरा पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था जिसका प्रकाशन कलकत्ते से सन् १८२६ में हुआ। श्री जुगलकिशोर शुक्ल इसके प्रमुख-कार्यकर्त्ता थे। ४ दिसम्बर सन् १८२७ को इसका अन्तिम अङ्क प्रकाशित हुआ।[1] तत्कालीन पत्रों पर विवेचन प्रस्तुत करते हुए डा० वार्ष्णेय लिखते हैं[2] :—

"इसमें उर्दू शैली का वाक्य-विन्यास भी यत्र-तत्र मिल ही जाता है। साथ ही कौंसिल, कप्तान, गेजेट, एक्टिंग, जेनेरल, लार्ड, इंडिया, नोटिस, गवर्नर, कंपनी, लाइसंस, गवर्नमेंट आदि अंग्रेजी शब्दों तथा अंग्रेजी महीने के नामों का प्रयोग दो जातियों के बढ़ते हुए सम्पर्क का द्योतक है। कहीं-कहीं तो पूरा वाक्य अंग्रेजी में लिखा हुआ मिलता है अथवा बीच-बीच में रोमन लिपि में लिखे हुए अंग्रेजी शब्द मिलते हैं।"

इसमें सन्देह नहीं कि इसका विकास बंगाल में हुआ पर निस्सन्देह उसकी स्थापना इससे पूर्व ही आगरा में हो चुकी थी। सन् १८२४ में तो श्री लल्लूजी लाल ही कलकत्ता छोड़कर आगरा आ गये थे। मिशनरियों के प्रयत्न से सिकन्दरा में सन् १८४० में प्रेस की स्थापना की गई।[3] यह प्रेस बड़ी तेजी से बढ़ता गया और अपने लाभ में से काफी धन यह आगरा और मथुरा के स्कूलों को भेजने लगा था। तत्कालीन उ० प० प्रान्तीय सरकार द्वारा इसको प्रश्रय दिया गया। आगरा गवर्नमेंण्ट गजट तथा सदर जिला रिपोर्ट यहीं छपती थी। इस प्रेस से ही सर्वप्रथम पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन हुआ। प्रेस इतना अधिक सम्पन्न था कि उस समय की लागत एक लाख रुपया आँकी गयी थी।[4] खेद है कि सन् १८५७ ई० में इसका पूर्णतः विनाश हो गया।

इसी प्रेस से 'आगरा जर्नल' नामक पत्र भी प्रकाशित हुआ था।[5] मिशनरियों के प्रयत्न से सन् १८६२ में 'सिकन्दरा मेसेंजर' पत्र भी प्रकाशित

१. अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी—हिन्दी पत्रकारिता का विकास, लखनऊ, आकाशवाणी से प्रसारित वार्ता, सारंग, वर्ष २६, अङ्क ६।
२. डॉ० वार्ष्णेय—हि० सा० की भूमिका, सन् १९५२, पृ० ४६९।
३. सिकन्दरा, सन् (१८४०-१८५०), सन् १९४०, पृष्ठ २२।
४. सिकन्दरा, सन् (१८४०-१८५०), सन् १९४०, पृष्ठ २३ व २५।
५. वही, (१८४०-१८५०) पृ० २३ तथा डॉ०, मिश्र, थीसिस, पृष्ठ ८७।

हुआ जिसका ध्येय ईसाई-ज्ञान का प्रसार करना था। ईसाई ज्ञान के प्रसार के साथ-साथ ईसाई धर्म का प्रचार और सामाजिक सुधार करना भी इसका उद्देश्य था। दूसरा अंग्रेजी पत्र 'द केरीयर डोव' था। इसके अतिरिक्त उर्दू में 'खैर ख्वाह इ खलक' और हिन्दी में 'लोकमित्र' का प्रकाशन भी हुआ।[1]

मिशनरियों द्वारा आगरा तथा सिकन्दरा के अतिरिक्त इलाहाबाद, बनारस तथा फरुखाबाद में प्रेसों की स्थापना भी की गई।

अंग्रेजी में पहला समाचार-पत्र 'दि वीकली न्यूज' सन् १६२२ में निकला और सन् १७८० में प्रकाशित 'दि बंगाली गज़ट' में भी हिन्दोस्तानी का भाग रहता था। साथ ही २३, मई १८१८ में सिरामपुर से 'समाचार-दर्पण' नामक पत्र के प्रकाशित होने का भी उल्लेख मिलता है।[2] इसी समय और इसी स्थान से एक दूसरे पत्र के प्रकाशन का भी उल्लेख प्राप्त होता है, वह है 'दिग्दर्शन'[3] तथा 'समाचार-दर्पण'। हिन्दुस्तानियों द्वारा निकाले गये पत्रों में 'सम्वाद कौमुदी' ( सन् १८२१ ) उल्लेखनीय है। यह सब होते हुए भी इसमें सन्देह नहीं कि किसी भारतीय द्वारा हिन्दी का पहला प्रकाशित पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' ही है।

हिन्दी क्षेत्र में राजा लक्ष्मणसिंह द्वारा सन् १८५५ में 'प्रजा हितैषी' पत्र का प्रकाशन हुआ।[4] इसी समय 'हिन्दी समाचार सुधा-वर्षण' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।[5] इससे भी पूर्व सन् १८३४ में 'प्रजामित्र' और शिवप्रसाद जी द्वारा 'बनारस अखबार' सन् १८४५ में प्रकाशित हो चुके थे। काशी से ही एक और पत्र सन् १८५० में बंगला और हिन्दी में 'सुधाकर' नाम से तारामोहन मैत्र ने निकाला। प्रेस के माध्यम से भी देश में अंग्रेजी सभ्यता और शिक्षा का विकास हुआ। देश में पत्रों द्वारा जीवन का सञ्चार हुआ, जिस के

---

१. सिकन्दरा, सन् १८४०-१८५०, सन् १६४०, पृ० १०५।

२. ओंकारप्रसाद भटनागर—कम्पनी सरकार के जमाने में समाचार पत्र, हिन्दुस्तानी, भाग ६, अंक ४, पृष्ठ ३४४ तथा ३४६।

३. रोलेण्ड ई० वोल्सेली जर्नलिज़्म ई० मॉडर्न इण्डिया, सन् १६५४, पृ० २१।

४. श्री पं० हरिशंकर शर्मा जी के भाषण से दि० २४-१-१६५८।

५. टिप्पणी संख्या ६, पृष्ठ २२।

फलस्वरूप धार्मिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विचारधाराओं का विकास हो सका।

सन् १८३५ में लार्ड विलियम बैंटिक के पश्चात् चार्ल्स मैटकाफ ने सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया कि समाचारपत्रों पर जो अनेक कानूनी प्रतिबन्ध लगे हुए थे, उन्हें एक आदेश के द्वारा हटा दिया। अब तक जो समाचार-पत्र निकलते थे, उनका सञ्चालन अंग्रेज ही करते थे। अभीतक भारतीय पत्रों का विकास नहीं हुआ था। इस कारण समाचारपत्रों की स्वाधीनता से विशेष लाभ हिन्दी समाचारपत्रों को नहीं हुआ।[1] सन् १८६८ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'कविवचन सुधा' मासिक पत्रिका निकाली, फिर तो पत्रों की संख्या बढ़ती ही गई। अग्रणी दैनिक 'भारत मित्र' मार्च १९१२ में निकला। सन् १९५० में प्रकाशित दैनिक समाचारपत्रों का दिग्दर्शन कर लेना भी उचित होगा।[2]

| प्रदेश | अंग्रेजी | हिन्दी |
|---|---|---|
| बिहार | ३ | ४ |
| देहली | ५ | ६ |
| मध्य प्रदेश | २ | ४ |
| उत्तर प्रदेश | ५ | १५ |
| मध्य भारत | — | ३ |
| भोपाल | — | — |
| राजस्थान | — | ५ |
| योग | १५ | ३७ |

इससे अंग्रेजी तथा हिन्दी के समाचारपत्रों की तुलनात्मक स्थिति स्पष्ट परिलक्षित हो जाती है। यह स्थिति और भी अधिक निम्नलिखित आँकड़ों से स्पष्ट होगी :—

| पत्र-कोटि | अंग्रेजी | हिन्दी |
|---|---|---|
| दैनिक | ७१ | ११४ |

१. इन्द्र विद्यावाचस्पति – भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अन्त, सन् १९२६, पृष्ठ : २१४।

२. टिप्पणी, संख्या ९, पृष्ठ २८।

| | | |
|---|---|---|
| अर्द्ध साप्ताहिक | ७ | १० |
| साप्ताहिक | २१४ | ५०० |
| पाक्षिक | १६६ | १२३ |
| मासिक | ६५२ | ६१२ |
| त्रैमासिक | ३६८ | ६७ |
| वार्षिक | ८४ | १३ |

उपर्युक्त आँकड़े ३१ दिसम्बर, १६५६ तक की रिपोर्ट पर आधारित हैं।

## १. ६ भाषा में आगत-शब्द

१. ६. ०. 'आगत-शब्द' उधार लिये हुए शब्द के अर्थ में अंग्रेजी के 'लोनवर्ड्स' का हिन्दी पर्यायवाची है। हिन्दी में इसके लिए 'उद्धृत-शब्द' का भी व्यवहार होता है।[1] कुछ भाषा वैज्ञानिकों ने 'लोन' शब्द के स्थान पर 'बारोइंग' शब्द का भी प्रयोग किया है। 'उद्धृत-शब्द' का अर्थ है, वह शब्द जो अन्य स्थान से ज्यों का त्यों लिया गया है।[2] 'लोन' शब्द का शाब्दिक अर्थ है—उधार ली हुई वस्तु, विशेषतः धन जो व्याज सहित अथवा बिना व्याज के लौटाया जाय।[3] इस प्रकार इस शब्द के मूल में लौटा देने का भाव है। पर भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में प्रयुक्त इस शब्द के शाब्दिक अर्थ में अन्तर हो गया। 'लोन' शब्द में दो भाव निहित हैं—लेना और वापिस लौटाना, लेकिन भाषा-विज्ञान या भाषा-तत्त्व के क्षेत्र में व्यावहारिक रूप में इसका प्रथम रूप ही मान्य है, लौटाने वाली क्रिया से इसका कोई सम्बन्ध नहीं रहा। वस्तुतः देखा जाय तो हिन्दी में प्रयुक्त शब्द 'उद्धृत' मूल रूप में 'लोन' का पर्यायवाची न होते हुए भी व्यावहारिक रूप में शुद्ध एवं उपयुक्त प्रतीत होता है, क्योंकि 'उद्धृत' में केवल लेने का ही भाव निहित है, जिससे लिया

---

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सं० १६४६, पृ० ३१८, ३३१।

२. रामचन्द्र वर्मा—संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर, सं० १६६६, पृष्ठ १४३।

३. The Concise Oxford Dictionary, IV Edition, Page 699.

है उसे फिर से वापिस लौटाने की ओर इसमें लेशमात्र भी निर्देश नहीं। 'उद्धृत' में ज्यों का त्यों ले लेने का भाव है, अतएव यह भी शब्द ठीक प्रतीत नहीं होता। यस्पर्सन महोदय का मत है कि इस भाव के लिए 'लोन' शब्द वस्तुतः उपयुक्त नहीं है, फिर भी सुविधाजनक और बहुप्रयुक्त है।[१] भाषा-विज्ञान के क्षेत्र में 'उद्धृत शब्द' का केवल अर्थ है —अनुकरण।[२] हिन्दी में तो भाषा-वैज्ञानिकों ने इस प्रकार के शब्दों के लिए 'विदेशी' शब्द का ही प्रयोग किया है, किसी प्रकार के पारिभाषिक शब्द का नहीं। डॉ० बाहरी ने ऐसे शब्दों को 'आयात शब्द' माना है।[3]

भाषा-वैज्ञानिक शब्दकोष में 'लोन' के साथ उद्धृत शब्द के लिए बॉरोड ( Borrowed ) शब्द की व्याख्या की गई है। ये वे शब्द हैं, जो किसी अन्य भाषा से लिये गये हैं। उनके रूप में परिवर्तन भी हो सकता है।[४] किसी भी अन्य भाषा से लिया गया शब्द 'लोन' शब्द है।[५] इस प्रकार 'पेई' की परिभाषा से एक और स्पष्टीकरण हुआ। प्रथमतः तो यह शब्द मूलरूप से किसी विदेशी भाषा का होना चाहिए और फिर यह आवश्यक नहीं, कि वे तत्सम रूप में ही उद्धृत हों, उनमें परिवर्तन भी हो सकता है। इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध भाषावैज्ञानिक ग्लीसन महोदय के विचारों की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है, वे 'बॉरोइंग' को किसी दूसरी भाषा के वक्ता के भाषण से लिए

---

१. Jespersen-Language, Its Nature, Development and Origin, George Allen and Unwin, London, 1954, Page 208-9

२. Jespersen-Language, Its Nature, Development and Origin, George Allen and Unwin, London, 1954, Page 208-9

३. डॉ० हरदेव बाहरी —देशी शब्दतत्त्व— हिन्दी अनुशीलन, वर्ष ८, अङ्क ४, पृष्ठ १४७।

४. Pei, Mario A.— Linguistic Dictionary, Philosophical Library, New-York, 1954, Page 30.

५. Pei, Mario A.—Linguistic Dictionary, Philosophical Library, New-York, 1954, Page 125.

हुए शब्द का द्योतक मानते हैं। [1]इस प्रकार ग्लीसन महोदय की व्याख्या से एक और नवीन, साथ ही प्रमुख विचारणीय प्रश्न प्रस्तुत हो जाता है, कि इस प्रकार के शब्द किसी विदेशी भाषा के साहित्य के विभिन्न रूपों व कोशों के माध्यम से नहीं आते वरन् वे सीधे उस भाषा के वक्ता के भाषण से लिये जाते हैं और इस प्रकार उनका प्रयोग भी पहिले जनसाधारण मौखिक रूप से अपने प्रतिदिन के वार्त्तालाप में करता है और जब उनमें से कुछ शब्द बहुत अधिक प्रयुक्त होने लगते हैं तो उनका प्रयोग साहित्य में भी होने लगता है और ये शब्द विदेशी शब्द के नाम से अपने मूल (तत्सम) अथवा तद्भव रूप में कोश में भी सम्मिलित कर लिए जाते हैं। ये शब्द किसी न किसी रूप में एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवेश कर लेते हैं, अतएव इन शब्दों के लिए 'आगत शब्द' सम्यक् प्रतीत होता है। इस प्रकार उक्त विवरण के आधार पर निष्कर्ष रूप में हम निम्न परिभाषा बना सकते हैं :—

"आगत शब्द किसी दूसरी भाषा से लिए हुए वे शब्द होते हैं, जो उस भाषा के बोलने वालों के भाषण से लिये जाते हैं और उन शब्दों को मूल ( तत्सम ) रूप में भी ग्रहण किया जाता है और परिवर्तित ( तद्भव ) रूप में भी। संक्षेप में हम कह सकते हैं, कि 'आगत-शब्द' किसी दूसरी भाषा से लेकर हम अपने व्यवहार में लाते हैं[2]।"

१. ६. १. आगत-शब्द के लिए बहुप्रयुक्त 'लोन' व 'बारोड' शब्दों[3] के अतिरिक्त विभिन्न भाषा-तत्ववेत्ताओं ने कुछ अन्य शब्दों तथा पदों का प्रयोग

---

१. "Borrowing is just what its name implies—the copying of a linguistic item from speakers of another speech form," Variation in Speech, Gleason, H. A. Jr.—An Introduction of Descriptive Linguistics, Henry Holt & Co., 1956, Page 290.

२. Pike, K. L.—Phonemics, 1956, Page 242.

३. "One of the most fascinating branches of Philology is the study of borrowed word or loan words, as they are technically called." J. R. Firth—The Tongue of Men, Ist Edition, Page 99.

किया है । उनमें से कुछ विचारणीय हैं । हिन्दी में 'आगत' के स्थान पर गृहीत शब्द का प्रयोग किया जा सकता है ।

१. ६. १. १. पाचित आगत-शब्द (Assiomilated Loan) ।

१. ६. १. २. संकर शब्द (Hybrid) दो भिन्न भाषाओं के शब्दों का मिश्रण ।

१. ६. १. ३. संसृष्टि शब्द (Loan Blends) ।

१. ६. १. ४. ( उद्धृत ) शाब्दिक-अनुवाद ( Loan Translation ) ।

**१. ६. १. १. पाचित आगत शब्द**[1]

वे आगत शब्द इस कोटि में रक्खे जा सकते हैं, जो सम्पूर्ण रूप से किसी भाषा में प्राप्त ध्वनियों के अनुकूल बनकर व्यवहृत होते हैं । जैसे अंग्रेजी का 'टिकट'[2] शब्द ( Ticket ) जिसमें ' t ' अंग्रेजी की स्फोट वर्त्स्य ध्वनि है । पर हिन्दी में इस ध्वनि का अभाव होने के कारण 'ट' के स्थान पर मूर्धन्य 'ट्' प्रयुक्त किया जाता है ।

**१. ६. १. २. संकर शब्द**

वे मिश्र शब्द हैं, जिनमें किसी शब्द का केवल एक भाग ही 'उद्धृत' होता है और शेष भाग अपनी भाषा का होता है । उदाहरण रूप में हम अग्नि-बोट ( Agun Boat ) शब्द ले सकते हैं, जिसका प्रयोग स्टीमर के अर्थ में किया जाता है । यह स्पष्ट ही है, कि इसका प्रथम भाग 'अग्नि' संस्कृत शब्द है और द्वितीय ( Boat ) आंग्ल भाषा का है । बम्बई में मल्लाहों में इसका उच्चारण आग-बोट ( Ag-bo't ) के रूप में पाया जाता है । इसका प्रयोग सन् १८५१ में डब्ल्यू डी० आरनोल्ड महोदय ने किया था ।[3]

**१. ६. १. ३. संसृष्टि शब्द**

इस कोटि में वे शब्द आते हैं, जो विदेशी शब्दों के रूप के आधार पर गढ़ लिए जाते हैं । जैसे पेन० जर्मन में Bocka Buch अंग्रेजी Pocket Book के आधार पर बना लिया गया । हिन्दी में गाड़ीवान के आधार पर कोचवान शब्द बना लिया गया ।

१. Pike, K. L.—Phonemics, 1956, Page 233.

२. 'ट्' ध्वनि वर्त्स्य स्फोट अघोष ध्वनि है जिसका हिन्दी में अभाव है ।

३. Hobson Jobson, 1903, Page 9.

## १. ६. १. ४. शाब्दिक अनुवाद

जब किसी भाव के प्रकाशन या वस्तु के यथारूप वर्णन के लिये कोई शब्द किसी भाषा में नहीं मिलता तो उससे सम्बन्धित विदेशी शब्द के अनुवाद की आवश्यकता होती है।[1]

एक प्रकार से विदेशी शब्दों को उद्धृत न करके उनका शाब्दिक अनुवाद प्रस्तुत कर दिया जाता है। 'Sound mind in a sound body' न लिख कर स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क लिख दिया जाय।

## १. ६. २. ब्लूम फील्ड महोदय बारोइंग के दो रूप मानते हैं

(अ) बोलियों से आगत शब्द

(ब) सांस्कृतिक आगत शब्द

जिस अर्थ में अब तक आगत शब्द Loan Words) का प्रयोग किया गया है, उसके लिये आपने सांस्कृतिक आगत शब्द का प्रयोग किया है। सांस्कृतिक आगत शब्द किसी अन्य भाषा से लिये जाते हैं।[2]

'आगत शब्द' के विभिन्न रूपों पर विचार करने के पश्चात् सर्वप्रथम यह विचारणीय है कि किस प्रकार एक भाषा के शब्द दूसरी भाषा में 'प्रवेश' करते हैं। संस्कृति की भाँति कोई भाषा भी अपने में सम्पूर्ण नहीं होती है। एक देश की संस्कृति का अपने पड़ोसी देश की संस्कृति पर प्रभाव अवश्यमेव पड़ता है और उसके फलस्वरूप एक भाषा के बोलने वाले दूसरी भाषा के बोलने वालों के सम्पर्क में आते हैं। जिस देश की संस्कृति अधिक महान् होती है, जिस देश की भाषा अधिक व्यापक होती है, उस देश की संस्कृति व उसकी भाषा का प्रभाव निकटवर्ती देश की संस्कृति व भाषा को ही प्रभावित नहीं करता, वरन् दूर-दूर तक वह अपना प्रभाव फैलाता है। दो देशों के सम्पर्क में आने का तात्पर्य है कि एक देश का व्यापार, धर्म व विज्ञान, उसकी भाषा व कला दूसरे देश के निवासियों को प्रभावित करे। संसार की किसी एक ऐसी भाषा की ओर निर्देश करना नितान्त अस्वाभाविक है, जो किसी भी अन्य भाषा से

१. Dean Pittman--Practical Linguistics, Mid-Mission, Ohio, 1948, page 160.

२. Bloomfield, L.—Language, Henry Holt & Co., 1956, Page 444.

प्रभावित न रही हो।[1] शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा तक स्वाभाविक रूप से पहुँच जाते हैं।[2]

एक देश के निवासियों का दूसरे देश के निवासियों से सम्बन्ध एवं सम्पर्क होने मात्र का तात्पर्य है कि कुछ न कुछ शब्द अवश्य एक भाषा से दूसरी भाषा के बोलने वालों ने ग्रहण किये होंगे। इस सम्बन्ध में सबसे अधिक ध्यान देने की बात यह है कि यद्यपि कोई देशवासी किसी विदेशी भाषा को नहीं सीखता है, फिर भी विदेशी भाषा से प्रभावित होकर उसकी स्वयं की भाषा में कुछ शब्द स्वतः ही आ जाते हैं। ऐसा सम्बन्ध तो स्वतन्त्र देशों के मध्य ही सम्भव है जहाँ कि पारस्परिक आदान-प्रदान होता है। कालान्तर में गृहीत शब्दों में विदेशीपन की गन्ध भी नहीं आती है। सुरङ्ग, क्रमेलक : ( ऊँट ) आदि शब्द संस्कृत और हिन्दी आदि प्रादेशिक भाषाओं के सुपरिचित शब्द हैं जो यूनानी भाषा से लिए गए थे। पार्थियन शब्द शाहानुशाही ऋषिक-तुषारों के समय में भारत में आ गया था। आज उनकी विजातीयता लुप्त हो गई है।[3] दुर्भाग्यवश यदि एक देश का दूसरे देश पर शासन है, तो शासक की भाषा के शब्दों की संख्या शासित भाषा में किसी अन्य भाषा की अपेक्षाकृत कहीं अधिक होगी और शासक स्वेच्छा से शासित भाषा को सीखना चाहे तो सीख सकता है, फलस्वरूप उनकी भाषा अपेक्षाकृत बहुत कम प्रभावित होगी। उदाहरण स्वरूप हम देखते हैं कि केल्ट भाषाओं के शब्द फ्रेञ्च व अंग्रेजी में बहुत कम संख्या में हैं, जबकि केल्ट भाषा भाषियों को यह भाषा बहुत अच्छी तरह सीखनी पड़ी और अनेक उद्धृत शब्द उनकी भाषा में प्रयुक्त होने लगे। भारत का उदाहरण सम्मुख है—अंग्रेजी की दासता के कारण कितने भारत-वासियों ने अंग्रेजी भाषा को अपनाया और अंग्रेजी के अनेक शब्द भारत की

---

१. Sapir, Edward, Language, Harcourt, Brace and Company, New York, 1949, Page 192. Graff, W. L.—Language and Languages. 1932, page 346.

२. Jesperson, O.—Growth and Structure of the English Language, 1954, Page 28.

३. राजबली पाण्डेय—हिन्दी भाषा के स्वरूप पर आघात की समस्या, ना० प्र० पत्रिका, हीरक जयन्ती अङ्क, पृष्ठ २१०।

भाषाओं में इतनी दूर घुस गये हैं; कि उनका निकाल फेंकना नितान्त असम्भव हो है, इसके ठीक विपरीत हमारी भाषाओं के बहुत कम शब्द अंग्रेजी भाषा में उद्धृत किये गये हैं। इस प्रकार किसी भाषा के आगत शब्दों का आधिक्य उस भाषा के व्यापक क्षेत्र का ही द्योतक नहीं वरन् उसकी महत्ता भी सिद्ध करता है, यद्यपि यह महत्ता कितने ही प्रकार की हो सकती है।[1]

१. ६. ३. किसी देश का विशेष उत्पादन या उस देश की विशिष्ट प्रणाली जिसका अन्य देशों में नितान्त अभाव होता है जब किसी अन्य देश में जाती है, तो उसका नाम उस वस्तु, भाव या प्रणाली के साथ-साथ उस देश में प्रचलित हो जाता है।[2] इस प्रकार ये शब्द किसी एक देश की सीमाओं में बद्ध न होकर समस्त विश्व के हो जाते हैं और किसी एक भाषा में प्रयुक्त न होकर समस्त भाषाओं में अपना स्थान बना लेते हैं और कभी-कभी तो यह सोचने मात्र में समय लगता है कि ये शब्द विदेशी हैं ! इनका अपने देश से कोई सम्बन्ध नहीं। इस प्रकार के शब्दों में से कुछ शब्द नीचे दिये जा रहे हैं :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| चाय | Tea (टी) | — | चीनी |
| क़ाफ़ी | Coffee | — | अरबी |
| चाकलेट | Chocolate | — | मेक्सिकन |
| पंच | Punch | — | हिन्दुस्तानी |

हिन्दी भाषा में बहु प्रयुक्त शब्द कोचवान गाड़ीवान के आधार पर कोच+वान शब्दों के मिश्रण से बना लिया गया। सम्भवतः कोच शब्द अंग्रेजी के ( Coach ) 'काउच' शब्द का ही रूपान्तर हो ऐसा अधिकांशतः सोच लिया जाता है। पर अंग्रेजी का भी काउच शब्द हङ्गरी[3] देश के मैग्यर शब्द 'Kocsi' का विकृत रूप है, जो फ्रेञ्च में Coche के रूप में व्यवहृत होता है।

---

१. Jespersen, O.—Language, Its Nature, Devolopment and Origin, 1954, Page 209.

२. Vendreys, J.—Language, 1952, Page 227.

३. Jespersen, O.—Language, its Nature, Development & Origin, 1954, Page 209. तथा The Concise Oxford Dictionary—1942, Page 211.

१. ६. ४ इस प्रकार 'आगत-शब्द' यह घोषित करते हैं कि एक देश ने दूसरे देश को क्या सिखाया और उसकी विश्व को क्या देन है। फ्रान्स यदि भोग-विलास व विभिन्न प्रकार के फैशनों के लिए प्रसिद्ध है तो इस देश के इन्हीं से सम्बन्धित शब्द अन्य देशों में प्रचलित हुए। यदि अंग्रेजी में उद्धृत फ्रेञ्च शब्दों की सूची पर दृष्टिपात किया जाय तो इस प्रकार के शब्दों का बाहुल्य स्वाभाविक है। जर्मन भाषा से वैज्ञानिक व दार्शनिक शब्द अन्य भाषाओं में फैले और इटली से सङ्गीत तथा बैङ्क सम्बन्धी। सङ्गीत का प्यानो शब्द कितना प्रचलित है। गणित व ज्योतिष सम्बन्धी शब्द अरबी भाषा से अन्य भाषाओं में गये—अलजबरा ( Algebra ) ज़ीरो ( Zero ) आदि। संस्कृत का शर्कर [Carkara] शब्द विभिन्न भाषाओं में कितने मिलते-जुलते रूप में विद्यमान हैं—देखिए, पु० फ्रेञ्च [Zuchre] जर्मन ( Zucker ) ग्रीक ( Sakkharon )। अरबी ( Sukkar ) शक्कर व फ़ारसी में शकर ( Shakar )। इस प्रकार ये शब्द किसी एक देश की सीमाओं में बद्ध न रह कर विश्व में व्याप्त हो गये हैं।[१]

जब एक देश का किसी दूसरे देश पर शताब्दियों तक अधिकार रहता है, तो शासित देश के निवासी शासक की भाषा को ही ग्रहण नहीं करते वरन् अपनी भाषा में शासक की भाषा के शब्दों का प्रयोग बहुत करने लगते हैं। फलतः बहुत से ऐसे शब्द भी उनकी भाषा में स्थान प्राप्त कर लेते हैं जिनके न लिए जाने पर भी भाव प्रकाशन में कोई अड़चन नहीं होती। पर जब किसी देश का सांस्कृतिक प्रभाव किसी अन्य देश पर अत्यधिक पड़ता है तो उसके भाषाभाषी अनावश्यक रूप से उस भाषा के शब्दों को उद्धृत करने लगते हैं। उदाहरणतः अंग्रेजी में ठण्ड के भावप्रकाशन के लिए cool, cold, chilly, frostly व icy शब्द पर्याप्त होते हुए भी frigid, algid तथा gelid ले लिये गये।[२] भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार के साथ स्कूल, कालेज व यूनिवर्सिटी शब्दों का प्रयोग बढ़ा जबकि उसके स्थान पर विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय का प्रयोग किया जा सकता था। फिर भी

---

१. The Concise Oxford Dictionary—1942, Page 1220 & English-German Dic. 1954, page 283.

२. Jespersen, O.—Language, Its Nature, Development and Origin, 1954, Page 210.

इनका प्रयोग इतना अधिक बढ़ गया कि आज विद्यालय उतना प्रचलित नहीं जितना स्कूल, और यह कितना हास्यास्पद है कि कुछ शिक्षा-संस्थाओं के नाम में विद्यालय व स्कूल दोनों लगे हुए हैं जैसे :—इलाहाबाद का अग्रवाल विद्यालय कालेज, कायस्थ पाठशाला स्कूल और मथुरा का जवाहर विद्यालय इण्टर कालेज।

१. ६. ५ एक भाषा से दूसरी भाषा में उद्धृत किये जाने वाले शब्दों को हम निम्नरूप में विभाजित कर सकते हैं :—

(अ) संज्ञा, विशेषण व क्रिया – ये शब्द अधिकांशतः ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं।

(ब) सर्वनाम, अधिकरणवाचक, समुच्चयबोधक, सहायक क्रियाएँ— इनका प्रयोग बहुत कम होता है।

संख्याएँ तो एक भाषा से दूसरी भाषा में बहुत ही कम उद्धृत होती हैं, केवल प्रसिद्ध खेलों के साथ इनका प्रसार अवश्य हो जाता है। इस प्रकार आगत शब्दों में सबसे अधिक संज्ञाएँ ही ली जाती हैं।

१. ६, ६. १. शब्दों के वर्गीकरण के पश्चात् उनके वैज्ञानिक अध्ययन में सर्वप्रथम और प्रमुख समस्या है—उच्चारण की। कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में भी 'आगत शब्दों' का उच्चारण विदेशी ध्वनियों में कर सकता है। पर अधिकांशतः व्यक्ति विदेशी ध्वनियों के स्थान पर अपनी मातृभाषा में प्राप्त निकटतम ध्वनियों से कार्य चलाना चाहते हैं। जिस व्यक्ति के द्वारा किसी शब्द का प्रारम्भ से प्रसार होता है, उसका उच्चारण नितान्त शुद्ध व स्पष्ट होते हुए भी, यह स्पष्ट है कि, उसका उच्चारण भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न रूप में करते हैं। अत्यधिक प्रयोग में आने वाले शब्दों के उच्चारण में उन ध्वनियों का प्रयोग होने लगता है, जो उनके यहाँ पूर्ववत् प्राप्त होती हैं और वे उनके उच्चारण में अभ्यस्त होते हैं। उदाहरण रूप में, हम कह सकते हैं कि अंग्रेज़ी के Thing, third, theatre आदि शब्दों में 'th' अंग्रेजी की। Ө। ध्वनि अन्तर्दन्तीय सङ्घर्षी अघोष है जिसका हिन्दी की ध्वनियों में अभाव है, अतएव इसके स्थान पर लगभग सभी। थ्। ध्वनि में रूपान्तरित करके उच्चारण करते हैं। रूसी भाषा में। Y। ध्वनि का अभाव है अतएव फ्रेञ्च भाषा के आगत शब्दों में वे। Y। के स्थान पर। ju, iu। परिवर्तित

कर देते हैं। विदेशी शब्दों का तत्समरूप में भाषा में बना रहना उसकी प्रकृति के सहज विकास में गतिरोध उत्पन्न करता है।[१]

१. ६. ६. २. जब किसी भाषा की किसी विशिष्ट ध्वनि से सम्बन्धित शब्दों की संख्या किसी भाषा में अधिक हो और प्रयोग भी अधिक हो, तो धीरे-धीरे कालान्तर में वे विशिष्ट ध्वनियाँ उस भाषा की ध्वनियों में बढ़ानी पड़ती हैं। फ़ारसी भाषा के प्रभाव के कारण हिन्दी में ध्वनि । ज़ । की वृद्धि हो गई है। यही बात स्वरध्वनियों पर भी चरितार्थ होती है। अंग्रेजी भाषा की स्वर ध्वनियों में से पश्च स्वर [विवृत्त वृत्ताकार] [ ɔ ] का हमारे स्वरों की ध्वनियों में अभाव था अतएव उसके लिए [ ॅ ] चिह्न प्रयुक्त होने लगा है। यद्यपि इन ध्वनियों का प्रयोग आगत शब्दों के तत्समरूप लिखने में विशेष रूप से किया जाता है और बोलचाल में उतना नहीं। फ्रेञ्च भाषा में अनुनासिक स्वरों का बाहुल्य है, पर जब वे शब्द अंग्रेजी में लिये गये तो उन शब्दों में अनुनासिक स्वरों के स्थान पर स्वर ध्वनि और नासिक्य व्यञ्जन-ध्वनि का आगम हो गया जैसे, फ्रेञ्च salõn अंग्रेजी में ( Saloon )[३] और हिन्दी में सैलून बन गया। हिन्दी में तो । न् । की ध्वनि पूर्णरूपेण विद्यमान है क्योंकि यह शब्द हिन्दी में अंग्रेजी से आया है, फ्रेञ्च से नहीं।

१. ६.६. ३ उद्धृत शब्दों में विदेशी ध्वनियों के स्थान पर अपनी भाषा की ध्वनियों का प्रयोग विभिन्न स्थलों पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा भिन्न होता है। पैटमैन महोदय ने तो यहाँ तक लिखा है कि किसी भी आगत शब्द में स्वनिमानुक्रम भी वही होना चाहिये जो उस भाषा में पूर्ववत् विद्यमान हो, अगर ऐसा नहीं होगा, तो या तो सामान्य जनता उस अनुक्रम को तोड़ देगी अथवा उसका उच्चारण हमेशा लड़खड़ाता हुआ होगा।[४] उदाहरणार्थ, अंग्रेजी शब्द 'ब्लाउज़' का । ब्ल । अनुक्रम टूटकर 'बिलाउज़' में । बिल । बन गया। इस प्रकार अधिकांशतः आगत शब्द अपनी विदेशी ध्वनियों को

---

१. राजबली पाण्डेय—हिन्दी भाषा के स्वरूप पर आघात की समस्या, ना० प्र० पत्रिका, हीरक जयन्ती अङ्क, पृ० २१०।

२. धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, पृष्ठ ६८, १०२।

३. Bloomfield, L.—Language, 1956, Page 444.

४. Dean Pittman, Practical Linguistics, Mid-Mission, Ohio, 1948, Page 158-59.

त्याग कर ही भाषा में प्रवेश करते हैं, फिर भी बहु-प्रयुक्त शब्दों में विदेशी ध्वनि भी ले ली जाती है, ऐसा उल्लेख हम ऊपर भी कर चुके हैं। फलतः ध्वनियों में वृद्धि हो जाती है—उदाहरणतः हिन्दी में । फ् । ध्वनि स्फोट ध्वनि है जिसका उच्चारण दोनों होठों से होता है, पर अंग्रेजी की । फ़ । ध्वनि सङ्घर्षी है, जिसके उच्चारण में नीचे का होठ और ऊपर के दाँत काम में आते हैं और दोनों के मध्य में इतना कम स्थान रह जाता है कि वायु बड़ी शीघ्रता से सीत्कार करती हुई निकल जाती है। इस प्रकार एक नवीन । फ़ । ध्वनि चिह्न की वृद्धि हो गई। इस प्रकार की वृद्धि स्वाभाविक है।[१] विभिन्न समय में विभिन्न ध्वनियों से युक्त शब्द उस भाषा में अपने प्रवेश की तिथियाँ बताने में समर्थ होते हैं।[२]

१. ६. ६. ४ आगत शब्द जितने अधिक प्रचलित होते जाते हैं, उनकी मूल विदेशी ध्वनियाँ अपनी भाषा की ध्वनियों में उतनी ही बदलती जाती हैं, चाहे लिखने के लिए उसके तत्समरूप को सुरक्षित रखने के हेतु विदेशी ध्वनि की वृद्धि क्यों न कर ली गई हो। उन आगत शब्दों को विदेशी ध्वनियों के साथ उच्चारण करना नितान्त अस्वाभाविक है और ( उससे ) भाषा के प्रवाह में बाधा पहुँचती है। जेस्पर्सन[३] महोदय ने तो इसको नितान्त अस्वाभाविक माना है।

१. ६. ६. ५ कभी-कभी आगत शब्दों की ध्वनियों में परिवर्तन ही नहीं[४] होता वरन् नवीन ध्वनि का आगम भी हो जाता है–जैसे फ्रेञ्च से (marbre)

---

१. Pike, K. L.—Phonemics, 1956, Page 142, IV—F (1).

२. Graff, W. L.—Language and Languages, 1932, Page 346.

३. "Shunting of the whole speech-apparatus on to a different track for one or two words and then shifting back to the original 'basis of articulation'." Jespersen, O.—Language, Its Nature, Development and Origin, 1954, Page 208.

४. Graff, W. L.—Language and Languages, 1932, Page 244.

शब्द जब अंग्रेजी में लिया गया तो ( marble ) हो गया। इस प्रकार अन्त में । ल् । ध्वनि आ गई । अंग्रेजी में शब्दों के अन्त में । र् । ध्वनि का उच्चारण नहीं होता है, पर हिन्दी में सभी जगह । र् । ध्वनि उच्चरित होती है, जैसे अंग्रेजी मोउट्[1] ( motor ) हिन्दी में मोटर बन गई।

१. ६ .६. ६. कभी तो आगत शब्द इतना अधिक रूप एवं अर्थ परिवर्तन कर लेते हैं कि यह विश्वास भी नहीं होता कि ये शब्द ( अंग्रेजी ) विदेशी हैं । अंग्रेजी में प्रयुक्त शोफ़र विदेशी शब्द है । हिन्दी में प्रयुक्त 'सपरेटा' उस दूध के लिए प्रयुक्त होता है, जिससे मक्खन निकाल लिया गया हो। जब विदेशी ध्वनियाँ और ध्वनि सङ्क्रम भी लुप्त होकर भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल हो जाते हैं तो उन शब्दों के विदेशी स्रोत को ढूँढ़ना भी कठिन हो जाता है[1]— उदाहरणार्थ (Treasury) तिजोरी ।

१. ६. ६. ७. आगत शब्दों के साथ-साथ कभी-कभी विदेशी प्रत्यय मात्र भी देशी शब्दों में जुड़कर प्रयुक्त हो जाते हैं । फ़ारसी के 'खाना', 'गीरी' 'बाज़ी' प्रत्यय इतने प्रचलित हो गये हैं, कि इनका प्रयोग देशी क्या, विदेशी शब्दों के साथ भी होने लगा है । उदाहरणरूप में, हम जेलखाना ले सकते हैं, जो जेल+खाना दो शब्दों से बना है, जिसमें प्रथम शब्द अंग्रेजी से लिया गया है और द्वितीय फ़ारसी का प्रत्यय ।

१. ६. ६. ८. अन्त में यही कहना है कि उद्धृत शब्द अधिकांशतः नवीन वस्तुओं और विचारों के साथ एक देश की भाषा और संस्कृति से दूसरे देश की भाषा और संस्कृति में प्रवेश करते हैं । कभी इनका तत्सम रूप रहता है और कभी विकृत, जैसे अंग्रेजी का ( Cup ) शब्द ( कप ) ही रहा जबकि ( Lantern ) लालटेन बन गई । कभी पूर्व प्रचलित शब्द इतना अधिक व्यापक होता है कि नवीन नाम प्रभावशून्य रहता है और फलस्वरूप मोमबत्ती के सम्मुख ( Candle ) ( कैंडिल ) की दाल न गल पाई और रकाबी के आगे तो सौसर को मुँह की खानी पड़ी ।

---

१. Savory, T. H.—The Language of Science, 1953, Andre & Deutsch.

# १. ७. अंग्रेजी शब्दावली से पूर्व हिन्दी की आगत शब्दावली

## १. ७. १. एशिया की प्रमुख भाषाओं के शब्द

सामान्यतः अरबी-फ़ारसी तथा तुर्की की शब्दावली से ही शब्द हिन्दी में गृहीत हुए हैं, वैसे कुछ चीनी, जापानी, बर्मी आदि पूर्वी एशिया की भाषाओं के शब्द भी यत्र-तत्र मिल जाते हैं :—

१. ७. १. १. (अ) फ़ारसी (आ) अरबी

१. ७. १. २. (इ) तुर्की

### १. ७. १. १. अ—फ़ारसी तथा आ—अरबी

लगभग १००० ईसवी के फ़ारसी-अरबी बोलने वाले तुर्कों ने भारत पर अधिकार कर लिया था जिसके फलस्वरूप भारत की सभी भाषाओं में निरन्तर शब्द ग्रहण होते रहे।[1] हिन्दी का सम्पर्क तो सबसे अधिक रहा, जिसके फलस्वरूप सहस्त्रों शब्द हिन्दी में प्रवेश कर गये। अरबी तथा तुर्की आदि भाषाओं के जो शब्द हिन्दी में मिलते हैं, वे भी फ़ारसी के माध्यम से होकर ही हिन्दी में आए हैं। ऐसे शब्दों की पूरी सूची देना सम्भव नहीं है, केवल बहुप्रयुक्त शब्द ही नीचे दिये जा रहे हैं।

अरबी के शब्द भी हिन्दी में फ़ारसी के माध्यम से ही आये हैं, अतएव उनको पृथक् नहीं दिया जा रहा है।[2] अरबी-फ़ारसी की कुछ शब्दावली इस प्रकार है :—

---

१. "हमारी भाषा में आर्य शब्दों के बाद अरबी-फ़ारसी शब्दों की संख्या है, और तीसरे नम्बर पर अंगरेजी के। इससे हमें आर्यों, मुसलमानों और अंगरेजों के प्रभाव, राज्यकाल और विचारों का पता चलता है।"
—डॉ० हरदेव बाहरी—'शब्द और संस्कृति', हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १, अङ्क १, सं० २०००, पृ० ३

२. Anyhow, Arabic influenced Indo-Aryan through Persian alone and for us Arabic Words are also Persian through which they came to Ind.—Dr. Hardeva Bahari-Parsian Influence on Hindi, University of Alld., 1943. Page 17.

**धार्मिक :** कुरान, कलमा, दीन, ईमान, खुदा, नबी, रसूल, पैगम्बर, बली, ईद, दरगाह, मन्नत, शीरीनी, सुन्नत, निकाह, शबरात, वुज़ू, मुसल्ला, दुआ, रोज़ा, मसीत, मसजिद, इमाम, मौलवी, मुल्ला, फरिश्ता, खैरात, न्याज, हज, ज़्यारत, हाजी, बांग, गुसल, गुनाह, गोश्त, जनाज़ा, तकदीर, ताबीज, दीदार, फकीर, फतवा, बरकत, बहिश्त, दोज़ख, मजहब, मुबारक, रोज़ा।

**प्रतिदिन की शब्दावली :** परदा, बुरका, कुर्ता, सलवार, पाजामा, इजारबन्द, तहमत, फतूही, गुलूबन्द, कुल्हा, लुंगी, जुर्राब, शाल, नीमा, जामा, रूमाल, बगलबन्दी, मिर्जई, चादर, तोशक, लिहाफ, रज़ाई, तकिया।

**बर्तन :** सुराही, रकाबी, तश्तरी, प्याला, तन्दूर।

**आभूषण :** बाजूबन्द, जंजीर, पाज़ेब।

**भोजन :** कोरमा, कोफ़ता, क़बाब, शोरबा, कलिया, जरदा, पुलाव, पनीर, मुरब्बा, मसाला, गुलाब, रूह, मुश्क, फिरनी, हरीरा।

**फल, मेवादि :** किशमिश, पिस्ता, मुनक्का, शहतूत, सेब, नारंज (नारंगी), अनार, अंजीर, आलूबुखारा, सबजी, तरकारी, शलजम, चुकन्दर, पोदीना, प्याज, तरबूज।

**मिठाई आदि :** जलेबी, बालूशाही, हल्वा, (हलुवा) कुलफी, चाशनी, शीरा, मिश्री, शर्बत, शराब, शिकंजी, सिरका, बरफ हुक्का, फरशी, कश, बर्फी।

**फर्नीचर :** कुरसी, तख्त, तखता, फरश, परदा, चिक, शामियाना, कनात, तखतपोश, (मेज) पोश, (पलङ्ग) पोश, शमादान, फ़ानूस, सन्दूक।

**शृंगार-प्रसाधन :** शीशा, मुश्क, सुरमा, रूह, सुरखी, इत्र, शीशी, हमाम, गुलाब।

**पेशे :** बजाज, हलवाई, जुलाहा, कसाई, जल्लाद, मज़दूर, रफूगर, साईस, सर्राफ़, दर्जी, वकील, दलाल, कारीगर, कलईगर, मीनाकार, हकीम, अतार, जिल्दसाज, बावरची।

**अन्य उपयोगी :** उस्तरा, दर्जी, तोश, सीना, जेब, अस्तर, इस्तरी, (पायंचा) बखिया, दूकान, दूकानदार, सौदा, गज, गिरह, कमख़ाब, गुलबदन, चिकिन, रेशमी, शबनम, तन्दूर, महल, हवेली, सराय, क़िला, मोर्चा, मकान, हरम, दालान, पैमाना, रन्दा, गिलमाला, बुर्जी, सलामी, पेंच, पेचकश, लगान, ज़ीन, रक़ाब, नाल, जल्लाद।

**विज्ञान और कला :** नजला, जुकाम, नासूर, लकवा, हैजा, बवासीर, शरबत, नौसादर, तेजाब, गुलकन्द, माजून, बनफशा, नुस्खा, नब्ज, तूतिया, प्याजी, गुलाबी, अङ्गूरी, आसमानी, किरमजी, खाकी, बादामी, शहनाई, साज़, तबला, सरोद, रबाब, नौबत, नगाड़ा, दमामा, ख्याल, कव्वाली जिल्दसाज।

**प्रशासन :** अदालत, वजीर, खजान्ची, मुन्शी, बादशाह, नवाब, चपरासी, बख्शी, कुर्क, रसीद, मिसल, बालिग, जुर्म, मुकदमा, कागज, बही, कानून, दारोगा, दीवानी, फौजदारी, दफ्तर, दरबान, सूबेदार, सरकार, बन्दोबस्त, माल, मालगुजारी, दारोगा, दोरा, गिरफ्तार, जासूस, तनख्वाह, तलब, सूबा, जमादार, किला, जङ्ग, तोप, बन्दूक, फौज, सिपाही, तीरकमान, मोहर, मुख्तार, नौकर, नोकरी, संगीन, जिरह बख्तर, मुनसिफ, जमानत, जालसाजी, परवाना, बरी, सिक्का, प्यादा, वरदी, लश्कर, रियासत, जायदाद, नालिश।

**शिक्षा :** कलम, कलमदान, सोख्ता, रुक्का, दवात, मसौदा, किताब, जिल्द, दफ़्ती, खत, लिफ़ाफ़ा, सरनामा, हरकारा, कातिब।

**खेल :** शतरंज, मोहर, बाजी, किश्त, बादशाह, वजीर, फ़र्ज़ी, रुख, कुश्ती, पहलवान, दंगल, गंजिफ़ा, चौगान, मैदान।

**विभिन्न :** बगल, मेदा, कलेजा, बीमार, जिगर, गरदन, गुरदा, कमर, दीवान, बखशी, सरदार, शेख, खलीफा, रईस, मिर्जा, साहब, हजरत।

**गाली :** मूजी, मक्कार, बेशरम, बतमीज, बेवकूफ, बदचलन, नालायक, शैतान, लफङ्गा, कमबख्त, बेपीर, हरामजादा, पाजी, कमीना, शोहदा, बदमाश।

**चिड़िया :** कबूतर, मुर्ग, मुर्गाबी, शिकरा, बाज़, तोता।

**जानवर :** शेर, बबर।

**बाग :** बाग, गुलदस्ता, पैयन्द, हजारा, नरगिस।

**अन्य :** नहर, दुआबा, हिन्द, पञ्जाब, दहाई, हजार, बोरिया, मोमजामा, शहद, चरखा, गुबारा, चर्बी, जङ्ग, खरीता, जीना, नमूना, तारीख, कूचा, मुहल्ला, देहात, कस्बा, शहर, आदमी, मरदाना, जनाना, रस्म, दहेज, सुबह, शाम।

भाववाचक : रियायत, शिकायत, शरारत, शैतानी, जिम्मा, सिफारिश, हौसला, परवाह, परहेज, जोर।

## १. ७. १. २. तुर्की शब्द

अरबी की तरह तुर्की के शब्द भी फ़ारसी के माध्यम से हिन्दी में आए हैं, अतएव उनका सीधा सम्बन्ध हिन्दी से नहीं रहा। यह सत्य है कि प्रारम्भिक मुसलमान बादशाहों की मातृभाषा तुर्की थी पर उन सबकी भी राज-भाषा अरबी-फारसी ही रही है, फिर भी तुर्की के जो प्रचलित शब्द हैं वह नीचे दिये जा रहे हैं :[1]—

आग़ा, (आक़ा), उर्दू, कैंची, क़ाबू, कुली, ख़ातून, खाँ, ख़ानम, जाजिम, ग़लीचा, चक़मक़, चाक़ू, चिक़, तमग़ा, तग़ा, तुर्क, तोप, चुग़ुल, बहादुर, बेगम, मुचल्का, लाश, सौग़ात, सुराग़, चकता, (चग़ताई) चाक़, चुग़ा, चेचक, क़मची, नाग़ा, क़नात, कुर्क, कोतल, एलची, लुच् (चा)।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ने[2] निम्नलिखित शब्दों को तुर्की का माना है :

१. लगलग—चिड़िया विशेष, २. लफंगा, ३. चुगद, ४. चील, ५. हुदहुद, ६. बुलबुल ७. मैना।

## १.७.२. अंग्रेजी से इतर अन्य योरोपीय भाषाओं के हिन्दी में प्रयुक्त शब्द

वैसे तो अंग्रेजी ही एक ऐसी सर्वभक्षी एवं सर्वग्राही भाषा है, जिसके माध्यम से योरोप की सभी भाषाओं के शब्द जाने-अनजाने हमारी भाषा में

---

१. तुर्की शब्दों की सूची का आधार निम्नपुस्तकें हैं :—
डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी साहित्य का इतिहास, सन् १९४६, पृष्ठ ७१। डॉ० उदयनारायण तिवारी—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास; प्रथम सं०, पृष्ठ २१४। डॉ० श्यामसुन्दरदास—हिन्दी भाषा, सन् १९५४, पृष्ठ ६१-६२। शेक्सपीयर—हिन्दुस्तानी डिक्सनरी, सन् १८६६।

२. डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—कुछ हिन्दी शब्दों की निरुक्ति, ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ४६, सं० १९९८, पृष्ठ ६१-६६।

प्रवेश पा गये। बूफे, कैफे, शोफर, गैरिज, रिपोर्ताज, रेस्तराँ, एकेडेमी ( अकादमी ) आदि शब्द फ्रान्सीसी होते हुए भी अंग्रेजी के द्वारा ही हमारे इतने निकट आ गये हैं कि यह जानना कठिन प्रतीत होता है कि इनका सम्बन्ध अंग्रेजी से केवल माध्यम रूप में है। वस्तुतः यह शब्द फ्रान्सीसी भाषा के हैं। अंग्रेजों के अतिरिक्त अन्य योरोपीय जातियों से भारतवासियों का सीधा सम्बन्ध रहा है और उसके फलस्वरूप कुछ न कुछ शब्द भारतीय भाषाओं में आ ही गये। अंग्रेजों से पूर्व ही भारत में जिन विदेशी जातियों के अड्डे थे, उनमें से फ्रेञ्च तथा पुर्तगाली मुख्य हैं।

अंग्रेजी के माध्यम से अनेक ग्रीक, लैटिन, फ्रान्सीसी, जर्मन आदि शब्द आ गये हैं जिनको भारतीय सामान्यतः अंग्रेजी का ही समझते हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अंग्रेजों को छोड़कर किसी अन्य योरोपीय जाति से हिन्दी भाषा-भाषियों का सीधा सम्पर्क न हो सका और न उन्होंने हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्र पर शासन ही किया। फिर भी इन सभी भाषाओं के शब्द अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिन्दी में इतना प्रवेश पा गये हैं कि आज वे हमारी निधि हैं—इन भाषाओं में उल्लेखनीय है बङ्गला। निस्सन्देह कुछ शब्द भारत की पश्चिमतटीय भाषाओं, गुजराती तथा मराठी के माध्यम से भी आये हैं।

## १.७.२.१. फ्रान्सीसी

फ्रान्सीसी भाषा के शब्द हमारी भाषा में अधिक नहीं हैं। डॉ॰ चटर्जी[1] ने बङ्गला में फ्रान्सीसी शब्दों की अधिकतम संख्या १० मानी है। हिन्दी में यह संख्या २-४ से अधिक नहीं।[2]

कार्तूस (Cartouche) इसका अर्थ है—कागज की लपेटन, कूपन,

---

१. डॉ॰ चटर्जी—बङ्गाली भाषा का उद्गम और विकास—भूमिका पृष्ठ २१९ सन् १९२६। चन्द्रनगर जिस पर फ्रान्सीसियों का अधिकार रहा वह बङ्गाल में ही है, अतएव कुछ अधिक शब्द हों तो क्या आश्चर्य। पांडेचेरी तमिल प्रदेश में है वहाँ कुछ अधिक हैं।

२. डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १९४७, पृष्ठ ७४।

अँगरेज़[1] कारबिन (Carabine)[2]

इनका उल्लेख डॉ० उदयनारायण तिवारी ने भी किया है। इसके अतिरिक्त अधिक शब्दों का प्रवेश न हो सका। अंग्रेजी के माध्यम से आये हुए कुछ उल्लेखनीय शब्दों का निर्देश ऊपर किया जा चुका है।

## १.७.२.२. डच

डच लोगों का सम्बन्ध तो भारत से बहुत ही कम रहा, फिर भी कुछ शब्द हैं, जिनमें उल्लेखनीय ताश के खेल से सम्बन्धित हैं। डॉ० तिवारी[3] ने इन शब्दों की सूची दी है:—

चिड़ी चिड़िया, ( चिड़ितन ),ताश की तुरुप[4], बम ( ताँगा, गाड़ी में प्रयुक्त आगे की लम्बी लकड़ी)।

अंग्रेजी के माध्यम से आया हुआ प्रचलित शब्द 'फरलो' (furlough) डच शब्द (Verlof )[5] का ही रूपान्तर है जिसका अनुवाद है—अनुपस्थिति की छुट्टी।

## १. ७. २. ३. जर्मन

जर्मन जाति का सम्बन्ध हमसे सांस्कृतिक दृष्टि से भले ही रहा हो, पर जैसा अन्य योरोपीय जातियों से सम्पर्क रहा, निस्सन्देह वैसा नहीं रहा। युद्ध

---

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने इसका सम्बन्ध फ्रान्सीसी से स्थापित किया है—देखिये, हि० भा० इतिहास, १६४६ पृष्ठ ७४।
श्री ह्विटवर्थ जार्ज विलफार्ड महोदय ने अङ्ग्रेज और इंग्रेज, दोनों का सम्बन्ध अंग्रेजी शब्द इंगलिश से माना है, देखिए—An Anglo-Indian Dictionary, 1885, Page 14 and 129।

२. जान शेक्सपियर भी फ्रान्सीसी से मानते हैं—Hindustani Dictionary, 1866, Page 1278।

३. डॉ० उदयनारायण तिवारी—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, सं० २०१२, पृष्ठ २१६।

४. तुरुप का आगम अंग्रेजी शब्द ( Trump ) तथा पुर्तगीज़ शब्द ( Trunfo ) से प्रतीत होता है। डच शब्द है—Troef।

५. Oxford Concise Dictionary, 1942, Page 464.

के परिणाम तथा राजनीतिक विचारधाराओं के फलस्वरूप कुछ शब्द आज जर्मनी के भी अंग्रेजी के माध्यम से प्रचलित हो गये हैं, यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं। जैसे, किंडरगार्टन, हिटलर से हिटलरशाही, नात्सी (नाजी) तथा नाजीवाद, ब्लिट्ज।

## १. ७. २. ४. पुर्तगाली

पुर्तगालियों से भी हमारा (हिन्दी-भाषाभाषी क्षेत्र का) कोई सीधा सम्पर्क स्थापित नहीं हुआ फिर भी अंग्रेजी को छोड़कर सबसे अधिक संख्या आज हिन्दी में पुर्तगीज़ शब्दों की है। इसके कई कारण हैं। सर्वप्रथम विदेशी यात्री वास्को-डिगामा सन् १४९८ में कालीकट दक्षिण भारत में) उतरा। १५०७ में प्रथम बार उनकी वायसरायल्टी की स्थापना हुई। सन् १५१० में पुर्तगालियों ने गोवा पर अधिकार किया और सोलहवीं शताब्दी के प्रथमचरण में ही उन्होंने महाराष्ट्र तथा गुजरात के कुछ भागों को भी अधीन कर लिया। सन् १५२४ में वास्कोडिगामा की मृत्यु हुई। सन् १५३७ में पुर्तगाली बङ्गाल में प्रतिष्ठित हुए और इस प्रकार पुर्तगाली शब्दों को मराठी, गुजराती, बङ्गला तथा अन्य भाषाओं में स्थान मिला। उत्तरभारत की अन्य भाषाओं पर पुर्तगाली भाषा का सीधा प्रभाव नहीं पड़ा। यह प्रभाव धीरे-धीरे बङ्गला तथा अन्य भारतीय भाषा के माध्यम से हिन्दी पर पड़ा।

डॉ० चटर्जी[1] ने अपनी 'बङ्गाली भाषा के उद्गम और विकास' पुस्तक में पुर्तगाली शब्दों का विवेचन प्रस्तुत करते हुए इस प्रकार के शब्दों की संख्या लगभग १०० मानी है। जैसा कि बताया जा चुका है कि बङ्गाल में पुर्तगालियों का प्रवेश १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ और १८वीं शताब्दी तक ये लोग वहाँ पर रहे। ज्ञानेन्द्र मोहनदास जी की बङ्गला डिक्शरी के आधार पर विदेशी शब्दों की संख्या बङ्गला में इस प्रकार है:—२४०० फारसी, ७०० अंग्रेजी, १०० पुर्तगीज, फ्रेञ्च आदि।

अंग्रेजों ने भारत पर शासन करना आरम्भ किया, उस समय एक पुर्तगीज़ भाषा का ही बिगड़ा हुआ रूप भारतीय तथा योरोपीय जातियों के मध्य व्यापारिक तथा अन्य कार्यों के लये प्रचलित था। यह भाषा इण्डो-पुर्तगीज़ नाम से जानी जाती थी।[2] सोआरीज महोदय ने भी यह स्वीकार

१. डॉ० चटर्जी ओ डी० बी० एल०, १९२६ पृ० २११।
२. गोलोक विहारी धल—अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त भारतीय शब्दावली, 'भारतीय साहित्य', अप्रैल १९५७, पृ० ८०।

किया है कि हिन्दी पर प्रभाव पुर्तगीज भाषा का पड़ोसी भाषाओं के माध्यम से पड़ा है।

हिन्दी में प्रयुक्त पुर्तगीज़ शब्दों की एक लम्बी सूची डॉ० वर्मा, डॉ० तिवारी तथा श्री सोआरीज[1] महोदय ने प्रस्तुत की है। सोआरीज महोदय ने ४८ शब्द हिन्दी में और १०१ शब्द हिन्दुस्तानी में माने हैं। उनका यह हिन्दी और हिन्दुस्तानी का भेद कुछ समझ में नहीं आता। उदाहरणार्थ, आलपिन शब्द उन्होंने हिन्दुस्तानी में रक्खा है पर हिन्दी में उसको स्थान नहीं दिया। यह भेद ठीक नहीं है और आज तो अब हिन्दुस्तानी की चर्चा ही समाप्त हो गई है, तो फिर क्यों उसको छेड़ा जाय। तमिल में प्रयुक्त पुर्तगीज़ शब्दों को एकत्रित करने का कार्य श्री मीनाक्षीसुन्दरम् महोदय ने सम्पन्न किया।[2]

पुर्तगाली शब्दों की सूची देने से पूर्व एक बहु प्रचलित शब्द फिरङ्गी पर विवेचन कर लेना आवश्यक है।

फिरङ्गी:—यह शब्द वस्तुतः सर्वप्रथम भारत के पश्चिमी तट पर आकर बसने वाली विदेशी जाति के लोगों के लिये प्रयुक्त किया गया जो कि निस्सन्देह पुर्तगीज थे।[3] यह शब्द 'फ्रैंक' (Frank) शब्द का अपभ्रंश रूप है।

---

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, पृ० ७४; डॉ० उदयनारायण तिवारी—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, सं० २०१२, पृ० २११; सोआरीज़ सं० एस०—इन्फ्लुएन्स ऑन पुर्तगीज़ वोकेबिल्ज इन एशियाटिक लैंग्वेजेज, १९३६, सन्तराम—हिन्दी और पंजाबी में पुर्तगाली, 'शब्द आजकल, वर्ष ३, सं० १, पृ० ४२९-३२।

२. मीनाक्षीसुन्दरम टी० पी०—Portuguese Influence revealed by the Tamil Words—Annamalai University Journal, VOL. XVI, Page 11-25।

३. G. C. Whitworth—An Anglo-Indian Dictionary, 1885, Page 97. विस्तृत विवरण के लिये देखिये लेखक का फिरङ्गी और लोकमानस, हिन्दुस्तानी, वर्ष १९६१, अङ्क १।

पुर्तगीज़ शब्द —

| | | | |
|---|---|---|---|
| अगस्त | Agosto | कारबन[५] | Carabina |
| अचार[१] | Achar | करधनी[६] | cardão |
| अनन्नास | ananás | कप्तान | capitão |
| अमीन (?) | amen | किरस्तान | Criatão |
| अलमारी-आलमारी | Armário | कमरा | câmara |
| आया | aia (DRY nurse) | कैथोलिक | Católico |
| | | कमीज़ | camisa |
| आलपिन | alfinete | गमला[७] | gamela |
| अलकतरा | alcatrão | गिरजा | igreja |
| इस्पात | espáda | गोभी-कोबी-गोबी | couve |
| इस्त्री | estirar | चाबी | chave |
| कन्दील[२] | Candil | छाप (?) | Chapa |
| कर्नल[३] | Coronel | तौलिया | toalha |
| कोच[४] | Coche | तूफ़ान | tufão |
| कलापट्टी | Calafate | नीलाम | leilão |
| काज़ | casa | परात[८] | prato |

१. इस शब्द को मलय भी मानते हैं।

२. भ्रमात्मक अरबी क़न्दील से भी सम्भव है पर इसका प्रचार अंग्रेजों के आने के पश्चात् अधिक हुआ।

३. डा० चटर्जी 'बंगाली भाषा का उद्‌गम और विकास' में इसका सम्बन्ध अं० शब्द Colonel मानते हैं।

४. वही, डा० चटर्जी 'बंगाली भाषा का उद्‌गम और विकास' में इसका सम्बन्ध अं० Couch से माना है—भूमिका पृ० ११४।

५. शेक्सपियर ने फ्रान्सीसी से माना है। देखिए, पाद-टिप्पणी सं० २।

६. ना० प्र० सभा, कोष, सं० २००८ ( किंकिणी ) से माना है, पृ० २०२।

७. ना० प्र० सभा, स्रोत निश्चित नहीं, सं० २००८, पृ० ३०५।

८. इसमें अर्थ परिवर्तन हुआ है। वस्तुतः इसका अर्थ पतली रकाबी जो चाँदी की बनी हो। आज इसका प्रयोग किसी भी धातु की बनी हुई एक बड़ी थाली के लिए होता है। जी० टेम्पल—ए ग्लोसरी आव् इण्डियन टर्म्स, सन् १८९७, पृष्ठ १०३।

| | | | |
|---|---|---|---|
| पीपा[१] | pipa | मिस्त्री | mestre |
| पिस्तौल | pistola | मस्तूल | mastro |
| पादरी | padre | मार्का | ma'rca |
| पावरोटी | pã o | मेज़ | me'sa |
| फ़र्मा | forma | लबादा[५] | loba (loose-gown) |
| फालतू[२] | falto | | |
| फीता | fita | लिम्बू | limao (?) [निम्ब ?] |
| बरमा | Verruma | | |
| बासन[३] | Bacia | वायलिन | viola |
| बिस्कुट | biscoito | बस्ता | Boceta |
| बटन | botã o | साया | saia |
| बोतल | Botelha | साबुन | sabã o |
| बाल्टी | balde | सन्तरा | cintra |
| बैंगन[४] | Beringela | सलाद[६] | salada |
| भाफ[५] | bafo | सितम्बर | satembro |
| मारतौल | martelo | सौफा | sofa' |

कुछ ऐसे भी शब्द हैं जो भारतीय होते हुए भी पुर्तगीज़ के माध्यम से समस्त भारत में प्रचलित हुए, जैसे—वीटल। यह मलयालम भाषा का शब्द है—वैट्टील जिसका निर्माण ( वेरु-इला ) से हुआ है और जिसका अर्थ

१. छोटे पीपे के लिए—ई प्रत्यय लगाकर पीपी बना लेते हैं।
२. ना० प्र० सभा व्यु० फाल—टुकड़ा तथा—'तू' प्रत्यय सं० २००८, पृष्ठ ७६७।
३. इसमें विशेष अर्थ परिवर्तन हुआ है। आज हिन्दी में और कम से कम ब्रजभाषा में सामान्यतः वर्तन का पर्यायवाची है। ना० प्र० सभा, सं० २००८, पृ० ८४४ ( व्यु ? )।
४. ना० प्र० सभा, पृष्ठ ८६७ ( व्यु वङ्गण (?) )
५. सं० वाष्प से मानना अधिक ठीक रहेगा।
६. ना० प्र० सभा, फ़ारसी से माना है। ऐसा सम्भव है कि पुर्तगीज़ शब्द (लबा ) में फ़ारसी प्रत्यय (—द) लगा दिया हो।

साधारण या केवल पत्ता है।[1] चारपाई तो बिलकुल अपना शब्द है फिर भी हाब्सन जाब्सन ने पुर्तगीज़ माना है।

अन्त में एक बहुप्रचलित शब्द काजु लिया जा सकता है। तमिल में इसके लिए मूल शब्द मुन्दिरी है पर साथ ही काशुपलम भी प्रचलित है। मीनाक्षीसुन्दरम जी ने इसको पुर्तगीज़ ( caju ) से माना है। अंग्रेजी रूप इस शब्द का casheo है और फ्रेञ्च acajou।

इन सभी विदेशी भाषाओं ने समस्त भारतीय भाषाओं को इतना अधिक प्रभावित किया है कि सभी भारतीय भाषाओं में इन सभी भाषाओं के शब्द सम्मिलित हैं, विशेषतौर से उल्लेखनीय है पुर्तगाली।

1. यह शब्द 'तामिल' में भी है, यह सूचना मुझको श्री नन्जुंडम महोदय से मिली। तमिल शब्द है—वेट्टलै (vettilai) जिसका अर्थ है खाली या बेकार पत्ता।

अध्याय २

# हिन्दी में अंग्रेजी के आगत शब्द

२.० बीसवीं शताब्दी के इस वैज्ञानिक युग में प्रतिदिन आविष्कारों की संख्या में वृद्धि ही होती जा रही है। यातायात के साधनों में वायुयान, रेल, मोटर, बस एवं साइकिल का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार भेजने के लिए पोस्ट आफिस, टेलीफोन, टेलीग्राफ, वायरलेस आदि साधन अपनाये जा रहे हैं। जिस युग में क्षण-क्षण में कपड़ों के डिजाइन और उनकी काट बदलती रहे, फैशन अपना नया रूप प्रदर्शित करते हों, जीवन में डाक्टरी सहायता की विशेष आवश्यकता प्रतीत होने लगी हो, मनोरञ्जन के साधनों में विदेशी खेलों का प्रचार बढ़ रहा हो, खेती तथा बागवानी में अधुनातन यन्त्रों का प्रयोग हो रहा हो, प्रत्येक कार्य सञ्चालन में विद्युत्-शक्ति अपेक्षित हो और फैक्टरियों, मिलों आदि का निर्माण बढ़ता जा रहा हो तो, फिर जीवन के प्रत्येक पक्ष में यदि विदेशी संस्कृति के साथ-साथ भाषा के प्रत्येक अंग में भी विदेशी शब्द घुस आयें[1] और धीरे-धीरे इतना घर कर लें कि हमको उन शब्दों को गृहीत[2] समझना पड़े तो कोई आश्चर्य नहीं।

---

१. विदेशी शब्दों की घुसपैठ सर्वत्र है। कितने ही भारतीय शब्द आज अंग्रेजी में विद्यमान हैं। देखिये, भारतीय शब्द अंग्रेजी में — आक्सफोर्ड "Oxford Dictionary", ६०० मूल सहस्रों व्युत्पन्न G. Subba Rao—Indian words in English, Oxford Press, 1954, Page 2 और डॉ० भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक में इस प्रकार के शब्दों की संख्या २३०० मानी है। 'शब्दों का जीवन'— 'शब्द चलते हैं'-- प्र० सं०, पृ० ४४।

२. अन्य भारतीय भाषाओं में भी अंग्रेजी की पर्याप्त शब्दावली गृहीत है, उदाहरणार्थ, "Sopken Telugu contains 3000 English words." G. Subba Rao—Indian words in English Oxford, 1954, Page 2

हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी शब्दों को मैंने विभिन्न स्रोतों से एकत्र करने का प्रयत्न किया है, जिनके आधार निम्नलिखित हैं :—

१. लिखित आधार[1]—
   अ—पुस्तक साहित्य
   आ—पत्र-पत्रिकाएँ

२. मौखिक—
   अ—जनसाधारण—इसमें जनता का वह भाग सम्मिलित होता है, जिसको अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त नहीं है।
   आ—शिक्षित जनवर्ग—इसमें मध्यम श्रेणी के वे व्यक्ति आते हैं, जिनको अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त हुई है।
   इ—बहुशिक्षित जनवर्ग—इस कोटि की जनता अंग्रेजी शिक्षा ही नहीं, अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति में बिल्कुल डूबी हुई रहती है।

आगे चलकर मैंने अंग्रेजी शब्दावली का वर्गीकरण करने की चेष्टा की है, जिसमें जनसाधारण और शिक्षित जनवर्ग को ही लिया गया है। वस्तुतः देखा जाय तो इन तीनों वर्गों द्वारा प्रयुक्त शब्दावली के मध्य कोई सीमा-रेखा खींचना सम्भव नहीं। एक ही शब्द का दो वर्गों में प्रयोग होना प्रायः साधारण है, पर साथ ही कुछ शब्द ऐसी सन्धि-रेखा पर भी हैं, जिनसे यह निश्चय करना कि कौन शब्द किस कोटि में डाला जाय, प्रायः सम्भव नहीं है। साथ ही शिक्षित और बहुशिक्षित शब्दों का प्रयोग भी शिक्षा पर ही आधारित नहीं है। मेरा कुछ ऐसे व्यक्तियों से भी साक्षात्कार हुआ, जो बहुशिक्षित होते हुए भी पूर्णरूप से भारतीय हैं और उन पर पाश्चात्य संस्कृति का कोई प्रभाव नहीं। और साथ ही कुछ ऐसे नवयुवक एवं नवयुवतियों के दर्शन हुए, जो सम्भवतः शिक्षा की दृष्टि से हाईस्कूल भी नहीं, किन्तु अंग्रेजी की संस्कृति में डूबे रहते हैं।

वर्गीकृत सूची में बहुशिक्षित जनवर्ग की भाषा को स्थान नहीं दिया गया क्योंकि उनके द्वारा प्रयुक्त शब्दावली को अभी भाषा में गृहीत मानना नितान्त असम्भव है। वर्गीकृत शब्दावली देने से पूर्व मैं बहुशिक्षित वर्ग, कविता तथा विज्ञापन में प्रयुक्त शब्दावली की सामान्य प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन आवश्यक है।

---

१. लिखित आधार के लिए देखिये, पुस्तक और समाचारों का परिशिष्ट ६१।

## २. १. शब्दावली की सामान्य प्रवृत्तियाँ

### २. १. १. बहुशिक्षित व्यक्तियों की भाषा

इस युग में जब मिलों में काम करनेवाले मजदूरों की भाषा में, और स्टेशन पर काम करनेवाले कुलियों की भाषा में भी अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग होता हो तो, फिर यदि उच्च अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों की भाषा में अंग्रेजी शब्दों का बाहुल्य रहे तो आश्चर्य क्या। दफ्तरों में क्लर्कों-अफसरों की भाषा में तथा कालेज में विद्यार्थियों-प्रोफेसरों की भाषा में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों का जो बाहुल्य है, यह विचारणीय है। आज का उपन्यासकार इस वर्ग के व्यक्तियों के जीवन का चित्रण जब अपने उपन्यासों में और नाटककार अपने नाटकों में करता है, तो अंग्रेज़ी सभ्यता तथा संस्कृति से प्रभावित होने के कारण अंग्रेजी शब्दों की भरमार रहती है। ऐसे उपन्यास में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की यदि सूची बनायी जाय तो सम्भवतः अंग्रेजी के कोश का कोई ही शब्द उसमें से बच सके। बोलचाल में ऐसी भाषा को खिचड़ी बोली[1] नाम से अभिहित किया गया है। रविशंकर शुक्ल ने[2] इसको इंगलिस्तानी हिन्दी की भी संज्ञा दी है। डा० सत्यप्रकाश[3] तो इसको इंगलिस्तानी या खिचड़ी बोली कहते हैं।

---

१. "जहाँ तक सम्भव हो, आपस की बातचीत हमें शुद्ध हिन्दी में करनी चाहिए। जिस प्रकार की 'खिचड़ी बोली' का हमें अभ्यास पड़ गया है, उसे छोड़ना चाहिए। अभी कुछ दिनों से फ्रान्स की एक महिला प्रयाग में हिन्दी अध्ययन के लिए आई हैं। वह लड़कियों के छात्रावास में भारतीय लड़कियों के साथ रहती हैं। हमारी लड़कियाँ जब एक-दूसरे से बात करती हैं तो बहुत से अंग्रेजी शब्द अनावश्यक होते हुए भी व्यवहार में लाती हैं, इससे फ्रेञ्च महिला को आश्चर्य होता है और इसका प्रभाव इतना अच्छा पड़ा कि अब लड़कियाँ शुद्ध भाषा बोलने का यत्न करने लगीं हैं।" अमरनाथ झा—ना० प्र० प०, भाग ६४, अङ्क ३-४, पृ० ३२०।

२. रविशंकर शुक्ल—हिन्दी वालों सावधान, सं० २००४, पृ० २४।

३. "अंग्रेजी भाषा की अभिज्ञता ने बोलचाल की भाषा को एक नये रङ्ग में रङ्ग दिया है। फलतः जो एक नई बोली बन रही है, उसे मैंने इंगलिस्तानी नाम देने की धृष्टता की है। अब तो स्पष्ट ऐसे चिह्न दिखाई देते हैं

इस इङ्गलिस्तानी या अत्यधिक खिचड़ी भाषा के उदाहरण आज चलते-फिरते स्टेशन के प्लेटफार्म पर, पोस्ट आफिस, बैंक आदि के कार्यालयों के काउण्टरों पर कालेज तथा होस्टलों में सुने जा सकते हैं। एक उदाहरण[1] सुविधा की दृष्टि से दिया जा रहा है :—

---

कि यह इङ्गलिस्तानी बोली ( डायलेक्ट ) साहित्यिक भाषा का रूप धारण कर लेगी। अभी तो इसके विकास का प्रारम्भिक काल है। आगे चलकर इसे दृढ़ और स्थायी रूप मिलेगा।" डॉ० सत्यप्रकाश, इङ्गलिस्तानी या खिचड़ी बोली, सुधा, १२ खण्ड १, संख्या १, पृ० २३।

१. "मुझे इस बात में बिल्कुल doubt नहीं है, rather I am sure कि इस year B. Sc. Examination के results बहुत खराब हुए हैं। कुछ तो examiners ने strictness का और कुछ papers भी ऐसे out of way आए कि students को unexpected questions को paper में set देखकर hall की ceiling को watch करते रह गये। इतना failure तो last three or four years में पहले कभी हुआ ही न था। अबको admission में भी difficulty उठानी पड़ेगी। Last Year भी in spite of all attempts कुछ applicants के admissions almost impossible हो गये थे। after a great stir registrar को move किया जा सका, जिससे कुछ seats का extra arrangement किया गया।" डॉ० सत्यप्रकाश—इङ्गलिस्तानी या खिचड़ी बोली, सुधा, वर्ष १२, खण्ड १, संख्या १, पृष्ठ २३।

पढ़े लिखे व्यक्तियों के साथ यह समस्या सर्वत्र व्याप्त है, देखिये, हॉगन महोदय कहते हैं :—

"We mix so much English into our speech······ its terribly mixed up······we switch over so easily ······you know we have to mix for nobody can remember all the Norwegian words." The Bilinual Dilemma.

उपर्युक्त डॉ० सत्यप्रकाश द्वारा दिये गये वाक्यों में ११३ शब्द हैं, जिनमें ४४ प्रतिशत शब्द अंग्रेजी के हैं। उनका यह कथन वस्तुतः

"डाक्टर साहब ! आप उस मीटिङ्ग में प्रेजेन्ट नहीं थे। बड़ा इन्टरेस्टिंग डिसकशन हुआ। मैं स्पीकर के प्वाइन्ट आव व्यू से एग्री नहीं कर सका और मैंने फोर्सफुल स्पीच डेलीवर की कि आडिएन्स वाज मूव्ड कम्पलीटली एन्ड दि हाउस वाज इन माइ फेवर।"[1]

उक्त लिखित वाक्यों का उदाहरण देते हुए डॉ॰ रामकुमार वर्मा[2] का कथन है कि यदि अंग्रेजी की संज्ञाओं, उसके विशेषणों और क्रियाविशेषणों के मिश्रण की यही प्रवृत्ति भाषा में रही तो आज से सौ वर्ष बाद हिन्दी के सङ्घर्ष में आज की हिन्दुस्तानी की भाँति कोई इङ्गलिस्तानी भाषा खड़ी होगी और वही राष्ट्रभाषा होने के लिए हिन्दी से युद्ध करेगी।

अंग्रेजी के सर्वनाम, क्रियाविशेषण, तथा समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग सामान्यतः नहीं होता है पर अंग्रेजी के पद-समूह के साथ कभी-कभी उनका आ जाना स्वाभाविक ही है। 'वह लेट हो गया' में क्रिया-विशेषण का प्रयोग तो बहुप्रचलित है।

सबसे मजेदार प्रयोग क्रियाओं[3] का प्रयोग है। सामान्यतः अंग्रेजी की क्रियाओं का प्रयोग नहीं होता है। पर फिर भी क्रियाओं का प्रयोग एक बड़े मजेदार ढङ्ग से होता है। क्रिया का प्रयोग क्रिया के रूप में न होकर संज्ञाओं के रूप में किया जाता है। प्रत्येक क्रिया में 'करना,' 'होना' लगाकर उसको प्रयुक्त किया जाता है। कुछ उदाहरण दर्शनीय हैं :—

१—मैं ट्राई करूँगा, २—मैं फील करता हूँ, ३—मैं सैटिसफाई हो गया, ४—ब्ल्यू कालर का कोट मैंने कभी लाइक नहीं किया, ५—पार्टी अटेन्ड करनी है।

डॉ॰ सत्यप्रकाश जी ने तो इस प्रकार की बोली का संक्षिप्त व्याकरण देने की भी चेष्टा की है। उनका ऐसा विश्वास है कि जहाँ हमारी बोलचाल की भाषा परिवर्तित हो गई है, वहाँ अब साहित्यिक भाषा भी परिवर्तित हो जायगी।

विदेशी संस्कृति के प्रभाव से और विदेशी सामग्री के प्रयोग के कारण हम अपनी भाषा में विदेशी शब्दों को ग्रहण करते चलते हैं। ज्यों-ज्यों हम

---

सत्य है कि "पढ़े-लिखे लोगों में यह बोली उतनी ही प्रचलित है जितनी प्रतापगढ़ में प्रतापगढ़ी या बलिया में पुरबिया बोली।"

१. रविशङ्कर शुक्ल—हिन्दी वालो सावधान, सं॰ २००४, पृष्ठ ६१।

२. अध्यक्षपदीय भाषण, अ॰ भा॰ हि॰ सा॰ सम्मेलन साहित्य परिषद्, उदयपुर अधिवेशन।

३. क्रियाओं के लिए देखिये ४. १. ३।

अपनी देशी चीजों का अपनाना छोड़ते जायेंगे, हमारी भाषा से देशी शब्द भी लुप्त होते चलेंगे। कभी-कभी अपने को जनसाधारण से भिन्न सिद्ध करने के लिए भी अनावश्यक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। सम्भ्रान्त कुल का व्यक्ति चाय पार्टी में दूध के लिए 'मिल्क' और चीनी के लिए 'शुगर' का प्रयोग करता है। वहाँ चम्मच से काम नहीं चलता—'स्पून' का प्रयोग ही उसकी शान को बढ़ाता है।

आज का अध्यापक कक्षा में ज्योमेट्री, इकोनोमिक्स को यों पढ़ाता है—

"सपोज करो कि अ ब स एक ट्रेंगिल है तो प्रूव करना है कि इसकी तीनों भुजाओं के मध्य विन्दुओं को मिलाने वाली रेखाएँ एक स्थान पर काटेंगी।"

"एकोनामिक्स एक ऐसा सबजेक्ट है जिसकी यूटीलिटी डे-टु-डे लाइफ में रियलाइज की जा सकती है।"

हिन्दी के एक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् और उत्तरप्रदेश के एक माननीय नेता एक सभा में उद्घाटन करते हुए कह रहे थे :

"Change तो करना ही पड़ेगा, देश को guide करने के लिए Small-scale industries बढ़ाये जा रहे हैं।.........कोई Complete picture man की बन सकती है man इसका sum Total होता है, उससे बड़ा है। Directely करे Indirecrly करे तभी study हो सकती है।"

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि इस अंग्रेजी शिक्षित लोगों की बोलचाल की भाषा में वाक्य गठन तो हिन्दी का रहता है, पर अंग्रेजी भाषा के शब्द विशेषकर संज्ञा[1] तथा विशेषणों[2] की भरमार रहता है। संज्ञाओं के बहुवचन कभी हिन्दी व्याकरण से प्रभावित होते हैं और कभी अंग्रेजी से।

१. शब्दों की एक बड़ी वर्गीकृत सूची आगे दी जा रही है। उनके अतिरिक्त ऐसे कठिन तथा अप्रयुक्त शब्दों का प्रयोग करने में भी ये व्यक्ति नहीं झिझकते, जो सामान्यतः हिन्दी के किसी शब्द द्वारा बदले जा सकते हैं अथवा जिनका प्रयोग हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं है। उदाहरणार्थ मैं ये शब्द ले सकता हूँ :—एब्स्ट्रैक्शन, अल्टरनेटिव, अप्रूवर एबनार्मल, बाइनोकूलर, कराकेचर, केटेगरी, क्वायरवाइन्स, कम्पलसरी, डीसेन्सी, डिसकस, डागमेटिज्म, एलीगेन्ट, फेन्टसी, इम्प्रेशन, मोनोटानी, लिबर्टी, आदि।

२. बहुप्रचलित विशेषणों के लिए देखिये ५. १. २।

## २. १. २. कविता में अंग्रेजी के आगत शब्द

अंग्रेजी भाषा और साहित्य के संसर्ग से काव्य के क्षेत्र में भी नवीन अभिव्यञ्जनाएँ, नवीन भाव, नवीन शैली, नवीन अलङ्कार, नवीन छन्द तो प्रविष्ट हुए ही, साथ ही अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी निःसङ्कोच धीरे-धीरे बढ़ता गया। १९ वीं शताब्दी के मध्यकाल में ही जो आधुनिक हिन्दी का शैशवकाल था, इस प्रवृत्ति के लक्षण प्रकट होने लगे।

भारतेन्दु युग के कवियों की कविताओं में और विशेषकर हास्य तथा व्यंग्य प्रधान कविताओं में इसका प्रभाव परिलक्षित होता है। भारतेन्दु द्वारा रचित कविताओं में अंग्रेजी शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग मिलता है।

करि वारड-कानून अनेकन कुलहि बचाओ।
विद्या-दान महान् नगर पति नगर चलायो ॥[1]

× ×

डिसलायल हिन्दुन कहत कहां मूढ़ वे लोग।
दृग भर निरखहिं आज ते राजभक्ति संयोग ॥[2]

भारतेन्दु के काव्य में अंग्रेजी के शब्दों का यत्र-तत्र प्रयोग ही नहीं किया गया, वरन् उन्होंने अंग्रेजी, ग्रेजुएट, रेल और पुलिस पर मुकरियाँ भी लिखीं तथा राज-राजेश्वरी आर्येश्वरी भारताधीश्वरी श्री १०८ विजयिनी देवी के चरण में निम्न वाक्यपुष्पोहार[3] भी सं० १९३४ में समर्पित किए जो सर्वथा एक नयी शैली थी :

अथ इङ्गलैंडी-पारसीक-वर्णचित्रिता
राजराजेश्वरी आशीः

G बहुE स अCस बल इरहु प्रजन की P र।
सरU जमुना गङ्ग में जबलौं थिर जग नीर ॥१॥
Jk बल तुव दास है नासहु तिनकी R।
बढ़े सY तेज नितT को अचल लिलार ॥२॥

---

१. भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग २, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ७६४।
२. भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग २, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ७६५।
३. भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग २, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ७४२।

भारत के Aकत्र सब V र सबा बल P ना।
B सहु वित्वा ते रहे तुमरे नितहि अधीन ।।३।।

भारतेन्दु के समकालीन एक-दूसरे लब्धप्रतिष्ठ साहित्यिक बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने भी अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया है।

जो प्यारे छुट्टी नहिं पाओ, तो सब चीजें भिजवाओ।
चमचम पाउडर, सुन्दर सारी, लाल दुपट्टा जर्द किनारी।
हिन्दू बिस्कुट, मोमेटम, तेल सफाचट, औ अरबी गम।
हम तुम जिनको करते प्यार, वह तसवीरें भेजो चार।[1]

× ×

प्यारे होके हिन्दुस्तानी बाबू अंग्रेजी मत बोल।
हाउ डू यू डू, हाउ डू यू डू कह क्यों होता डावाँडोल।
जामा पगड़ी पहन बदन पर, कोट पैण्टलून खोल।
विस्कुट पर मत लाल चुआ तू खा मेवे अनमोल।
हैट लगा सर सर करता क्यों बनता है बक लोल।
बात सुकवि की नहिं सुनने से निकल जायगी पोल।[2]

काव्य के क्षेत्र में शब्दों का प्रयोग इतना बढ़ गया है कि कालान्तर में और कवि भी इससे बच न सकें। सन् १८८५ में प्रकाशित खड़ीबोली का पद्य, भाग २, में तो अयोध्याप्रसाद खत्री[3] ने इस प्रकार की कविताओं के लिए

1. आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास—डॉ० श्रीकृष्ण लाल, सन् १९४२, पृष्ठ १६।
2. अम्बिकादत्त व्यास—रसीली कजरी, सं० १८८३, प्रथम आवृत्ति।
3. खड़ीबोली का पद्य, दूसरा भाग—अयोध्याप्रसाद खत्री, सन् १८८७, पृष्ठ १० से १४।

परिशिष्ट संख्या ३ से कुछ भाग दिया जा रहा है। इसकी अलभ्य प्रति मुझे श्री उदयशंकर शास्त्री के सौजन्य से प्राप्त हुई है। प्रति में भूमिका ३३—पद्य २२—परिशिष्ट २ है। उसी प्रति में किसी पाठक महोदय ने कुछ अपने विचार भी लिपिबद्ध किये हैं और उनको छोटी-छोटी स्लिपों पर रख दिया था। पाठक का नाम तो ज्ञात

पृथक् शैली ( स्टाइल ) को जन्म दिया। उन्होंने अपने संग्रह की समस्त कविताओं को चार भागों में बाँटा है :—

१—मुंशी स्टाइल, २—मौलवी स्टाइल, ३—पण्डित स्टाइल, ४—यूरेशियन स्टाइल।

यूरेशियन स्टाइल में उन्होंने लगभग पाँच पृष्ठ दिये हैं और उन्होंने यूरोपियन स्टाइल के लिए पृथक् परिच्छेद दिया है जिसमें अशुद्ध हिन्दी का प्रयोग किया है।

यह प्रवृत्ति बढ़ती ही गई और आज हास्य-प्रधान कविताओं में तो इनका प्रयोग साधारण सा हो चला है। व्यास, बेधड़क, काका, चोंच आदि कवियों की रचनाओं में अंग्रेजी शब्दों का आधिक्य है। प्रयोगवादी कवि और नयी पीढ़ी के कवि भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग खूब करने लगे हैं।[१] बीसवीं शताब्दी के इस कन्ट्रोल, राशन, एटमबम और स्पूतनिक युग में यदि कविताओं में भी इन शब्दों का प्रयोग अधिक हो तो क्या आश्चर्य—

यह एटम-बम की धमकी से।
दब न सकेगी
दब न सकेगी
अडिग माँग है, अडिग माँग है।[२]

× ×

न हो सका पर इतना निश्चित है कि वह २०वीं शताब्दी के प्रारम्भ का अवश्य है। "यहाँ जितने अंग्रेजी शब्द आए हैं, वे प्रायः ऐसी सामग्रियों के नाम हैं जिनका प्रचार सर्वसाधारण देश के निवासियों में नहीं है। फिर यदि दो चार शब्द इस प्रकार कभी आ भी जायँ तो इसके सहारे एक विचित्र स्टाइल समझना भूल है। बहुत से यूरोपियन बातचीत करते समय हिन्दुस्तानी शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में किया करते हैं और कितने शब्द उनकी भाषा में मिल भी गए हैं। क्या हम कह सकते हैं कि यह हिन्दुस्तानी स्टाइल की अँग्रेजी है। मेरी समझ में भाषा को इस प्रकार स्टाइलों में छाँटना लड़कों का खेल है।" —[हस्तलिखित स्लिप से जो पुस्तक में प्राप्त हुई]।

1. पृथक् परिशिष्ट दिया जा रहा है प-३।
२. शिवमंगल सिंह 'सुमन'—विश्वास बढ़ता ही गया, पृ० ३५।

तोप टैंक-एटम-बम,
सब कुछ हमने सुना गुना था ।[1]

× ×

खाली पेट दिखाने पर,
ओली गोली बम बरस रहे थे ।[2]

× ×

उग रहीं कीटाणु की फसलें,
प्रलय अणुबम बरसता ।[3]

× ×

टैंकों के बदले ट्रेक्टर महमान आ गए ।
अणुबम के बदले जन-बल के गान ठन गए ॥[4]

× ×

करें खल पाप कमाई है
भलो नहीं कन्ट्रोल गरीबन कूँ दुखदाई है ।[5]

× ×

आजादी जब से भारत में आई ।
कंटरोल अरु ब्लैकवती को,
क्यों संग अपने लाई ।[6]

× ×

एटम जो उद्जन बम है नभ गामी महलों के कर में ।[7]

× ×

---

१. शिवमंगल सिंह 'सुमन'—विश्वास बढ़ता ही गया, पृष्ठ ४३ ।
२. वही, पृष्ठ ८१ ।
३. वही, पृष्ठ ८६ ।
४. तार सप्तक, दूसरा भाग, पृ० १०३ ।
५. डॉ० कपिलदेव सिंह—ब्रजभाषा बनाम खड़ीबोली, १९५६, पृष्ठ २६७ ।
६. डॉ० कपिलदेव सिंह—ब्रजभाषा बनाम खड़ीबोली, १९५६, पृष्ठ २६३ ।
७. तारसप्तक, भाग २, पृष्ठ १३८ ।

देखो इसमें ललितकलाओं की फुलझड़ियाँ छूट रही हैं।
एटम आहें भरते, मेघ बरसते, कलियाँ फूट रही हैं ॥[1]

× ×

एटम का युग नहीं, अरे यह गोबर का युग भाई।[2]

× ×

कुछ कवि तो शब्दों का प्रयोग ही नहीं करते, वरन् वाक्यांश भी उसमें फिट कर देना अपना कौशल मानते हैं।

यही तो है देखो जी प्रेम।
जब न रहे Future की चिन्ता, रहे न बिल्कुल Shame।
Past all surgery होय जब past all hope।[3]
यू हैव टू गिव यो पीपुल,
 दि सैंस आफ हंगर।
अपने देशवासियों को है तुम्हें बताना,
 अर्थ भूख का।[4]

अंग्रेजी चीजों का काव्य-क्षेत्र में उपमानरूप में प्रयोग होने लगा है जिसके फलस्वरूप तत्सम्बन्धी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी स्वाभाविक है :—

उसकी फाइल-सी भारी आँखों के नीचे।

रातों-जगी हुई कालस है।[5]

× ×

बढ़ता जाता वह मशीन सा।

---

१. कुंजबिहारी पाण्डेय—कवि सम्मेलन, धर्मयुग, १७-३-१६५६, पृष्ठ ४३।
२. पैरोडि दास—गोबर महिमा, साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' १७-३-५७, पृष्ठ १२।
३. रूपनारायण पाण्डेय—मूर्ख मण्डली, प्र० सं०, पृष्ठ १०१।
४. बच्चन—बंगाल का काल, १६५०, पृष्ठ २७।
५. गिरजाकुमार माथुर—मशीन का पुर्जा, कवि भारती, प्र० सं०, पृष्ठ ६६७।

## २. १. ३. विज्ञापन में अँग्रेजी शब्द

३. १. ३. ०. इस युग में आज व्यापार के क्षेत्र में विज्ञापन का विशेष महत्व है। अन्य क्षेत्रों की भाँति अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग साइनबोर्ड (नाम-पट—व्यक्तिविशेष, दूकान, संस्थादि ) एवं वस्तुओं के प्रचारार्थ विज्ञापनों में किया जाने लगा है।

### २. १. ३. १. व्यक्तियों के नामपट्ट—

अंग्रेजी विधि से नाम लिखने तथा उसके संक्षितीकरण की विधि से नवीन रूप सामने आते हैं :—

C. V. Raman सी० वी० रमन[1]
H. C. Sharma एच० सी० शर्मा
R. K. Gautam आर० के० गौतम

हिन्दी के नामों का जब रोमनीकरण किया गया तो गुप्त, शुक्ल, श्रीवास्तव, अग्रवालादि के लिए क्रमशः, Gupta, Shukla, Shrivastava, Agrawala वर्तनी रक्खी गई। इसका प्रभाव यह पड़ा कि फिर जब अंग्रेजी में लिखित नामों का नागरीकरण किया गया तो गुप्त, शुक्ल, श्रीवास्तव, अग्रवाल महोदय क्रमशः गुप्ता, शुक्ला, श्रीवास्तवा, अग्रवाला बन गये। 'गुप्ता' तो बहुत ही अधिक प्रचलित हुआ। 'चन्द्रा' 'टैगोर' आदि रूप 'चन्द्र' और 'ठाकुर' के ही अंग्रेजी रूप हैं। कुछ तो अंग्रेजी के शब्दों के आधार पर बने हुये नाम पर्याप्त प्रचलित हैं—कन्नैल (कर्नल) सिंह, जंडैल (जनरल) सिंह, मेजर सिंह, सिकत्तर सिंह, सिलेटी सिंह।[2]

### २ १. ३. २. दुकानों के नामपट्ट—

बीसवीं शताब्दी में अंग्रेजी संस्कृति के जहाँ अनेक प्रभाव परिलक्षित होते हैं, वहाँ भवन, दुकान, संस्थाओं आदि के नाम अंग्रेजी ढङ्ग से रखना भी एक प्रमुख प्रभाव है। स्वतन्त्रता के पूर्व तक 'भवन' विशेष के नाम 'महल', कुटीर' भवनादि न रखकर 'विला', 'काटेज' आदि रक्खे जाते थे। दुकानों के नाम

---

१. इस प्रकार सभी ध्वनियाँ एक-दूसरे के निकट जा सकती हैं।
२. डॉ० विद्याभूषण विभु—अभिधान-अनुशीलन, १९५८ ई०, पृष्ठ ३१० तथा ४८६।

पर तो यदि दृष्टि डाली जाय तो कोई व्यक्ति किसी भी नगर की दुकानों पर लगे हुए नामपट्टों, पत्रिका में प्रकाशित विज्ञापनों के आधार पर कह सकता है कि अंग्रेजी का विशेष प्रभाव है। आवृत्ति की दृष्टि से यदि विज्ञापन में अंग्रेजी शब्दों की आवृत्ति सर्वाधिक मानी जाय तो कोई भी अत्युक्ति न होगी। इस प्रकार का आधिक्य अन्य प्रादेशिक भाषाओं में भी है।[1] मैं उक्त आधार पर एकत्रित की गई कुछ नामों की सूची दे रहा हूँ।

## २. १. ३. २. १. पूर्णतः अंग्रेजी में—

१—दी एटलस साईकिल इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, २—फार्मा स्पेसिफिक रेमिडीज कं०, ३—टाइम्स आफ इण्डिया, ४—दी इण्डस्ट्रियल रिसर्च लेबोरेटरीज़, ५—गोल्डन टोबाको कम्पनी प्राइवेट लि०, ६—कारबोन ड्राय कलर वर्क्स, ७—युनीवर्सल परफ्यूमरी वर्क्स, ८—मार्डन् आप्टिकल कम्पनी, ९—स्पनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग कम्पनी, १०—एसोसियेटेड सीमेण्ट कम्पनीज़,[2] ११—पेनमेन इण्डस्ट्रियल सर्वीसीझ,[3] १२—कैपीटल क्लाक वर्क्स।

## २. १. ३. २. २ केवल नगर-विशेष का नाममात्र ही अपना है—

१—कलकत्ता ट्रेडमार्क कम्पनी, २—दिल्ली बुक कम्पनी, ३—पटियाला बिस्कुट मैन्युफैक्चरर्स प्राइवेट लि०, ४—दिल्ली फ्लोरमिल्स, ५—देहली कैमिकल्स, ६—बाम्बे टिन प्रिन्टर्स, ७—जयपुर गोल्डन ट्रान्सपोर्ट, ८—कानपुर शू कम्पनी।

## २. १. ३. २. ३. केवल व्यक्ति-विशेष का नाम ही अपना है

१—रामा[4] हौजरी स्टोर, २—कृष्णा टाइप फौण्डरी, ३—जगदीश बुक डिपो, ४—सत्यवती फैमिली प्लानिंग सेन्टर, ५—सी० के० सेन एण्ड कं०

---

१. गुजराती के लिए देखिए—Some English Loan words in Gujrati—A. Master B. S. O. A. S. Vol. X, page 25.

२. ए० सी० सी० नाम से प्रसिद्ध।

३. 'ज़' [Z] का 'झ' होना मराठी की विशेषता है।

४. इसमें रोमन स्पेलिंग का प्रभाव है। यह प्रभाव विशेष परिलक्षित होता है।

## २. १. ३. २. ४. प्रारम्भिक शब्द मात्र हिन्दी का है :—

१—आयुर्वेदिक फारमेस्यूटीकल कम्पनी लिमिटेड, २—आयुर्वेदाश्रम फार्मेसी लिमिटेड, ३—प्रभात प्रॉडक्ट्स कम्पनी, ४—स्वास्तिक आइल मिल्स लिमिटेड, ५—केशवर्धिनी प्रॉडक्ट्स।

२. १. ३. २. ५. केवल कम्पनी, ब्रदर्स आदि शब्दों को लगाकर नाम रख लेना तो आज सर्वसुलभ हो गया है :—

१—राम कम्पनी, २—साण्डू ब्रदर्स, ३—मुरारी ब्रदर्स, ४—मैसूर सुगन्ध धूप फैक्टरी, ५—शान्ता स्टोर्स।

## २. १. ३. ३. वस्तु-विशेष के नाम :—

विदेशी पदार्थों के साथ उनके नाम आ जाना तो स्वाभाविक ही है, पर अन्य स्वदेशी वस्तुओं के भी नाम अंग्रेजी में रख देने मात्र से कुछ उसका गौरव बढ़ा हुआ प्रतीत होता है :—

१—हेनु पाउडर, २—सपट लोशन, ३—राजा ट्वाइज, ४—प्रकाश पेन।

**विशेषण रूप में :—**

१—फोल्डिंग बाँसुरी, २—टेक्निकल प्रकाशन।

**मिश्रित शब्द :—**

१—नैन-अं० । oil । आइल-नैनोल

२—नेत्र-अं० oil । आइल-नेत्रोल

३— $\frac{\text{Cough}}{\text{कफ}}$ + हि० हारी कफहारी

## २. १. ३. ४. विज्ञापनों की भाषा :—

विज्ञापन की भाषा का सबसे बड़ा गुण सर्वजन सुलभता है। उसमें आकर्षण का विशेष महत्व होता है। प्रत्येक विभाग से सम्बन्धित शब्दावली तत्सम्बन्धी विज्ञापन में प्रयुक्त होती है, जैसे फोटोग्राफी में निम्न अप्रचलित शब्दों का यदि प्रयोग किया गया हो तो वह स्वाभाविक ही नहीं, अनिवार्य है :—

ब्राउनी, कोडक, रिफ्लैक्स, फुलव्यू, केमरा, मूवी केमरा, स्नेपशाट, एन्लार्जमेण्ट, लैंस, मॉडल, फील्डकेस, प्रोजेक्टर, प्रोसेसिंग, सुपर एक्स, फिल्म।

मोटर के विज्ञापन में मोटर से सम्बन्धित शब्दावली—ड्राइविंग, गेयर, चेंजिंग, ब्रेक, इञ्जन, पावर, यूनिट, कूलिंग, इग्नेशन, लुब्रीकेशन, इलेक्ट्रिकल, टाइमिंग, रिपेयर, वर्कशाप, ओवर-हॉलिंग; ओटोमोबाइल, फिटिंग, फिटर, स्पीड, मास्टर, लेजिंग, रोडलग, गुडइयर, लाइटिंग, वायरिंग, लैम्प, मीटर आदि शब्दावली का प्रयोग होना अवश्यम्भावी है।

इस प्रकार प्रत्येक विभाग से सम्न्धित शब्दावली में बहुत अधिक प्राविधिक शब्दावली का आ जाना स्वाभाविक है जिसका प्रचलन अभी तक अंग्रेजी में ही है। विज्ञापन के क्षेत्र में दैनिक प्रयोग में आने वाले शब्द 'गारण्टी, आर्डर, वी० पी० पी०, एजेण्ट, डिजाइन, मार्का आदि शब्दों से तो बचना असम्भव ही है। यही नहीं, प्रतिदिन काम में आने वाली बनियान, जैसी चीज के नाम जैसे मेजेस्टी, टाइगर, इण्टरलाक, सुपरफाइन, साइकलिस्ट, गोल्डन आदि रखे जाने लगे, तब कहाँ तक इन अंग्रेजी शब्दों से बचा जा सकता है।

## २.२ शब्दावली

२. २. ०. इस शब्दावली को न सूची ही कहा जा सकता है और न इसकी पूर्णता का दावा किया जा सकता है। जीवन के कितने विभिन्न अंगों और उपांगों में अंग्रेजी शब्द गृहीत हो गये हैं, केवल इसका दिग्दर्शन कराना ही इसका एक मात्र उद्देश्य है। जहाँ पर आवश्यकता समझी गई है, वहाँ शब्दावली के दो विभाग किये गये हैं।

### २. २. १. प्रतिदिन के व्यवहार में आने वाली वस्तुएँ:—

**२. २. १. १. कपड़े : जनसाधारण :** लंकलाट-लट्ठा (लांगक्लाथ[1]) लिनन, साटन[2] ट्वइल--ट्वूल[3], पोपलीन, फलालैन, सिल्क, क्रैप-करेब,

---

१. 'लन्दराज' रूप भी मिलता है। यूरोप में १६७५ और भारत में उसी समय से मिलता है। Eng. Factories in India, Foster 1618-21

२- अंग्रेजी स्केट Skeat, Low Lt Seta (silk) Latin Seta (bristle hair) Por Setin, पृष्ठ 303. chinese Satŭ n a sort of silk terturg.

३. गीत में भी प्रयुक्त—अंगया न लाया टूल की तेरी जल जे लम्बरदारी—फैलन डिक्शनरी, पृष्ठ ४४१।

इटालियन, बकरम, मारकीन[1], वाइल[2], सम्बन्धित शब्दावली : कटपीस, हैण्डलूम, कोर्स, फाइन, सुपरफाइन।

**शिक्षित जनवर्ग :** गैवर्डीन, ट्वीड, सर्ज, कार्डराय, ग्वारनाट, बाबरलेट[3], कैम्ब्रिक, (कमरक), पैराशूट, टिश्यू, अलपका, ब्लैजर, टेपस्ट्री, नाइलन, जार्जट, पैरागन।

**वस्त्र : जनसाधारण :** जाकेट, ब्लाउज, जम्पर-फम्फर, जरसी, फ्राक, पुलोवर, पेटीकोट, सूट, पतलून, पैंट, कोट, हाफ-ओवर, टाई, कालर, मफलर, स्वेटर, वास्कट, गंजी, बनियान, सैंडो, निकर, पोलका, बुशर्ट।

**शिक्षित जनवर्ग :** वाडिस, वाडी, विरजिस, ब्रीचेज, स्लैक्स, गाउन, स्लीपिंग सूट, स्कर्ट, वेस्ट, चेस्टर-फील्ड, चेस्टर, अंडरवीयर, साक्स, बरान-कोट, बाबा सूट[4], ब्लेजर, कैप, क्लाक।

**संक्षिप्त शब्दावली :** रेडीमेड, जेन्ट्स, गेलिस, गेटिस, क्रीज, पाकिट-पाकेट, लेडीज, शर्टिंग, वार्डर, श्रिंक, फिनिश, वकलस, बक्सुआ, हैट, कैप, नाइटकैप, फैल्ट, गान्धी, फेल्ट, हेड, बूट, फुलबूट, शू, स्लीपर, सैण्डल, पालिश, ब्रुश, कन्वास, हील, सोल, क्लिप्स।

२. २. १. २. **बर्तन :** ताम्लोट, जार, गिलास, कप, केटली, प्लेट, टब।
**जनसाधारण :** बाल्टी ( पुर्तगाली )।

**शिक्षित वर्ग :** टी सेट, टिफिन, कैरियर, सॉसपेन, सॉसर, डिश, बेसिन, वाश-बेसिन, ट्रे, एश-ट्रे, जग, स्पून, मिल्क-केन, मग (मग्गा)।

---

१. व्युत्पत्ति अमेरिकन से डा० धीरेन्द्र वर्मा A-U. S. 1932. Vol VIII Page 48. 'नैनकिन' से नागरी प्रचारिणी सभा कोश से सं० २००८, पृष्ठ ६३६।

२. धीरेन्द्र जी व्युत्पत्ति अं० शब्द Viyella से मानते हैं।

३. फैलन, डिक्शनरी, सन् १८७६, पृष्ठ १९३।

४. बेबी के अर्थ में बाबा का प्रयोग सुलतान सलीम जहाँगीर को हमेशा शेखूबाबा कहा जाता है। Hodirala—Notes on Hobson jobson, Ind.Ant.Vol LX, LX1 Page 85-88।

## २. २. १. ३ आभूषण :—

**जनसाधारण :** नेकलेस, क्लिप, ऐरिंग-एरन, डामल ( डायमण्ड कट ) ब्रेसलेट, टाप्स ।

**शिक्षित वर्ग :** लाकेट, चैन, रिंग, हेयर-पिन, मोनोग्राम ( अँगूठी ) ब्रोच ।
**सम्बन्धित :** ज्वेलर ।

## २. २. १. ४ शृंगार-प्रसाधन :—

**जनसाधारण :** पाउडर—पौडर, वैसलीन,[1] क्रीम, रिबन, लेस ।

**शिक्षित वर्ग:** लवेंडर, रूज, लिपिस्टिक, क्यूटेक्स, नेल-पालिश, पोमेड, स्नो, ब्रिलियण्टाइन, कोल्ड क्रीम, सोप, टायलेट, सेण्ट, टूथपेस्ट, मनीवेग, पर्स, हेअर, ड्रेसिंग,सैलून, वाब्ड, बाल, क्लीनशेव्ड, बुरुश, कटिंग, कोलनवाटर, शेम्पू, वस्तुतः भारतीय है ( अँग्रेजी वेश-भूषा में ) ।

**सम्बन्धित :** कट, फ़ाल ( साड़ी ), फ़ैशन, लेडी, मेन, मेक-अप, टिपटाप, वैनिटीबाक्स ।

## २. २. १. ५. भोजन सम्बन्धित :—

**जनसाधारण :** बिस्कुट, डबल (रोटी), चाकलेट, लेमचूस, आमलेट, आइस-क्रीम; लेमनेड-लेमन-सोडावाटर, टी, टाफी, काफी, ब्राण्डी ह्विस्की, अरारोट, टमाटर, पीपरमेण्ट, कोकोजम, रसभरी, (रैस्पबरी)[2] सिगार, चुरुट, (तमिल) ।

**शिक्षित वर्ग :** टोस्ट, ब्रेड, पटेटो चाप्स, मीट, सैंडविच, केक, मटन, कट-

---

१. वैसलीन वस्तुतः 'वैसलीन' Chesebrough mfg Co. New York 1872 का ट्रेडमार्क है पर इसका प्रयोग सामान्यतः किसी भी अन्य कम्पनी की वैसलीन के लिये भी होता है। Oxford concise Dictionary, 1942, Page 1364.

२. संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर—ना० प्र० सभा, काशी, सं० १९९६, पृष्ठ ९४७ ।

लेट, सासेज, चीज, पेस्ट्री, क्रीम, फ्रूट, क्रीमरोल, सलाद, सेक्रीन, सिगार, पाइप, कोकीन, ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर, टिफिन ।

### २. २. १. ६. फर्नीचरादि :—

**जनसाधारण :** बेंच, स्टूल, कोच, तिरपाल, (tarpaulin) सोफा, बक्स, ट्रंक, बेग, सूटकेस, तिजोरी ।

**शिक्षित वर्ग :** इजी-चेयर, कुशन-चेयर, कार्पेट, डाइनिंग-टेबिल, ड्राअर, रैक, सेफ, बेसिन, अटैची, हैण्डबेग, ब्रकेट ( दिवालगिरी ) ।

### २. २. १. ७ अन्य व्यवहार में आनेवाली चीजें :—

**जनसाधारण:** माचिस, होल्डाल, बोतल, कागज, स्टोव, बटन, कफ, ब्लैड, सेफ्टीरेजर, कण्डील, लम्प, लालटेन, चिमनी, इलास्टिक, रील, वारनिश, स्टार्च, थर्मस, ग्रामोफोन, रिकार्ड, कलेण्डर, गैस, एरन (आइरन), पिरेस, फोनोग्राफ, डायरी, तारकोल, तारपीन, सेप्टीपिन, हरीकेन, रेडियो, हीटर, कूलर, बल्ब, लाउडस्पीकर, बैटरी, अलार्म, टाइमपीस फ्रेम (बोलचाल) मिस्कौट, गारण्टी, फारमूला, प्रोग्राम, लोफ़र ।

**शिक्षित वर्ग :** आयल-क्लाथ, बर्नर, स्टोव, बिजली, एरियल, वायरलेस, टेलिस्कोप, टेलीविजन, करेण्ट, ईथर, रेफ्रीजिरेटर, मीटर, माइक, फैन, सीलिंग, टेबिल, कनकशन, हेलियोस्कोप, सीस्मोग्राफ, ड्राइ-क्लीनिंग, प्लग, प्वाइंट, लाइन, यूनिट, मेण्टल, पैट्रोमेक्स, सेल, रिस्टवाच, क्लाक, टावर पेण्डुलम, वाटरप्रूफ, शाक-प्रूफ, रेग्यूलेटर, लीवर, डायल, रेडियम, स्प्रिंग, पावर, गौगिल, विजन, रेटीना लैंस ।

**बोलचाल :** मिस्कोट, मूड, आलराइट, एट होम, बाइचांस, एटीकेट, फिट, गार्डन, पार्टी, इण्टरकास्ट, अपसेट, अप-टू डेट, थैंक्स, गार्डन-पार्टी, गुडलक, ओर शार्टकट, मिस्चीफ, स्टण्ट, आलराइट, अलौट, फस, कन्सेशन, बोस, हब्ब ।

२. २. १. ८. **प्राकृतिक पदार्थ :** टिन (टीन), निकल, कापर, गिलट (गिल्ड), जिंक, प्लेटिनम, माइका, जरमन-सिलवर, रेडियम, सिलवरी, स्लेट ,[१] स्टील, ब्राम, अलमोनियम, गैस, तारकोल, सीमेण्ट, वारनिश,

---

१. स्लेटी रंग बना है ।

सिलालाइड, रबर, प्लास्टिक, गटापार्चा, एनामिल, चाक, ग्रीस वैक्स, बेकेलाइट।

२. २. २. व्यापार तथा पेशे[1] :—

२. २. २. १ सामान्य : ऐजेण्ट, अर्जेण्ट, अजेन्सी, अकाउन्टेण्ट, एसोसियेशन, साइनबोर्ड, बिल, वाउचर, आफिस, बोनस, बण्डल, बिजनेस, केशबाक्स, चीटिंग, चाइस, कमीशन, नोट, कम्पनी, क्रेडिट, डेबिट, डिमाण्ड, सप्लाई, डिस्काउण्ट, एस्टिमेट, एक्सपर्ट, फेडरेशन, फ़र्म, मीमो, मिल, आर्डर, सेल्समैन, पैकिंग, प्रोप्राइटर, मेट, सैल्सटैक्स, स्टोर, टर्म्स, ट्रेडमार्क, मार्का, इण्डेक्स, इण्डेण्ट, ब्रोकर, मर्चेण्ट, फैक्ट्री, शेयर, स्टाक, एक्सचेंज, टेण्डर, इन्वायस, इम्पोर्ट, कैपटल, डिवीडेण्ड, गिरमिट, एग्रीमेण्ट।

२. २. २. २. स्टेशनरी-कागज : पिन, होल्डर, पेनहोल्डर, निब, पेन, पेन्सिल, सॉफ्ट तथा हार्ड, फाउन्टेनपेन, रूल, ब्लाटिंगपैड, पेपरवेट, लेटर पैड, इंकपाट, रूलर, डस्टर,—वाटरमार्क, शीट, स्लिप, रफ, बैंक, ग्लेज।

२. २. ३. होटल-डेरी : बॉय, वेटर, रेस्ट्राँ, स्टाल, मेनू, बिल, काफी-हाउस, केफीटेरिया, आइटम, लाज, मैनेजर, क्रीम।

२. २. २. ४. मकान : सीमेण्ट,[2] कंकरीट, लिंटर, गिरडर, टाइल, हैंगलिंग, बोल्ट, नट-बोल्ट, हुक, शेड, कमोड, बीम, गटर, फ्लश, पाइप, राड, शीट, टेप; अन्य सम्बन्धित—बिल्डिंग, बाउण्ड्री, कम्पाउण्ड, गेस्टहाउस, क्वाटर, कॉलोनी, फ़्लैट, लान, लिफ़्ट, आउट-हाउस, अस्तबल, गेट, बाल्कनी, बरामदा, कोरीडर, गैलरी, पोर्टिको, पोर्च, हाल, कार्निस, कानस, बाथरूम, बेडरूम, डाइनिंग, ड्राइंग, लेट्रिन, पार्टीशन, टेनेण्ट रेंट।

२. २. २. ५, प्राविधिक[3] : इंजन, मशीन, मोटर, वर्कशाप, फाउण्ड्री,

---

१. इस क्षेत्र में व्यापारगत शब्दावली में अन्तर है और उसी प्रकार उसका विभाजन किया गया है। शिक्षा का आधार उसमें काम नहीं करता।

२. बहुप्रयुक्त होने के कारण सिमिन, सिमिट, सिरमिट, सिलोमेण्ट रूप भी प्रचलित है।

३. इस क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में इतने अधिक शब्द प्रचलित हैं कि स्वीकार करना कठिन है।

अप्रेंटिस, डायनमो, बायलर, ग्रीस, सिलेंडर, इंजीनियर, फोरमैन, फिटर, मिस्त्री, रिवट, शटर, शटिल, रिपट, बाशर, डामर, प्लांट, स्क्रू, पम्प, प्लास, इलेक्ट्रिक, आपरेटर, कंट्रोल, करेण्ट, क्रेन, जनरेटर, ट्यूबवेल, डीजल, लाइन, पाइप, फ़ैक्ट्री, लौंड्री, फ़्यूज, बोरिंग ।

२. २. २. ६ बैंक : बैंकर, बेयरर, चेक, चेंज, काउंटर, करेंसी, डिप्रेशन, ड्राफ्ट, इम्प्रेस्ट, लाक आउट, सेविंग्स, नोट, कैश, ओवरड्राफ्ट, कैशियर, बुलियन ।

२. २. २. ७. नौकरी : अप्लीकेशन, अपॉएण्टमेण्ट, अप्रेण्टिसशिप, अप्रोच, बास, कैंडिडेट, सिविल सर्विस, कम्पटीशन, ड्यूटी, डिसमिस, एक्सपीरियंस, फेयरवेल, हेड क्लर्क, चार्ज, चार्जशीट, इञ्चार्ज, इंक्रमेण्ट, ग्रेड, डेपूटेशन, अल्टीमेटम, अलाउंस, इण्टरव्यू, आफर, पेंशन, रिकार्ड, रिजेक्शन, रिपोर्ट, रिटायर्ड, सीनियर, जूनीयर, स्टाफ, टेम्परी, ट्रांसफर, अफसर, टूर, आई० सी० एस०, आई० ए० एस० आदि विभिन्न पद, पेन्शन, अर्दली ।

२. २. २. ८. पत्रकारिता प्रकाशन : बुलैटिन, कार्टून, पैम्फलैट, पोस्टर, इशू, प्रेस, रिपोर्टर, हैंडबिल, कॉरस्पोण्डेन्स, कालम, एडवरटाइजमेण्ट, एडीटर, हेडिंग, हेडलाइन, रायल्टी, जर्नलिस्ट, मेटर, नोटिस, पैकट, प्रेस-कम्यूनिक, लीफलेट, पब्लिसिटी, पैकिंग, रिप्रिंट, रिव्यू, रैपर, ब्लाक, हाफ़टोन, आर्टेकिल, एडीशन, फुलस्कैप, डिमाई ।

## २.२.३ विज्ञान और कला तथा धर्म :—

२. २. ३ .१. डाक्टरी रोग : जनसाधारण : पायरिया, टाइफाइड, न्यूमोनिया, मलेरिया, प्लेग, इन्फ्लूएंजा, (फ़्लू), टी० बी०, लिबर, डेंगूज्वर, हार्टफेल, अस्थमा (Asthma) ।

शिक्षित-जनवर्ग : डायरिया, अमोनिया, थाइसिस, कालरा, सेप्टिक, डिलीरियम, हिस्टीरिया, डायबिटीज़, डिस्पैपसिया, हाइड्रोसील, हाइड्रोफोबिया, टानसिल्स, हर्निया, डिसेण्ट्री, प्लूरेसी, एपेंडिसाइटिस ।

सम्बन्धित शब्दावली: जनसाधारण: कम्पाउंडर, (कंपोडर) नर्स, डाक्टर, सर्जन, सिविल लेडी-डाक्टर, अस्पताल, फार्मेसी, बोतल, प्लास्तर, पुल्टिस, आपरेशन, इंजेक्शन, थर्मामीटर, गाज, गाच, गाछ, एनिमा, पाउडर, केस, राउंड, (रौंद), विटामिन, कार्बोलिक लोशन, फिनैल, टिंचर,

पोटाश, कास्टिक, जुलाब,[1] ग्लूकोस,ग्लीसरीन,कुनैन, टानिक, पोस्टमार्टम, पेन्सलीन। शिक्षित-जनवर्ग—एलोपैथी, एनाटमी, मेटरनिटी, वेटरनरी, वायोकैमिक, होमियोपैथिक, सर्जरी, सिस्टर, हाउस-सर्जन, मैट्रन, वार्ड, डिस्पेंसरी, कैमिस्ट, एम्बूलैंस,स्पेशलिस्ट, क्लिनिक, टपवाथ, बैंडेज, ब्लड-प्रेसर, टेम्परेचर,बर्थकण्ट्रोल,ड्रापर,पिल्स,टेबलेट,फाइल, मिक्श्चर, आइस बैग, फीवर, स्पिल्ट स्टेथिस्कोप, स्ट्रेचर, सिरिंज, टेस्ट-ट्यूब, एक्सरे, लिंट, अटैक, एण्टीडोट,चेंज,(क्लाइमेट), प्रेक्टिस,मोशन, होपलेस, प्रिस्क्रपशन, कौलिक, पेन, पेटेण्ट, नार्मल, डिलीवरी, फर्स्ट एड, प्वाइजनिंग, सिम्टम, सिस्टम, विजिट, कैमिकल,परमेगनेटपुटाश,अलकोहल,[2] टाटरिक एसिड, फासफोरस, आर्सेनिक, ड्रग, कार्बन, कास्टर आयल, ओवलटीन,वार्लीवाटर डाइट, प्रोटीन, कैस्टर आयल, निकेटिन, पेराफीन, सीरप।

२.२.३.२. **फोटोग्राफी तथा कला :** डार्करूम, केमरा, केस, फोकस, व्यू फाउंडर, फ्लैश-बल्ब, फ़िल्टर, बस्ट, केबिनेट, फ्लैश होल्डर, रिफलैक्टर, इन्लार्जमेण्ट, फ़िल्म, एलबम, फ्रेम, ग्रुप लाइट, शेड, निगेटिव, आयल-पेंटिंग, रिटचिंग, स्नैपशाट, व्यू, डेवलेप, डिश, पोर्ट्रेट, एक्सपोज़, बैक-ग्राउण्ड, प्रिंटिंग, रील, ब्राउनी, कोडक, पेंट, पेण्टर, एग्जीबिट, ड्रायंग, पैटन, वाटरकलर, पेस्टल ड्राइंग, पेंटिङ्ग, कार्डबोड, बुक-क्राफ्ट, आर्ट गैलरी, आर्ट-पेपर, कवर, उटकट, (वुडकट)।

२.२.३.३ **संगीत :**—बैंड, बिगुल, क्लेरिअनट, ड्रम,फ्लूट, पियानो, बायलिन, आरगन, हारमोनियम, बैंजो, गिटार, कोरस, कन्सर्ट, आर्केस्ट्रा, आपेरा, रेडियो, सिंगर, म्यूजिक, कान्फ्रेन्स।

२.२.३.४ **प्रेस :**—कम्पोजीटर, कम्पोजिंग, ब्लाक, रोलर, फ्रिस्केट, ब्लाईवाय, प्रूफ, मैन्यूस्क्रिप्ट, लीफलेट, गेला, गेली, डाई, पलेटन, पलेनर, फरमा, फलोलिया, ब्रीवियर, मोलिंडग, केटल, लेड, (मील्ड,) क्वाड्रट, जस्टीफाई,

---

१. अं० शब्द Jalap से मानी जा सकती है—देखिए Oxford Concise Dictionary 1942, Page 610. है, पर ना० प्र० कोश सं०२००८, पृष्ठ ४३५ पर इसकी व्युत्पत्ति फारसी शब्द से मानी गई है।

२. अरबी शब्द है, पर अंग्रेजो के माध्यम से आया है—डा० बाहरी Persian influence in Hindi-Studies of Allahabad, 1943/17

टाइप, पाइका, इटाँलिक, कास्टिंग मशीन, मोनो, लीनो, लीथो, जाब, जर्नल, जिंक, मशीन, प्रिंटर, रिपोर्ट, (रिपोर्ताज) ।[1]

२.२.३.५ **धर्म** : रोमन कैथोलिक्, प्रोस्टेस्टेंट, सण्डेस्कल, मिशन, मिशनरी, पोप, आर्कविशप, रेवरेण्ड, क्रिसमस, गुडफ्राइडे, क्राइस्ट[2], मरियम, फादर, मदर, चर्च, सरमन, बायबिल, होली, अथीस्ट, किरस्तान, खिष्टीय, किरण्ट (छोटा क्रिस्तान), वपतिस्मा, वाइन, थियोसोफिस्ट ।

## प्रशासन :—

२. २. ४. १. **सरकार-शासन : जनसाधारण** : गवर्नर-जनरल, वायसराय, गवर्नर, मिनिस्टर प्रीमियर, चीफ़ मिनिस्टर, डिप्टी, गवर्नमेण्ट, होम, प्रेसीडेण्ट[3], सेक्रेटिरियट, सर्किट हाउस, प्राइवेट सेक्रेटरी, रेजीडेण्ट, केबिनेट, एम्बेसी, रीजेण्ट, रीजेंसी, असेम्बली, कौंसिल, बजट, फेडरेशन, पालिसी, बिल, कोरम, फार्मूला, कोड, अजेण्डा, गजट, फाइलव्हिप, इन्सपेक्टर, प्लानिंग, फाइव ईयर प्लान, प्रोजेक्ट, कम्यूनिटी, स्कीम, डैम, रिफ़्यूजी, प्योन[4] । शिक्षित जन वर्ग—गवर्नमेण्ट हाउस, इण्डिया हाउस, स्टेटस, प्रोविन्स, प्राइम, मिनिस्टर, प्रीमियर, इन्टेरिम, एक्सचेंज रेजोल्यूशन, एक्जीक्यूटिव, आर्डिनेंस, मेमो, यूनाइटेड फ्रण्ट, ऑपोजिशन, प्वाइंट अव् आर्डर ।

---

१. फ्रांसिसी भाषा का शब्द है जो रिपोर्ट का ही साहित्यिक रूप होते हुए उससे भिन्नार्थक है—डा० रामविलास शर्मा, प्रगति और परम्परा, १६५२, पृ० १६० ।

२. खाइष्ट दूसरा रूप है ।

३. भारत में, आरम्भ में इसका प्रयोग किसी फैक्टरी के प्रधान के लिए होता था । ईस्ट इण्डिया कम्पनी के राज्य में इसका पहला प्रयोग सन् १६६१ में मिलता है । सन् १६२३ में डेल्ला-वेल्ला के पृष्ठ ५१७ पर भी इसका प्रयोग मिलता है—हाब्सन-जाब्सन सन् १६०३ ।

४. सन् १५०३ में इसका प्रथम प्रयोग प्राप्त होता था । Pẽao के रूप में तथा Hobson Jobson page, १६०३ पृष्ठ ६६६, संदेशवाहक के रूप में—messenger, G.temple, Glossory of I. terms 1897 पृष्ठ ३२३ ।

२. २. ४. २. कलक्टरी:—

**कचहरी अदालत : जनसाधारण :** कोर्ट (कोट), हाईकोर्ट, (हाईकोट) सुप्रीमकोर्ट, प्रीवीकौंसिल, जूरी, जूरिस्ट, जज, जस्टिस, चीफ़ जस्टिस, एडवोकेट, प्लीडर, बैरिस्टर, अटर्नी, जूरर, एडमिनिस्ट्रेटर, कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर, मजिस्ट्रेट, सिटी, डिप्टी, केस, वेज़, अपील, डिग्री, कार्ट, कोर्ट आफ़ वार्ड्स, कमिश्नर, इस्टेट, आनरेरी मजिस्ट्रेट, ट्रेजरी, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट, सेशन, क्लाइंट, असेसर, कज स्माल कोर्ट, क्रिमनल, जुडीसल, पीनल कोड, नोटिस, प्रोनोट, स्टाम्प, सम्मन, ट्रस्ट, सेक्शन, एफीडेविट, कापी, अपीलांट, आरजीनल, साइड, बेंच, वारण्ट, एडीशनल, कोर्टफीस, असिस्टेण्ट कलेक्टर।

२. २. ४. ३. **लोकल बोर्ड :** म्यूनिस्पिल[1], डिस्ट्रिक्ट, नोटीफाइड, एरिया, चेयरमैन, म्यूनिस्पिल कमिश्नर, मेम्बर, (मिम्बर पुराना रूप), सिटीजन, कमेटी, कन्वीनर, कौण्टी, डाइरेक्टर, कारपोरेशन, पोर्टट्रस्ट, सुपरिण्टेण्डेण्ट, असेस्मेण्ट, एसेसर, आडीटर, क्यूरेटर, एल्डरमेन, बजट, इन्कमटैक्स, टैक्स, पाइप, वाटरवर्क्स, टोल, मार्केट, बम्पुलिस, मेमोरियल, स्ट्रीट, स्टेण्ड, टाउन, टाउन हाल, एवेन्यू, रोड, कॉलोनी, लीस, प्लाट, रेवन्यू, बोर्ड, पार्क, म्यूजम, मेयर, कस्टम, फ्लावर, शो, फायर ब्रिगेड, फुटपाथ, ड्रेन, गटर बूचर, मिनिटबुक एग्रीमेंट ( गिरमिट ), नम्बरदार ( लम्बरदार )।

२. २. ४. ४. **पार्टी-चुनाव :** डेमोक्रेसी, डेमोक्रेट डोमीनियन, लिबरल, सोशलिस्ट, अनार्की, अनारकिस्ट, आटोक्रेट, ओटोक्रेसी, आलीगार्की, कंसरवेटिव, राउण्डटेबिल, डायर्की, डिक्टेटर, डिप्लोमेट, मैगनाकार्टी, यूनियन जैक, फलेग, कामनवेल्थ, पार्टी, असेम्बली, कांग्रेस नानकापरेशन, वर्किंग कमेटी, हाइकमान, मीटिंग, पिकेटिंग, वालिंटियर, प्रोपेगण्डा, प्लाट, अंडरग्राउन्ड, सोशलवर्कर, वायकाट[2],

---

१. म्यूनिसिपल से म्यूनिसिपिलिटी रूप भी प्रचलित है। इसके ही अनेक रूप प्रचलित थे जैसे, म्यूनिसिपलिटी, म्यूनिसिपालिटी, मिवनिसपिल, मीवनिस पिल, मिउनिसपिलटी आदि—द्रष्टव्य बनारस चुंगी के नियम, स० १९२७।

२. स्वदेशी-आन्दोलन में अंग्रेजी चीजों को वहिष्कार किया गया अंग्रेजी राज्य समाप्त किया गया पर उसके निमित प्रारम्भ किये गये आन्दोलन में अंग्रेजी शब्द 'वायकाट' विद्यमान है।

सिविल-सर्जन, रेज्यूलेशन, पैक्ट, सोसायटी, स्पीच, लेक्चर, ट्रेटर, नेशनलिस्ट, होमरूल, बोलशेविक, कम्यूनिज़्म, बूर्जूआ, कामरेड, फासिज़्म, डेलीगेट, डेलीगेशन, डेपूटेशन, फारवर्ड-ब्लाक, बूथ, इम्पीरियलिज़्म, एडहाक, रिटर्निंग-आफ़ीसर, कास्टिंग, लीडर, फोलोअर, लीग, डायस, वोट, वोटर, रिजल्ट, अनाउन्स, कांस्टीच्यूएंसी, एजेण्ट, पोलिंग, पोलिंग स्टेशन।

२. २. ४. ५ **युद्धकाल वराशन :** कंट्रोल, परमिट, कार्ड, कोटा, फाइन, कोर्स, रफ, सुपरफाइन, कूपन, लाइसेन्स, मरसेराइज़्ड, सप्लाई अफसर, सप्लाई, इन्सपेक्टर, यूनिट, ब्लैक, मारकेट, क्यू, लाट, कर्फ्यू, ब्लैकआउट सायरन, एयररेड, अलाट, वारफण्ड।

२. २. ४, ६. **पुलिस :** सब इंस्पेक्टर, जेल, सेण्ट्रल जेल, लाठीचार्ज, शूटिंग, डेडशाट, कमाण्ड, कांस्टेबिल, हेड, ड्रिल, फायर, गेंग, जेलर, यूनीफार्म, वारण्ट, राउन्ड, रिवाल्वर, पिस्तौल, लेंस, हण्टर, रपट, कैनिंग, काशन, सी० आई० डी०, फिफ्थ कालम, आर्मड फोर्स, आर्म पुलिस, होम गार्ड, सेन्सर, कप्तान (पुर्त०)।

२. २. ४. ७. **मिलीटरी :** एडजूटेण्ट, एडीकांग, लेफ्टीनेण्ट, मेजर, कैप्टन, जनरल कमाण्डर, ब्रिगेडियर, कर्नल, पलटन[1], बटेलियन, रेजीमेण्ट, रंगरूट, सारजन्ट, कोर, सन्तरी, बॉडीगार्ड, गार्ड (गारद), कमसेरियट, कैण्टोमेण्ट, कैण्टीन, कोर्ट-मार्शल, पलटनिया, मेस, डिपो, ट्रुप, ट्रेस, रिजर्वफोर्स टेरीटोरियल, आर्मी, अटेन्शन, फरलो, पैराशूट, डबल मार्च, पिकेट, इन्फेन्ट्री, डमी राइफल, हाइड्रोजन, आक्सीजन, राकेट, एटम, कार्तूस (फ्रेञ्च) एयरगन, डाइनामाइट, डेजर्टर, राइफल, २०२, ३०३ मशीनगन, आर्टीलरी, पिस्तौल (पु०) मार्शल ला।

---

१. इसकी व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में दो मत हैं—(अ) शेक्सपियर महोदय ने बैटेलियन से दो शब्द माने हैं—'पतालन' और 'पटालन'। हो सकता है कि इन्हीं शब्दों का विकसित रूप पलटन हो।—हिन्दुस्तानी डिक्शनरी, सन् १८६६ पृष्ठ ६४४-४५; फेलैन, हिन्दुस्तानी डिक्शनरी, सन् १८७९ पृष्ठ ३६५; (आ) 'और प्लैटून' ने पलटन का रूप धारण किया।—अच्छी हिन्दी, रामचन्द्र वर्मा, सं० २००७, पृष्ठ ४३। दूसरा मत मुझे अधिक मान्य है।

२. २. ४. ७. २. **जलसेना :** बीम, लंगर, वोट, बूम, बाटली, कप्तान, कारतूस, कामादार, काटर, क्रिकेट, अग्निबोट, स्टीमबोट, स्टीमर, क्रूअर, तारपीडो, सबमैरिन, एडमिरल, केबिन, डेक, लाइट हाउस, सर्च लाइट, डाक, पोर्ट, पोर्टर, पास-पोर्ट, लाइफव्याय, लाइफबोट, लाइफबेल्ट, नेवी, मोटरबोट।

२. २. ४. ७. ३. **वायुसेना :** एयर, एयर क्राफ्ट-गन,-मेल,-शिप,-रेड, ड्रोम, पेल, हेलीकॉप्टर, पैराशूट, आर० ए० एफ०, जेट, पायलट, मिग।

**२. २. ५. १. शिक्षा :—**

**सामान्य : जनसाधारण :** स्कूल, बेंच[1], स्टूल, डेस्क, बोर्ड, बोर्डिंग, बोर्डिंग हाउस, सार्टीफिकेट, डिबेट, फौन्टेनपेन, फुट, होस्टल, मेस, मास्टर (माट साहब), मानीटर, नोट-बुक, कापी, पैरा, रजिस्टर, रिजल्ट, पास, फेल, मिडिल, प्राइमरी, अपर प्राइमरी[2], स्लेट, रोल-नम्बर, बुकसेलर, ट्यूशन, लाइब्रेरी, डस्टर, रबड़, पेन्सिल, फीस, एन्ट्रेंस, कालेज, अनवर सिटी, (यूनीवर्सिटी) ब्लाटिंग स्काउट।

**शिक्षित जनवर्ग :** अनाउन्स, अपीयर, एसोशियेसन, अटेण्डेन्स, प्रोक्सी, केनिंग, सेण्टर, चांसलर, कन्वोकेशन, करिक्यूलम, प्रोवोस्ट, डिक्सनरी, डिप्लोमा, एन्साइक्लोपीडिया, एक्सर साइज, गाउन, ग्रेजुएट, गार्जियन, हिण्ट्स, इन्स्टीट्यूशन, लेक्चर, मैगजीन, ओपशनल, पीरियड, प्रेक्टिकल, फाइनल, प्रीवियस, प्राइवेट, प्रोफेसर, प्रोसपैक्ट्स, स्कालरशिप, रीडिंग-रूम, शिफ्ट, थीसिस, टाइमटेबिल, फाइन, पेट्रन, फैकल्टी, डीन, कैटलाग, हाईस्कूल, इण्टर, प्रीयूनीवर्सिटी, बी० ए०, एम० ए०, डाक्टर, बोर्ड, सीनेट, सिण्डीकेट, एकेडेमी, लैब, रजिस्ट्रार, डिगरी, डिप्लोमा, रस्टीकेशन।

**विषय-विशेष :** गणित-ज्योमेट्री, ज्योमेट्री बक्स, कम्पास, फुट; इतिहास—चार्ट चार्टर, डोमिनियन, फासिज्म, फासिस्ट, गजेटियर, मिशनरी। नागरिक शास्त्र—एक्ट, एजेन्सी, एजेण्ट, एजेंडा, बैलट, बिल, म्यूनिस्पिल बोर्ड, बजट, ब्यूरो, सेंसर, चेयरमैन चांसलर, सरकुलर, कमिसरियट,

---

१. आगरे में विरंच भी चलता है। बिंच तथा बंच रूप भी चलते हैं।

२. अब परीक्षा नहीं चलती है।

कमीशन, कान्फ्रेंस, कारपोरेशन, गजट, गारण्टी, हाई कमिश्नर, जज, लाइसेंस, मिशन, आर्डिनेंस, पासपोर्ट, पोलिंग, पोलिंग-एजेण्ट प्रेसीडेन्सी, कोरम, कोटा, रीजेंसी, रीजेंट, स्टैच्यूट, टैक्स, टैकनोलौजी, ट्रेनिंग, यूनियन, वीटो, वोट, वार्डन, वारण्ट, वाटर, वाटर-वर्क्स ।

**भूगोल** : मैप, ग्लोब, स्केच, अटलस, हरीकेन, प्लेटो, पोइन्टर, टुण्ड्रा ।

**विभिन्न विषयों के नाम** : इकनॉमिक्स, हिस्ट्री, साइकॉलोजी, कामर्स, मैथ्स, ज्योमैट्री, अलजेबरा, सिरामिक्स, बायलौजी, कैमिस्ट्री, मिलिटरी साइंस ।

**विराम चिह्न** : ब्रैकिट, इनवर्टेड कोमा, कोलन, सेमीकोलन, इण्ट्रोगेशन, एक्सक्लेमेशन, डैश, हाइफन ।

### २. २. ५. २ नाप; तौल व आकृति :—

**सामान्य** : पेंस, पौंड, शिलिंग, पेनी, गिन्नी, ग्रेन, ग्राम, ड्राम, औंस, पौंड, किलोवाट, (बिजली), गैलन (पेट्रोल, तथा तरल पदार्थों के लिए) हंडरवेट, टन, कैरट, (सोना); फारेनहाइट (तापक्रम) मिनट, यूनिट, सेंट, डालर, पैसा ।

**लम्बाई** : इंच, इञ्चीटेप, फीट, फर्लाङ्ग, मील, लीग, यार्ड, फैदम, एकड़ (भूमि) किलोमीटर ।

**वस्तुएँ** : रीम, स्क्वायर, दर्जन[1] ग्रौस ।

**माह नाम** : जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर नवम्बर ( नोम्बर, नाथूराम शर्मा के १३-६-१६०८ के पत्र से ), दिसम्बर ।

**मानदण्ड** : फर्स्ट, सैकिण्ड, इण्टर, थर्ड ।

**अन्य** : लाट, सेट, बंडल, लिस्ट, रो, प्रोसेशन, गेप, क्रेक, पीस, ब्लाक, बोर्ड, शीट, बार्डर, सेन्टर[2], स्लाइस, लूप ।

---

१. अं० शब्द डजन है, अन्य प्रान्तीय भाषाओं में इसका (डजन) रूप ही प्रचलित है; पर हिन्दी में प्रथम ध्वनि का दन्त्य हो जाना और मध्य में 'र' ध्वनि का आगम भी विचारणीय है जिस पर आगे विचार किया जायेगा ।

२. सण्टर A main Street in a Cantt Bazar used also for a Chauk.
Sautar—Main street Central point
Kuchas—Lawns R. C. temple
Gallies—Allys
Corruption of Eng. Ind. Ant Vol XIII पृ०२६

२. २. ५. ३. **स्काउटिंग :** कैम्प, हाइक, पिकनिक, ट्रिप, आउटिंग, जम्बूरी, रैली कैम्प,[1], कैम्प, फायर, पेट्रोल, ट्रुप, फ्लैग, ड्रिल, काशन, गाइड, बाय स्काउटिंग, मार्च पास्ट, गैडजट, डायरी, ब्यूरो।

## २. ६. यातायात :—

२. ६. १. **रेलवे : जनसाधारण :** फ्रन्टीयर मेल, पैसेञ्जर, एक्सचेंज, एक्सप्रेस, स्टेशन[2] फ्लैग, जंकशन, लोकल, वालिस ट्रेन, लाइन (लेन), रेल, वोगी, ब्रेक, ब्रेकवान, वैगन, सीट, टिकट, बर्थ, इञ्जन[3], सिगनल, लोको, शटिंग, इन्क्वायरी, टाइमटेबिल, प्लेटफार्म, वेटिंग रूम, बुकिंगक्लर्क, टिकट चेकर, ड्राइवर, फौरमेन, गार्ड, पेटमैन, स्टेशन, पार्सल, डेमरेज।

**शिक्षित-जनवर्ग :** पास, एम्बूलेंस कार, आडीटर, चार्जमेन, यार्ड, फोरमैन, साइडिंग, प्लेट, बाल बेयरिंग, वायलर, बूस्टर, ब्रैकिट, ब्रेक-ड्रम, बम्पर, शेड, चार्ट, कोचिंग, कंडक्टर, गार्ड, काउन्टर, क्रेन, अप, डाउन, लैम्प, (लम्प), स्पेशल, स्लाइड, मीमो, सैलून, पैकेज, बाउचर, स्लीपर, आउट, एजेंसी, कंपार्टमेण्ट, रिटर्नटिकट, वर्कशाप, रेलवे बुकस्टाल।

---

आज भी केन्द्र के साथ सेण्टर का प्रयोग, नगरों में प्रचलित है। मेन, स्ट्रीट के अर्थ में इसका व्यवहार चंडीगढ़ में है जो पंजाब की नवनिर्मित राजधानी है। समस्त नगर कुछ सेण्टरों में बाँट दिया गया है और नगर के विभिन्न भाग सेन्टर नं० से विख्यात हैं।

१. कम्पूरूप भी मिलता है—देखिए, हाब्सन-जाब्सन, सन् १९०३, पृष्ठ १५२। यह ग्रामीण रूप।

२. बहुप्रचलित होने के कारण इसके स्टेशन के साथ-साथ इसटेशन, टीशन टेशन, अस्टेशन, इसटीशन रूप भी चलते हैं।

३. इंजन के साथ एंजिन, अंजन आदि रूप भी प्रचलित है।

२. २. ६. २. **मोटर :** मोटरकार, बस, जीप[१], पिकअप, लारी, ट्रेक्टर, टैक्सी, ट्रक, स्टेशन वैगन, शेवरलेट, डाज आदि नाम, मोटरसाइकिल, ओटो-रिक्सा, पैराम्बुलेटर, ड्राइवर, शोफर, क्लीनर, कंडक्टर, गैरेज, मोबिल आइल, पैट्रोल, स्टैण्ड, वर्कशाप, डीजल, ब्रेक, हार्न, स्पीड, एक्सीडैण्ट, रिपट, बोल्ट, स्कूटर ।

२. २. ६. ३. **साइकिल :** बाइसिकिल, बाइक, कैरियर, हैंडल, मडगार्ड, पेडल, पंचर, चेन, ट्यूब टायर, व्हील, वाल्व, पम्प, रबड़, सोल्यूशन, लेम्प, सीट, रिम ।

२. २. ६. ४. **अन्य :** टमटम, फिटन, लैंडो, विक्टोरिया, बग्गी, बग्घी, वैगनट, बम्बू काटवाली, रिक्शा, ट्राली, कोचवान, कोचवक्स, ट्राम, ट्रामवे, बम, ताँगा ।

## २. २. ७. संवहन :—

२. २. ७. १. **पोस्टआफिस :** कार्ड, रजिस्ट्री, बैरंग, पार्सल, नोटिस, डिलीवरी, डिस्पैच, एक्सप्रेस, फार्म, मनीआर्डर, लेटर बक्स, पोस्टल-आर्डर, पोस्ट वक्स, सेविंग, लेटफी, डिपाजिट, मेलवान, कार्टमेल ।

२. २. ७. २. **तार-टेलीफोन :** एक्सचेंज, आपरेटर, रिसीवर, टेलीग्राफ, अर्जेण्ट, फोन ट्रंककाल ।

२. २. ७. ३. **सामान्य :** पोस्टमैन, पोस्टमास्टर, सिगनलर, मानीटर, इन्सपेक्टर, पोस्टेज, डी० एल० ओ०, रेडियो लाइसेंस, ओवरसिअर, नोटिस, बैट्री, बैट्ररी, बंडल, कोल, पॉलिसी, कूपन, रिपोर्ट, गारण्टी, लेबल, डोकेट, की बोर्ड, केबल, केनवस, एकूमेकवर, एड्रीमा, आडोमास्टर ।

---

१. Extra Ordinary useful and versatile cross country Vehicle which came on base land to Britain long before we welcomed the G. I. S. and which has likewise been formed from initials in the instance. G. P. (for general purpose) hence an adjective General purpose in the original form being a G. P. Vehicle—Eric Partridge, Words at War 1948/136

## २. २. ८. मनोरंजन :—

२. २. ८. १. **ड्रामा, सिनेमा सरकस आदि :** एक्टर, एक्ट्रेस, प्राड्यूसर, डाइरेक्टर, प्लेबैक, सिंगर, जोकर आर्टिस्ट, कामिक, कार्टशिप, स्टार, स्टेज, टाकी, फोटो, ट्यूब, डायस, ड्रापसीन, सीन-सीनरी, पोज रोल, सेटिंग, स्क्रीन, शूटिंग, बाक्स हिट, वायस्कोप, स्टूडियो, शो, मैटिनी, स्लाइड, क्लाइमैक्स, सैटाया, मोनोलोग, पार्ट, मेकअप, रिहर्सल, इण्टर-बल, आइटम, हीरो, ग्रीनरूम, जैन्ट्री, फिल्म, डिस्ट्रीब्यूटर, पिक्चर, हीरोइन, डार्लिङ्ग, टेलर।

२. २. ८. २. **खेल : सामान्य :** मैच, टीम, पैवलियन, कैप्टन, रेफ़री, क्लब, रेकर्ड, ओलम्पिक, चैम्पियन, चांस, वन्समोर, फ़ाइनल, सेमी-फाइनल, मैडल, ट्राफी, टूर्नामेण्ट, हेडटेल, वैड, फेयर, फाउल, एक्सी-डैण्ट, बकअप, स्टेडियम, ग्राउण्ड।

२. २. ८. २. १. **फुटबाल, हाकी आदि खेल :** सेन्टर, हाफ, बैक, फारवर्ड, गोल, ग्लैडर, हाकी, स्टिक, पेनल्टी, डबल, सिंगिल, रैकट, अम्पायर, बॉली, सर्विस कोर्ट, लान, बैडमिंटन, क्रिकेट, वालीवाल, टैनिस, स्कोर क्रिकेट, क्रिकेट, बाउण्ड्री, ओवर, रन, आउट, कैच, हनिंग।

२. २. ८. २. २. **शारीरिक प्रदर्शन तथा अन्य खेल :** पार्टनर, हुक, फाइट, जिमनास्टिक, पोलो, ड्रिल रेसकोर्स, स्केटिंग, कार्नीवाल, डान्स, बाल, लकी, सीसा, डरबी, लाटरी, बैलून, पिंगपोंग, हीट।

२.२.८.२.३. **घरेलू खेल ताश आदि :** कैरम, चैप, कट, रिवाइंड, क्लीन, स्ट्राइकर, बिलयर्ड, लूडो, चैस, ब्रिज, ट्रम्प (तुरप), ट्रिक, रमी, कोट पीस, ब्लेक, क्वीन, चेस, जोकर।

२. २. ८. २. ४. **उत्साहवर्द्धक :** हिपहिप हुर्रे, हियर हियर, हुर्रा।

## २. २. ९. शब्दों में संक्षिप्तीकरण की नवीनतम प्रवृत्ति :—

२. २. ९. १. आज के इस विज्ञान के युग को 'भाग-दौड़ का युग' यदि कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। मानव की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह कम-से-कम समय में, कम-से-कम स्थान में, कम-से-कम शब्दों में अपने अधिक-से-अधिक विचारों एवं भावों को अभिव्यक्त करना चाहता है। काव्य-शास्त्र के ध्वनि-सम्प्रदाय के मूल में भी तो यही प्रवृत्ति है।

इसका प्रभाव भाषा में भी पर्याप्त दृष्टिगत होता है। कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक शब्दावली का भाव समाहित करना ही तो 'समास पद्धति' है और कम-से-कम अक्षरों में अधिक-से-अधिक शब्दों को उच्चरित करना ही संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति आज सर्वत्र व्यवहार में आ रही है, डाक्टर लम्बी-लम्बी दवाओं तथा बीमारियों के छोटे-छोटे नाम रख लेते हैं, जैसे टुबरक्लोसिस का 'टी० बी०'। व्यक्ति अपने बड़े-बड़े नामों को छोटे-से नाम में बदल लेता है[1] जैसे श्री गोविन्द बल्लभ 'गो० ब०' मात्र रह जाते हैं। व्यापारी अपने फ़र्म के बड़े-से नाम को प्रचार की सुविधा से छोटा सा कर देता है जैसे लगभग एक पंक्ति में लिखी जाने वाली कम्पनी का नाम केवल 'बिटाको' मात्र रह गया। बड़ी-बड़ी संस्थाओं तथा पुस्तकों के छोटे रूप ही आज विशेष प्रचलित हैं। तार के प्रचलन से इस प्रवृत्ति को विशेष प्रश्रय मिला। इस स्वाभाविक मानव-सुलभ प्रवृत्ति के कारण ही भाषा में सर्वथा नवीन शब्दों का आगमन होता जा रहा है। साधारणतः किसी भी भाषा में शब्दों की वृद्धि निम्नलिखित प्रकार से होती है :—

अ—मूल धातुओं के आधार पर शब्दों का गढ़ना।

आ—अन्य भाषाओं से आगत शब्दावली।[2]

इ—पुरानी शब्दावली में ही अर्थ-परिवर्तन।

इन तीन प्रधान आधारों के अतिरिक्त आज एक नवीन विधि से भी शब्द बढ़ रहे हैं और यह शब्दावली एक प्रकार से अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली का रूप लेती जा रही है। इस प्रवृत्ति को हम संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति कह सकते हैं प्रधान कोटियाँ निम्नलिखित हैं :—

२. २. ६. १. प्रत्येक शब्द का प्रारम्भिक वर्ण ले लिया जाता है।

यह बहु प्रचलित प्रवृति है :—

Bachelor of Arts—B. A.

---

१. देखिए-रमाशंकर भट्टाचार्य—व्यक्ति-नामों का संक्षेपीकरण; कल्पना, सितम्बर १९५६।

२. कैलाशचन्द्र भाटिया—भाषा में आगत शब्द, भारतीय साहित्य, अक्टूबर १९५६।

Gopi Nath—G. N.[1]

२. २. ६. २. किसी भी शब्द का प्रथम वर्ण न लेकर उच्चारण-सुलभ वर्ण-समूह को ले लिया जाय :—

बाइसिकिल के लिए 'बाइक', माइक्रोफ़ोन के स्थान पर 'माइक', इन्फ़्लूएंजा के स्थान पर 'फ़्लू', सिनेमा के स्थान पर 'सिने', लैबरेटरी के स्थान पर 'लैब' आज बहु प्रचलित शब्द हैं।

२. २. ६. ३. प्रत्येक शब्द के लिये हुए प्रत्येक प्रथम वर्ण को मिलाकर संयुक्त रूप से उच्चरित करना :

इस प्रकार की शब्दावली भी पर्याप्त बढ़ रही है। राज्यों में 'पेप्सू'; राज्यभागों में 'नेफ़ा', मिलों में 'नेपा' तथा संस्थाओं में 'इंटक' आज सर्वविदित हैं। North Atlantic Treaty Organisation ही NATO बनकर हिन्दी में 'नाटो' प्रचलित हो गया।

कभी-कभी लोक-निरुक्ति के आधार पर भी संक्षितीकरण की प्रवृत्ति विदेशियों को आकर्षित करती है, जैसे Ya Hasan तथा ya Husain का Hobson Jobson'हाब्सन जाब्सन' रूप भी प्रचलित हो गया जो आगे चलकर एक प्रसिद्ध पुस्तक का नाम पड़ा।

यहाँ पर केवल अन्तिम प्रवृत्ति का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है जो सर्वथा नवीन है। इस प्रवृत्ति के द्वारा नवीन शब्द ही नहीं वरन् ध्वनि-संयोग भी अज्ञात रूप से भाषा में बढ़ते जा रहे हैं। इस प्रवृत्ति की द्योतक अनेक विधियाँ हैं :—

२. २. ६. ३. १. प्रत्येक शब्द के प्रथम वर्ण को लेकर शब्द निर्माण तथा उसका सम्मिलित उच्चारण—

१. १ संस्थाओं के नाम—

Indian People Theatrical Association—I P T A
इपटा

---

१. भारतीय शब्दों को अंग्रेजी की प्रणाली से संक्षिप्तीकरण करने से कभी-कभी संक्षिप्त रूप अपने मूल शब्द से बहुत दूर हट जाता है। गोपी का संक्षिप्त रूप 'जी०' बन जाने से उस शब्द की ध्वनियों में निहित समस्त भावना प्रायः लुप्त हो गई।

Indian National Trade Union Congress—INTUC इंटक

Indian Moving Picture Association—I M P A इम्पा

United Nations Educational, Scientific & Cultural Organisation—U N E S C O यूनेस्को

All India Trade Union Congress— A I T U C एटक

१. २ अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों के नाम—

Middle East Defence Organisation— MEDO मीडो

North Atlantic Treaty Organisation—NATO नाटो

South East Asian Treaty Organisation—SEATO सीटो

European Launchar Development Organisaton—ELDO एल्डो

१. ३ राज्यों तथा प्रदेशों के नाम—

North East Frontier Agency—NEFA नेफ़ा

Patiala & East Punjab States Union—PEPSU पेप्सू

१. ४ कम्पनियों के नाम—

Tata Iron & Steel Co.—TISCO टिस्को

Indian Iron & Steel Co.—ISCO इस्को

U. P. Industries Cooperative Association—UPICA यूपिका

U. P. Cables Co.—UPCCO यूपीको

U. P. Electric Supply Co.—U. P. E. S. CO—युपेस्को

National Insulator Cables Co—NICCO— निक्को

२. २. ६. ३. २. प्रथम शब्द के प्रथम अक्षर (स्वर, स्वर के साथ व्यंजन, व्यंजन के साथ स्वर, व्यंजन के साथ स्वर तथा व्यंजन) को लेकर तथा शेष शब्दों के प्रथम वर्ण के साथ—

Little Flower Co.—LIFCO लिफको
Biological Teaching Aids Corporation—
BITACO —बिटाको
Simla Chemical Co.—SIMCO— सिम्को
Central Scientific Instrument Corporation—
CENSICO सेन्सिको

२. २. ६. ३. ३ प्रत्येक शब्द का प्रथम वर्ण तथा अन्तिम शब्द का प्रथम अक्षर :—

Indian Steelworks Construction—ISCON—इस्कन

२. २. ६. ३. ४. कभी-कभी प्रत्येक शब्द का प्रथम अक्षर ले लिया जाता है :—

Standard Vacuum (Oil Co.)—STANVAC स्टैनवक
डाक्टर बर्मन —डाबर डाबर
Calcutta Chemical Company Calcutta—
Calchemicoca कैलकेमीकोका

२. २. ६. ३. ५. कभी-कभी मध्य में स्वर के अभाव की पूर्ति के लिए किसी एक शब्द के व्यंजन वर्ण के साथ स्वर भी ले लिया जाता है—

Indian National Scientific Documentation
Centre—INSDOC इन्सडक

किसी विशेष नियम में बद्ध न होते हुए भी प्रसिद्ध कागज की मिल 'नेशनल न्यूज प्रिंट एण्ड पेपर मिल्ज़ लिमिटेड' 'नेपा' नाम से ही प्रसिद्ध है तथा एयर कंडीशनिंग कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड का प्रसिद्ध रेडियो 'ऐकेयर' नाम से ही जाना जाता है। 'भिलाई स्टील लिमिटेड' का 'भिस्टल' रूप ही अधिक प्रचलित है।

इस प्रकार के अनेक शब्द भाषा में बड़े धड़ल्ले के साथ व्यवहृत होते जा रहे हैं जिनके मूल रूप तक पहुँचना भी कष्ट साध्य हो गया है,

इकाफ़े, बेकाई, नफ़ेन, एस्सो, सेण्टो आदि शब्द उदाहरणार्थ लिये जा सकते हैं।

२. २. ६. ४. इस कोटि में एक बहुप्रचलित शब्द 'जीप' आता है। यह एक प्रकार से पेट्रोल से चलने वाली हल्की शीघ्रगामी गाड़ी है। इस शब्द के निर्माण की संक्षिप्त गाथा इस प्रकार है – प्रारम्भ में यह एक ऐसी सवारी थी जिसका प्रयोग किसी भी सामान्य कार्य के लिए किया जा सकता था और हल्की तथा प्रत्येक कार्य में आने के कारण इसको Vehicle for General Purposes नाम से जाना जाता था, कालान्तर में General purposes के प्रारम्भिक वर्ण G.P. ही प्रयुक्त होने लगे और इन दोनों वर्णों के संयुक्त रूप G. P. का उच्चरित रूप ही 'जीप' JEEP बन गया। MIG 'मिग' जिस तेज़ी से प्रविष्ट हुआ वह सर्वविदित है।

इस प्रवृत्ति के द्वारा हम बोलने तथा लिखने में समय, तथा स्थान की काफ़ी बचत करते जा रहे हैं। यह बचत का युग ही है, सर्वत्र बचत, फिर शब्दों में क्यों न बचत हो। इस बचत की प्रवृत्ति ने ही संक्षिप्तीकरण की प्रवृत्ति को जन्म दिया। रूस में इस आधार पर पर्याप्त शब्द बन चुके हैं। भारतीय भाषाओं की शब्दावली में भी इस प्रकार के शब्दों की संख्या पर्याप्त रूप से प्रविष्ट हो चुकी है, इसमें सन्देह नहीं।

---

# अध्याय ३

# अंग्रेजी और हिन्दी की ध्वनियाँ

## तथा

# अंग्रेजी की ध्वनियों के हिन्दी में विभिन्न रूप

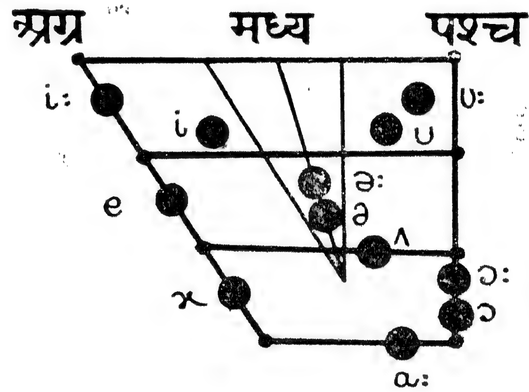
### ३. १. स्वर ध्वनियाँ :

### ३. १. १. अंग्रेजी की स्वर ध्वनियाँ :

### ३. १ १. १. मूलस्वर

अंग्रेजी में निम्नांकित स्वर ध्वनियाँ हैं[1]—

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| i: | i | e | æ | a: | ɔ | ɔ: | u | u: | ʌ | ə: | ə |
| ई | इ | ऍ | ऍ | आ | ऑ | ऑ | उ | ऊ | अ | एं | अं |

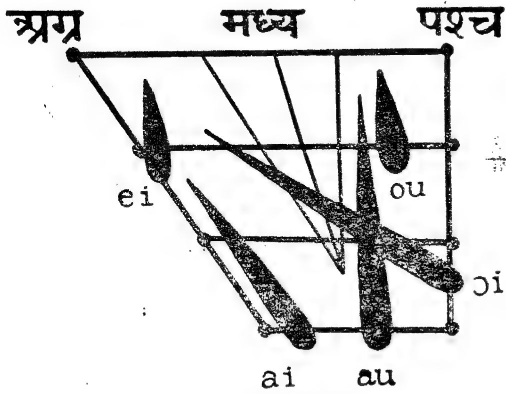



1. Jones, Daniel—An Outline of English Phonetics, Heffer & Sons, 1956, P. 61.

## ३. १. १. २ अँग्रेजी के संध्यक्षर स्वर—

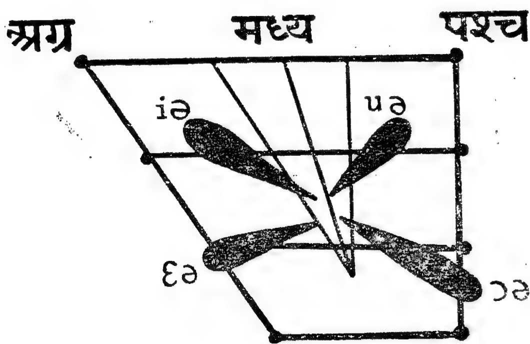
### ३. १. १. २. १ आरोही

| १३ | १४ | १५ | १६ | १७ |
|---|---|---|---|---|
| ei | ou | ai | au | ɔi |
| ऍइ | ओउ | आइ | आउ | ऑइ |




### ३. १. १. २. २ केन्द्राभिमुखी

| १८ | १६ | २० | २१ |
|---|---|---|---|
| iə | ɛə | ɔə | uə |
| इअ' | ऍअ' | ऑअ' | उअ' |



## ३. १. १. ३ अँग्रेजी की वर्तनी और स्वर

अंग्रेजी में वर्तनी (Spelling) कितनी कष्टकर है, यह किसी से छिपा नहीं है। इससे सम्बन्धित तालिका देने से पूर्व एक ध्वनि का उदाहरण देना पर्याप्त होगा। हिन्दी में 'अ' का उच्चारण सर्वदा [अ—ə] ही होगा इसके अतिरिक्त कुछ और नहीं। अंग्रेजी में 'a' का उच्चारण निम्नलिखित रूप में उच्चरित होता है :—

a— [ e —ऍ ]
[ æ —ऍ ]
[ a: —आ ]
[ ɔ —ऑ ]
[ ɔ:—ऑ ]
[ ə —अ' ]
[ ei—ऍइ]

इसके विपरीत निम्नलिखित वर्ण [अ—ə] ध्वनि के उच्चारण के लिए प्रयुक्त होते हैं :—

a
e
er
i
o
ou
u
or
ar
oar
—[ ə—अ' ]

ऐसी स्थिति में यदि अंग्रेजी की वर्तनी का हिन्दी में प्रभाव आगत शब्दों के रूपों पर भी अधिक पड़ा हो तो स्वाभाविक ही है।

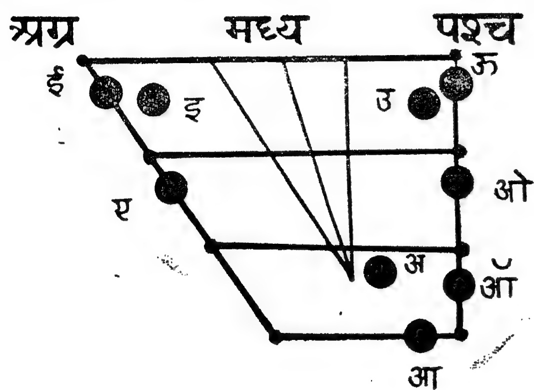
यह आगे दी हुई तालिका से स्पष्ट हो जाता है।

## ३. १. २. हिन्दी की स्वर ध्वनियाँ

परिनिष्ठित हिन्दी में प्रयुक्त स्वर ध्वनियाँ निम्नाङ्कित हैं[1] :—

३. १. २. १. मूलस्वर—

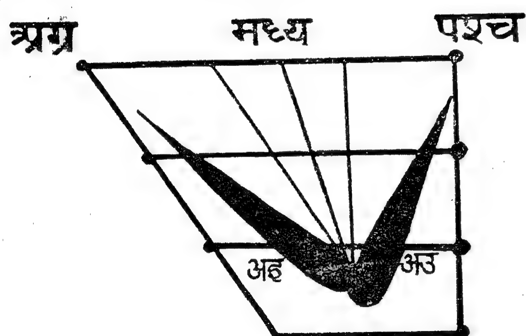
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | ऑ[2] | ओ | उ | ऊ | इ | ई | ए |




३. १. २. २. संध्यक्षर स्वर—

ऐ औ

(अइ) (अउ)




1. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, पृष्ठ ९९ ।
2. वही—अंग्रेजी तत्सम शब्दों में प्रयुक्त ध्वनियाँ, पृष्ठ ९८ ।

३. १. २. ३. 'ऐ' और 'औ' मूल स्वर के रूप में विकसित हो चुके हैं, जिनका उच्चारण क्रमशः [ɛ.] और [ɔ.] के समरूप होता है। हिन्दी के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में यह शुद्ध मूल स्वर है और पूर्व में संध्यक्षर स्वर के तुल्य होता जाता है।

## ३. १. ३. ध्वनि-परिवर्तन

३. १. ३.०. प्रारम्भिक अवस्था में विदेशी शब्द विदेशियों के मुख से उनकी अपनी ध्वनियों में ही सुने जाते हैं। अपने देश के उच्चशिक्षा प्राप्त व्यक्ति भी प्रारम्भ में विदेशी ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण करने का प्रयत्न करते हैं, पर ज्यों-ज्यों विदेशी शब्द ग्राहक भाषा की शब्दावली के साथ प्रयुक्त होते जाते हैं और उनका प्रयोग जनसाधारण में बढ़ता जाता है, विदेशी शब्द भी अपने ध्वन्यात्मक रूप को त्यागकर ग्राहक भाषा की ध्वनियाँ ग्रहण करते चलते हैं। इस प्रकार विदेशी ध्वनियों को अपनी मातृभाषा की ध्वनियों के माध्यम से प्रकट करने की चेष्टा की जाती है। अधिकांशतः निकटतम ध्वनि का ही प्रयोग होता है। कुछ शब्दों के रूप पर लोक-निरुक्ति या भ्रामक व्युत्पत्ति का भी प्रभाव पड़ता है। उनका हमारे विषय से सीधा सम्बन्ध नहीं।[1] फ्रेंच शब्द rouge [ru:3] के कारण अंग्रेजी में तो [3] ध्वनि प्रविष्ट हो गई किन्तु हिन्दी भाषाभाषी तो इसको 'रूज़' ही कहता है। ध्वनि-परिवर्तन की अनेक अवस्थाएँ हो सकती हैं, जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं :—

३. १. ३. १. **केवल व्यंजन ध्वनि में अन्तर हो जाना:** अं० शब्द Pad [pæd] के हिन्दी रूप 'पैड' में वर्त्स्य [ड़] ध्वनि के स्थान पर मूर्धन्य [ड] का प्रयोग किया गया है।

३. १. ३. २. **केवल स्वर ध्वनि में परिवर्तन :** अं० शब्द Ration [ræʃən] के हिन्दी रूप 'राशन' में अं० अग्र अर्द्ध विवृत ह्रस्व स्वर [æ —ऍ या ऐ] के स्थान पर पश्च विवृत [a:—आ] का प्रयोग किया गया है।

---

१. Bloom field, L—Language, 1956, Henry Holt, लोक-निरुक्ति पर आधारित शब्दों के लिये देखिये परिशिष्ट संख्या ६, पृष्ठ ४४६।

३. १. ३. ३. **स्वर तथा व्यंजन दोनों ध्वनियों में परिवर्तन :** अं० शब्द coat [kout] के हिन्दी रूप 'कोट' में अं० संध्यक्षर स्वर [ou—ओउ] के स्थान पर [ओ] और वर्त्स्य [ट्] के स्थान पर मूर्धन्य [ट] का प्रयोग किया गया।

३. १. ३. ४ ध्वनि-परिवर्तन की विशेष दिशाओं का अन्त में विवेचन किया गया है जब किसी एक ही ध्वनि से युक्त आगत शब्दों की संख्या में वृद्धि हो जाती है, तो विदेशी ध्वनि को भी गृहीत कर लिया जाता है, जैसे अरबी-फारसी के शब्दों के कारण [ज़] तथा [फ़] ध्वनियाँ गृहीत हो गईं।

आगत शब्दों के अत्यधिक प्रयोग से भाषा के स्वनिमात्मक ध्वनिग्रामीय स्तर पर भी प्रभाव पड़ता है। इसका भी विवेचन अन्त में किया गया है।

## ३. १. ४. अंग्रेज़ी की स्वर ध्वनियाँ और हिन्दी में उनके रूप

### ३. १. ४. १. स्वर ध्वनियाँ

३. १. ४. १. १. / i :—ई / इस स्वर के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग संवृत स्थिति में रहता है और होठ विस्तीर्ण रहते हैं। यह अग्र संवृत दीर्घ स्वर है। साधारणतः जिह्वानोक निम्नदन्त पंक्ति को स्पर्श करती रहती है। इसके उच्चारण में मांसपेशियाँ दृढ़ रहती हैं और समस्त स्वरों की भाँति स्वरयन्त्र में कम्पन रहता है तथा कोमलतालु द्वारा वायु-मार्ग अवरुद्ध रहता है। यह ध्वनि अधिकांश शब्दों के प्रारम्भ व मध्य में सुनी जा सकती है। अन्त्य स्थिति में इसका प्रयोग कम होता है। ईथर तथा मशीन आदि शब्दों के आदि तथा मध्य में इस ध्वनि को क्रमशः सुना जा सकता है।

हिन्दी में गृहीत अंग्रेजी शब्दों में इस स्वर का प्रयोग अधिकांशतः शब्दों के मध्य में ही होता है, कुछ शब्दों के अन्त में भी यह स्वर प्रयुक्त होता है। हिन्दी भाषा-भाषी इस स्वर के स्थान पर हिन्दी की दीर्घ [ई] का ही प्रयोग करते हैं। हिन्दी और अंग्रेजी के इस स्वर में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

| | अंग्रेजी | हिन्दी |
|---|---|---|
| मध्य | Team [ti:m] | टीम [ṭi:m] |
| | Shield [ʃi:ld] | शील्ड [ʃi:lḍ] |
| अन्त | Tea [ti:] | टी [ṭi:] |
| | Key [ki:] | की [ki:] |

**अपवाद :** १ [i:—ई] के स्थान पर हिन्दी / आई /

Brilliantine [briljən'ti:n] ब्रिलियण्टाइन [brilijən ṭa:in]

२. [i: – ई] के स्थान पर /इ/

Economics [i:kənɔmiks] इकनोमिक्स[1] [ikno:miks]

३. [i:—ई] के स्थान पर /ऐ/

Quinine [kwini:n] कुनैन[2] [kunɛ:n]

३. १. ४. १. २/ i—इ/ यह अर्द्ध संवृत अग्र ह्रस्व स्वर है जिसके उच्चारण में जिह्वाग्र का पिछला भाग प्रयोग में आता है और मांसपेशियाँ शिथिल रहती हैं। अग्र स्वरों की भाँति ओठ विस्तीर्ण रहते हैं। अंग्रेजी /i:—ई/ की अपेक्षा इसमें जिह्वा अर्द्ध संवृत अवस्था में रहती है। इस दृष्टि से यह स्वर /i:—ई/ की अपेक्षा /e—ऍ/ के अधिक निकट है। साधारणतः जिह्वानोक नीचे की दंत-पंक्ति को छूती रहती है।

अंग्रेजी के शब्दों में यह ध्वनि आदि, मध्य तथा अन्त सभी स्थलों पर सुनी जा सकती है।

---

१. एकनोमिक्स भी चलता है।
२. बोलचाल का रूप तो 'कुनैन' ही है पर कुछ लेखकों ने इसका शुद्ध उच्चारण नागरी में देने की चेष्टा की है, पर वह रूप तो न लिखित ही शुद्ध रह पाया और न मौखिक, द्रष्टव्यः क्वीनाइन—परदे की आड़ में—मुंशी (अनुवाद) प्र० सं०, पृष्ठ ७१। क्वानयिन—अज्ञेय की कहानियाँ—अज्ञेय, सन् १९५४, पृष्ठ ३४।

उदाहरण Estate [is'teit]
Fit [fit]
Fancy [fænsi]

हिन्दी में प्रयुक्त गृहीत शब्दों में इस स्वर का प्रयोग सामान्यतः आदि, मध्य और अन्त्य सभी स्थलों पर हुआ है। हिन्दी 'इ' और अंग्रेजी 'इ' की उच्चारण-विधि व जिह्वा की स्थिति में भी अन्तर है। अंग्रेजी 'इ' तृतीय स्वर [ e—ऍ ] के अधिक समीप है जबकि हिन्दी स्वर /इ/ में जिह्वा संवृत रहती है। सामान्यतः अंग्रेजी 'इ' स्वर के स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी /इ' का ही प्रयोग करते हैं, जैसे,

| | अंग्रेजी | | हिन्दी |
|---|---|---|---|
| आदि | Estate | [is'teit] | इस्टेट [iste:t] |
| मध्य | Fit | [fit] | फ़िट,फिट [fi .phi .] |

कुछ उल्लेखनीय अपवाद भी प्राप्त हुए हैं :

अ—आदि /इ/ के स्थान पर /ए/

Exchange [iks'tʃeind3] एक्सचेन्ज [e.ksʧe:nʤ]

आ-मध्य / इ / के स्थान पर / ई /

| | | | |
|---|---|---|---|
| mill | [mil] | मील | [mi:l] |
| Resident | ['rezidənt] | रेजीडेण्ट | [re:ʤi:ḍe.nṭ] |
| Petticoat | [petikout] | पेटीकोट | [peṭi:ko:ṭ] |

/इ/ के स्थान पर /ए/

| | | | |
|---|---|---|---|
| Cinema | ['sinimə] | सिनेमा | [sine:ma:] |
| College | ['kɔlid3] | कालेज | [ka:le.ʤ] |
| Fountain | ['fauntin] | फाउन्टेन | [pha: unṭe:n] |

/ i—इ / के स्थान पर /अ/

| | | | |
|---|---|---|---|
| Budget | ['bʌd3it] | बजट | [bəʤəṭ] |
| Bearing | [bɛəriɛ] | बैरंग | [bɛ· rəɛg] |
| Engine | [end3in] | इंजन | [inʤən] |

( i—इ ) के स्थान पर /उ/

| | | | |
|---|---|---|---|
| Biscuit | ['biskit] | बिस्कुट[1] | [biskuṭ] |

१. वर्णविन्यास के प्रभाव से अन्य भाषाओं में भी यह प्रवृत्ति है, देखिये—
Nida, E. A.-Linguistics Interludes, 1947.

अन्त्य :—/i-इ/ के स्थान पर /ई/ हो जाती है [१] :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Committee | [kɔmiti] | कमेटी | [kɔme. ṭi:] |
| Pharmacy | [fa:mɔsi] | फ़ार्मेसी | [ph/fa:me.si:] |
| Policy | [pɔlisi] | पालिसी | [pa:lisi:] |

३. १. ४. १. ३. / e—ऍ / यह अग्र ह्रस्व स्वर है, जिसके उच्चारण में जिह्वा अर्द्ध संवृत तथा अर्द्ध विवृत के मध्य रहती है और होठों की स्थिति फैली हुई रहती है। साधारणतः जिह्वानोक निम्न दन्त पंक्ति को छूती रहती है। अधिकतर यह अंग्रेजी के आदि तथा मध्य में सुनी जा सकती है, जैसे, Epic ['epik]

---

१. "हिन्दी की भी यह सामान्य प्रवृत्ति हो गई है कि स्वर (ह्रस्व) को अन्त में या तो फुसफुसाहट की ध्वनि कर देते हैं या दीर्घ।"—डॉ॰ बाबूराम सक्सेना भाषण-परिवर्तनशील हिन्दी, देहरादून १८. ६. ५७, तथा साहित्य सन्देश, भाग १९ अंक १-२ पृष्ठ ५३।

डॉ॰ सिद्धेश्वर वर्मा ने भी उत्तरी-पश्चिमी भारत में इस प्रवृत्ति की ओर संकेत किया है :—

The final i) of words like "country", "sympathy" "happy" before a pause is pronounced too tense, for the English ear, the English sound, being much laxer being unknown to the speaker concerned." The Pronunciation of English in North w. India, Indian Linguistics, Bagachi Vol. Page 187.

उर्दू में भी यह प्रवृति दृष्टिगत होती है। "No word in Urdu ends in ə, w, y," [अ, उ, इ] Dr. Masud Husain The Phonetic and Phonological Study of the word in Urdu, Monogram No. I, page 26.

हिन्दी में गृहीत अंग्रेजी शब्दों में अंग्रेजी स्वर / e—एँ / के स्थान पर सामान्यतः हिन्दी भाषा-भाषी /ए/ का व्यवहार करते हैं, जैसे,

| | अंग्रेजी | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| आदि Editor | ['editə] | एडीटर | [ɛ.di:tər] |
| मध्य Pen | [pen] | पेन | [pe:n] |
| Centre | [sentə] | सेन्टर | [se:n ṭər] |

शब्दों के अन्त में इस स्वर का प्रयोग कम होता है।

अपवाद :

/e—एँ/ के स्थान पर /इ/, जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| Deputy | ['epjuti] | डिप्टी | [ḍipti:] |
| Depot | ['depou] | डिपो | [ḍipo:] |
| Record | ['rekɔ:d] | रिकोर्ड | [riko:(r)ḍ] |

/e—एँ/ के स्थान पर (ई), जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| Premier | ['premrə] | प्रीमियर | [pri:myər] |

/e—एँ/ के स्थान पर (अ), जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| Hotel | [hou'tel] | होटल | [ho:ṭəl] |
| Sentry | ['sentri] | सन्तरी | [sən t̪ri:] |

३. १. ४. १. ४. /æ—एँ/ मान स्वर /ɛ/ तथा /a/ के मध्य स्थित जिह्वा की स्थिति से इस स्वर का उच्चारण किया जाता है। यह अर्द्धविवृत ह्रस्व अग्रस्वर है, परन्तु इसका उच्चारण मान स्वर /ɛ—एँ/ से बहुत नीचे को तरफ और (प्रधान स्वर) मान स्वर/ a —अ‌ा/ के निकट होता है। इसके उच्चारण में ओठ विस्तीर्ण होते हैं। जिह्वानोक नीचे की दन्त-पंक्ति को छूती रहती है।

हिन्दी में इस स्वर का अभाव है, अतएव हिन्दी भाषा-भाषी अधिकांशतः इसके स्थान पर (ɛ. ऐ)[1] का उच्चारण करते हैं—

| आदि | अंग्रेजी | अं | हिन्दी |
|---|---|---|---|
| Actor | ['æktə] | ऐक्टर | [ɛ.k ṭər] |
| Pad | [pæd] | पैड | [Pɛ.ḍ] |

---

१. कहीं-कहीं (ऐं) के साथ उन्हीं शब्द का दूसरा रूप (ए) के साथ भी मिलता है।

**अपवाद—**

१. /æ—ऐं/ के स्थान पर /अ/ जैसे—

| | अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Album | [ælbəm] | अलबम | [ɔlbəm] |
| मध्य | Bambu | [bæm'bu:] | बम्बू | [bəmbu:] |
| | Canister | ['kæ nistə] | कनस्तर | [kənəs t̪ər] |
| | Captain | [ɔkæptin] | कप्तान[1] | [kəp t̪a:n) |

२. /æ —ऐं के स्थान पर /आ/, जैसे—

| मध्य | अंग्रेजी | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| Ration | ['ræsʃən] | राशन | ['ra:ʃən] |
| Tram | [træm] | ट्राम | [ṭraʈm] |
| Brandy | ['bræddi] | ब्राण्डी | [bra:nḍi] |
| Guarantee | [gærən'ti:] | गारण्टी | [ga:rən ṭi:] |

३. /æ—ऐं/ के स्थान पर /ओ/, जैसे—

| मध्य | अंग्रेजी | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| Anatomy | [ə'næ təmi] | एनोटोमी | [e.no: ṭo:mi] |

३. १. ४. १. ५. /a:—आ /इस स्वर के उच्चारण में जिह्वा की स्थिति निम्नतम अर्थात् मान स्वर /a/ की स्थिति में होती है और जिह्वा का पश्च भाग प्रयोग में आता है। यह स्वर मान स्वर /a/ की अपेक्षा /ɒ/ से अधिक समीप है। यह पूर्ण विवृत पश्च दीर्घ स्वर है, जिसमें ओठ विस्तीर्ण होते हैं और जिह्वानोक निम्न दन्त पंक्ति के पीछे रहती है। अंग्रेजी और हिन्दी में इस स्वर की स्थिति लगभग समान ही है।

उच्चारण—विधि में अन्तर न होने के कारण /a:—आ/ के स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी /आ/ का व्यवहार करते हैं। इसका प्रयोग गृहीत शब्दों के मध्य में ही अधिक होता है, जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Grant | [gra:t] | ग्राण्ट | [gra:n ṭ] |
| Drama | [dra·mə] | ड्रामा | [ḍra:ma:] |

---

१. यह शब्द पुर्तगाली है। अंग्रेजी रूप भी द्रष्टव्य है।

अपवाद—

१. /a:—आ /के स्थान पर /इ/ जैसे—

मध्य Garage ['gæra·ʒ]          गैरिज् [gɛ.riɣ]

नोट—/a:—आ/ अंग्रेजी के—ar वर्ण की भी ध्वनि है, जिसका परिनिष्ठित अंग्रेजी में प्रयोग होता है, पर हिन्दी में गृहीत शब्दों में /आ/ के साथ-साथ /—r/ का भी कहीं पूर्ण और कहीं अपूर्ण उच्चारण होता है। जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्य | Part | [pa:t] | पार्ट्— | [pa: (r) ṭ] |
| अन्त्य | Bar | [ba:] | बार् | [ba:r] |

अपवाद—

कुछ शब्दों में यह ह्रस्व भी हो गया है। जैसे—

मध्य Clerk [kla:k]          कलर्क् [klərk]

२. १. ४. १. ६. /ɔ—ऑ/ यह पश्च विवृत ह्रस्व स्वर है, जिसमें ओठ गोलाकार रहते हैं। जिह्वानोक निम्न दंत-पंक्ति की ओर कुछ मुड़ी रहती है।

हिन्दी में इस स्वर का अभाव है। हिन्दी भाषा-भाषी साधारणतः इसके स्थान पर /आ/[1] का उच्चारण करते हैं, जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Office | [ɔfis] | आफ़िस् | [a:fis] |
| मध्य | Plot | [plɔt] | प्लाट् | [pla:ṭ] |

अपवाद—

/ ɔ—ऑ / के स्थान पर /अ/

आदि Officer ['ɔfisə]          अफ़सर् [afsər-apsər]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्य | Box | [bɔks] | बक्स् | [bəks] |
| | Coupon | [ku:pɔn] | कूपन् | [ku:pən] |

/ɔ—ऑ/ के स्थान पर /ओ/

१. इसका (ऑ) उच्चारण भी बढ़ रहा है।
'अंग्रेजी के कुछ तत्सम शब्दों के लिखने में 'ऑ' चिह्न का व्यवहार हिन्दी में होने लगा है।'—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, पृष्ठ १०३।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Operation | [ɔpəˈreiʃən] | ओपरेशन् | [o:pɔre:ʃən] |
| मध्य | Bottle | [bɔtl] | बोतल्[1] | [bo:t̪əl] |
| | Hostel | [hɔstəl] | होस्टल् | [ho:sṭəl] |

३. १. १. ४. ७/ ɔ:—ऑ /यह पश्च विवृत स्वर /ɔ—ऑ/ का दीर्घ रूप होते हुए भी उससे गुण में भिन्न है और मान स्वर (ɔ – ऑ) के अधिक समीप है। इसके उच्चारण में ओठ अधिक गोलाकृत हो जाते हैं।

हिन्दी में इस स्वर का अभाव है और हिन्दी भाषा-भाषी साधारणतः इसके स्थान पर ह्रस्व /ɔ/ की भाँति /आ/ का व्यवहार करते हैं, जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Order | [ˈɔ:də] | आर्डर् | [a: (r) ḍər] |
| मध्य | Chalk | [tʃɔ:k] | चाक् | [ʧa:k] |
| | Lawn | [lɔ:n] | लान् | [la:n] |
| | Hold-all | [ˈhouldɔ:l] | होल्डाल् | [ho. lḍa:l] |

अपवाद—

/ɔ:—ऑ/ के स्थान पर/ ओ/

| | | | |
|---|---|---|---|
| Core | [kɔ:] | कोर् | [ko.r] |

नोट—[ऑ] का शुद्ध उच्चारण भी बढ़ रहा है।

३. १. ४. १. ८ / u—उ / यह पश्च संवृत ह्रस्व स्वर है, जिसके उच्चारण में ओठ गोलाकार रहते हैं। / ɔ:—ऑ / की अपेक्षा इसमें ओठों की गोलाई अधिक रहती है।

हिन्दी व अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में यह स्वर है। हिन्दी भाषा-भाषी साधारणतः /u/ के स्थान पर /उ/ का ही प्रयोग करते हैं, जैसे :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Foot | [fut] | फुट् या फुटा | [fuṭ या phuṭa:] |
| Hook | [huk] | हुक् | [huk] |

३. १. ४. १. ९ /u:—ऊ/ यह पश्च संवृत्त दीर्घ स्वर है। इसके उच्चारण में ओठों की गोलाकृति कुछ अधिक हो जाती है।

हिन्दी में प्राप्त स्वर /उ/ का ही यह दीर्घ रूप है पर अंग्रेजी के [ऊ] में दीर्घता के साथ-साथ जिह्वा अधिक संवृत रहती है।

---

१. पुर्तगाली शब्द है।

साधारणत: हिन्दी भाषा-भाषी अंग्रेज़ी के शब्दों में अंग्रेजी स्वर [ऊ] के स्थान पर हिन्दी स्वर [ऊ] का ही व्यवहार करते हैं, जैसे—

Proof [pru:f] प्रूफ़-प्रूफ् [pru:f-pru:ph]

वर्ण-विन्यास के प्रभाव से कुछ शब्दों में (ऊ) के स्थान पर (ओ) भी मिलता है।

Arrowroot [ærəru:t] अरारोट् [əra:ro.ṭ]
Cantonment[kæntu: nmənt] कन्टोन्मेंट् [kə,n ṭo.nme:n ṭ]
केन्टून्मेंट [kɛ.n ṭu:nme.n ṭ[

नोट—'कैंट' रूप ही अधिक प्रचलित है।

वर्ण-विन्यास के प्रभाव, वर्ण-विपर्यय तथा व्यञ्जनानुक्रम के टूटने के फलस्वरूप Bugle [bju:gl] का हिन्दी में बिगुल् [bigul] रूप ही अधिक प्रचलित है।

३. १. ४. १. १० /ʌ—अ / यह मध्य विवृत ह्रस्व स्वर है। होठों की स्थिति इसमें विस्तीर्ण रहती है। जबड़ों के मध्य अधिक स्थान रहता है। अंग्रेजी के शब्दों में प्रयुक्त इस स्वर के स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी [अ] का व्यवहार करते हैं।

Rubber [ˈrʌbə] रबड़ [rabəṛ]

वर्ण-विन्यास के फलस्वरूप /ʌ/ के स्थान पर [उ] का प्रयोग :

Brush [brʌʃ] बुरुश्[1] [buruʃ]

कहीं कहीं /ʌ/ के स्थान पर दीर्घ (आ) भी हो जाता है:

Constable [kʌnstəbl] कांस्टेबिल् [ka:ns ṭe.bil]

३. १. ४. १. ११. / ə—अं/[2] यह मध्य अर्द्धविवृत स्वर है जिसमें होठ उदासीन अवस्था में रहते हैं, अतएव इस स्वर को उदासीन स्वर भी कहते

---

१. 'ब्रुश' या बुरुश भी बोलते हैं।

2. "Thus I clearly feel........ ə and 'ʌ' belong to two separate phonemes in my type of English but I am unable to find proof by a pair of words differing solely by an exchange of one of these sounds for the other. [ʌ] rarely occurs with weak stress, ə always weakly stressed."—D. Jones, Phoneme, Its Nature and Use, 1950 Page 40.

हैं। इसका प्रयोग केवल बलाघातहीन अक्षरों में ही हो सकता है। हिन्दी में प्रयुक्त स्वर /अ/ का उच्चारण-स्थान भी अं० बलाघातहीन /अं/ के ही समीप है।

अंग्रेजी में यह स्वर बहुप्रयुक्त है और यह शब्दों के आदि, मध्य व अन्त सभी स्थितियों में बलाघातहीन अक्षर में ही आ सकता है।[1] अंग्रेजी एक बलाघातप्रधान भाषा है, जबकि हिन्दी नहीं। फलस्वरूप हिन्दी भाषा-भाषी अंग्रेजी में प्रयुक्त इस स्वर की बलाघातहीनता का ध्यान न रखकर बलाघात युक्त भी कर देते हैं, यही कारण है कि अंग्रेजी में बलाघातहीन स्वर के स्थान पर हिन्दी में अनेक स्वर प्रयुक्त किये जाते हैं।

**१. अंग्रेजी के बलाघातहीन स्वर /अं/ के स्थान पर /अ/ :**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Appeal | [ə'pi:l] | अपील् | [əpi:l] |
| मध्य | Pavilion | [pə'viljən] | पैवेलियन् | [pɛ.ʋe.lijən] |

**२. /अं/ के स्थान पर /ए/**

| | | | |
|---|---|---|---|
| Current | [kʌrənt] | करेंट् | [kəre.ṇ ṭ] |

**३. /अं/ के स्थान पर /आ/**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्य | Dramatic | [drə'mætik] | ड्रामेटिक् | [ḍra:me : ṭik] |
| अन्त्य | Agenda | [ə'dʒe.ndə] | अजेन्डा | [aɣe.nḍa:] |
| | Drama | ['dra:mə] | ड्रामा | [ḍra:ma:] |

अन्त्य स्थिति में प्रयुक्त र-हीन शब्दों में यह स्वर दीर्घ हो जाता है, जैसे डिप्लोमा, फ़ार्मूला, सोफ़ा आदि सभी शब्दों के अन्त में बलाघातहीन उदासीन[2] स्वर /ə-अं/ ही है।

४. जब बलाघातहीन (अं) के साथ वर्ण-विन्यास में 'र' भी हो तो हिन्दी में (अ) के स्थान पर (अर) का उच्चारण करते हैं।

---

1. Jones, D. The Pronunciation of English, 1955, Page 49.

२. देखिये, जोन्स-नियम ३६२। अं० में यह प्रवृत्ति है कि अन्त्य स्थिति में [ʌ] का उच्चारण होता है। An Outline of English Phonetics, 1956, पृष्ठ ९३।

मध्य Certificate [sə'tifikit] सर्टीफ़िकेट्[1] [sərṭi :fikeṭ]
अन्त्य Butter ['bʌtə] बटर् [baṭər]
Lecturer ['lektʃərə] लेक्चरर् [lekʧərər]

अन्त्य स्थिति में 'र' का उच्चारण नहीं होता।[2] कुछ शब्द जो अंग्रेजी अफ़सरों के माध्यम से बोलचाल के रूप में पहले प्रयुक्त हुए और बाद में उनका लिखित रूप मिला है उनमें अवश्य 'र' का लोप पाया जाता है, जैसे—बैरा (अं०) [bɛərə]

## ५. वर्ण-विन्यास के कारण /अ/ के स्थान पर [ओ]

आदि Opinion [ə'pinjən] ओपीनियन् [o.pi:nijən]
मध्य Advocate ['ædvəkeit] एडवोकेट् [e.ḍʋo.ke.ṭ]
Gramophone ['græməfoun] ग्रामोफोन् [gra:mo.pho:n]
Photograph ['foutəgra:f] फोटोग्राफ् [pho.ṭo.gra:ph]

## ६. /अ/ के स्थान पर य – राग का आ जाना

Society [sə'saiəti] सोसायटी[3] [sosa:jṭi:]

३.१.४.१.१२. /ə :-एं / यह उदासीन मध्य स्वर का ही दीर्घ स्वरूप जिस के उच्चारण में जिह्वा कुछ अधिक संवृत रहती है, होठ विस्तीर्ण रहते हैं तथा जबड़ों के मध्य स्थान कम रहता है। जोन्स महोदय तो इसको /ə /अं/ का ही संस्वन मानते हैं।[4]

हिन्दी में इसका प्रयोग अधिकांशतः शब्दों के मध्य में ही र-वर्ण युक्त शब्द में ही होता है।

---

१. सर्टीफ़िकेट भी प्रचलित है। 'ट' और 'ड' के पूर्व 'र' का लोप हिन्दी में होता है।

२. देखिए, अं० 'र' ३.२.३.२।

३. किसी असमान स्वर के परे 'इकार' होने पर य-श्रुति का आगम हो जाता है। द्रष्टव्य-'यकार और वकार के रागात्मक रूप'—डॉ० विश्वनाथ प्रसाद. भारतीय साहित्य, वर्ष २, अंक २, पृष्ठ ६१-६३।

४. Jones, D. An Outline of English Phonetics, 1956, Page 88.

| | | | |
|---|---|---|---|
| Nurse | [nə:s] | नर्स् | [nərs] |
| Purse | [pə:s] | पर्स् | [pərs] |

हिन्दी में इसके स्थान पर 'अर' का ही उच्चारण होता है। कहीं-कहीं दीर्घत्व भी प्राप्त होता है, जैसे, Turpentine ['tə:pəntain] का तारपीन है। 'गाडर' आदि शब्द अंग्रेजी के उच्चारण के अधिक समीप हैं जो इस बात के प्रमाण हैं कि अंग्रेजी शब्द लिखित तथा मौखिक दोनों ही माध्यम से हिन्दी में आये हैं।

## ३. १. ४. २ संध्यक्षर स्वर

३. १. ४. २. १. /ei- एँइ / इस संध्यक्षर स्वर के उच्चारण में जिह्वा /e-एँ/ स्वर-प्रदेश से चलकर /i-इ/ स्वर-प्रदेश में पहुँचने की चेष्टा करती है। हिन्दी भाषा-भाषी हिन्दी में इस स्वर के अभाव के कारण साधारणतः इस संध्यक्षर के स्थान पर हिंदी मूलस्वर /ए/ का उच्चारण करते हैं, जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Mail | [meil] | मेल् | [me.l] |
| Jail | [d3eil] | जेल् | [ɣe.l] |

अपवाद—

/ei/ -/एँइ/ के स्थान पर [आय]

| | | | |
|---|---|---|---|
| Dais | [deis] | डायस् | [ḍais] |

/ei-एँइ/ के स्थान पर [अ]

| | | | |
|---|---|---|---|
| April | [eiprəl] | अप्रेल् | [əpre.l] |

/ei-एँइ / के स्थान पर [अई]

| | | | |
|---|---|---|---|
| May | [mei] | मई | [məi:] |

/ei-एँइ/ के स्थान पर [आ]

| | | | |
|---|---|---|---|
| Waist-Coat | ['weiskout] | बास्कट् | [ba:skə ] |

३. १. ४. २. २. / ou-ओउ/ इस संध्यक्षर के उच्चारण में जिह्वा /ओ/ की स्थिति से /u-उ/ की ओर चलती है। इस स्वर के उच्चारण में प्रारम्भ में होठ कम व अन्त में अधिक गोलाकार हो जाते हैं। हिन्दी में इस स्वर का भी अभाव है। इसके स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी साधारणतः [ओ] का ही उच्चारण करते हैं, जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Boat | [bout] | बोट् | [bo:ṭ] |
| Coat | [kout] | कोट् | [ko:ṭ] |
| Vote | [vout] | वोट् | [ʋo:ṭ] |

अपवाद—

/ou ओउ/ के स्थान पर [ई]

Sewing [souin,] सुइंग् [suin.g] सीविंग् [si:ʋin,g]

/ou ओउ/ के स्थान पर [उ]

Poultice ['Poultis] पुल्टिस् [pulṭis]

/ou ओउ/ के स्थान पर [ऊ]

October [ɔk'toubə] अक्टूबर् [akṭu:bər]

३.१.४.२.३. /ai-अइ/ इस संध्यक्षर स्वर के उच्चारण के लिये जिह्वा मानस्वर (a) की स्थिति से चलकर (i-इ) की ओर चलती है। साधारणतः हिन्दी भाषा-भाषी इस संयुक्त स्वर के स्थान पर (आइ) का उच्चारण करते हैं। साथ ही यह ध्यान देने की बात है कि इस संध्यक्षर का उच्चारण जहाँ अंग्रेजी में एकाक्षरात्मक है, वहाँ हिन्दी में द्व्यक्षरात्मक[1] है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Time | [taim] | टाइम्[2] | [ṭa:im] |
| Type | [taip] | टाइप्[2] | [ṭa:ip] |

अपवाद—

कहीं-कहीं इसके स्थान पर [ई] भी हो जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Mile | [mail] | मील् | [mi:l] |

३. १. ४. २. ४ /au-अउ/ इस संध्यक्षर स्वर के उच्चारण के लिये जिह्वा मानस्वर (a) की स्थिति से चलकर (u-उ) तक पहुँचने की चेष्टा

---

१. अंग्रेजी का संध्यक्षर स्वर हिन्दी में स्वरानुक्रम में परिवर्तित हो गया है। दो स्वरों का स्वरानुक्रम होने के कारण इसका उच्चारण भी द्व्यक्षरात्मक हो गया। इस संबंध में ४. १. २. ३. २. १. १ पर अक्षरों के विवेचन में भी देखिए।

२ हिन्दी के संध्यक्षर स्वर [ऐ]का उच्चारण भी 'अइ' की तरह न होकर आज शुद्ध मूल स्वर [ɛ]की तरह होने लगा है। उसी आधार पर इन शब्दों का दूसरा उच्चारण टैप्, टैम् भी मिलता है, जिसमें उच्चारण एकाक्षरात्मक ही होता है, जैसे Pice [Pais] पैसा, License [laisəns] लैसंस् तथा Limejuice [laimd3u:s] लैमचूस् आदि।

करती है। साधारणतः हिन्दी भाषा-भाषी इस संयुक्त स्वर के स्थान पर [आउ] का उच्चारण करते हैं। इस संध्यक्षर स्वर का उच्चारण भी जहाँ अंग्रेजी में एकाक्षरात्मक है, वहाँ हिन्दी में द्व्यक्षरात्मक होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Out | [aut] | आउट्[1] | [a:u ṭ] |
| Town | [taun] | टाउन्[1] | [ṭ a:un] |

३.१.४.२.५/ɔi—ऑइ/ इस संध्यक्षर के उच्चारण के लिये जिह्वा मानस्वर (ʊ) और (ɔ) के मध्य से चलकर (इ) की ओर पहुँचने की चेष्टा करती है। हिन्दी में इस स्वर का अभाव है अतएव हिन्दी भाषा-भाषी इस स्वर के स्थान पर अधिकांशतः इसका उच्चारण भी द्व्यक्षरात्मक करते हैं; साथ ही य-राग का[2] उच्चारण करते हैं, उदाहरणार्थ बहुप्रचलित शब्द "बायकाट" लिया जा सकता है जो अँगरेजी शब्द Boycott [bɔikɔ ṭ] का ही रूप है। अँगरेजी शब्द "बॉई" [bɔi] का हिन्दी में "बाय" हो जाता है। इसमें भी य-राग है।

३.१.४.२. ६/ i ə —इअ/—इस संध्यक्षर स्वर के उच्चारण में जिह्वा (i — इ) से चलकर उदासीन स्वर (अ) पर पहुँचने की चेष्टा करती है। हिन्दी भाषा-भाषी इस स्वर के स्थान पर भी स्वर (इ) के साथ य-राग[3] का उच्चारण करते हैं, जिससे इसका उच्चारण भी द्व्यक्षरात्मक हो जाता है।

---

१. [औ] का उच्चारण भी /अउ/ न होकर शुद्ध मूलस्वर [ɔ:] की भाँति होने लगा है। औट, टौन, पौंड, कौन्सिल तथा कम्पौडर खूब चलते हैं।

२. स्वर (इ) के होने के कारण य-राग का आ जाना स्वाभाविक है।

३. अंग्रेजी में भी य-राग का आगम हो जाता है, देखिए: Jones, D.—Falling and Rising Diphthong in Southern English, Misc. Phonetica II. 1954
हिन्दी में भी य-राग का आगम होता है—द्रष्टव्य डॉ० विश्वनाथप्रसाद 'यकार' और 'वकार' के रागात्मक रूप, भारतीय साहित्य, वर्ष २ अंक २ पृष्ठ ६१--६३.

Hysteria [his'tiəriə] हिस्टीरिया [his ṭi:rija:]
India [indiə] इन्डिया [inḍija:]
Theatre [θiətə] थियेटर् (थेटर) [ṭhije ṭər]
[ṭhe. ṭər]

३.१.४.२.७/E ə —एँअं/ —इस संध्यक्षर स्वर के उच्चारण के लिये जिह्वा [e] और [æ] के मध्य की स्थिति से चलकर मध्य की ओर उदासीन स्वर (अं) पर पहुँचने की चेष्टा करती है। हिन्दी में इस स्वर का अभाव होने के कारण इसके स्थान पर विभिन्न उच्चारण प्राप्त होते हैं—

/Eə — एँ अं/ के स्थान पर [ऐ]
Bearer [bEərə] बैरा [bE.ra]
/Eə~ एँ अं/ के स्थान पर [एअर]
share [ ʃEə ] शेअर् [ʃE.ər]
Chairman [tʃEəmən] चेयरमैन[1] [če.ə rmɛ.n]

३.१.४.२.८./ɔə · ऑ अं/इस संध्यक्षर स्वर के उच्चारण के लिये जिह्वा मानस्वर (ɔ) के स्थान से चलकर मध्य की ओर उदासीन स्वर पर पहुँचने की चेष्टा करती है।

हिन्दी में इस स्वर का भी अभाव है, अतएव हिन्दी भाषा-भाषी इसके स्थान पर शुद्ध स्वर [ओ] का ही प्रयोग करते हैं।

| अंग्रेजी | हिन्दी |
|---|---|
| Store [stɔə] | स्टोर् [s ṭo.r] |
| Board [bɔəd] | बोर्ड् [bo.(r) ḍ] |

३.१.४.२.९/u ə~ उ अं/ इस संध्यक्षर स्वर के उच्चारण के लिये जिह्वा (u) की स्थिति से चलकर मध्य की ओर उदासीन स्वर (अं) पर पहुँचने की चेष्टा करती है।

---

१. 'य' श्रुति के लिए द्रष्टव्य है—डॉ० विश्वनाथप्रसाद-- 'यकार' और 'वकार, के रागात्मक रूप,भारतीय साहित्य, वर्ष २, अंक २,पृ० ६१-६२

हिन्दी में इस स्वर का भी अभाव है, अतएव हिन्दी भाषा-भाषी इस स्वर के स्थान पर (ऊ) का प्रयोग करते हैं।

Tour [tuə] टूर् [ṭu:r]

३.१.४.२.१० /iə—ईॅ अ/ इस संध्यक्षर स्वर /iə-इ अ/ का ही बलाघातहीन दूसरा रूप इस स्वर को कहा जा सकता है। इस स्वर के स्थान पर भी हिन्दी में य-राग[1] का आगम हो जाता है। बलाघात का तो हिन्दी में कोई ध्यान ही नहीं रखा जाता है अतएव हिन्दी में ये दोनों स्वर एक ही रूप में गृहीत हुए हैं—

Period ['piəriəd] पीरियड् [pi:rijəḍ]
Malaria [mə'l Eəriə] मलेरिया [male. rija:]

३.१.४.२.११. अंग्रेजी में कुछ त्रि-संयुक्त स्वर भी हैं लेकिन हिन्दी में वे सब स्वरानुक्रम में बदल दिये जाते हैं। हिन्दी में ऐसे शब्द गृहीत भी कम हुए हैं जिनमें इन स्वरों का प्रयोग होता है। फिर भी कुछ शब्द विचारणीय हैं—

Violin [vaiəlin] वायलिन् [ʋa: j lin]
Bioscope [baiəskoup] बाइस्कोप् [ba: isko.p]
power [pauə] पावर्[2] [pa: ʋər]

---

१. द्रष्टव्य, वही, पाद टिप्पणी सं० १ पृष्ठ १०५।

२. 'अ' के परे 'उ' होने से व-श्रुति का आगम द्रष्टव्य, वही, पृष्ठ सं० ६३।

## ३.१.५. अंग्रेजी अ स्वर और उनका हिन्दी में रूप

| अंग्रेजीस्वर | इ | ई | ए | ऐ | आ | ओ | ऑ | उ | ऊ | अ | अइ | अउ | आई | आर | अर | ऑर | आय | ओउ | आउ | इय | एअर | उर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| i:· | – | X | – | – | | | | | | | | | – | | | | | | | | | |
| i | X | – | – | | | | | – | | – | | | | | | | | | | | | |
| e | – | – | X | | | | | | | – | | | | | | | | | | | | |
| æ | | | | ⊠ | – | – | | | | – | | | | | | | | | | | | |
| a· | – | | | – | X | | | | | | | | | – | – | | | | | | | |
| ɔ | | | | | X | – | | | | – | | | | | | | | | | | | |
| ɔ: | | | | | X | – | ⊠ | | | | | | | | | | | | | | | |
| u | | | | | | | | X | | | | | | | | | | | | | | |
| u: | – | | | | | – | | | X | | | | | | | | | | | | | |
| ə: | | | | | | | | | | | | | | – | X | | | | | | | |
| ə | – | | – | | – | | | | | X | | | | | | | | | | | | |
| ʌ | | | | | – | – | | – | | X | | | | | – | | | | | | | |
| ei | | | X | | – | | | | | – | – | | | | | | – | | | | | |
| ou | | | | | | X | | – | – | | | | | | | | | – | | | | |
| ai | | – | | ※ | | | | | | | | | X | | | | | | | | | |
| au | | | | | | | ※ | | | | | | | | | | | | X | | | |
| ɔi | | | | – | | | | | | | | | | | | | X | | | | | |
| iə | | | – | | | | | | | | | | | | | | | | | X | | |
| Eə | | | | – | | | | | | | | | | | | | | | | | X | |
| ɔə | | | | | | | | | | | | | | | | X | | | | | | |
| uə | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | X |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

। X ।　नियमित बदला हुआ रूप।

। – ।　अपवाद स्वरूप।

। ⊠ ।　हिन्दी और अंग्रेजी के स्वरों के उच्चारण में बहुत सूक्ष्म अन्तर है।

। ※ ।　हिन्दी की दो प्रधान बोलियों में उच्चरित रूप।　देखिए प० ४.१.

## ३. २. १ अंग्रेजी तथा हिन्दी की व्यंजन ध्वनियों की तालिका पर टिप्पणी :—

१. प्रथम पंक्ति में अंकित ध्वनियाँ अंग्रेजी की हैं, जो डेनियल जोन्स महोदय की पुस्तक 'एन आउटलाइन आव् इंगलिश फ़ोनेटिक्स,' सन् १९५६ भूमिका के पृष्ठ १७ से उद्धृत हैं।

२. दूसरी पंक्ति में अंकित ध्वनियाँ हिन्दी की हैं जो डॉ० धीरेन्द्र वर्मा की पुस्तक 'हिन्दी भाषा का इतिहास' सन् १९४९, पृष्ठ ९९-१०० से उद्धृत हैं।

३. [] में लिखित ध्वनियाँ हिन्दी में संस्वन मात्र हैं।

४. o में अंकित ध्वनियाँ हिन्दी में अरबी-फ़ारसी के माध्यम से गृहीत हुई हैं।

५. ( ) में लिखित ध्वनियाँ दूसरे उच्चारण-स्थल की ओर संकेत करती हैं।

६. अंग्रेजी (व) ध्वनि को हिन्दी से पृथक् दिखाने के लिये ही हिन्दी की (व) ध्वनि को संघर्षी में न रखकर सप्रवाह में रक्खा है।

७. हिन्दी तथा अंग्रेजी (च) और (ज) ध्वनियों में भी सूक्ष्म अन्तर है अतएव दो भिन्न चिह्न प्रयुक्त किये गये हैं।

८. हिन्दी की (ह) ध्वनि सामान्यतः सघोष है, वैसे अघोष ध्वनियों के साथ उसमें अघोषत्व आ जाता है।

९. हिन्दी ध्वनि (ल) और (र) के महाप्राणरूप केवल बोलियों में मिलते हैं, अतएव उन्हें नहीं लिया गया है :—
डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १९४९, पृष्ठ ९९-१००।

१०. हिन्दी ध्वनि (र) को लुंठित की अपेक्षा 'लघ्वाघात' माना जा सकता है, साथ ही इसके उच्चारण में मूर्द्धन्यता भी होती है।

### निष्कर्ष :

इस तालिका के अध्ययन से यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कि जहाँ अंग्रेजी में महाप्राण ध्वनियों का अभाव है, वहाँ हिन्दी में संघर्षी ध्वनियाँ अंग्रेजी की अपेक्षा बहुत कम हैं।

## ३. २. २ अंग्रेजी की व्यञ्जन ध्वनियाँ और हिन्दी में उनका रूपान्तर

### ३. २. २. १. स्पर्श व्यञ्जन

#### ३. २. २. १. १. द्वयोष्ठ्य—

३. २. २. १. १. १. / p—प् / इस स्वनिम के प्रधान संस्वन [ प्—p ] का उच्चारण करने के लिये सर्वप्रथम वायु-मार्ग दोनों होठों के द्वारा बन्द हो जाता है, फेफड़ों से आने वाली वायु रुक जाती है, तत्पश्चात् होठ एकदम खुलते हैं और वायु शीघ्रता से बाहर आती है। अन्य निरनुनासिक ध्वनियों की भाँति इसमें कोमल तालु द्वारा नासारन्ध्र मार्ग अवरुद्ध रहता है। यह ध्वनि अघोष है।

अंग्रेजी /प्—p/ ध्वनि का एक और संस्वन [ $प्^{ह}$—$p^{h}$] है जो शब्द के प्रारम्भ व मध्य-स्थित बलाघात-युक्त अक्षर में प्रयुक्त होता है।

अंग्रेजी के गृहीत शब्दों में हिन्दी भाषा-भाषी इस ध्वनि के स्थान पर हिन्दी-ध्वनि [प्] का प्रयोग करते हैं, जिसमें अंग्रेजी (प) की अपेक्षा होठों का स्पर्श उतना दृढ़ रूप में नहीं होता है फलतः अंग्रेजी की अपेक्षा उसका मोचन हल्का होता है।

[ $प्^{ह}$ ] संस्वन हिन्दी की [फ] ध्वनि के ही समान है, जिसका हिन्दी में स्वनिमात्मक महत्व है। दूसरे अंग्रेजी [ $प^{ह}$ ] संस्वन में महाप्राणत्व भी बहुत क्षीण होता है अतएव अंग्रेजी आगत शब्दों में इस ध्वनि के उच्चारण को गृहीत नहीं किया गया।

| उदाहरण | अंग्रेजी | | | हिन्दी |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Pen | [phen] | पैन् | [pɛ.n] |
| मध्य | Report | [riˈpɔ:t] | रिपोर्ट, रपट् | [ripo: (r) ṭ]<br>[rapəṭ] |
| अन्त्य | Map | [mæp] | मैप् | [mɛ.p] |

**अपवाद—**

ग्रामीण[1] रूप में कुछ अपवाद मिलते हैं।

३. २. २. १. १. २. / b—ब् / इस स्वनिम के प्रधान संस्वन का उच्चारण [ प्—p] के समान ही होता है,[1] अन्तर केवल इतना है कि इसके उच्चारण में स्वरतन्त्रियों में कम्पन रहता है। यह एक सघोष अल्पप्राण व्यञ्जन है।

हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में प्राप्त इस ध्वनि में कोई अन्तर नहीं है, अतएव साधारणतः हिन्दी भाषा-भाषी इसके स्थान पर हिन्दी [ ब् ] का ही उच्चारण करते हैं, जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Bag | [bæg] | बेग् | [be.g] |
| मध्य | Album | [ælbəm] | अल्बम् | [albəm] |
| अन्त्य | Club | [klʌb] | क्लब्[2] | [kləb] |

**अपवाद—**

सघोष के स्थान पर अघोष —

Tub [ tʌb ] हि० टब्—टप्[3] [ṭəb-ṭəp]

[ब] के स्थान पर [व[4]]

Bulb [bʌlb] हि० बल्व्-बल्ब् [balʋ-balb]

३. २. २. १. २. वर्त्स्य—। t-ट् । और । d-ड् । अंग्रेजी की दो विशिष्ट ध्वनियाँ हैं, जिनका हिन्दी में अभाव है।

इन दोनों ध्वनियों पर आगे विस्तृत विवेचन किया गया है।[5]

---

१. stamp / stæmp / का अस्टाम, Gap /gap/ का गैब, picket / pikit / का विकट* रूप मिलता है।
*आधी रात विकट का पहरा, कोयल ने कूक दई।
फैलन–डिक्शनरी, १८७९, पृष्ठ २६२।

२. 'क्लब' रूप तो केवल शिष्टजन ही प्रयोग करते हैं, किन्तु जनसाधारण में इसका रूप 'किलब' मिलता है।

३. स्पर्श ध्वनियों में अन्त्य स्फोट न होने के कारण उसका घोषत्व क्षीण हो जाता है।

४. हिन्दी में ( ब् ) तथा ( व् ) ध्वनियों का विपर्यय बहुधा हो जाता है।

५. देखिए ३. २. ३. १.।

## ३. २. २. १. ३ कंठ्य

३.२.२.१.३.१ (k-क्) इस वर्ग के प्रधान संस्वन का उच्चारण जिह्वापश्च को कोमल तालु से छुआकर किया जाता है। यह अल्पप्राण अघोष स्पर्श व्यञ्जन है।

[प्] तथा / ट् / की भाँति इस स्वनिम का भी एक दूसरा संस्वन [कह्] है जिसका प्रयोग बलाघात-युक्त अक्षर के प्रारम्भ में होता है। इस संस्वन को गृहीत शब्दों में नहीं ग्रहण किया गया।[1]

हिन्दी भाषा-भाषी इस ध्वनि के स्थान पर साधारणतः हिन्दी [क्] का प्रयोग करते हैं, जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| आदि | Class [kla: s] | क्लास् | [kla:s] |
| मध्य | Actor [ˈæktə] | एक्टर् | [E:kṭər] |
| अन्त्य | Bank [bæn,k] | बैंक् | [bE.n,k] |

**अपवाद—**

अघोष के स्थान पर घोष—

| | | |
|---|---|---|
| [riˈkru:t] | रंगरुट् | [ran,gru:ṭ] |
| [kɔ:k] | काग् | [Ka:g] |
| [ˈdɔktə] | हि॰ ग्रा॰ डागदर् | [ḍa:gdər] |

३.२.२.१.३.२. / g-ग् / इसका उच्चारण ( क् ) के स्थान से होता है, केवल अन्तर इतना है कि इस ध्वनि के उच्चारण के समय स्वरतन्त्रियों में कम्पन होता है। यह सघोष अल्पप्राण कंठ्य स्पर्श व्यञ्जन हैं।

हिन्दी भाषा-भाषी इस ध्वनि के स्थान पर अपनी भाषा में प्राप्त ध्वनि [ग्] का ही व्यवहार करते हैं।

---

१. इस सम्बन्ध में शब्द ख्रीष्ट—christ [kraist] ख्रिष्टान—christian [kristjən] उल्लेखनीय हैं, जो अंग्रेजी उच्चारण से न आकर ग्रीक से आये प्रतीत होते हैं।

| उदाहरणार्थ— | अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Gate | [geit] | गेट् | [ge.ṭ] |
| मध्य | Hanger | [hæn,gə] | हैंगर् | [he.n,gər] |
| अन्त्य | Bag | [bæg] | बेग्, बैग् | [be:g—bɛ.g] |

## ३ २.२.२. स्पर्श-संघर्षी

### ३.२.२.२.१ वर्त्स्य-तालव्य

३.२.२.२.१.१ [tʃ] ~ [॰च्] इस वर्ग के प्रधान संस्वन (ध्वनि) का उच्चारण करने लिये जीभ का अगला भाग ऊपरी मसूड़ों के निकट कठोर तालु के समीप तालव्य [श्] की स्थिति में रहता है, और [ट्] ध्वनि उच्चरित करने के समान वायु-मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, ज्योंही [ट्] का स्फोट होता है, वायु [श्] की स्थिति में जिह्वा एवं कठोर तालु के मध्यस्थ रन्ध्र से बाहर निकलती है, इस प्रकार [ट्] के साथ-साथ [श्] का भी उच्चारण होता है। इस ध्वनि को अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनिलिपि के अनुसार (tʃ—ट् श्) भी लिखा जा सकता है। इसके दूसरा रूप लिखने की विधि [ʧ-॰च्] है। यह अघोष वर्त्स-तालव्य स्पर्श-संघर्षी है।

इस ध्वनि के स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी (c—च्) का उच्चारण करते हैं, जिसमें अंग्रेजी की ध्वनि (tʃ ~ ॰च) के समान शक्ति-सम्पन्नता नहीं होती। हिन्दी में [च्] ध्वनि है। प्राचीन काल में यह ध्वनि स्पर्श के अन्तर्गत आती थी, पर आज डॉ॰ चटर्जी[1], कादरी[2] सक्सेना[3] व वर्मा[4] सभी एकमत हैं कि यह ध्वनि स्पर्श-संघर्षी है। प्रो॰ घल ने भी यह स्वीकार किया है और सुझाव दिया है कि इसके ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन के लिये [tʃ] न लिखकर [ʧ-च्] लिखा जाय जो अधिक समीचीन प्रतीत होता है।

---

१. डॉ॰ चाटुर्ज्या—बंगाली फ़ोनेटिक रीडर, ऑक्सफ़ोर्ड, सन् १६२८ पृ॰ ११।

२. डॉ॰ कादरी—हिन्दुस्तानी फ़ोनेटिक रीडर, प्रथम सं॰, पृ॰ ८२।

३. डॉ॰ सक्सेना—अवधी का विकास (एवोल्यूशन अव् अवधी) सन् १६३७, पृ॰ ३१।

४. डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा,—हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १६४६, पृ॰ ११७।

यह ध्वनि भारतीय भाषाओं में एक इकाई के रूप में मानी जाती है।[१] निष्कर्ष यह निकला कि दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त ध्वनियों के उच्चारण-स्थल एक होते हुए भी उनके प्रयत्न में भेद है। अंग्रेजी [॰च॒] का उच्चारण हिन्दी तालव्य स्पर्श-संघर्षी [च॒] से भिन्न है। अंग्रेजी ध्वनि का उच्चारण कुछ [टश॒] की भाँति होता है और हिन्दी में इसके स्थान पर [च॒] हो जाता है।[२]

| | अंग्रेजी | | | हिन्दी |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Chairman | [ˈtʃEəmən] | चेयरमैन॒ | [ʧe:jə rmɛ:n] |
| मध्य | Lecture | [ˈlektʃə] | लेक्चर॒ | [le:kʧər] |
| अन्त | Bench | [bentʃ] | बेंच॒ | [be:nʧ] |

३.२.२.२.१.२/d3-॰ज॒/ इस वर्ग की भी प्रधान् ध्वनि का उच्चारण [॰च॒] के समान ही होता है, अन्तर केवल इतना है, कि स्वरतन्त्रियों में कम्पन रहता है, अतएव यह सघोष अल्पप्राण वर्त्स-तालव्य स्पर्श-संघर्षी है।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Jail | [d3eil] | जेल॒ | [ʤe:l] |
| मध्य | Engine | [end3in] | इंजन् | [inʤən] |
| अन्त | College | [kɔlid3] | कालेज॒, कालिज॒ | [ka:le:ʤ] [ka:liʤ] |

इस ध्वनि के स्थान पर भी हिन्दी में सर्वत्र [ज॒] कर दिया गया है।

## ३. २. २. २. २. वर्त्स्य स्पर्श-संघर्षी[३]:

/ट्र-tr/ तथा /ड्र-dr/ दो और ध्वनियाँ हैं। हिन्दी के सभी शब्दों (आगत) में ये ध्वनियाँ स्पर्श-संघर्षी न होकर व्यञ्जनानुक्रम[४] ही रहती हैं।

---

१. प्रो॰ गोलोकबिहारी धल, ध्वनि-विज्ञान, १६५८, पृ. ११४।

२ डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा-हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १६४६, पृष्ठ २१२।

३. अंग्रेजी में प्रधान स्पर्श-संघर्षी केवल / tʃ / और /d3/ हैं।
Jones, D.—The Pronunciation of English, 1955, Page 78.

४. अंग्रेजी में भी कुछ ध्वनिविद् इसे व्यञ्जनानुक्रम मानते हैं, वही, पृष्ठ ७८।

## ३. २. २. ३. संघर्षी

### ३. २. २. ३. १. दन्तोष्ठ्य :

३. २. २. ३. १. १. /फ़-f/ इस वर्ग की प्रधान ध्वनि के उच्चारण के लिए नीचे के ओठ और ऊपर के दाँतों की पंक्ति के बीच में बचे रहनेवाले रन्ध्रों से हवा निकलती रहती है। स्वरयन्त्र में कम्पन नहीं होता। ऊपर का होठ और जिह्वा निष्क्रिय रहती है। यह अघोष दन्तोष्ठ्य सङ्घर्षी है। निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों में यह ध्वनि सुनी जा सकती है :—

far [fa:], philosophy [filɔsəfi], Cough [Kɔf] तथा lieutenant [lef'tenənt] आदि।

हिन्दी में यह ध्वनि नहीं पाई जाती है, पर अरबी-फ़ारसी के शब्दों में यह ध्वनि व्यवहृत होती है। उर्दू के जानकार इस ध्वनि का शुद्ध उच्चारण करते हैं। अरबी-फ़ारसी के आगत शब्दों के माध्यम से यह ध्वनि हिन्दी-ध्वनिसमूह में अपना स्थान पूर्ववत् ही पा चुकी है।

अंग्रेजी के आगत शब्दों में यह ध्वनि किसी एक के मुख से शुद्ध सुनायी पड़ती है और दूसरे के मुख से अशुद्ध। इसके स्थान पर हिन्दी की द्व्योष्ठ्य अघोष महाप्राण स्पर्श ध्वनि [फ्] का व्यवहार करते हैं।

उदाहरण :

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Fees | [fi:z] | फ़ीस्-फीस् | [fi:s-phi:s] |
| मध्य | Office | [ɔfis] | आफ़िस्-आफिस् | [a:fis-a:phis] |
| अन्त | Safe | [seif] | सेफ़्-सेफ् | [se f-se:ph] |

३. २. २. ३. १. २ /V-.व/ इस वर्ग की ध्वनियों की उच्चारण-विधि [फ़] के ही समान है, केवल इतना अन्तर है कि इस ध्वनि के उच्चारण के समय स्वरयन्त्र में कम्पन होता है। इस ध्वनि के उच्चारण में दाँत और ओष्ठ का मिलन अधिक शिथिल है और वायु-प्रवाह में [फ़्] के समान तीव्रता नहीं होती। अंग्रेजी भाषा के निम्नलिखित शब्दों में यह ध्वनि सुनी जाती है, जैसे, Voice [vɔis], wave [weiv] आदि।

हिन्दी की ध्वनि-प्रणाली में यह ध्वनि नहीं है। हिन्दी के वन, चावल देव आदि शब्दों में प्रयुक्त ध्वनि [व्] वस्तुतः सङ्घर्षी नहीं है। [व] का उच्चारण

दन्तोष्ठ्य होते हुए भी [V-..व्] ध्वनि से नितान्त भिन्न है। [व्] के उच्चारण में ओठों का सम्पर्क दाँतों के साथ बहुत कम है और वायु घर्षण के साथ बाहर अधिक देर तक नहीं निकलती है। हिन्दी [व्] ध्वनि सङ्घर्षहीन सप्रवाह सघोष व्यञ्जन है। अंग्रेजी के आगत-शब्दों में प्रयुक्त सङ्घर्षी ध्वनि [v-..व्] के स्थान पर [व्] का प्रयोग करते हैं।

उदाहरणार्थ:—आदि Value ['Vælju:] वेल्यू [ve.lju:]
मध्य Driver ['draivə] ड्राइवर् [ḍra:ivər]
अन्त Love [lʌv] लव्[1] [ləv]

टिप्पणी—परिनिष्ठित हिन्दी में प्रयुक्त ध्वनि [व्] के स्थान पर बोलियों में [ब्] मिलता है। /ब्/ एक द्व्योष्ठ्य स्पर्श व्यञ्जन है। जिसका उच्चारण सरल भी है, अतएव बहुत से आगत शब्दों में सङ्घर्षी [..व् -v] के स्थान पर [ब्] का भी व्यवहार पाया जाता है।

उदाहरणार्थ : Rivet ['rivit] रिबिट [ribiṭ]

## ३. २. २. ३. २. अन्तर्दन्त्य :

३.२.२.३.२.१. [θ-थ्] इस वर्ग की ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वानोक और ऊपर के दाँतों के मध्य से हवा रगड़ के साथ बाहर जाती है। इस ध्वनि के उच्चारण के समय जिह्वा का शेष भाग मुख-विवर में प्रायः शिथिल व फैला हुआ रहता है। स्वरयन्त्र में कम्पन नहीं होता है। इसे अघोष अन्तर्दन्त्य सङ्घर्षी कहते हैं। अंग्रेजी में यह ध्वनि प्रचुरता से प्राप्त होती है और Thin [θin] और Thermometer थर्मामीटर [θə'mɔmitə] आदि के प्रारम्भ में सुनी जा सकती है। हिन्दी में इस ध्वनि का नितान्त अभाव है।

फलस्वरूप अंग्रेजी के आगत शब्दों में इस सङ्घर्षी ध्वनि के स्थान पर दन्त्य महाप्राण अघोष स्पर्श [थ्] का उच्चारण किया जाता है:—

---

१. बैडमिंटन खेल में प्रयुक्त।

आदि Thesis ['θi:sis] थीसिस् [t̪hi:sis]

अन्त Berth [bə:θ] बर्थ् [bərt̪h]

**टिप्पणी**—कहीं-कहीं पर दन्त्य स्पर्श के अतिरिक्त मूर्धन्य स्पर्श का भी उच्चारण करते हैं—

**उदाहरणार्थ**:—Theatre [θiətə] के दो प्रचलित उच्चारण—थियेटर (t̪hieṭər) और ठेटर् (ṭhe:ṭhər) हैं, दूसरे उच्चारण को ठेठ ग्रामीण कहा जा सकता है।

३. २. २. ३. २. २. /ð-द्/ इस वर्ग की ध्वनियों की उच्चारण-पद्धति भी थ~θ) के समान है। यह (थ्) ध्वनि का घोष रूप है। इसके उच्चारण के समय स्वरतन्त्रियों में कंपन रहता है। यह सघोष अन्तर्दन्त्य सङ्घर्षी है। अंग्रेजी में यह ध्वनि है और father [fa:ðə] आदि शब्द में इसका उच्चारण भी सुना जा सकता है। हिन्दी में इस ध्वनि का भी नितान्त अभाव है।

हिन्दी में प्रयुक्त अंग्रेजी के वे आगत शब्द बहुत कम हैं, जिनमें यह ध्वनि उच्चरित होती है, फिर भी जो शब्द हैं उनमें इसके स्थान पर हिन्दी भाषाभाषी दन्त्य सघोष स्पर्श (द्) का उच्चारण करते हैं—

Father [fa:ðə] फादर्-फ़ादर् [Pha:d̪ər-fa:d̪ər]

## ३. २. २. ३. ३. वर्त्स्य

३. २. २. ३. ३. १. /S-स्/ इस वर्ग की ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वानोक ऊपर के दाँतों के मूलस्थान वर्त्स के पीछे रहकर एक प्रकार का सङ्कीर्ण मार्ग वायु के लिये बनाती है और जब वायु इसी सङ्कीर्ण भाग से होकर रगड़ती हुई बाहर जाती है तो इस वर्त्स्य सङ्घर्षी ध्वनि की सृष्टि होती है। ध्वनियन्त्र में कम्पन नहीं होती है, यह अघोष ध्वनि है।

अंग्रेजी में यह ध्वनि पाई जाती है। अंग्रेजी ध्वनि [S] के उच्चारण में जिह्वानोक और जिह्वाफलक वर्त्स्य के नीचे रहकर संकीर्ण मार्ग बनाते हैं और वायु इसी सङ्कीर्ण मार्ग से सीत्कार करती हुई बाहर आती है। जिह्वाग्र दाँतों के पीछे दबा रहता है। जिह्वा का मध्य भाग कुछ ऊपर की ओर उठा रहता है। इसमें केवल जिह्वाफलक की सहायता ली जाती है। इस प्रकार उच्चरित अंग्रेजी अघोष वर्त्स्य सङ्घर्षी ध्वनि Cinema ['sinimə] शब्द के प्रारम्भ में सुनी जा सकती है।

हिन्दी में भी यह ध्वनि है। हिन्दी की ध्वनियों में इसका प्रचलित नाम दन्त्य [स्] है, यद्यपि आज इस ध्वनि का उच्चारण-स्थल दन्त न होकर दन्तमूल [वर्त्स] है। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा ने भी इसका उच्चारण-स्थल वर्त्स ही माना है।[1]

इस प्रकार उच्चारण-स्थल तथा उच्चारण-विधि की दृष्टि से कुछ सूक्ष्म अन्तर अवश्य है परन्तु अंग्रेजी व हिन्दी में यह ध्वनि एक ही है। हिन्दी ध्वनि [स्] के उच्चारण में जिह्वानोक, तो अंग्रेजी ध्वनि [स्] के उच्चारण में जिह्वाफलक प्रयुक्त होता है।

हिन्दी व अंग्रेजी [स्] ध्वनि में विशेष अन्तर न होने पर अंग्रेजी के आगत शब्दों में अंग्रेजी ध्वनि [स्] के स्थान पर हिन्दी ध्वनि [स्] ही उच्चरित की जाती है। उदाहरणार्थः—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Circus | [ˈsəːkəs] | सर्कस् | [sarkəs] |
| मध्य | Biscuit | [ˈbiskit] | बिस्कुट् | [biskuṭ] |
| अन्त्य | Box | [bɔks] | बक्स् | [bəks] |

३. २. २. ३. ३. २. /ज़् -z/ इस स्वनिम के प्रधान संस्वन की भी उच्चारण-पद्धति [स्-s] के ही समान है; केवल इसके उच्चारण के समय स्वरतन्त्रिओं में कम्पन रहता है, इसलिए यह ध्वनि सघोष वर्त्स्य सङ्घर्षी है।

अंग्रेजी में यह ध्वनि Zoo [zuː], Zone [zoun] आदि शब्दों के प्रारम्भ में सुनी जा सकती है।

हिन्दी में यह ध्वनि नहीं है। इसके स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी स्पर्श-सङ्घर्षी [ज्] का उच्चारण करते हैं, पर फ़ारसी और अरबी के आगत शब्दों के माध्यम से सङ्घर्षी [ज़्] ध्वनि ने हिन्दी में प्रवेश पा लिया है और उर्दू भाषा-भाषी व उससे प्रभावित हिन्दी भाषा-भाषी इस ध्वनि का शुद्ध उच्चारण करते हैं।

इस प्रकार अंग्रेजी-आगत शब्दों में [फ़्—f] के समान इसके भी दो रूप हो गये हैं; कुछ लोग [ज़्-z] का उच्चारण करते हैं, तो कुछ [ज्-ɟ] ध्वनि का।

---

१- डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १९४९, पृष्ठ १२५।

आदि Zoo [zu:] ज़ू-जू [zu:~ɣu:]
मध्य Dozen [dʌzn] दर्जन्-दर्ज़न् [dar ɣ ən-darzən]
अन्त Breeches ['britʃiz] ब्रीचेज़-ब्रीचेज्
[bri:ʧe:z-bri:ʧe·ɣ]

टिप्पणी:—कुछ शब्दों में [ज़्—z] के स्थान पर [s—स्] का भी उच्चारण किया जाता है जैसे—

Fees [fi:z] फीस्-फ़ीस् [phi:s~fi:s]

३. २. २. ३. ४. तालव्य—

३. २. २. ३. ४. १. /श्-ʃ/ इस स्वनिम के प्रधान संस्वन के उच्चारण में जिह्वाफलक वर्त्स-कठोर तालु के नीचे रहकर चपटा सङ्कीर्ण मार्ग बनाता है और वायु कठोर तालु की ओर उठे हुए जिह्वा के मध्य भाग के बीच में से रगड़ खाती हुई तथा सङ्कीर्ण मार्ग से बाहर आती हुई इस ध्वनि की सृष्टि करती है। जिह्वानोक नीचे के दाँतों के पीछे निष्क्रिय रहती है और स्वरयन्त्र में कम्पन नहीं होता है। यह अघोष वर्त्स-तालव्य सङ्घर्षी है। अंग्रेजी में यह ध्वनि है और Shoe [ʃu:], Show [ʃou] आदि शब्दों के प्रारम्भ में सुनी जा सकती है।

परिनिष्ठित हिन्दी में भी यह ध्वनि है और [स्] से भिन्न इसका महत्त्व है फिर भी बोलियों में [श्] के स्थान पर [स्] का उच्चारण बहुधा पाया जाता है।

परिनिष्ठित हिन्दी में अँग्रेजी के आगत शब्दों में [ʃ] के स्थान पर [श्] का ही प्रयोग किया जाता है, बोलियों में व्यवहृत शब्दों में अवश्य यह ध्वनि अपना ध्वनिग्रामीय महत्त्व खो चुकी है। उदाहरणार्थ—

आदि Shoe [ʃu:] शू [ʃu:]
मध्य Fashion [fæʃən] फ़ैशन् [fɛ.ʃən]
अन्त Polish [pɔliʃ] पालिश् [pa:liʃ]

३. २. २. ३. ४. २. /झ्-ʒ/ इस वर्ग की ध्वनियों का उच्चारण /श्/ की उच्चारण-विधि के समान है। यह [श्] ध्वनि का घोष स्वरूप है अतएव इस ध्वनि को सघोष वर्त्स-तालव्य सङ्घर्षी ध्वनि कहा जा सकता है।

अंग्रेजी में भी यह ध्वनि केवल फ़्रान्सीसी भाषा से गृहीत कुछ शब्दों में व्यवहृत होती है, जैसे—Garage ['gæra:3] में। हिन्दी में इस ध्वनि का पूर्णतः अभाव है। अंग्रेजी से गृहीत शब्दों में इसके स्थान पर तालव्य स्पर्श-सङ्घर्षी [ज्] का उच्चारण किया जाता है। उदाहरणार्थ—

Garage [gæra:z] हिन्दी गैरिज् [gɛ:riɣ]

३. २. २. ३. ५. कंठ्य—

/ह्—h/ स्वनिम के प्रधान संस्वन का उच्चारण कण्ठ-रन्ध्र या काकल से होता है। दोनों स्वरतन्त्रियाँ उन्मुक्त रहती हैं और मुखरन्ध्र स्वर की स्थिति में रहता है और वायु निर्बाध रूप से सीधी कण्ठ से चलकर बाहर आती है। यह अघोष कण्ठ्य सङ्घर्षी है।

अंग्रेजी में यह ध्वनि है जिसको high [hai],hunter[hʌntə] आदि शब्दों के प्रारम्भ में सुना जा सकता है। हिन्दी में यह ध्वनिनहीं है, पर इसका घोष रूप [ह्—h] है।

अंग्रेजी की अघोष ध्वनि के स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी घोष ध्वनि का प्रयोग करते हैं। जैसे, Hostel['hɔstəl] हिन्दी होस्टल [ho:s ṭəl]

टिप्पणी:—कहीं-कहीं अघोषता के कारण (ह) ध्वनि का लोप हो गया है। और केवल स्वरमात्र ही रह गया है, जैसे—

Hospital ['hɔspitl] अस्पताल् [aspa ṱa:l]

## ३. २. २. ४. अर्द्ध स्वर

३. २. २. ४. १. /w-व़/ इस वर्ग के प्रधान संस्वन का उच्चारण करते समय जिह्वा प्रथमतः स्वर [U] की उच्चारण-स्थिति में आती है और फिर एकाएक इस स्थान का परित्याग करके अपेक्षाकृत विवृत स्वर-स्थान की ओर बढ़ती है। उच्चारण के समय जिह्वा पश्च स्वर [U-उ] की उच्चारण-स्थिति में ऊपर उठी रहती है और दोनों ओठ गोलाकृत होकर कुछ आगे की ओर निकले रहते हैं। नासारन्ध्र मार्ग अवरुद्ध रहता है। स्वरयन्त्र में कम्पन रहता है। यह सघोष ओष्ठ्य जिह्वामूलीय अर्द्ध स्वर है।

अंग्रेजी में यह ध्वनि है और once [wʌns], ward [wɔ:d] आदि शब्दों के प्रारम्भ में सुनी जा सकती है।

हिन्दी में यह ध्वनि स्वनिम नहीं है। केवल अंग्रेजी के आगत शब्दों में हिन्दी भाषा-भाषी यह ध्वनि उच्चरित करने का प्रयत्न करते हैं, पर वस्तुतः वह हिन्दी के सप्रवाह सङ्घर्षहीन व्यञ्जन [ व् ] का ही उच्चारण कर पाते हैं।

अंग्रेजी [ व़् ] के उच्चारण में दोनों ओठों में तनाव की जो आवश्यकत रहती है वह हिन्दी [ व् ] में नहीं है। हिन्दी में [ व्-w ] संस्वन मात्र है।

उदाहरणार्थः आदि Ward [wɔ : d] वार्ड् [ϑa:rḍ]
मध्य Quarter [Kwɔ:tə] क्वाटर् [Kwa: ṭər]

नोट—इस सम्बन्ध में देखिये। ३. २. ४.१

३. २. २. ४. २. [ य्-j ] इस वर्ग की प्रधान ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा एक प्रकार स्वर [ i ] के उच्चारण के लिये प्रस्तुत होकर सहसा एक अपेक्षाकृत विवृत स्थिति की ओर बढ़ती है, जिह्वामध्य कठोर तालु की ओर उठता है और ओठ फैले रहते हैं। स्वरतन्त्रियों में कम्पन रहता है। यह सघोष अवृत्ताकार तालव्य अर्द्ध स्वर है।

अंग्रेजी में यह ध्वनि है और Yard [ja:d] के प्रारम्भ में सुनी जा सकती है। हिन्दी में भी 'यान्' के प्रारम्भ में यही ध्वनि है।

अंग्रेजी और हिन्दी दोनों ही भाषाओं के ध्वनिसमूह में यह ध्वनि होने के कारण हिन्दी भाषा-भाषी को इसके उच्चारण में कोई परेशानी नहीं होती है।

उदाहरणार्थ : yard [ja:d] यार्ड् [ja:(r)ḍ]
Uniform [ju:nifɔ:m] यूनीफ़ार्म् [ju:ni:fa:rm]

## ३. २. २. ५. नासिक्य :

### ३. २. २. ५. १. ओष्ठ्य—

/म्-m/ इस वर्ग की प्रधान ध्वनि का उच्चारण भी ओष्ठ्य स्पर्श व्यञ्जनों के समान दोनों ओठों के परस्पर मिलन द्वारा वायु-प्रवाह को बन्द करके किया जाता है। कोमल तालु ऊपर उठने के बजाय नीचे झुक जाने के कारण हवा नासारन्ध्र मार्ग से निकलती है। जिह्वा उदासीन अवस्था में रहती है। स्वर-यन्त्र में कम्पन रहता है। यह अल्पप्राण सघोष द्वयोष्ठ्य नासिक्य व्यञ्जन है।

हिन्दी व अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में यह ध्वनि है। हिन्दी भाषा-भाषी अंग्रेजी [m-म्] के स्थान पर अधिकांशतः हिन्दी [म्] का प्रयोग करते हैं। जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Motor | [moutə] | मोटर् | [mo: ṭər] |
| मध्य | Company | [Kʌmpəni] | कम्पनी | [Kəmpni:] |
| अन्त | Team | [ti:m] | टीम् | [ṭi:m] |

३. २. २. ५. २. दन्तोष्ठ्य

/m̪-म̪/ इस ध्वनि के उच्चारण में नीचे के ओठ और ऊपर के दाँतों का प्रयोग किया जाता है। यह दन्तोष्ठ्य ध्वनियों के पूर्व उच्चरित होती है। यह ध्वनि अंग्रेजी में है और तुल्य स्थानीय दन्तोष्ठ्य ध्वनियों के साथ प्रयुक्त होती है। हिन्दी में अन्य दन्तोष्ठ्य ध्वनियों की भाँति इस ध्वनि का भी अभाव है।

हिन्दी भाषा-भाषी जब दन्तोष्ठ्य [ f—फ़ ] को द्वयोष्ठ्य की भाँति स्पर्श रूप में उच्चरित करता है तो उसके पूर्व यह नासिक्य व्यञ्जन भी स्पर्श हो जाता है। अन्यथा उसका दन्तोष्ठ्य रहना स्वाभाविक ही है। जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्य | Comfort | [ Kʌmfət ] | कम्फर्ट् | [kəmphərṭ] |
| | | | कम्फ़र्ट् | [kəmfərṭ] |

३. २. २. ५. ३. दन्त-वर्त्स्य :

/n-न्/ इस स्वनिम के प्रधान संस्वन के उच्चारण में जिह्वानोक वर्त्स के साथ मिलती है। कोमल तालु और स्वर-यन्त्र-प्रक्रिया अन्य नासिक्य-व्यञ्जनों की भाँति रहती है। इसे अल्पप्राण सघोष वर्त्स्य नासिक्य कहा जाता है। यह ध्वनि अंग्रेजी व हिन्दी दोनों में ही है। हिन्दी की दन्त्य /न्/ ध्वनि भी वस्तुतः वर्त्स्य ही है।[1] अंग्रेजी में तो इसका स्थान वर्त्स्य है ही।

हिन्दी भाषा-भाषी सामान्यतः अंग्रेजी /न्/ के स्थान पर हिन्दी /न्/ का प्रयोग करता है। जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Necklace | [ neklis ] | नेक्लेस् | [ ne.kle:s ] |
| मध्य | Canister | [Kænistə] | कनस्तर् | [Kanəsṯər] |
| अन्त | Button | [bʌtn] | बटन् | [baṭən] |

१. धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, पृष्ठ १२०।

अपवादः

(१) [न्] के स्थान पर [ल्]

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| आदि | Number | [nʌmbə] | लम्बर्[1] | [lambər] |
| | Note | [nout] | लोट् | [lo.ṭ] |
| मध्य | Lantern | [ˈlæntən] | लालटेन् | [la:lṭen] |
| अन्त | Pension | [penʃən] | पेन्शन् | [pe:nʃən] |
| | | | [ग्रा०] पेन्सिल् | [pe:nsil] |

२. /न् / का लोपः जैसे Compounder [Kɔmpaundə] के स्थान पर कम्पाउण्डर के साथ-साथ ग्राम्य रूप कम्पोडर् [Kampo.ḍər] भी प्रचलित है।

३. अनुनासिकता में परिवर्तन

Brandy [brændi] ब्राँडी [brã:ḍi :]

३. २. २. ५. ४. कंठ्य

/ङ्/ इस ध्वनि के उच्चारण में जीभ के पिछले भाग को कोमल तालु के पास स्पर्श कराया जाता है और कोमल तालु कौवा सहित नीचे को झुक जाता है। अंग्रेजी में इस ध्वनि का ध्वनिग्रामीय महत्त्व भी है। हिन्दी में यह ध्वनि केवल कवर्ग तथा नासिक्य ध्वनियों के पूर्व प्रयुक्त होती है। जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्य | Bank | [bæŋk] | बैंक् | [bɛ:ŋk] |
| | Congress | [Kɔŋgres] | कांग्रेस् | [Ka:ŋgre.s] |
| अन्त | Bearing | [beəriŋ] | बैरंग् | [bɛ.rəŋg] |

नोट - अंग्रेजी में यह ध्वनि जब अन्त में आती है, तो हिन्दी में वर्ण-विन्यास के कारण [g] ध्वनि भी सम्मिलित हो जाती है।

### ३. २. २. ६. पार्श्विकः

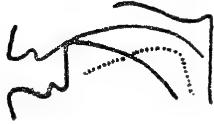
[ल-l] इस स्वनिम के प्रधान संस्वन [l-ल्] का उच्चारण करने के लिये जिह्वानोक वर्त्स स्थल को अच्छी तरह छूती है जिसके कारण हवा पार्श्वों से निकलती रहती है। यह पार्श्विक अल्पप्राण सघोष वर्त्स्य ध्वनि है। स्पष्ट [ल्] का उच्चारण शब्दों के प्रारम्भ में स्वरों तथा [य] से पूर्व कया जाता है जैसे-Leader [li:də] लीडर।

---

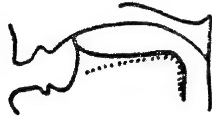
१. लिम्बर से ही लम्बरदार, जो गाँव का मुखिया होता था, बना है।

इस स्वनिम का दूसरा संस्वन [*l*-ल़्] है जिसके उच्चारण में जिह्वानोक तो वर्त्स को छूती रहती है पर साथ ही साथ जीभ का पिछला हिस्सा कोमल तालु की ओर ऊपर उठाता है, जिससे जीभ का मध्य भाग नीचे की ओर झुक जाता है। इसको अस्पष्ट [ल़्-*l*] कहते हैं। एक प्रकार से स्पष्ट [ल] के उच्चारण में जीभ (इ) स्वर के उच्चारण की स्थिति में रहती है और अस्पष्ट [ल़्] के उच्चारण में (उ) की स्थिति में, जो निम्नांकित रेखाचित्रों से स्पष्ट हो जाता है—

स्पष्ट [ ल़् ]



अस्पष्ट [ ल़् ]



[उ] की- स्थिति



अस्पष्ट [ ल़् ] का उच्चारण शब्दों के अन्त तथा किसी अन्य व्यञ्जन से पूर्व किया जाता है। जैसे—Appeal [əpi:*l*] तथा Field [fi:*l*d]

हिन्दी में केवल स्पष्ट [ ल़् ] है अतएव हिन्दी भाषा-भाषी दोनों संस्वनों के स्थान पर प्रत्येक स्थिति में स्पष्ट [ ल़् ] का ही उच्चारण करते हैं। हिन्दी में अंग्रेजी की इन दोनों [ ल़् ] ध्वनियों में भेद नहीं किया जाता है और [ ल़् ] का उच्चारण भी [ ल़् ] के ही समान होता है।[१] जैसे—बोतल Bottle, पेट्रोल Petrol आदि

आदि Leader [li:də] लीडऱ् [li:ḍər]
Library [laibrəri] लाइब्रेरी [laibre:ri:]

---

१. मिलाइये :—धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, २१३।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्य | Album | [ælbəm] | अल्बम् | [əlbəm] |
| | Bulb | [bʌlb] | बल्ब् | [bəlb] |
| अन्त्य | Appeal | [əpi:l] | अपील् | [əpi:l] |
| | April | [eiprəl] | अप्रेल् | [əpre:l] |

हिन्दी भाषा-भाषी अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के अनुसार कहीं-कहीं [र्] और [न्] के स्थान पर भी [ल्] का उच्चारण कर देते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Lantern | [læntən] | लालटेन् | [la:lṭe:n] |
| Number | [nʌmbə] | लम्बर् | [lambər] |

## ३. २. ३ अंग्रेजी की विशिष्ट व्यञ्जन ध्वनियाँ

### ३. २. ३. १ अंग्रेजी 'ट् और ड्' तथा हिन्दी में उसके विभिन्न रूप[1] :—

३. २. ३. १. १ अंग्रेजी /t-ट्/ स्वनिम के प्रधान संस्वन का उच्चारण करते समय नासिका-मार्ग कोमल तालु से तथा वायुमार्ग वर्त्स भाग को स्पर्श करने के हेतु उठी हुई जिह्वानोक से सम्पूर्णतः रुद्ध हो जाता है। फेफड़ों से आनेवाली वायु रुक जाती है और ज्योंही वर्त्स भाग से जिह्वा हटती है, वायु शीघ्रता से मुख-मार्ग से बाहर आती है।

---

१. प्रस्तुतुत निबन्ध का यह अंश विद्यापीठ के मुखपत्र 'भारतीय साहित्य' के जनवरी १९५७ के अङ्क में प्रकाशित हो चुका है। इस लेख के सम्बन्ध में निम्नलिखित टिप्पणी प्राप्त हुई :—

'अंग्रेजी 'ट' और, 'ड' तथा हिन्दी में उसके विभिन्न स्वरूप' यह लेख व्यापकता और बहुपक्षता की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसमें अनेक यूरोपीय तथा भारतीय भाषाओं की सामग्री केवल दो ध्वनियों पर बतलाई गयी है, वह बहुत गम्भीर अध्ययन का द्योतक है : परन्तु खेद है कि पृष्ठ ७३ में एक भयानक भ्रान्ति हो गयी है। अंग्रेजी वर्त्स्व (Alveolar) हैदराबाद विश्व-विद्यालय ने अनेक वर्ष हुए इस ध्वनि की संज्ञा 'दान्तबैठकी, निश्चित की थी। के सम्बन्ध में लिख गया है 'हिन्दी में इस ध्वनि का पूर्णतः* अभाव है, हमारे यहाँ दिल्ली में भाषाशास्त्र मंडल [Linguistic Circle] की तीन बैठकों

यही स्फोट / ट॒ / ध्वनि है। स्वरयन्त्र में कम्पन नहीं होता। इस प्रकार अंग्रेजी। ट्र। ध्वनि अघोष वर्त्स्य स्पर्श व्यञ्जन है।

अंग्रेजी स्वनिम /t-ट॒/ के निम्नलिखित संस्वन हैं[1] :—

१. [$t^{h}$]—[ ट ह् ] बलाघातयुक्त अक्षर में प्रयुक्त
२. [ $t_{n}$ ]—[ त् ] दन्त्य सङ्घर्षी ध्वनियों से पूर्व
३. [tr ]—[ टर ] 'र' ध्वनि के साथ
४ [ tl ]—[ ट ल् ] 'ल' पार्श्विक ध्वनि के साथ
५. [ tn ]—[ ट न् ] 'न' ध्वनि के साथ
६. [ t ]—[ ट ] अन्य स्थल पर

प्रथम महाप्राणत्वयुक्त [ट$^{ह}$-$t^{h}$ ] संस्वन हिन्दी में किसी भी परिस्थिति में ग्रहण नहीं होता, क्योंकि हिन्दी में /ठ्-ṭh/ एक पृथक् स्वनिम है। द्वितीय संस्वन के ध्वनिक्रम से युक्त शब्द हिन्दी में गृहीत नहीं हुए। तृतीय संस्वन का रूप हिन्दी में गृहीत हुआ है।[2] चौथे और पाँचवे दोनों ही संस्वन

में बहुत से सदस्यों के अनुभव के आधार पर स्थिर हो गया है कि यद्यपि मुख्यस्वन [Phoneme] के रूप में अंग्रेजी ट, ड हिन्दी में नहीं है, तथापि संस्वन [Allophone] के रूप में यह निस्सन्देह हिन्दी में वर्त्तमान है। उदाहरणार्थ यद्यपि 'ठक्कर, डाक, इनमें 'ट' और 'ड' मूर्धन्य है, तथापि निम्नलिखित शब्दों में ट् ड् दाँतबैठकी। वर्त्स्व। ही हैं :—

'मटका, पटका, लटका, खड्ड में, काटकर, इन शब्दों में 'ट, ड' के उच्चारण में जिह्वाग्र कुंडलित होकर पीछे को नहीं जाता, परन्तु दाँत बैठक की ओर ही जाता है।' डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

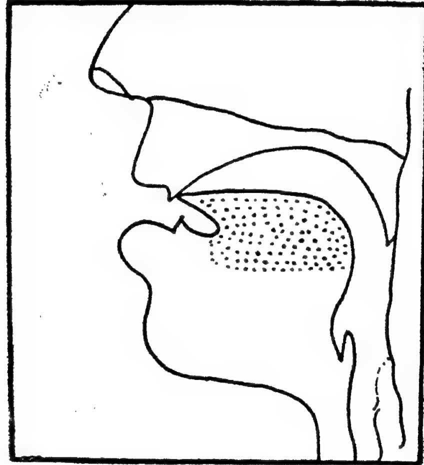
*पूर्णतः अभाव के स्थान पर यहाँ केवल 'अभाव' गृहीत किया गया है। अभाव से तात्पर्य केवल स्वनिमात्मक रूप से है। संस्वन के रूप में वह विद्यमान है और अंग्रेजी के कुछ शब्दों में सुना जा सकता है, जैसे कि प्रकाशित लेख के पृष्ठ ७८ पर विवेचन किया गया है। ( लेखक )

१. Jones, D.- Phoneme : Its Nature and Use, 1950, Page 19.

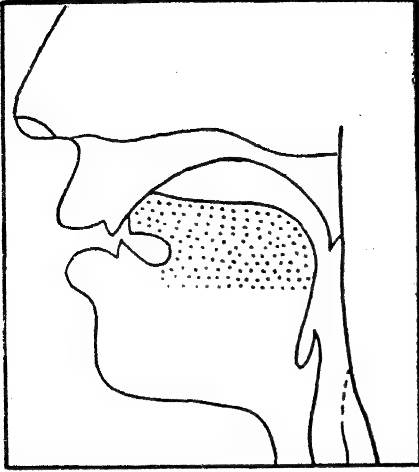
२. यह हिन्दी में एक नवीन ध्वनि-क्रम ( ध्वनि-गुच्छ ) गृहीत शब्दों के कारण बढ़ गया है। वर्त्स्य 'ट' मूर्धन्य हो जाता है और [र] में भी मूर्धन्यता आ जाती है, पर ग्रामीण रूपों में ध्वनि-क्रम को तोड़कर स्वरागम के द्वारा 'अक्षर' बना दिया जाता है।

को हिन्दी में अंग्रेजी की भाँति आक्षरिक व्यञ्जनों के साथ न ग्रहीत कर, स्वरों की सहायता से पृथक् अक्षर बना लिया जाता है, जिसके फलस्वरूप Kettle [ Ketl ] और Button [bʌtn ] क्रमशः हिन्दी में केतली [ Ke. t̪li:] और बटन् [ bəṭən ] बन गये हैं।

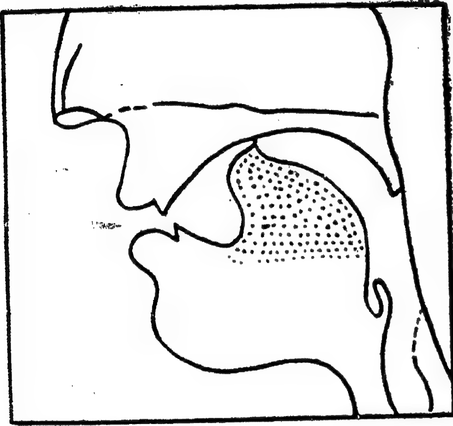
अन्तिम संस्वन [ t-ट ] के स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी कहीं पर दन्त्य [त्- t̪ ] और कहीं पर मूर्धन्य [ ट् - ṭ ] का प्रयोग करते हैं, क्योंकि हिन्दी में वर्त्स्य [ ट् ] ध्वनि का अभाव है। इससे पूर्व कि इस समस्या पर विवेचन प्रस्तुत किया जाय दन्त्य [ त् ] वर्त्स्य [ ट् ] तथा मूर्धन्य [ ट् ] ध्वनियों के वास्तविक उच्चारण-स्थलों एवं उच्चारण-विधि पर दृष्टिपात कर लेना उचित होगा।



१. दन्त्य [त्— t̪ ]
जिह्वानोक के साथ ऊपर का दाँत



२. वर्त्स्य [ ट़् —t ]
जिह्वानीक और जिह्वाफलक के साथ वर्त्स भाग



३. मूर्द्धन्य [ ट्—ṭ ]
जिह्वोपाग्र ( उलटकर ) कठोर तालु के साथ

जहाँ तक अंग्रेजी तथा यूरोपीय भाषाओं के हिन्दी में प्रचलित आगत शब्दों का सम्बन्ध है, हिन्दी में कुछ शब्दों में वर्त्स्य [ ट़् ] के स्थान पर दन्त्य [ त् ] अपनाया गया है और शेष में मूर्धन्य [ ट् ]।

यूरोपीय-भाषाओं के निम्नलिखित शब्दों में हमने वर्त्स्य /ट्/ के स्थान पर दन्त्य /त्/ कर दिया है :—

| शब्द | ध्वन्यात्मक स्वरूप | हिन्दी रूपान्तर | ध्वन्यात्मक स्वरूप |
|---|---|---|---|
| १. Bottle | [bɔtl] | बोतल् | [bot̪əl] |
| २. Canister | ['Kænistə] | कनस्तर् | [kanəst̪ər] |
| ३. Captain | [Kæptin] | कप्तान् | [kapt̪a:n] |
| ४. Cartridge | [Ka:tridʒ] | कारतूस् | [ka:rt̪u:s] |
| ५. Christian | ['Kristjən] | किरस्तान् | [kirəst̪a:n] |
| ६. Hospital | ['hɔspitl] | अस्पताल् | [aspət̪a:l] |
| ७. Coal-tar | [koul ta:] | कोलतार् | [ko:l t̪a:r] |
| ८. Stable | ['steibl] | अस्तबल् | [ast̪bəl] |
| ९. Secretary | ['sekrətri:] | सिकत्तर् | [sikat̪t̪ar] |
| १०. Tobacco | [tə'bækou] | तम्बाकू | [t̪amba:ku:] |
| ११. Pistol | [pistl̩] | पिस्तौल | [pist̪o:l] |
| १२. Pantaloon | [pæntəlu:n] | पतलून् | [pat̪lu:n] |
| १३. Mast | [ma:st] | मस्तूल् | [mast̪u.l] |
| १४. Towel | ['tauəl] | तौलिया | [t̪aulia] |
| १५. Baptism | ['bæptizəm] | बपतिस्मा | [bəpt̪isma] |
| १६. Kettle | [ketl] | केतली | [ke:t̪li:] |
| १७. Sentry | ['sentri] | सन्तरी | [sent̪ri:] |
| १८. Trump | [trʌmp] | तुरप् | [t̪urəp] |
| १९. Turpentine | ['tə:pəntain] | तारपीन् | [t̪a:rpi.n] |
| २०. Plaster | [pla:stə] | पलास्तर् | [pəla:st̪ər] |
| २१. August | ['ɔ:gəst] | अगस्त् | [agəst̪] |
| २२. September | [səp'təmbə] | सितम्बर् | [sit̪əmbər] |
| २३. October | [ɔk'toubə] | अक्टूबर् | [akṭu:bər] |
| | | अक्तूबर् | [akt̪u:bər] |

अगर इन शब्दों के वर्ण-विन्यास और ध्वन्यात्मक रूप का विश्लेषण किया जाय तो निम्नलिखित फल प्राप्त होते हैं, जिनके आधार पर नियम बनाये जा सकते हैं :—

१—'[ट्]' के स्थान पर [त्] शब्दों के प्रारम्भ, मध्य व अन्त सभी स्थलों पर हो गया है।

२—इनमें से अधिकतर शब्द किसी वस्तु, माह अथवा पद को सूचित करते हैं।

३—[त्] किन-किन व्यञ्जनों एवं स्वरों के साथ आया है, इसका भी विश्लेषण करना आवश्यक है।

आदि :

| किस ध्वनि के पूर्व | आवृत्ति |
|---|---|
| [अ] | एक बार |
| [आ] | दो बार |
| [ओ] | एक बार |
| [उ] | एक बार |

मध्य :

| किस ध्वनि के बाद | आवृत्ति |
|---|---|
| [स्] | सात बार |
| [प्] | दो बार |
| [क्] | एक बार |
| [र्] | एक बार |
| [ओ] | एक बार |
| [अ] | तीन बार |
| [ए] | एक बार |
| [न्] | एक बार |
| [इ] | एक बार |

अन्त :

| किस ध्वनि के पूर्व | आवृत्ति |
|---|---|
| [स्] | एक बार |

इस विश्लेषण के पर्यवेक्षण के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है, कि /त्/ अधिकांशतः अग्र स्वरों व व्यञ्जनों ( ओष्ठ्य, दन्त्य व वर्त्स्य ) के साथ आता है, केवल दो अपवाद हैं :—

। उ। ध्वनि के पूर्व—तुरप; सम्भवतः वर्त्स्य ध्वनि । र।के प्रभाव से।

[ क् ]ध्वनि के बाद—अक्तूबर—लेकिन अक्टूबर भी प्रचलित है।

४—यह भी देख लेना आवश्यक है कि उक्त शब्दों में कितने शब्द पुर्तगीज़[1] व फ्रेञ्च से अंग्रेजी भाषा के प्रसार के पूर्व ही आ चुके थे।

| पुर्तगीज़ शब्द | हिन्दी शब्द नागरी लिपि में | ध्वन्यात्मक स्वरूप |
|---|---|---|
| Botelha | बोतल् | [bo: t̪əl] |
| Capitão | कप्तान् | [kap t̪a:n] |
| Cartouche[2] | कारतूस् | [ka:r t̪u:s] |
| Cristão | क्रिरिस्तान् | [kiris t̪a:n] |
| Hospital | अस्पताल (?) | [aspa t̪a:l] |
| Baptism | बपतिस्मा | [bap t̪isma:] |
| Toalha | तौलिया | [t̪auliya:] |
| Mastro | मस्तूल् | [məs t̪u:l] |
| Pistola | पिस्तौल् | [pis t̪au:l] |
| Tabaco[3] | तमाकू | [t̪ama:ku:] |
| | तम्बाकू | [t̪amba:ku:] |
| Pantalona | पतलून् | [pə t̪lu:n] |
| Trunfo | तुरप्[4] | [t̪urəp] |
| Agosto | अगस्त् | [agəst] |
| Setembro | सितम्बर् | [si t̪ambər] |

---

१. पुर्तगीज़ भाषा से लिखे गये अन्य शब्द जिनमें दन्त्य [त] है, इस्पात, परात, फीता, मिस्त्री आदि भी उल्लेखनीय हैं।

२. कारतूस फ्रेंच है।

३. वस्तुतः यह शब्द अमेरिका का है। पुर्तगीज़ ही इस पौधे को जापान ले गये—

Soares, A. X.—Influence of Portuguese Vocables in Asiatic Languages, 1936, Page 429-30.

४. डच शब्द है-देखिये डा० उदयनारायण तिवारी-हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, संवत् २०११, पृ० २१६।

मेरी ऐसी धारणा है, कि निम्नलिलित शब्द अंग्रेजी के माध्यम से आये। पुर्तगाली शब्द भी विचारार्थ साथ ही दिये जा रहे हैं :—

| पुर्तगीज् | अंग्रेजी | हिन्दी | ध्वन्यात्मक रूप |
|---|---|---|---|
| Sentinella | Sentry | सन्तरी | [sən t̪ri:] |
| Calderia | Kettle | केतली | [Ke. t̪li:] |
| Trebintin | Turpentine | तारपीन् | [t̪a·rpi:n] |
| Outubro | October | अक्टूबर | [ak ṭu:bər] |
| | | अक्तूबर | [ak t̪u:bər] |

हिन्दी में गृहीत शब्दों के रूप तथा उच्चारण अंग्रेजी शब्दों के अधिक समीप है।

पुर्तगाली भाषा से लिये गये 'आगत शब्दों' के विवेचन के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी भाषा में ऐसे समस्त शब्दों में हमने दन्त्य [ त् ] ग्रहण किया है, तो फिर निम्नलिखित शब्दों में मूर्धन्य [ ट् ] क्यों ?

| १. पुर्तगीज् शब्द | डा० बेली द्वारा दिया गया रूप | |
|---|---|---|
| १. Balde | [b:l ṭi:] | बाल्टी |
| २. Falto | [pha:l ṭu:] | फाल्टू |
| ३. Foguete | [pa ṭa:ka:] | पटाका |
| ४. Topo | [ṭopi:] | टोपी |
| ५. Biscoito | [bisku ṭ] | बिस्कुट[1] |

उक्त शब्दों के विषय में मेरा मत यह है कि 'बाल्टी[2] शब्द का आगमन हिन्दी-क्षेत्र में उस प्रदेश से हुआ जहाँ पर मूर्धन्य [ळ् ] प्रचलित है और उसके

१. यह शब्द अंग्रेजी के माध्यम से आया है—देखिये—

Turner, R. L.,—Comparative Dictionary of Nepali, 1931, Pags 450.

डा० चटर्जी ने हिन्दुओं के लिए इसका प्रयोग वर्जित होने के कारण [ विष—कुट ] व्युत्पति दी है। देखिये— Origin and Development of Bengali Language, Page 626.

2. Hobson Jobson, 1903, पृष्ठ ४३ के अनुसार प्लेट्स महोदय ने इसका सम्बन्ध सं० वारि = पानी से स्थापित किया है।

Balty H. balt —a bucket, [which Platts very improbably connects with Skt. vari, 'water'], is the Port. balde.

फलस्वरूप निकटतम ध्वनि के संसर्ग से दन्त्य [ त् ] भी मूर्धन्य [ ट् ] बोला जाने लगा। डा० चटर्ज़ी ने मुझे बताया कि बंगाल में 'बाल्ति' का भी प्रचार है।

टर्नर[१] महोदय ने हिन्दी-क्षेत्र में प्रचलित इसके दोनों रूप लिखे हैं—'बाल्टी—बाल्ती' उनके द्वारा दिये गये अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्द निम्नलिखित हैं :—

पंजाबी — बाल्टी
गुजराती — बाल्डी
मराठी — बाल्डी
बंगला — बाल्टि—बाल्ति

'फाल्टू' शब्द के स्थान पर हिन्दी में तो 'फाल्तू' शब्द ही प्रचलित है, इसके अतिरिक्त सिन्धी, गुजराती, मराठी में भी इसका रूप फाल्तू[२] ही प्रचलित है।

'पटाका' के सम्बन्ध में तो बेली महादय ने स्वयं ही यह सुझाव रखा है कि यह शब्द भारतीय है और संस्कृत की 'पट्' धातु में 'का' जोड़ कर बनाया गया है। यह सुझाव पूर्णतः मान्य है। हिन्दी के अतिरिक्त पंजाबी, गुजराती, मराठी, बंगला में भी इससे मिलते जुलते रूप हैं।

'टोपी' के सम्बन्ध में मेरा विचार है कि चाहे टोप[३] शब्द का प्रचार पुर्तगीज़ों के आने पश्चात् हुआ हो, पर शब्द 'टोपी' भारतीय है। यह शब्द भारत में पुर्तगीजों के आगमन से पूर्व विद्यमान था।[४] सभी भारतीय भाषाओं में यह शब्द किसी न किसी रूप में विद्यमान है। 'कुमांउनी – टोपी, बंगला—

१. Turner, R. L.-Nepali Dictionary, 1931, Page 436.

२. वही-पृष्ठ ४०५।

३. Topas-Port. topaz-Whitworth, G. C.—An Anglo Indian Dictionary, 1885, Page 321.

४. Hobson Jobson, 1903 पृष्ठ ६३५ ( 1498—in the Vocabulary ("Este he a linguajem de Calicut)" we have : "barrete (i.e.cap): tupy" Roteiro, 118.

टोपी, उड़िया-टोपी, हिन्दी, पंजाबी, सिन्धी, गुजराती, मराठी लहंदा-टोपी।[१] कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी [२] ने विभिन्न भारोपीय भाषाओं में उसके रूप इस प्रकार दिये हैं :—(Dut-Top, L. German-Topp. Port,-Topo. French-Topet, Eng-Top, सं०—स्तुप् स्तुभ् दे, प्रा० टिपिया टोप्पर, हि० टोपी, कान० टोप।

बंगाली भाषा में १५ वीं शताब्दी की कविता में यह शब्द मिलता है।

रावण राजार शिरेर टोपर
बाणेर तेजे काटे।[३]

कन्नड भाषा में भी यह शब्द भिन्न रूप में उससे भी पूर्व प्रचलित था—टोप्पिगे [ṭoppige]—a cap, टोपी इस शब्द का प्रयोग १२६० ए० डी० में शब्द मणि-दर्पण में हुआ है—सूत्र ७८[४]। मध्यकालीन आर्य भाषा[५] में टोपिआ, स्त्री० टोपी-टोप्पर-शिरस्त्राण-विशेष, टोपी का सिर पर रखने का सिया हुआ एक प्रकार का वस्त्र-सुपा० २६३ [ सुपासनाहचरिअ, स्वसंपादित बनारस १९१८-१९ ]। डा० बाबूराम सक्सेना का विचार इससे कुछ भिन्न है, आप संस्कृत शब्द टोपला के अर्थ डलिया से इसकी तुलना करते हैं।

मैंने अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी उच्चारण के (स्वयं के आधार पर) विविध रूपों का अध्ययन किया है और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ, कि जब कभी वर्त्स्य [t-ट्] ध्वनि हमारी दन्त्य अथवा वर्त्स्य ध्वनियों के साथ सटकर आती हैं, जैसे [स्] [न्] [र्] तो हम बहुत कुछ उस ध्वनि का उच्चारण वर्त्स्य स्थान से ही करते हैं और ऐसा स्वाभाविक भी है। दूसरी ध्यान देने की बात यह है,

१. वही पृष्ठ २४७। Turner, Nepali Dictionary, 1931.

२. मराठी व्युत्पत्ति कोष-कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी, १९४६, केशव भिकाजीढवले, बंबई, पृष्ठ ३४०। 'टोपी' पर देखिये लेखक के विस्तृत विचार 'टोपी', भाषा, शिक्षा मन्त्रालय, वर्ष १, अंक १।

३. यह पंक्ति डा० चटर्जी जी से वार्तालाप के मध्य ली गई है।

४. Kittel's Kannada Eng. Dictionary, पृष्ठ ६६८-६६९।

५. पाइअ-सद्द-महण्णवो, प्रथम आवृत्ति सं० १९८५, पृ० ४६० कलकत्ता।

कि हिन्दी के उच्चारण में मूर्धन्य [ष्] [ण्] [ल्] मूर्द्धन्य ल् भी उतना प्रमुख स्थान नहीं जितना अन्य आ० भारतीय आर्य भाषाओं में है। उदाहरणार्थ कुछ शब्द नीचे दे रहा हूँ—

| | | हिन्दी उच्चारण |
|---|---|---|
| Central | [sentrəl] | [se:ntrəl] |
| Magistrate | [mædzistreit] | [majistre:ṭ] |
| Trade | [treid] | [tre:ḍ] |
| Gentle | [dzentl] | [ɣe:n ṭil] |
| Industry | [indəstri] | ['inḍəstri] |

यह सम्भव हो सकता है, कि कुछ व्यक्तियों के उच्चारण में वर्त्स्य ट्, अधिक मूर्धन्य हो, जिसके फलस्वरूप [ र ] में भी मूर्धन्यता आजायेगी। Straight [stre:ṭ] स्ट्रेट' के उच्चारण में मुझको स्पष्टतः यह अनुभव होता है, कि अन्तिम [t-ट्] का मूर्धन्य उच्चारण करने के लिये जीभ की नोक उलटकर कुछ पीछे को हटती है।

यही वर्त्स्य [ ट् ] जब पश्च स्वरों अथवा कंठ्य व्यञ्जनों के साथ आता है, तो उसकी ध्वनि स्पष्टतः मूर्धन्य हो जाती है—जैसे

| आंग्ल शब्द | | | हिन्दी रूप |
|---|---|---|---|
| Doctor | ['dɔktə] | डाक्टर | [da:kṭər] |
| Coat | [kout] | कोट | [ko:ṭ] |
| Inspector | [ins'pektə] | इंस्पेक्टर | [inspe:kṭər] |

इस सम्बन्ध में एक बात और ध्यान देने की यह है, कि आज से एक शताब्दी पूर्व कुछ अंग्रेज व्यक्तियों के नामों में [ t-ट् ] के स्थान पर [ त् ] का प्रयोग हुआ है। ऐसा सम्भव हो सकता है, कि उनको [ट्] ध्वनि [ त् ] सुनाई दी हो और वैसा ही उन्होंने रूपान्तर किया। ये बात हिन्दी में नागरी लिपि तक ही सीमित नहीं हैं, वरन् उर्दू और फ़ारसी में भी लिखित नामों में दृष्टि-गोचर होती है।

ग़ालिब ने १८३० में उर्दू ऐ मोएला[1] में स्टर्लिंग (Sterling) के लिए (Istarling) इस्तरलिंग लिखा। लल्लू जी लाल ने प्रेमसागर में

१. ग़ालिब—'उर्दू ऐ मोएला', १९२१ संस्करण पृष्ठ, १११।

Gilchrist महोदय का नाम गिलक्राइस्त लिखा ।[1] मीर अम्मन ने अपनी पुस्तक 'बाग़ो बहार' में भी गिलक्राइस्त ही लिखा ।[2] इन सभी नामों में [t-ट्] के पूर्व [ स्-s ] ध्वनि है जो दन्त्य है। इन सभी ने अन्य स्थल पर मूर्धन्य [ ट्] का प्रयोग किया है। जैसे मीर अम्मन ने बाग़ो बहार में ही Lord Mornington में [ ट् ] का ही प्रयोग किया है जिसके पूर्व [ ग् ] ध्वनि है और लल्लूजी लाल ने डाक्टर Doctor का प्रयोग किया है, जिसमें [ट्] से पूर्व [ क् ] ध्वनि है। इस प्रकार [ ट् ] का प्रयोग भी उस समय प्रचलित था। उक्त कथन से यह निष्कर्ष अधिक पुष्ट होता है, कि हमारी दन्त्य] तथा वर्त्स्य ध्वनियों के साथ आने वाला अंग्रेजी वर्त्स्य [ t- ट् ] उतना मूर्धन्य नहीं हो पाता जितना स्वतन्त्र रूप में, पश्चस्वरों तथा अन्य व्यंजनों के साथ हो जाता है।

३. २. ३. १. २. १. अंग्रेजी / d~ ड् / स्वनिम की प्रधान ध्वनि का उच्चारण अंग्रेजी [ t-ट् ] के समान ही होता है, अन्तर केवल इतना हो जाता है, कि इस ध्वनि के उच्चारण के समय स्वर-यंत्र में कम्पन रहता है फलतः [ d~ ड् ] ध्वनि सघोष है। इसको हम सघोष वर्त्स्य स्फोट व्यंजन कह सकते है।

/ ट् - t / के समान / d / भी हिन्दी में कहीं दन्त्य [ द् ] और कहीं मूधन्य [ ड् ] हो जाता है।

निम्नलिखित शब्दों में [d] के स्थान पर [द] हो गया है :—

| अंग्रेजी | | पुर्तगीज् | हिन्दी | |
|---|---|---|---|---|
| १. Guard | [ga:d] | guard | गारद्[3] | [ga:rəd̪] |
| | | | गार्ड्[4] | [ga:rḍ] |
| २. Salad | [sæləd] | salada | सलाद् | [səla:d̪] |
| ३. Dozen | [dʌzn] | duzia | दर्ज़न् | [d̪ərzən] |

१. लल्लूजी लाल—प्रेमसागर- भूमिका, का० ना० प्र० सभा, सं० १९७६, पृष्ठ १

२. मीर अम्मन—बाग़ो बहार—भूमिका, द्वितीय संस्करण, १८४९ पृष्ठ ५, ६ वद।

३. गारद्—सैनिकों के लिए प्रयुक्त।

४. गार्ड—रेलवे-विभाग में प्रयुक्त।

४. Verandah [vəræ̃ndə] varanda[1] बरामदा[2] [bəra:mda:]

| अंग्रेजी शब्द | | हिन्दी शब्द | |
|---|---|---|---|
| ५. London | [lʌndn] | लन्दन् | [ləndən] |
| ६. Orderly | [ɔ:dəli] | अर्दली | [ardəli:] |
| ७. Godown | [goudaun] | गोदाम[3] | [go:da:m] |
| ८. Drill | [dril] | दलेल[4] | [dale:l]. |

उक्त शब्दों में से प्रथम चार पुर्तगीज के प्रभाव से आये और शेष अंग्रेजी के द्वारा। लन्दन और अर्दली में (न्) ओर (र्) वर्त्स्य ध्वनियों के प्रभाव से सम्भवतः (द्) हो गया। गोदाम शब्द अपवाद है, जिस पर विस्तृत विवेचन अपेक्षित है। इतना कह देना आवश्यक प्रतीत होता है, कि यह शब्द किसी न किसी रूप में अंग्रेजों व पुर्तगालियों के आगमन के पूर्व भी विद्यमान था।

कहीं-कहीं आसन्न ध्वनि के प्रभाव से वर्त्स्य [ ड् ] भी सुनाई देता है :—

| अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| Drama | [dra:mə] | ड्रामा | [dra:ma:] |

वैसे सामान्यतः [d-ड्] मूर्धन्य [ ड् ḍ] में परिवर्तित हो जाता है—

| अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| Powder | ['paudə] | पाउडर् | [pauḍər] |
| Down | [daun] | डाउन् | [ḍaun] |
| Dining | ['dainin,] | डाइनिंग् | [ḍainin,g] |

कभी-कभी [ड्—d] के स्थान पर [ ट्—ṭ ] का भी प्रयोग होता है—

१. इसकी व्युत्पत्ति पर कृष्णाजी पांडुरंग कुलकर्णी ने विचार किया है।

२. यह विवादास्पद विषय है, कि यह शब्द किस माध्यम से आया है पर इतना निश्चित है, कि यह शब्द फ़ारसी का है और इसका प्रयोग यूरोपीय निवासियों के आगमन के साथ बढ़ा है।

३. यह शब्द भी विवादास्पद है, पर इतना निश्चित है, कि इसका प्रचार हिन्दी-क्षेत्र में अंग्रेजी राज्य काल में ही बढ़ा। देखिये प—५. ३.

४. यह लोक निरुक्ति ( Folk Etymology ) के आधार पर बन गया। दंड के अर्थ में गृहीत है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| अंग्रेजी—Lord— | [lɔ:d] | हिन्दी—लाट[1] | [ laṭ ] |
| Lemonade | [leməneid] | लेमनेड | [lemne:ḍ] |
| | | लेमनेट | [lemne:ṭ] |

**३. २. ३. १. २. २ /ड/ के स्थान पर [ड़] :**—हिन्दी की मूर्धन्य ध्वनि /ड्/ के दो संस्वन [ड्] और [ड़्] हैं। [ड्] का प्रयोग शब्द के आरम्भ तथा मध्य में अनुनासिक ध्वनि एवं द्वित्व में होता है और [ ड़् ] का अन्यत्र। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्दों के मध्य में या अन्त में प्रयुक्त [ ड् ] के स्थान पर [ड़् ] हो जाता है। शिष्ट लोग शुद्ध उच्चारण करते हैं अतएव यह उच्चारण चल नहीं पाता शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार 'रेडियो' का रेड़ियो कभी-कभी ग्रामीणों के मुख से सुना जाता है।

साथ ही यह निष्कर्ष निकलता है कि मध्य में ड-युक्त शब्द अधिकतर अंग्रेजी के ही है।

३. २. ३. १. ३. उक्त विवेचन के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते है :—

हमारी प्रवृत्ति यह रही है कि हम अंग्रेजी वर्त्स्य स्फोट ध्वनियों [t, d] को अपनी मूर्धन्य ध्वनियों [ट् और ड्] में बदल दें, फिर भी हमारे यहाँ इनके स्थान पर दन्त्य [ त्, द् ] भी प्राप्त होते हैं, जिसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

अ—कुछ पुर्तगीज़ शब्दों का प्रभाव जिनमें वर्त्स्य ध्वनियों का अभाव है और फलस्वरूप हमने दन्त्य ध्वनियों को ही ग्रहण किया है।

ब—समीपवर्ती ध्वनियों–विशेषतः [ स् ] [ न् ] [ ल् ] तथा [ र् ], जो हिन्दी में दन्त्य तथा वर्त्स्य हैं के प्रभाव के कारण दन्त्य [ त्,] [ द् ] का उच्चारण व प्रयोग।

स—जिन नामों को प्रारम्भ में हमने अंग्रेजी से भाषण के माध्यम से सुनकर प्राप्त किया, उनमें निकटवर्ती ध्वनि के प्रभाव से [ त् ] [ द् ] कर दिया गया। यही कारण है कि Gilchrist महोदय के नाम में प्रयुक्त 't' को हिन्दी भाषा-भाषी लल्लू लाल और उर्दू भाषा-भाषी मीर अम्मन, दोनों ने ही दन्त्य [ त् ] के रूप में ही ग्रहण किया।

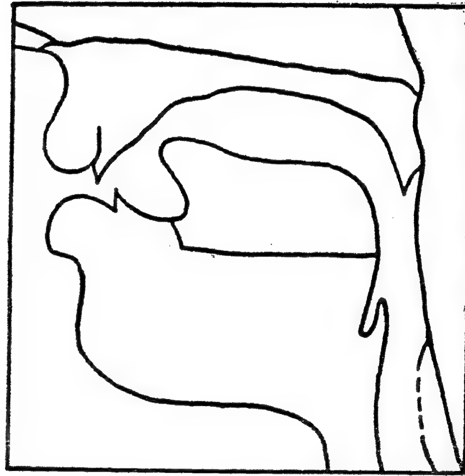
[ द ] कुछ शब्दों में लोक निरुक्ति के आधार पर दन्त्य [त्] व [द्] का प्रवेश है।

---

[1]लार्ड का लाट जो अधिक प्रचलित है सम्भवतः महानता तथा ऊँचाई के अर्थ में पहिले भी था।

## ३. २. ३. २ अंग्रेजी 'र' और हिन्दी में उसके विभिन्न स्वरूप

३. २. ३. २. ० अंग्रेजी स्वनिम /.र—r/ के प्रधान संस्वन [.र्—ɹ] का उच्चारण करने के लिए जिह्वानोक वर्त्स के पिछले भाग के समीप रह कर वायु-मार्ग को इतना संकीर्ण कर देती है कि फेफड़ों से आनेवाली हवा रगड़ खाकर निकलती है। उच्चारण की उक्त स्थिति में जिह्वानोक उठी हुई रहती है, जिह्वाग्र दबा हुआ रहता है, कठोरतालु और जिह्वाग्र के मध्य अधिक स्थान रहता है तथा जिह्वा के दोनों पार्श्व उठे हुए रहते हैं। ऊपर और नीचे के दाँतों के मध्य यथेष्ट स्थान रखकर भी इस ध्वनि का उच्चारण किया जा सकता है। नीचे का होठ भी आगे को निकालकर इस ध्वनि का उच्चारण शुद्ध किया जा सकता है। स्वरयन्त्र में कम्पन रहता है। यह ध्वनि सघोष पश्च-वर्त्स्य संघर्षी है। अँग्रेजी में यह ध्वनि प्रायः सघोष होती है। अघोष ध्वनि के उपरान्त एक ही अक्षर होने के कारण इस ध्वनि में अघोषत्व आ जाता



३. २. ३. २. १. अंग्रेजी के संघर्षी [ .र्—ɹ ] में जिह्वा की स्थिति

है जैसे tree [ tri: ][1] यह ध्वनि प्रामाणिक अंग्रेजी[2] के red, rose, dream आदि शब्दों में सुनाई देती है।

परिनिष्ठित अंग्रेजी के र-युक्त शब्दों में [ र ] का उच्चारण केवल निम्नलिखित स्थलों पर किया जाता है :—

३. २. ३. २. १. १. आदि—प्रारम्भ में, जैसे,

Rail [ɹeil] रेल[3]

३. २. ३. २. १. २. मध्य—१. व्यंजन तथा स्वर के मध्य में, जैसे,

Crane [Kɹein] क्रेन

२. दो स्वरों के बीच में, जैसे,

Bearer [bEərə बेरा]

दो स्वरों के बीच में [ र् ] के उच्चारण का नियम इतनी अधिक दृढ़ता के साथ पालन किया जाने लगा है कि जहाँ दो स्वरों के मध्य 'र' न भी हो तो भी उसका उच्चारण किया जाता है, जैसे, The Idea of it में [ ðiai' diə əv it ]. . . . . के स्थान पर इसका उच्चारण होगा [ ðiˈ aidiərəv it ] इस प्रकार आइडिया और अव् के मध्य [ र् ] का आगम हो गया है।

३. २. ३. २. १. ३. अन्त—अन्त्य [ र् ] अंग्रेजी में उच्चरित नहीं होता है। फिर भी जब कभी र-युक्त शब्द (अन्त में) के बाद में कोई ऐसा शब्द आये जो स्वर से प्रारम्भ होता हो तो [ र् ] का विधिवत् उच्चारण किया जाता है, जैसे, pair [pɛə] वैसे a pair of shoes [ पॅअ' र] में [र्]

---

१. जोन्स, डेनियल-एन आउटलाइन अव् इंगलिश फ़ोनेटिक्स, केम्ब्रिज, सन् १६५६ नि० ६२४, पृष्ठ १६५ तथा नि० ७७५ पृष्ठ २००।

२. प्रामाणिक अथवा परिनिष्ठित अंग्रेजी से तात्पर्य स्टैंडर्ड अंग्रेजी से है जिसको डेनियल जोन्स Received English भी कहते हैं। इसका प्रयोग बी० बी० सी० तथा पब्लिक स्कूल आदि में होता है।

३. 'रेल' में वस्तुतः 'ए' वह नहीं जो अंग्रेजी में है और [ ल् ] के उच्चारण में भी अन्तर है। हिन्दी का 'र' भी दूसरा है, जिसका विवेचन आगे होगा।

है। इस प्रकार के 'र' को अँग्रेजी में संयुज्य (Linking) 'र' कहते हैं।[1] निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि 'र' का उच्चारण तब ही होता है जब कि उसके बाद में स्वर आये।[2]

३. २. ३. २. २. निम्नलिखित स्थितियों में [ र् ] का उच्चारण नहीं किया जाता है।[3]

मध्य स्थिति—किसी भी व्यंजन से पूर्व-जैसे,
Park [ pa:k—पाक ]
Report [ ripɔ:t-रिपॉट ]

अन्त्य स्थिति—Bar [ ba:—बा ]
For [ fɔ :—फॉ ]
Bare [ bɛə—बेअं]

नोट—जब कभी किसी शब्द में 'र' वर्ण दो बार आये तो द्रुतगति में भाषण-कर्त्ता एक [ र ] को छोड़कर भी उच्चारण करता है जैसे,

---

1. देखो (A) Jones, D.—An Outline of English Phonetics, 1956, Rule 756 and 757, page 196-97
(B) Ward—The Phonetics of English, Cambridge, 1956, 147.
(C) Mac Carthy, A. D.—The English Pronunciation, 1952, R. 499 & 500, page 135.

2. Mac Carthy, A, D. The English Pronunciation, Rule 498, Page 135.
Jespersen, Otto-Essentials of EnglishGrammar, London, 1954 p. 39.

3. The 'R' began to be weakened in Southern English towards the end of the 16th Century. It in not Pronounced between a Vowel and a Consonant (arm, lord) nor when it is final in spelling ( bar ) or followed by a Vowel which is only written and not actually pronounced as ( bare [-bɛə] Its place is in many cases taken by the neutral vowel. Ripman—English Phonetics, पृष्ठ ८५।

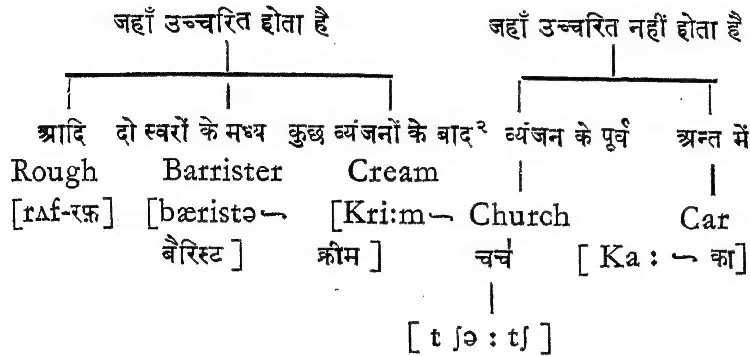
February [ febjuəri ][1]
Secretary [ sek ə tri ]
Veterinary [vetinri ]

हिन्दी में भी यह प्रवृत्ति है और 'सेक्टरी-महोदय' तथा' वेटनरी कालेज' आदि पद भी भाषण में प्रायः सुने जाते हैं।

इस प्रकार प्रधान संघर्षी [ ़र ] संस्वन के अतिरिक्त अंग्रेजी में र-ध्वनि के कुछ और भी संस्वन है

१. लुंठित 'र'
२. विपर्यस्त 'र'
३. वर्त्स्य उत्क्षिप्त 'ड़्'
४. अलिजिह्वीय 'र'

अंग्रेजी [ र ] विभिन्न स्थलों पर :—




३. २. ३. २. ३ हिंदी /र/

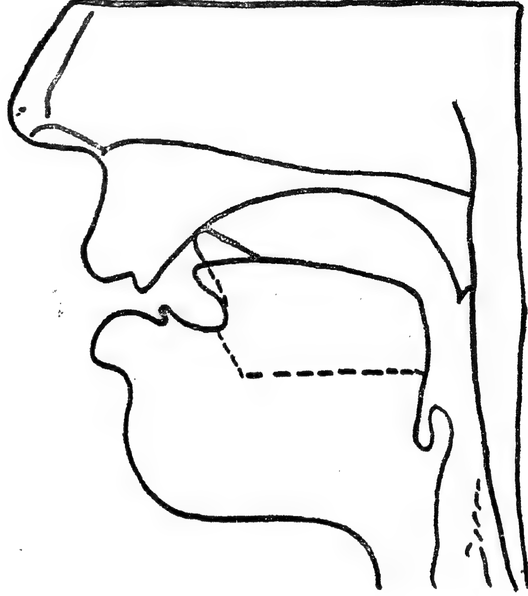
/ र / की प्रधान ध्वनि [ र ] के उच्चारण में जीभ की नोक दो-तीन बार वर्त्स या ऊपर के मसूड़े को शीघ्रता से छूती है। यह लुंठित अल्पप्राण वर्त्स्य सघोष ध्वनि है[3] राम, चरण, पार आदि शब्दों में यह ध्वनि क्रमशः

1. Jones, D. The Pronunciation of English, 1955, Rule, 367, page 112.

2. pr, br, kr, gr, fr, ʃr और tr आदि उल्लेखनीय हैं।

३. डा० धीरेन्द्र वर्मा-हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, नि० ६१, पृ० १२२।

सुनी जा सकती है। इसको लुंठित के स्थान पर लघ्वाघात भी कहा जा सकता है जिसमें मूर्द्धन्यीकरण भी होता है।



हिन्दी [र] में जिह्वा की स्थिति

हिन्दी के गृहीत अंग्रेजी शब्दों में अंग्रेजी [ र ] ध्वनि किन-किन स्वरूपों में गृहीत हुई यह जान लेना आवश्यक है। इस पर ही विवेचन अपेक्षित है। इससे पूर्व अंग्रेजी शब्द लिखित—(अपने र-युक्त वर्ण विन्यास के साथ) और मौखिक—(उन शब्दों का ध्वन्यात्मक रूप जिस प्रकार उन शब्दों का परिनिष्ठित अंग्रेजी में उच्चारण होता है) दोनों ही रूपों में आये हैं। निस्सन्देह गृहीत शब्दों का एक बड़ा भाग लिखित माध्यम से हमारे सम्पर्क में आया है क्योंकि जनसाधारण का सीधा सम्बन्ध अंग्रेजी अफ़सरों से रहा भी नहीं और फिर स्काटलेंड में तो आज भी 'र' का उच्चारण सभी स्थलों पर मान्य समझा जाता है।[1]

1. Ward, IDA C. The Phonetics of English, 1956. Page 144.
Sweet-A New English Grammar, 1950; Page 238,

३. २. ३. २. ४. इसके अतिरिक्त अंग्रेजी [ र् ] जिन परिस्थितियों में उच्चरित किया जाता है अधिकांशतः संघर्षी [ र् ] होता है जब कि हिन्दी में प्रयुक्त [ र् ] लुंठित है। इस प्रकार हिन्दी भाषाभाषी सभी स्थितियों में संघर्षी [ .र् ] के स्थान पर [ रं ] का प्रयोग करते हैं।

३. २. ३. २. ४. १. आदि—इस स्थिति में अंग्रेजी में [ र् ] हमेशा उच्चरित होता है और हिन्दी भाषा-भाषी उसके स्थान पर लुंठित [ र् ] का प्रयोग करते हैं। उदाहरणार्थ,

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Rule | [ru:l ] | रूल | हि० रूल | [ru : l] |
| Rivolver | [rivɔlvə] | रिवाल्वर | हि० रिवाल्वर | [riϑa:lϑər] |

३. २. ३. २. ४. २. मध्य—इस स्थिति में अंग्रेजी में र सर्वदा उच्चरित नहीं होता है इसकी विभिन्न स्थितियों का स्पष्टीकरण पूर्व किया जा चुका है।

३. २. ३. २. ४. २. १. अंग्रेजी और हिंदी दोनों में उच्चरित होता है।

| अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| Brush | [brʌʃ] | ब्रश[1] | [brəʃ] |
| Express | [ikspres] | एक्सप्रेस | [ekspre:s] |
| Factory | [fæktəri] | फैक्टरी | [Phɛk ṭəri:] |
| Gallery | [gæləri] | गैलरी | [gɛlri:] |

३. २. ३. २. ४. २. २. जिन स्थितियों अंग्रेजी में उच्चरित नहीं होता पर हिंदी में बिल्कुल स्पष्ट उच्चरित होता है, जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| Surgeon | [sə:dʒən] | सर्जन् | [sarɣən] |
| Church | [tʃə tʃ] | चर्च् | [ʧərʧ] |
| Clerk | [kla·k] | कर्ल्क् | [klərk] |
| Martial | [ma:ʃəl] | मार्शल् | [ma:rʃəl] |
| Horn | [hɔ:n] | हॉर्न-हारन् | [hɔ:rn ∽ hɔ:rən] |
| Parcel | [pa:sl] | पारसल् | [pa:rsəl] |
| Govermnent | [gʌvənmənt] | गवर्नमेंट, गवरमेंट | [gavərnme:n ṭ] [gavərme:n ṭ] |

---

१. बुरुश रूप भी अधिक प्रचलित है, वर्तनी के कारण [उ] का मध्य में आगम स्वाभाविक है और [br] के गुच्छ को अक्षर में परिवर्तित करने के लिए [उ] स्वर का आगम भी द्रष्टव्य है।

**३. २. ३. २. ४. २. ३. जिस स्थिति में अंग्रेजी में उच्चरित नहीं होता और हिंदी में भी उसका उच्चारण बहुत क्षीण है।**

यह उच्चारण इतना अधिक क्षीण भी हो जाता है कि कभी-कभी केवल जिह्वानोक मुड़कर ही रह जाती है। इसको स्वर का मूर्द्धन्यीकरण कह सकते हैं।[1] ऐसा प्रायः हमारी मूर्द्धन्य ध्वनियाँ [ट्] और [ड्] के पूर्व ही होता है। डा० चटर्जी[2] ने इस प्रकार के उच्चारण का निर्देश बंगला में भी किया है। उदाहरणार्थ हम निम्नलिखित शब्द ले सकते हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| First | [ fə : st ] | फर्स्ट-फ़रस्ट् | [ phfəs ] |
| Lord | [ lɔ : d ] | लाट् | [ la : ṭ ] |
| Order | [ ɔ : d ə ] | आर्डर-आडर् | [ a : ḍər ] |
| Report | [ ripɔ : t ] | रिपोर्ट-रिपोट् | [ ripo: ṭ ] |
| | | रपट् | [ rəpə . :t ] |

इस कोटि में 'ट' और 'ड' से पूर्व र-युक्त सभी शब्द आ सकते हैं।

**३ २. ३. २. ४. २. ४.—वे शब्द जिनमें अंग्रेजी की तरह हिंदी में भी [र] का उच्चारण नहीं होता है : –**

यह इस बात का प्रमाण है कि वे शब्द भाषण के माध्यम से हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र में आये, जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| Girder | [ gə : də ] | गार्डर-गाटर | [ ga:rḍər-ga: ṭər ] |
| Guernsey | [ gə : nzi ] | गंजी | [gənɣi : ] |
| Drawers | [drɔ : əz ] | दराज् | [ḏəra:ɣ] |
| Orderly | [ ɔ : d əli ] | अर्दली | [ arḏəli : ] |
| Governor | [ gʌvənə ] | गवन्नर- | [ gaϑannər ] |
| | | गर्वनर | [gavarnər] |

१. इस संबंध में मैंने प्रो० धल तथा डा० घाटगे से भी परामर्श लिया। इस संबंध में सभी एकमत है कि मूर्द्धन्य ध्वनियों से पूर्व 'र' के उच्चारण के लिए जिह्वा प्रयत्न अवश्य करती है पर केवल मूर्द्धन्यीकरण होकर रह जाता है, [र] उच्चरित नहीं हो पाता है।

2. Dr. S. K. Chatterji, Origin & Development ,of Bengali Lang. Page 642.

३. 'र' का 'न' हो जाना ब्रजभाषा में भी प्राप्त होता है, जैसे,

बरनी-बर्नी-बन्नी बरना-बर्ना-बन्ना

| | | | |
|---|---|---|---|
| Pliers | [plaiəz] | प्लास् | [ pla : s ] |
| Gaiters | [ˈgeitəz] | गेटिस् | [ge : ṭis ] |
| Lantern | [ˈlæ ntən] | लालटेन् | [la : lṭe : n] |

३. २. ३. २. ४. २. ५. अंग्रेजी वर्णविन्यास या उच्चारण में कहीं भी 'र' न होते हुए भी हिन्दी में र-ध्वनि का आगम होता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Dozen | [dʌzn] | दर्जन[१] | [ḏarɣən] |

३. २. ३. २. ४. ३. अन्त्य स्थिति—प्रामाणिक अं० के उच्चारण में अन्त्य 'र' कहीं भी उच्चरित नहीं होता है पर हिन्दी में वर्णविन्यास के अनुरूप सभी स्थलों पर उसका उच्चारण किया जाता है। उदाहरणार्थ निम्नलिखित शब्दों को ले सकते हैं :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Car | [ ka : ] | कार् | [ ka:r ] |
| Bar | [ ba : ] | बार् | [ ba:r ] |
| Collar | [ kɔlə ] | कालर् | [ ka:lər ] |
| Doctor | [ dɔktə ] | डाक्टर | [ ḍa:kṭər ] |

ऐसे शब्दों की एक लम्बी सूची दी जा सकती है, फिर भी कुछ उदाहरण हिन्दी में ऐसे भी प्राप्त होते हैं जिनमें अन्त्य 'र' का उच्चारण परिनिष्ठित अंग्रेजी की तरह हिन्दी में भी नहीं होता है। यह इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है और हमारे पूर्व निर्णय को और भी अधिक पुष्ट करता है की इन शब्दों को हमने भाषण के माध्यम से ग्रहण किया।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bearer | [ bɛərə ] | बैरा | [ bɛ.ra : ] |
| Separator | [ səpəreitə ] | सपरेटा[२] | [səpre:ṭa :] |

१. यह रूप उत्तर भारत में ही प्राप्त होता है; दक्षिण की किसी भाषा में यह रूप नहीं मिलता। हो सकता है कि 'गर्जन, कर्जन' के भ्रमात्मक सादृश्य पर [र्] का आगम हो गया हो। डॉ० चटर्जी ने अपनी बातचीत के मध्य मुझे यह सुझाव दिया है कि हो सकता है कि जैसे जगन्नाथ का जगरनाथ हो गया उसी प्रकार इस शब्द में भी [र्] का आगम हो गया हो। देखिये—Juggernaut—The Concise Oxford Dictionary, 1942, page 617.

२. क्रीम निकालने की मशीन व क्रीम निकला हुआ दूध।

**३. २. ३. २. ५. [ र् ] के स्थान पर [ ड़् ] :**

हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार अंग्रेजी के [र्] को हमने कहीं-कहीं [ड़्-ṛ] में भी बदल दिया है, जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| Rubber | [ rʌbə ] | रबड़् | [ rabəṛ ] |
| Butcher | [ butʃə ] | बूचड़् | [ bu : cəṛ ] |
| Acre | [ eikə ] | एकड़् | [ e:kəṛ ] |

ये हैं इस 'र'-ध्वनि के कुछ स्वरूप जिनका उच्चारण बाल्यावस्था में बहुत कठिन होता है, तभी तो बच्चे 'रेल' को 'लेल' कहते हैं और द्रुतगति में दाँतों के मध्य में 'र' घुल जाता है तभी तो बेचारे' 'गार्ड साहब' और 'मास्टर साहब' क्रमशः 'गाट साहब' और 'माट साहब' ही रह गये।

## ३.२.४ स्वनिमों पर प्रभाव

अंग्रेजी के आगत शब्दों के कारण हिन्दी के स्वनिमों पर प्रभाव :

३.२.४.१ संक्रमक स्वन ( Convergent diaphone) अंग्रेजी के पृथक्-पृथक् दो स्वनिम हिन्दी में एक स्वनिम मात्र रह गये हैं।

| | अंग्रेजी | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| स्वनिम संख्या | /२/ | /१/ | |
| | /v / व्/ | /व्/ | [व] |
| | /w/ व्/ | | [व्] |

३.२.४.२.व्युत्क्रमक स्वन ( Divergent diaphone ) अंग्रेजी का एक स्वनिम हिन्दी में दो स्वनिमों में परिवर्तित हो जाता है :—

| | अंग्रेजी | हिन्दी |
|---|---|---|
| स्वनिम संख्या | /१/ | /२/ |
| | /t—ट्/ | —/त्/ |
| | | —/ट्/ |

३.२.४.३. मिश्र स्वन ( Complex diaphone ) अंग्रेजी के एक स्वनिम के दो संस्वन हिन्दी में पृथक्-पृथक् दो स्वनिम हैं :—

| अं० | हि० |
|---|---|
| /१/ | /१/ |
| | /२/ |

/१/प्/ प^ह [p^h]——— /१/प्/
प [p ]——— /२/फ्/

३.२.४.४ विशेष प्रभाव :—

अँग्रेजी के आगत शब्दों के कारण हिन्दी में [ड़्] के स्थान पर भी /ड्/ का प्रयोग होने लगा, जैसे, 'रेडियो' ।

## ३.३ विशेष ध्वनि-परिवर्तन

अंग्रेजी की स्वर तथा व्यञ्जन ध्वनियों के स्थान पर हिन्दी भाषा-भाषी सामान्यतः कौन सी ध्वनि का प्रयोग करते हैं, इसका विवेचन किया जा चुका है। इन परिवर्तनों के अतिरिक्त अंग्रेजी के आगत शब्दों में कुछ असामान्य ध्वनि-परिवर्तन भी पाये जाते हैं।

३.३.१. समीकरण :

३.३.१.१ पश्चगामी समीकरण :

| | | | |
|---|---|---|---|
| Collector | [kə'lektə] | कलट्टर्/ग्रा०/ | [kaləṭ ṭər] |
| Inspector | [in' spektə] | इन्स्पिट्टर् | [inspiṭ ṭər] |
| Secretary | ['sekrətri] | सिकत्तर् | [sikat̪ t̪ər] |
| Boarding | ['bɔ:d in,] | बोड्डिंग | [bo:ḍḍiŋg] |

३.३.१.२. पुरोगामी समीकरण:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Lantern | ['læ ntən] | लालटेन् | [la:l ṭe:n] |

३ ३. २ विषमीकरण:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Cork | [kɔ:k] | काग् | [ka:g] |
| Number | [nʌmbə] | लम्बर् | [lambər] |

### ३.३.३. विपर्यय :

३.३.३.१ व्यञ्जन-विपर्यय :

| | | | |
|---|---|---|---|
| General | ['dzenərəl] | जरनल् | [ɣərnəl] |
| Signal | ['signl/əl] | सिंगल् | [sin.gəl] |
| Desk | [desk] | डेक्स् | [de:ks] |
| February | ['februəri] | फर्बरी | [pherbəri:] |

३.३.३.२ स्वर-विपर्यय :

| | | | |
|---|---|---|---|
| Calender | ['kæləndə] | कलेण्डर् | [kəlæ ṇḍər] |

३. ३. ३. ३. अक्षर-विपर्यय

| | | | |
|---|---|---|---|
| Coal Tar | ['koul-ta:] | तारकोल् | [t̪a:r-ko:l] |

### ३. ३. ४. लोप :

३. ३. ४. १ व्यञ्जन-लोप :

३. ३. ४. १. १ आदि व्यञ्जन लोप

| | लुप्त व्यञ्जनः | |
|---|---|---|
| Hospital ['hɔspitl̩] | ह् — | अस्पताल-[aspat̪a:l] |

३. ३. ४. १. २ मध्य व्यञ्जन लोप—

| | | | |
|---|---|---|---|
| September [səp'tembə] | प् | सितम्बर | [sit̪ambər] |
| Pantaloon [pæntə'lu:n] | —न्— | पतलून् | [pat̪lu:n] |
| Bugle ['bju:gl] | —य्— | बिगुल् | [bigul] |
| Puncture ['pʌnktʃə] | —क्— | पंचर् | [panɣər] |
| Quorum ['kwɔ:rəm] | —व्— | कोरम् | [ko:rəm] |
| Government['gʌvnmənt] | -न्— | गवर्मेंट | [gaverme:nṭ] |

३. ३. ४. १. ३ अन्त्य व्यञ्जन लोप :

| | | | |
|---|---|---|---|
| Ear-rings [iərin,z] | —ज् | एरिंग | [e.rin,g] |
| Command [kə'ma:nd] | —ड् | कमान | [kama:n] |

| | | | |
|---|---|---|---|
| Hundred | ['hʌndred] | —ड् हंडर[1] | [handər] |

३. ३. ४. २ स्वर-लोप :

मध्य स्थिति में स्वर-लोप के उदाहरण[2] प्राप्त होते हैं :

| | | | |
|---|---|---|---|
| Cigarette | [ˌsigərət] | सिगरेट् | [sigre:ṭ] |
| Battery | ['bætəri] | बैटरी | [be:ṭri:] |
| Italy | ['itəli] | इटली | [iṭli:] |
| Operation | [ˌɔpəreiʃən] | आपरेशन् | [a:pre:ʃən] |
| Deputy | ['depjuti] | डिप्टी[3] | [dipṭi:] |

३. ३. ५. आगम :

३. ३. ५. १ व्यञ्जनागमः

३. ३. ५. १. १. मध्य स्थिति

| | | | | व्यञ्जनागम |
|---|---|---|---|---|
| Summon | ['sʌmən] | सम्मन | [sammən] | —म— |
| Ce ment | [si'ment] | सिलीमेंट[4] | [sili:me:ṇṭ] | —ल्— |
| Jail | [dʒeil] | जेहल[5] | [ɤe:həl] | —ह्— |

१. हण्डरवेट में।

२. इस सम्बन्ध में अधिक उदाहरण आक्षरिक विवेचन करते समय दिये जायेंगे।

३. 'डिप्यूटी' रूप भी मुझे मिला है :

—डा० उदयभानुसिंह-महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, सं० २००८ पृष्ठ २०६।

४. ग्रामीण रूप है पर नगरों में भी राज-मजदूरों के मुख से सुना जा सकता है।

५. मध्य में 'ह्' का आगम श्रुति रूप में माना जा सकता है।
नलिनी मोहन सान्याल-भाषा विज्ञान, सं० १६६५, पृष्ठ १३५।
'लाश' का 'लहास'—भोलानाथ तिवारी—'शब्दों का जीवन, प्र० सं०, पृष्ठ २४।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Dozen | ['dʌzn] | दर्जन् | [d̪arɣən] | —र |
| Church | [tʃə:tʃ] | चर्च् | [ʧərʧ] | |
| Guinea | ['gini] | गिन्नी | [ginni:] | —न्— |

३. ३. ५. १. २ अन्त व्यञ्जनागम :

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| Motor | ['moutə] | मोटर्[1] | [mo:ṭər] | —र् |
| Spring | [sprin,] | स्प्रिंग्[2] | [isprin,g] | —ग् |

३. ३. ५. १. ३ अनुनासिकता :

| | | | |
|---|---|---|---|
| Recruit | [rikru:t] | रँगरूट् | [rə̃n,gru:ṭ] |

३. ३. ५. २ स्वरागम :

३. ३. ५. २. १ आदि स्वरागम या पुरोहिति :

| | | | |
|---|---|---|---|
| State | [steit] | इस्टेट्[3] | [isṭe:ṭ] |
| School | [sku:l] | इस्कूल् | [isku:l] |
| Station | ['steiʃən] | इस्टेशन् | [isṭe:ʃən] |
| Stable | ['steibl] | अस्तबल् | [ast̪bəl] |

३. ३. ५. २. २ मध्य स्वरागम :

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bottle | [bɔtl̩] | बोतल् | [bo:t̪əl] |
| Glass | [gla::s] | गिलास्[4] | [gila:s] |

३. ३. ५. २. ३ अन्तस्वरागम :

| | | | |
|---|---|---|---|
| Foot | [fut] | फुटा | [phuṭa:] |

---

१. परिनिष्ठित अंग्रेजी में अन्त्य 'र' का उच्चारण सदैव नहीं होता, पर हिन्दी में होता है।

२. अंग्रेजी में केवल नासिक्य ध्वनि मात्र है, साथ में स्पर्श व्यंजन नहीं है।

३. लिखते चाहे हम स्टेट, स्कूल, स्टेशन हों पर इसका उच्चारण अधिकांशतः ऐसा ही होता है, पञ्जाबी के प्रभाव से सकूल और सटेशन भी सुना जा सकता है। हिन्दी के उच्चारण में स्वर का आगम आदि में है और पञ्जाबी में मध्य में। केवल यही अन्तर है।

४. व्यञ्जन-गुच्छ टूटकर मध्य में स्वर का आगम होना स्वाभाविक है।

## ३. ३. ६. घोष-अघोष :

३. ३. ६. १ घोष का अघोष

| | | | |
|---|---|---|---|
| Parade | [pəˈreid] | परेट् | [pare:ṭ] |
| Lord | [lɔ:d] | लाट् | [la:ṭ] |
| Fees | [fi:z] | फीस् | [ph/fi:s] |
| Jersey | [ˈdʒə:zi] | जर्सी | [ɣərsi:] |
| Card | [ka:d] | काट-ग्रा० | [ka:ṭ] |
| President | [ˈprezidənt] | प्रेसीडेन्ट् | [pre:si:ḍe:nṭ] |
| Terms | [tə:mz] | टर्म्स | [ṭerms] |
| Mesmerism | [ˈmezmərizəm] | मेस्मेरिज्म | [me:sme:riɣm] |
| Lemonade | [leməˈneid] | लमूलेट | [ləmle:ṭ] |
| Lime-Juice | [ˈlaim-dʒu:s] | लेमूचूस[1] | [le:mʊu:s] |

३. ३. ६. २ अघोष का घोष:

| | | | |
|---|---|---|---|
| Cork | [kɔ:k] | काग् | [ka:g]-(विषमीकरण की प्रवृत्ति) |
| Creese | [kri:s] | क्रीज् | [kri:ɣ] |
| Decree | [diˈkri:] | डिगरी | [ḍigri:] |
| Receipt | [risi:t] | रसीद् | [rasi:d̪] |
| Recruit | [riˈkru:t] | रँगरूट् | [rə̃n,gru:ṭ] |

## ३. ३. ७. महाप्राण-अल्पप्राण:

३. ३. ७. १ महाप्राण से अल्पप्राण : अंग्रेजी में महाप्राण ध्वनियों का अभाव है, पर /p/,/t/,/k/ तीन ध्वनियों के संस्वन $\begin{bmatrix} h \\ p \end{bmatrix}$, $\begin{bmatrix} h \\ t \end{bmatrix}$, $\begin{bmatrix} h \\ k \end{bmatrix}$ के रूप में भी प्राप्त होते हैं। यह उच्चारण शब्द के आदि तथा मध्य में बलाघातयुक्त अक्षर के प्रारम्भ में होता है। हिन्दी में महाप्राण ध्वनियों का स्वनिमात्मक महत्त्व है, अतएव

१. 'जूस' का 'चूस' हुआ है।

इस प्रकार का उच्चारण गृहीत नहीं किया गया। क्रिश्चयन के ख्रिष्टीय रूप को हम इसका अपवाद नहीं कह सकते। वह तो सीधा ग्रीक /khristos/ से आया है।

३. ३. ७. २ अल्पप्राण से महाप्राण :

यह प्रवृत्ति विशेष नहीं पायी जाती, फिर भी कुछ उदाहरण मिलते हैं, जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Jumper | [d3ʌmpə] | जम्फर् | [ɣəmphər] |
| | | झम्पर् | [ɣhəmpər] |

## ३. ३. ८ अन्य परिवर्तन :

३. ३. ८. १ /न/ का /ल/ में परिवर्तन

| | | | |
|---|---|---|---|
| Number | [ˈnʌmbə] | लम्बर् | [lam bər] |
| Note | [nout] | लोट् | [lo:ṭ] |
| Lemonade | [lemə'neid] | लमलेट् | [lamle:ṭ] |

३. ३. ८. २ /र/ का /ड़/

| | | | |
|---|---|---|---|
| Butcher | [butʃə] | बूचड़् | [bu:ʨər̥] |
| Rubber | [ˈrʌbə] | रबड़् | [rabər̥] |

३. ३. ८. ३ संधि

| | | | |
|---|---|---|---|
| Post-Card | [poust-k:ad] | पोस्कार्ड | [po:s (t)-ka: (r) ḍ] |
| English-sta:n | [in˒gliʃ-sṯa:n] | इंगलिस्तान | [in˒glis ṯa:n] |

# ३. ४ ध्वनियों के गुण

मात्रा, बलाघात और सुर—ये तीन ध्वनियों के गुण कहलाते हैं। किसी भी अक्षर या ध्वनि को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए ये आवश्यक तत्त्व हैं। अंग्रेजी में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

**३. ४. १ मात्रा :**

३. ४. १. ०. किसी ध्वनि की दीर्घता या मात्रा से तात्पर्य उस काल विशेष से है जो किसी विशेष ध्वनि के उच्चारण में लगती है। स्वरों तथा सप्रवाह व्यञ्जनों में मात्रा अधिक रहती है। संध्यक्षर स्वरों तथा सप्रवाह व्यञ्जनों में दीर्घता रहती है। दीर्घता की मात्रा को कई श्रेणियों में नापा जा सकता है। सामान्यतः तीन मात्राओं तक नाप पर्याप्त होती है।

**३. ४. १. १ अंग्रेजी-स्वरों में मात्रा :**

स्वर /iː-ई/, /aː-आ/, /ɔː—ऑ/, /uː-ऊ/ तथा /əː-ए/ दीर्घ हैं और शेष ह्रस्व है। सभी संध्यक्षर स्वर भी उतने ही दीर्घ हैं जितने कि दीर्घ स्वर। निम्नलिखित स्थितियों में ये दीर्घ स्वर भी दीर्घता खो बैठते हैं।[1]

३. ४. १. १. १ जब ये स्वर किसी अघोष व्यञ्जन से पूर्व हों। (घोष व्यञ्जन से पूर्व तथा अन्त स्थिति में इनमें दीर्घता विद्यमान रहती है।)

| Seat | Sea | Seed |
|---|---|---|
| /siːt-सीट्/ | /siː-सी/ | /सीड्-siːd/ |

इन तीनों /iː-ई/ में प्रथम /ई/ उतनी दीर्घ नहीं जितनी शेष दो हैं।

३. ४. १. १. २. जब ये स्वर किसी नासिक्य या पार्श्विक ध्वनि से युक्त किसी अघोष व्यञ्जन के साथ हों।

| Fault | Fall |
|---|---|
| /fɔːlt-फ़ॉल्ट/ | /fɔːl फ़ॉल/ |

प्रथम उदाहरण में /ɔː-ऑ/ ध्वनि उतनी दीर्घ नहीं जितनी दूसरी में है।

३. ४. १. १. ३ ये स्वर किसी बलाघातयुक्त अक्षर में हो जिसके एकदम बाद बलाघातहीन अक्षर आ जाय :—

---

1. Jones, D.—An Outline of English Phonetics, 1956, Page 232-35.
   MacCarthy, A. D.—English Pronunciation, 1952, Page 153-54.

Leader — /ˈli:də-लीडं/
Lead — /ˈli:d-लीड्/

इनमें प्रथम /i:-ई/ उतनी दीर्घ नहीं जितनी दूसरी है।

३. ४. १. १. ४ जब ये स्वर किसी बलाघातहीन अक्षर में प्रयुक्त हों :

Idea — /aiˈdiə-आइडिअं/
Idle — /ˈaidl-अइडल/

प्रथम अक्षर में प्रयुक्त संध्यक्षर स्वर उतना दीर्घ नहीं जितना दूसरे उदाहरण में प्रयुक्त।

३. ४. १. २. **ह्रस्वता में दीर्घता :** अंग्रेजी के ह्रस्व स्वर भी सघोष व्यञ्जनों से पूर्व कुछ दीर्घत्व लिये हुए होते हैं, जैसे Cub /kʌb/ में प्रयुक्त /अ/ cup /kʌp/ में प्रयुक्त /अ/ से दीर्घ है। स्वर [æ-एॅ] तो कुछ शब्दों में दीर्घ ही रहता है, जैसे, bag 'bad' jam आदि।

### ३. ४. १. ३. व्यञ्जनों में दीर्घता :

स्वर के साथ व्यञ्जनों में भी दीर्घता परिस्थितिजन्य होती है। ह्रस्व स्वर के पूर्व अन्तिम व्यञ्जन दीर्घ होते हैं, जैसे [sin]-सिन् का /न्/ Scene [si:n] के /न्/ से दीर्घ है। द्रव वर्ण जैसे /ल, र/ आदि जब सघोष ध्वनियों से पूर्व आते हैं, तो दीर्घ होते हैं।

### ३. ४. १. ४. हिन्दी में मात्रा :

यह तो निश्चित है कि हिन्दी में स्वरों के साथ-साथ व्यञ्जनों में भी दीर्घता है। स्वरों में 'ओ' तथा 'ऐ' तो दीर्घ रूप में ही व्यवहृत होते हैं। 'आ', 'ई', 'ऊ' स्वर दीर्घ हैं। 'ऐ' और 'ओ' स्वरों के दोनों प्रकार के उच्चारणों में—(अ) शुद्ध स्वर के तुल्य (आ) संध्यक्षर स्वर के रूप में—दीर्घत्व है। ह्रस्व /इ/ और /उ/ का उच्चारण अक्षरों के अन्त में दीर्घ होने लगा है।[1] हिन्दी में

---

१. डॉ० बाबूराम सक्सेना—परिवर्तनशील हिन्दी, साहित्य सन्देश, वर्ष १६, अङ्क १-२, पृ० ५३।

व्यञ्जनों में पर्याप्त दीर्घता मिलती है, जिसको द्वित्व से प्रकट किया जाता है। 'पका' में 'क्' ह्रस्व है और 'पक्का' में 'क्' दीर्घ।[1]

सामान्यतः अंग्रेजी की ध्वनियों की दीर्घता हिन्दी में सुरक्षित रहती है, फिर भी कुछ ऐसे उदाहरण प्राप्त होते हैं जिनमें परिवर्तन हो गया है।

३. ४. १. ५. दीर्घ से ह्रस्व :—

Economics [i:kə'nɔmiks] के आदि में प्रयुक्त दीर्घ [ई] का इकनोमिक्स में ह्रस्व हो जाना स्वाभाविक है। अंग्रेजी में भी इस स्वर में दीर्घत्व पूरी मात्रा में नहीं है। clerk [ kla:k ] में प्रयुक्त [आ-a:] कल्र्क में ह्रस्व /अ/ रह जाता है। 'अगस्त' का आदि स्वर अंग्रेजी में दीर्घ है।

३. ४. १. ६ ह्रस्व से दीर्घ :—

इस कोटि में निम्नलिखित उदाहरण लिये जा सकते हैं :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Tin | [tin] | टीन[2] | [ṭi:n] |
| mill | [mil] | मील[2] | [mi:l] |

शब्द के अन्त में तो हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुकूल स्वर दीर्घ हो जाते हैं। उदाहरणों में 'इ' से अन्त होने वाले शब्द लिये जा सकते हैं, जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| Committee | [kə'miti] | कमेटी[3] | [kəme:ṭi:] |

१. मात्रा और द्वित्व के अन्तर को श्री डेनियल जोन्स महोदय ने स्पष्ट करने की चेष्टा की है। दो स्वरों के मध्य में वह द्वित्व को सार्थक मानते हैं जहाँ कि दोनों ध्वनियाँ दो अक्षरों में विभक्त हो जाती है— गल्ला-गल्ला+शब्द के अन्त में दीर्घत्व माना जा सकता है। —फोनीम, १९५०, पृष्ठ ११५-१७।

२. यह भी सम्भव है कि ये शब्द हिन्दी में मराठी के माध्यम से आये हों। मराठी में दीर्घता का स्वनिमात्मक महत्त्व नहीं है। प्रत्येक एकाक्षरिक शब्द का स्वर दीर्घ हो जाता है।

३. इस कोटि के अन्य उदाहरणों के लिए देखिये—३. १. ४. १. २. का अन्त।

## ३. ४. २. बलाघात

३.४.२.०. बलाघात का सम्बन्ध स्वरतंन्त्रियों से न होकर फेफड़े से हवा फेंकने के ढंग पर होता है। साधारण बातचीत करते समय हम कुछ ध्वनियों का उच्चारण बल लगाकर और कुछ का बिना बल लगाये करते हैं। इस प्रकार बलाघात से तात्पर्य उस बल या प्राणशक्ति से है जिसके साथ किसी अक्षर का उच्चारण होता है। बलाघात उत्कर्ष का एक प्रधान तत्त्व है। साधारणतः एक से अधिक अक्षरों से युक्त किसी शब्द में समान रूप से प्रत्येक अक्षर पर बल नहीं रहता है। किसी अक्षर पर बल अधिक और किसी पर कम पड़ता है। अंग्रेजी भाषा में तो यह बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है।

३. ४. २. १. अंग्रेजी में बलाघात का स्वनिमात्मक महत्त्व है।[१] एक ही शब्द के विभिन्न अक्षरों पर बलाघात होने से विभिन्न अर्थ[२] हो सकते हैं :

क्रिया permit /pə'mit/ संज्ञा /'pə:mit/

किसी शब्द के किस अक्षर पर बल दिया जाय और उसका क्या प्रभाव पड़ेगा इसका ज्ञान अंग्रेजी में आवश्यक है। इस प्रकार अंग्रेजी भाषा में स्पष्टतः पहाड़ की चोटियों और घाटियों की सी शोभा दृष्टिगत होती है। निश्चित रूप से शब्द का कोई अक्षर बड़ी चोटी होगा और कोई छोटी।

अंग्रेजी में बलाघात के प्रभाव से शब्दों के अर्थ में ही प्रभाव परिलक्षित नहीं होता वरन् भिन्न-भिन्न उच्चारण होने से उसका ध्वन्यात्मक स्वरूप[३] भी बदल जाता है, जैसे,

संज्ञा, वि० subject /'sʌbdzikt/ क्रिया /səb'dzekt/

### ३. ४. २. २. हिन्दी में बलाघात:

हिन्दी के शब्दों में बलात्मक स्वराघात अवश्य पाया जाता है, किन्तु वह अंग्रेजी के इस प्रकार के स्वराघात के समान प्रत्येक शब्द में निश्चित नहीं है। इसके अतिरिक्त हिन्दी में प्रायः दीर्घ स्वर पर स्वराघात होने के कारण दोनों

---

१. Gleason, H. A.—An Introduction to Descriptive Linguistics, 1956, Page 41.

२. वही, पृष्ठ ४१।

३. IDA C. Ward—The Phonetics of English, 1956, page 165.

में भेद करना साधारणतया कठिन हो जाता है। आधुनिक हिन्दी शब्दों में स्वरलोप तथा ह्रस्व तथा दीर्घ स्वरों का भेद दिखलाना बहुत आवश्यक है स्वराघात का भेद उतना स्पष्ट नहीं है।[१]

गुरु जी[२] ने स्वराघात पर विचार-विवेचन किया है। आपके मतानुसार हिन्दी में अपूर्णोच्चरित 'अ' जिस अक्षर में आता है उसके पूर्ववर्ती अक्षर के स्वर का उच्चारण कुछ लम्बा होता है, जैसे 'घर' शब्द में अन्त्य 'अ' का उच्चारण अपूर्ण होता है, इसलिए उनके पूर्ववर्ती 'घ' के स्वर का उच्चारण कुछ झटके के साथ करना पड़ता है। इसी प्रकार संयुक्त व्यञ्जन के पहले अक्षर पर जोर पड़ता है। गुरु जी के नियमों का निष्कर्ष निकालते हुए डॉ० वर्मा लिखते हैं कि साधारणतः उपान्त्य स्वर पर स्वराघात पाया जाता है।[३]

हिन्दी में बलाघात का उस रूप में महत्त्व स्वीकार नहीं किया गया, जिस रूप में वह अंग्रेजी में है। फलस्वरूप अंग्रेजी के शब्दों में जो बलाघात का महत्त्व अंग्रेजी में है वह हिन्दी में प्रायः समाप्त हो गया है।[४]

जहाँ तक एक ही शब्द को दो विभिन्न बलाघात से उच्चरित कर भेद प्रकट करना अंग्रेजी में आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण है, मैं समझता हूँ, कि हिन्दी में ऐसे युग्म बहुत कम लिये गये हैं। अधिकतर शब्द अपने संज्ञा रूप में ही गृहीत किये गये हैं, अतएव उनके क्रिया-रूप का प्रश्न ही नहीं उठता है।

३. ४. २. ३. अंग्रेजी के शब्द जब हिन्दी में प्रवेश करते हैं तो उनका बलाघातयुक्त स्वरूप हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार हो जाता है। निम्नलिखित शब्दों में अंग्रेजी बलाघात दूसरे अक्षर पर है, जिसके फलस्वरूप प्रारम्भिक अक्षर में प्रयुक्त स्वर उदासीन स्वर /अ/ है :—

---

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, पृष्ठ २१९।

२. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, नवीन संस्करण, पृष्ठ ५२-५३।

३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, पृष्ठ २१९।

४. Indeed, in my experience many foreigners fail to perceive English Stress correctly. This applies more particularly to those whose mother tongue is stressless language such as Japanese and Hindi.—Jones, D.-Phoneme-Its Nature and Use, 1950, 138.

Accountant [ə'kauntənt]
Address [ə'dres]
Agenda [ə'dzendə]
Alarm[1] [ə'la:m]

पीछे दिये हुए अंग्रेजी के शब्दों में वस्तुतः बलाघात द्वितीय अक्षर पर है और प्रथम अक्षर में प्रयुक्त उदासीन स्वर का उच्चारण बहुत ही क्षीण है। हिन्दी में ये शब्द क्रमशः एकाउन्टेंट, एड्रेस, एजेंडा तथा एलार्म हो गये हैं, जिनमें न प्रथम अक्षर उतना बलाघातहीन ही है जितना अंग्रेजी में और द्वितीय अक्षर में उतना बलाघात नहीं जितना कि अंग्रेजी शब्दों के उच्चारण में है। इस प्रकार जहाँ अंग्रेजी में स्पष्टतः बलाघातयुक्त अक्षर और उससे पूर्व अक्षर में पर्याप्त अंतर है हिन्दी में वह प्रायः उतना नहीं है। यही बात बलाघात-युक्त अक्षर के बाद जानेवाले अक्षर के सम्बन्ध में भी चरितार्थ होती है।

Accountant /ə'kauntənt/ के अन्तिम अक्षर के भी बलाघात का कोई ध्यान हिन्दी में नहीं रहता, जिसके फलस्वरूप एकाउन्टेंट रूप ही अधिक चलता है। इस प्रकार के सैकड़ों उदाहरण हैं जिनमें अंग्रेजी के अन्तिम अक्षर पर बालाघात नहीं हैं, पर हिन्दी में सामान्य बलाघात के साथ उच्चारण किया जाता है।

अंग्रेजी के शब्द Drama/dra:mə/ जिसको हिन्दी में ग्रहण करते समय अन्तिम अक्षर की बलाघातहीनता पर कोई ध्यान नहीं रखा जाता है, जिसके फलस्वरूप हिन्दी में गृहीत शब्द /dra:mə/ नहीं है, वरन् 'ड्रामा' है।

बलाघातहीनता की भाँति बलाघातयुक्त अक्षर का भी कोई विचार नहीं किया गया है। उदाहरणार्थ—Album/'æ lbəm/ शब्द के प्रारम्भ के अक्षर में बलाघात है और अन्त में नहीं। हमने शब्द को ग्रहण करते समय अपनी सामान्य रीति से 'अलबम' रूप लिया, जिसके दोनों अक्षरों में स्वर समान हैं। यही कारण है कि Bamboo/'bæmbu/ हिन्दी में 'बम्बू' ही रहा।

उक्त कथन का तात्पर्य यही है कि हिन्दी में अंग्रेजी के गृहीत शब्दों में इस बात की ओर ध्यान नहीं रखा गया है कि उक्त शब्द में बलाघात कहाँ है। सभी शब्दों को अपनी प्रवृत्ति के अनुसार बना लिया गया है और सामान्यतः प्रत्येक भाषा गृहीत शब्दों के साथ यही व्यवहार करती है। यही कारण है कि

१. अलार्म रूप भी चलता है।

अंग्रेजी के दो शब्द Photography[1] तथा photograph अपने भिन्न-भिन्न बलाघात-युक्त रूपों को /fəˈtɔgrəfi/ तथा /ˈfoutəgra:f/ को त्याग-कर हिन्दी में 'फोटोग्राफी' और फोटोग्राफ' बन बैठे।

## ३. ४. ३ सुर

३. ४. ३. ०. स्वरतन्त्रियों में क्रमाधिक कम्पन के कारण सुर उत्पन्न होता है। साधारणतः सुर उच्च, निम्न और सम हो सकता है। सघोष ध्वनियों में सुर उत्पन्न किया जा सकता है।

३. ४. ३. १. अंग्रेजी में सुर का महत्त्व है—शब्द से अधिक वाक्य स्तर पर यहाँ हमारा सम्बन्ध शब्दों से है—शब्दों में बलाघात का महत्त्व स्वीकार किया जा चुका है। बलाघात के साथ सुर का भी सम्बन्ध रहता है।[2] जैसे, Import के संज्ञा रूप /ˈimpɔ:t/ में सुर का । /._/ स्वरूप है, जबकि क्रिया रूप /imˈpɔ:t/ में सुर का ।._। स्वरूप है।[3] हिन्दी में भी सुर का महत्त्व शब्द-स्तर पर इतना नहीं है जितना वाक्य-स्तर पर स्वर-लहर का है। आगे कुछ शब्दों के तुलनात्मक सुर पर विचार किया गया है।

---

१. MacCarthy, A. D.—English Pornunciation, 1952; page 157 & Jones, D.— The Pronunciation of English, 1955' page 49.

2. Jones, D. Phoneme, Its Nature and use, 1950. Page 147

3. Ibid, Page 185

३. ४. ३. १. १. एकाक्षरिक :

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. Coat[१] | [kout] | कोट | [ko:ṭ] |
| २. Church[२] | [tʃə:tʃ] | चर्च | [čərč] |
| ३. Bag | [bæg]: | बैग | [bɛ: g] |

३. ४. ३. १. २. द्व्याक्षरिक

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४. London[३] | ['lʌndən] | लन्दन | [lənḍən] |
| ५. Table[४] | ['teibl] | टेबिल | [ṭe: bil] |
| ६. Notice[५] | [noutis] | नोटिस | [no: ṭis] |
| ७. Picture | [piktʃə] | पिक्चर | [pikčər] |
| ८. Soda[६] | [soudə] | सोडा | [so: ḍa] |
| ९. Saloon | [sə'lu:n] | सेलून | [ce: lu:n] |
| १०. Parade | [pə'reid] | परेड | [pəre: ḍ] |

१. An Outline of English Phonetics, 1956, Page 287.
२. English Pronunciation, 1955, Page 190.
३. An Outline of English Phonetics, 1956, Page 298.
४. Ibid, page 262.
५. Ibid page 289.
६. English Pronunciation, 1955.Page 187.

अध्याय ४

# ध्वनि-प्रक्रिया, आवृत्ति

तथा

# अन्य भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी के आगत शब्दों का तुलनात्मक विवेचन

इस अध्याय के अन्तर्गत तीन प्रकार का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। प्रारम्भ में (४.१) ध्वनि-प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यंजन-गुच्छों तथा अक्षरात्मक स्वरूप का तुलनात्मक विवेचन है।

## ४. १. १. २. व्यंजन-गुच्छों का तुलनात्मक विवेचन तथा हिन्दी में नवीन व्यंजन-गुच्छों का समावेश

४.१.१.२.०.

अंग्रेजी तथा हिन्दी के व्यंजन-गुच्छों का तुलनात्मक अध्ययन करने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में इनका प्राधान्य है। हिन्दी में संस्कृत के तत्सम शब्दों का आधिक्य होने के कारण संस्कृत के व्यंजन-गुच्छ एक बड़ी संख्या में सुरक्षित हैं, फिर भी आदि स्थिति में उनका उच्चारण उतना सहज और सुलभ नहीं है जितना अन्त्य स्थिति में। फलतः आदि व्यंजन-गुच्छ बोलचाल में समाप्त होते जा रहे हैं। इसी आधार पर अंग्रेजी के शब्दों के आदि व्यंजन गुच्छ हिन्दी में होते हुए भी जन-साधारण द्वारा प्रयुक्त व उच्चरित न होने से स्वरागम[1] द्वारा 'अक्षर' में बदल दिये जाते हैं। शुद्ध उच्चारण केवल शिष्टों तक ही सीमित रह गया है और फिर कुछ शब्दों का उच्चारण तो सभी स्तर पर समाप्त हो गया है. जैसे आदि। स्-s।से प्रारम्भ होने वाले शब्दों में स्वभावतः आदि स्वरागम के साथ अक्षर का उच्चारण होता है—

१. उर्दू का भी प्रभाव इस दिशा में पड़ा है। उर्दू में तो आदि व्यंजन-गुच्छ कहीं नहीं आता—Dr. Masud Husain—Phonetic and Phonological Study of the Word in Urdu, Page 15

पञ्जाबी के प्रभाव से मध्य स्वरागम भी हो जाता है। 'इस्टेशन' के स्थान पर 'सटेशन' सुनाई पड़ता है।

* डॉ० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा अंग्रेजी के हिन्दी में गृहीत ५०० के लगभग शब्दों के उच्चारण का विश्लेषण कर यह निष्कर्ष निकाला है कि आदि व्यंजन-गुच्छ अधिकांशतः स्वर के साथ अक्षर में परिवर्तित कर दिये जाते हैं। जिन स्वरों का आगम होता है उनकी आवृत्ति इस प्रकार है—

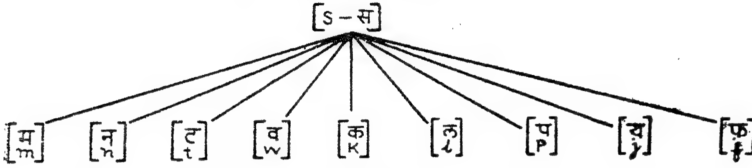
| स्वर | इ | | अ | | उ | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | अग्रागम | स्वरभक्ति | अग्रागम | स्वरभक्ति | अग्रागम | स्वरभक्ति |
| | १९ | २८ | १ | ६ | — | ३ |
| | ४७ | | ७ | | ३ | |

* Dr. Dhirendra-Verma—English Loan words in Hindi, Alld.Usity.Studies, Vol. 8 Pt. I, 1932, pp. 33-52.

| | अंग्रेजी | | हिन्दी |
|---|---|---|---|
| Station | ['steiʃən] | इस्टेशन् | [isṭe:ʃən] |
| School | ['sku:l] | इस्कूल् | [isku:l] |

### ४. १. १. २. १.१ आदि स्थिति के व्यंजन-गुच्छ

अंग्रेजी में सबसे अधिक व्यंजन-गुच्छ 'स' ध्वनि से प्रारम्भ होते हैं—




इनमें से हिन्दी में [st-स्ट्] तथा [sl-स्ल्] दो व्यंजन-गुच्छ सर्वथा नवीन हैं और इनसे प्रारम्भ होने वाले अंग्रेजी के आगत शब्दों की संख्या अधिक है। अनेक व्यंजन-गुच्छों का उच्चारण भी शिष्ट समाज तक में शुद्ध नहीं सुनाई पड़ता। slate [sleit] और Slipper [slipə] का उच्चारण क्रमशः 'सिलेट' और 'सिलीपर' ही सुना जाता है।

अंग्रेजी के प्रभाव से निम्नलिखित दो व्यंजन ध्वनियों के गुच्छों का प्रयोग हिन्दी में किया जाने लगा है :—

| ध्वनि | ध्वनि-गुच्छ | अंग्रेजी शब्द | ध्वन्यात्मक | हिन्दी रूप | उच्चारण |
|---|---|---|---|---|---|
| [t-ट्] | [tw- ट्व] | Tweed | [twi:d] | ट्वीड | [ṭwi:ḍ] |
| | [tj- ट्य] | Tuition | [tju:sən] | ट्यूशन[1] | [ṭju:sən] |
| | (tr- ट्र) | Tram | [træm] | ट्राम | [ṭra:m] |
| /b-ब/ | (bl-ब्ल) | Blouse | [blauz] | ब्लाउज | [blauɣ] |
| /d-ड/ | (dj-ड्य) | Duty | [dju:ti] | ड्यूटी | [ḍju:ṭi:] |
| | (dr-ड्र) | Driver | [draivə] | ड्राइवर | [ḍraivər] |

१. [ट्य] व्यंजन-गुच्छ प्रारम्भ में ट्यूब, ट्यून आदि शब्दों में भी सुना जा सकता है। 'स' ध्वनि के साथ संलग्न होने पर 'य' ध्वनि का लोप हो जाता है, जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Student | [stju:dənt] | स्टूडेण्ट | [isṭu:ḍe:ṇṭ] |
| Studio | [stu:diou] | स्टूडियो | [isṭu:ḍio] |

[ट्य] का मध्य में उच्चारण कुछ च-ध्वनि के समान हो जाता है और यही कारण है कि [च] ध्वनि का आगम हो जाता है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Portuguese | [pɔ:tjugi:z] | पोर्चगीज | [po:rʧgi:ɣ] |
| Christian | [kristjən] | क्रिश्चियन | [kriʃʧijən] |

मध्य-स्थिति में अन्य ध्वनि-गुच्छों में भी 'य' का लोप हो गया है, जैसे—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| [pj-प्य] | Deputy | [depjuti] | डिप्टी | [dipṭi:] |
| [mj-म्य] | Formula | [fɔ:mjulə] | फार्मूला | [pha:rmu:la] |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (f-फ) | /fj-फ्य/ | Future | [fju:tʃə] | फ्यूचर | [phju:cər] |
| | /fl-फ्ल/ | Flat | [flæt] | फ्लैट | [phlɛ:ṭ] |
| | /fr-फ्र/ | Frame | [freim] | फ्रेम | [phre:m] |
| (θ-थ्) | /θr-थ्र/ | Through | [θru:] | थ्रू | [ṭhru:] |

इस प्रकार हिन्दी में ट्व, ट्य, ट्रग्ल, ड्य, ड्र, फ्य, फ्ल फ्र, थ्र, स्ट, स्ल नवीन ध्वनि-गुच्छ गृहीत हुए हैं जिनके आधार पर ही यह पहचाना जा सकता है कि इनसे प्रारम्भ होने वाले शब्द निश्चित रूप से अंग्रेजी से गृहीत किये गये हैं।

## ४. १. १. २. १. २ तीन ध्वनियों के गुच्छ

प्रारम्भ में तीन ध्वनियों का गुच्छ हिन्दी में प्रचलित नहीं है। लिखित रूप में भी कुछ ही शब्द प्राप्त होते हैं, पर जनसाधारण में उनका उच्चारण वस्तुतः भिन्न[1] होता है। इस प्रकार मूल शब्द का एक अक्षर (Syllable) दो अक्षरों (Disyllable) में परिवर्तित हो जाता है।

अंग्रेजी में इस प्रकार के शब्दों का बाहुल्य है, पर सभी गृहीत शब्दों में इनको दो अक्षरों में विभाजित करके ही गृहीत किया गया है। उदाहरणार्थ अंग्रेजी के निम्नलिखित ध्वनि-गुच्छ लिये जा सकते हैं--

| अँग्रेजी | | | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|---|---|
| लिखित | | | उच्चारण | लिखित | उच्चारण |
| /k-क/ | /klj/-क्ल्य | clue | [klu:] | क्ल्यू[2] | [kilju:] |
| /s-स/ | /spl-स्पल/ | splint | [splint] | स्लिंट | [isplinṭ][3] |
| | /spr स्प्र/ | spring | [sprin,] | स्प्रिंग | [isprin,g][4] |

---

१. स्त्री (sṭri:) का उच्चारण वस्तुतः (isṭri:) होता है।

२. क्या कुछ क्ल्यू निकला।

३. फर्स्ट एड में प्रयुक्त।

४. स्प्रिंगदार गद्दे।

/str-स्ट्र /street [stri:t] स्ट्रीट [isṭri:ṭ][1]

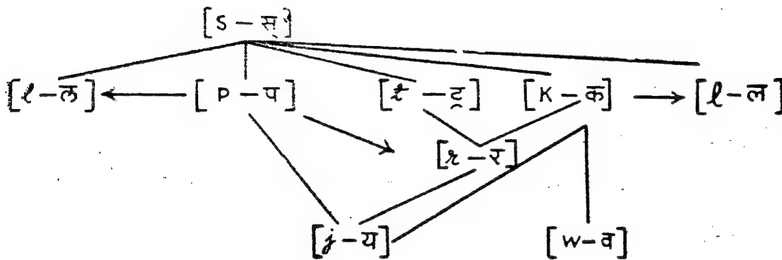
/stj-स्ट्य /student [stjdənt स्टूडेंट [isṭu:ḍe:nṭ][2]

/skr-स्क्र /screen [skri:n] स्क्रीन [iskri:n][3]

/skl-स्क्ल /sclerosis [skliərousis][4]

/skw स्क्वायर[5] /square [skwɛə] स्क्वायर [iskwa:yar]

'स' से प्रारम्भ तीन ध्वनियों के गुच्छों को इस प्रकार रेखाचित्र के रूप में रखा जा सकता है—




१. बड़े नगरों में जैसे हनुमान स्ट्रीट।

२. कॉलेजों में प्रयुक्त।

३. ड्रामा, सिनेमा।

४. डेनिश भाषा में यह शब्द गृहीत होने के कारण (skl) का नवीन गुच्छ भी गृहीत करना पड़ा जिसके फलस्वरूप डेनिश भाषा की ध्वनि-प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ा है। Vogt, Hans—Language Contact in Linguistics Today—Martinet. 1954, Page 250.

५. रेखागणित में।

## ४. १. १. २ २. अन्त्य व्यंजन-गुच्छ

अंग्रेजी में अन्त्य व्यञ्जन-गुच्छों का प्राधान्य है, पर हिन्दी में ऐसे व्यञ्जन गुच्छों से युक्त शब्द कम गृहीत हुए हैं, क्योंकि इस प्रकार के अधिकांशतः व्यञ्जन-गुच्छों का प्रयोग शब्दों के बहुवचन तथा भूतकालिक रूप में ही हुआ है। हिन्दी में गृहीत शब्दों के रूप का परिवर्तन अधिकांशतः हिन्दी के व्याकरण के अनुसार हुआ है, अतएव हिन्दी में इस प्रकार के शब्द अधिक न घुस सके।[1]

फिर भी अंग्रेजी के शब्दों के माध्यम से कुछ नवीन अन्त्य व्यंजन-गुच्छ प्रविष्ट हो चुके हैं, इस तथ्य को भी स्वीकार करना पड़ेगा—

| | अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|---|
| /kt—क्ट/ | Pact | [pækt] | पैक्ट | [pɛ'kṭ] |
| | District | [distrikt] | डिस्ट्रिक्ट | [ḍisṭrikṭ ] |
| /ft—फ़्ट/ | Draft | [dra:ft] | ड्राफ़्ट | [ḍra:fṭ] |
| /st—स्ट/ | List | [list] | लिस्ट | [lisṭ] |
| /lt—ल्ट/ | Result | [rizʌlt] | रिजल्ट | [riɣəl ̣] |
| /ks—क्स/ | Box | [bɔks] | बक्स | [bəks] |
| | Tax | [tæks[ | टैक्स | [ṭɛ:ks] |

---

१. फिर भी व्यापार में शर्त के स्थान पर टर्म और उसका बहुवचन 'टर्म्स' सुना जाता है। बहुशिक्षित व्यक्तियों की भाषा में क्लाज्ड, 'क्रश्ड', बायल्ड अंडे, क्लीनशेव्ड आदि शब्द भी हिन्दी में मैंने प्रयुक्त होते हुए सुने हैं।

परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व सर्वत्र 'हिन्ट्स' का जोर रहता है और कपड़े के बाजार में छपे हुए कपड़ों के लिए' प्रिण्ट्स' भी सुना जा सकता है।

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| /ps—प्स/ | Tops | [tɔps] | टॉप्स | [ṭɔ·ps] |
| /rs—र्स/ | Nurse | [nə:s] | नर्स | [nərs] |
| /rl—र्ल/ | Pearl | [pə:l] | पर्ल | [pərl] |
| /rf—र्फ़/ | Scarf | [ska:f] | स्कार्फ़ | [iska:rf/ph] |

इस प्रकार हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले शब्दों में यदि अन्त्य स्थिति में क्ट फ़्ट, स्ट, ल्ट, क्स, प्स, र्स, र्ल, र्फ आदि व्यञ्जन-गुच्छ हों तो निस्सन्देह इस आधार पर हम उनको विदेशी जान सकते हैं। आदि स्थिति में साधारणतः बोलचाल में जिस प्रकार व्यञ्जन-गुच्छ अक्षर में परिवर्तित कर दिये जाते हैं, उस अनुपात से अन्त्य स्थिति में नहीं, जैसे—'स्ट' का उच्चारण आदि स्थिति में शुद्ध मिलना ही कठिन है, पर अन्त्य स्थिति में यह पूर्णरूपेण सुरक्षित है । मैंने लिस्ट को लिसिट या लिसट कहते नहीं सुना।

४.१.१.२.३

व्यंजन-गुच्छों के तुलनात्मक विवेचन से हम निम्नलिखित निष्कर्ष निकाल सकते हैं :—

१. व्यंजन-गुच्छ को तोड़ दिया जाता है। व्यंजन-गुच्छ तोड़ने के लिए अग्रागम तथा स्वरभक्ति का प्रयोग होता है :—

School [sku:l] इस्कुल [isku:l] अग्रागम के द्वारा।
Slate [sleit] सिलेट [sile:ṭ] स्वरभक्ति के द्वारा।

२. व्यंजन-गुच्छ को ग्राहक भाषा अपनी निकटतम ध्वनियों के व्यंजन-गुच्छ में बदल देती हैं —

List [list]; लिस्ट [lisṭ] वर्त्स्य ट् के स्थान पर मूर्धन्य ट से।

३. व्यंजन-गुच्छ अपरिवर्तित रहते हैं :—

Cream [kri:m] क्रीम [kri:m]; 'क्र' अपरिवर्तित रहा।

४. व्यंजन-गुच्छ साधारण व्यंजन रह जाता है :—

Studio [stju:dio] स्टूडियो [sṭu:ḍijo:] ट्य के स्थान पर केवल ट रह जाता है।

५. नवीन व्यंजन-गुच्छ का गृहीत होना :—

Tweed [twi:d] ट्वीड [ṭwi:ḍ] ट्व' का नवीन व्यंजन-गुच्छा

## ४. १. २ अंग्रेजी तथा हिन्दी के अक्षरात्मक स्वरूप का तुलनात्मक विवेचन

४. १. २. ०. अक्षर एक मोटर यूनिट है।[१] अक्षर में स्वर[२] की प्रधानता की ओर निर्देश करते हुए स्टेट्सन महोदय कहते हैं कि स्वर ही अक्षर का विशिष्ट गुण है और व्यंजन तो किसी अक्षर को मुक्त तथा निरोधित करने की ही विशिष्ट प्रणाली है।[३] स्वर के साथ-साथ कुछ व्यंजन भी इस कोटि में आते हैं, जैसे अंग्रेजी में ।न। और ।ल।[४] तथा जापानी में ।स।[५] बहुप्रचलित अक्षर के चार स्वरूप हो सकते हैं :

| | |
|---|---|
| C V | व्यं स्व |
| C V C | व्यं स्व व्यं |
| V C | स्व व्यं |
| V | स्व |

## ४. १. २. १ अंग्रेजी अक्षर :

शब्दों को अक्षर में बाँटना कष्टसाध्य ही नहीं, विवादपूर्ण विषय भी है। वर्षों के अनुभव प्राप्त भाषाविद् डेनियल जोन्स महोदय[६] का यह कथन है कि यह निश्चित करना कभी-कभी असम्भव हो जाता है कि अक्षर का कहाँ से प्रारम्भ और कहाँ पर अन्त होता है। अक्षरों को पृथक् करने के लिए ध्वनि, गुण और मात्रा सम्बन्धी आधार मानना पड़ेगा। जोन्स महोदय[७] ने अंग्रेजी में अक्षर-विभाजन की निम्नलिखित स्थितियाँ मानी हैं —

१. "Syllable is a motor unit" R. H. Stetson-Motor Phonetics, 1951, Page 29.

२. 'स्वयं राजते' स्वयं राजन्ते स्वराजनवर्गेभवति व्यंजनम्।

३. Stetson, R. H.—Motor Phonetics, 1951, Page 29.

४. Jones, D.—An Outline of English Phonetics. 1956, Page 56.

५. Dr. Siddheshwar Verma—Critical Studies in Phonetic Observations of Indian Grammarians, 1929, Page 55.

६. Jones, D—An Outline of English Phonetics, 1956, Para 212, Page 56.

७. वही, Page 327-28.

अ—स्वर और व्यंजन के मध्य आक्षरिक सीमा—

Eye-sight ['a-sait] v-cvc

आ—दो या तीन व्यंजनों में से प्रथम व्यंजन के बाद—

Leap-Year ['li:p-jə:] cv:c-cv:

इ—तीन व्यंजनों में से प्रथम दो के बाद—

Bank-rate ['bænk-reit] cvcc-cvc

ई—व्यंजन और स्वर के मध्य—

Hair oil ['hɛər-oil] cvc-vc

## ४. १. २. २. हिन्दी तथा अंग्रेजी अक्षरों का विवेचन

४. १. २. २ १. दोनों भाषाओं के सामान्यतः अक्षर-नमूने इस प्रकार हैं:—

| | | अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | v | a | [æ] | ओ | [o:] |
| 2. | vc | Ash | [æʃ] | अड़ | [əṛ] |
| 3. | v:c | Art | [a:t] | आड़ | [a:ṛ] |
| 4. | vcc | Inch | [intʃ] | अन्त | [ən t̪] |
| 5. | cv | The | [ð ə] | कि | [ki] |
| 6. | cv: | Bar | [ba:] | तू | [t̪u:] |
| 7. | cv:c | Bag | [bæ:g] | पार | [pa:r] |
| 8. | cvcc | Lamp | [læmp] | पत्र | [pa t̪r] |
| 9. | cvc | Book | [buk] | कर | [ker] |
| 10. | cv:cc | Bank | [bæ:nk] | पात्र | [pa: t̪r] |
| 11. | ccvc | Black | [blæ k] | प्रेम | [prem] |
| 12. | ccv: | Star | [sta:] | श्री | [ʃri:] |
| 13. | ccv:c | Class | [kla:s] | ज्वार | [ð va:r] |
| 14. | ccvcc | Stand | [stænd] | क्लिष्ट[1] | [klis ṭ] |
| 15 | ccv:cc | | | श्रोत्र[1] | [ʃro:tr] |
| 16. | cccv: | | | स्त्री[2] | [s t̪ri:] |

१. अन्त ।अ। के उच्चारण के साथ द्व्याक्षरिक भी हो जाता है।

२. इस रूप में उच्चारण बहुत कम मिलता है। यह द्व्याक्षरिक हो जाता है।

17. ccvccc present [preznt] हिन्दी में नहीं प्राप्त ।
18. cccvc Spring [sprin.]

४. १. २. २. २. इस प्रकार हिन्दी एवं अंग्रेजी के अक्षरात्मक स्वरूप में विशेष अन्तर नहीं है, केवल तीन व्यञ्जनों का गुच्छ प्रारम्भ में नहीं आता है और यदि आता है, तो उसको दो अक्षरों में विभाजित कर दिया जाता है।

हिन्दी में cv तथा cvc अधिक प्रचलित रूप हैं ।[1]

---

१. अंग्रेजी में भी ६वाँ नमूना ।cvc। सबसे अधिक प्रयुक्त होता है ।

इस प्रकार का अध्ययन श्री मिलर ने भी प्रस्तुत करते हुए निम्नांकित तालिका प्रस्तुत की है —

| | |
|---|---|
| cvc | ३३.५ % |
| vc | २०.३ % |
| cv | २१.८ % |
| v | ६.७ % |
| cvcc | ७.८ % |
| vcc,ccvc | २.८ % |
| cc v | .८ % |
| ccvcc | .५ % |

Miller—Language and Communication, 1951, Page 88.

उर्दू पर विचार करते हुए डॉ० मसूद हुसैन खाँ भी यह स्वीकार करते हैं—

"CVC, contains by far the largest number of monosyllabic words and is the backbone of the language."—Masud Husain-A Phonetic and Phonological Study of a Word in Urdu. Ist Ed. Page 12.

"Most of the syllables in Awadhi are of the variety of a consonant plus a Vowel-CV-49%." Dr. B.R. Saxena—Evolution of Awadhi, 1937, Rule 130, Page 86.

## ४.१.२.३.१. अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों में समान अक्षर

४. १. २. ३. १.१ अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों में एकाक्षरिक शब्द—

| अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| Bill | [bil] | बिल | [bil] |
| Boot | [bu:t] | बूट | [bu:ṭ] |
| Bag | [bæ:g] | बैग | [bɛ.g] |
| Bank | [bæn,k] | बैंक | [bɛn,k] |
| Lamp | [læmp] | लम्प,लैम्प | [ləmp, lɛ:mp] |
| Rail | [reil] | रेल[1] | [re:l] |
| Coat | [kout] | कोट[2] | [ko:ṭ] |
| Brush | [brʌʃ] | बुरुश | [buruʃ] |
| Lord | [lɔ:d] | लाट | [la:ṭ] |

४. १. २. ३. १. २ अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों में द्व्यक्षारिक शब्द :—

| अंग्रेजी | | हिन्दी | |
|---|---|---|---|
| Baby | ['beibi] | बेबी | [be:bi:] |
| Hockey | ['hɔki] | हाकी | [ha:ki:] |
| Engine | ['endzin] | इंजन | [inɣən] |
| Control | [kən'troul] | कन्ट्रोल | [kənṭro:l] |
| College | ['kɔlidz] | कालेज | [ka:ieɣ] |
| | | कालिज | [ka:liɣ] |
| Lantern | [læntən] | लालटेन | [la:lṭe:n] |

४.१.२.३.१.३ तीन अक्षर के शब्द—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Advocate | [ædvəkeit] | एडवोकेट | [e:ḍvo:keṭ] |
| Arrowroot | [ærəru:t] | अरारोट | [əra:ro:ṭ] |

---

१. अंग्रेजी /ei–ऐ इ/ संध्यक्षर के स्थान पर हिन्दी में सर्वत्र 'ए' हो जाता है, जैसे--रेल, फेल, मेल, फ्रेम, गेम, जेल, केक, लेट आदि।

२. अंग्रेजी/ou--ओ उ/ संध्यक्षर के स्थान पर सर्वत्र हिन्दी में/o:-ओ/ हो गया है, जैसे—गोल, वोट, कोट; कोड आदि।

### ४.१.२.३.२ असमान अक्षर

४.१.२.३.२.१ एकाक्षरिक शब्द हिन्दी में द्व्याक्षरिक बन गए—

४.१.२.३.२.१.१ अंग्रेजी के संध्यक्षर / ai तथा au / हिन्दी में स्वरानुक्रम बन गए—

| | | | |
|---|---|---|---|
| File | [fail] cvc | फाइल | [pha:il] cv:-vc |
| Fine | [fain] | फाइन | [pha:in] |
| Down | [daun] | डाउन | [ḍa:un] |

४.१.२.३.२.१.२ वे शब्द जिनमें व्यंजन-गुच्छ टूटने से आक्षरिक परिवर्तन हो गया—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Glass | [gla:s] ccv:c | गिलास[1] | [gila:s] cv-cv:c |
| School | [sku:l] | इस्कूल | [isku:l] |

४.१.२.३.२.१.३ मुक्त एकाक्षरिक से बन्द एकाक्षरिक में—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bar | [ba:] | बार | [ba:r] cv:c |

४.१.२.३.२.२ दो अक्षर के शब्द हिन्दी में निम्नलिखित रूप में गृहीत हुए—

४.१.२.३.२.२.१. आक्षरिक व्यंजन सामान्य व्यंजन में बदल गये —

| | | | |
|---|---|---|---|
| Double | [dʌbl] | डबल | [ḍabəl] cv-cvc |

४.१.२.३ २.२.२ अन्तिम मुक्ताक्षर बन्दाक्षर में बदल गया—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Doctor | [doktə] cvc-cv | डाक्टर | [ḍa:kṭər]cv:c-cvc |
| Motor | ['moutə] | मोटर | [mo:ṭər)cv:-cvc |

४.१ २.३.२.२.३ दो अक्षर के शब्द हिन्दी में तीन अक्षर के हो गए—

४.१.२.३ २.२.३.१. व्यंजन-गुच्छ टूटने के कारण—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Station | ['steiʃən] | इस्टेशन[2] | [is e:ʃən]vc-cv:-cvc |

४.१.२.३.२.२.३.२ संध्यक्षर स्वर के स्वरानुक्रम में बदल जाने के कारण—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Fountain | ['fauntin] cvc-cvc | फाउन्टेन | [pha:unṭe:n] cv:-vc-cv:c |

---

१. हिन्दी में भी संस्कृत के एक आगत शब्द 'ग्लानि' में 'ग्ल' व्यञ्जन-गुच्छ प्राप्त होता है पर इसका भी शुद्ध उच्चारण कम ही प्राप्त होता है, प्राय 'गिलानी' ही सुनाई पड़ता है।

२. पंजाबी से प्रभावित उच्चारण 'सटेशन' में भी तीन अक्षर हैं।

४.१.२.३.२.३.१ तीन अक्षर के शब्द चार अक्षर में बदल गए—

४.१.२.३.२.३.१.१ व्यंजन-गुच्छ टूटने से—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Ammonia | [ə'mou njə] | अमोनिया | [a mo: n ja:] |

४.१.२ ३.२.३.१.२ संध्यक्षर स्वर के स्थान पर स्वरानुक्रम—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Engineer | ['əndziniə] | इंजीनियर[1] | [in ɣi: nɣiə] |

४.१.२.३.२.३.२.१ अंग्रेजी के तीन अक्षरों के शब्द हिन्दी में दो अक्षर[2] के रह गए—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Opera | ['ɔpərə] | ओपरा | [o:p ra:] |
| Cigarette | [sigəret] | सिगरेट | [s:g re: ṭ] |
| Factory | ['fæktəri] | फैक्ट्री | [phe:k ṭri:] |
| Company | ['kʌmpəni] | कम्पनी | [kəmpni:] |
| Pantaloon | [pæntə'lu:n] | पतलून | [pə ṯlu:n] |
| Battery | [bætəri] | बैटरी | [bɛ. ṭri:] |
| Chocolate | ['tʃɔkəlit] | चाकलेट | [ɣ a:kle: ṭ] |
| Italy | ['itəli] | इटली | [ɪ ṭli:] |

४.१.२.३.२.४ अंग्रेजी के चार अक्षरों के शब्द के स्थान पर हिन्दी में तीन अक्षर—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Honorary | ['ɔnərəri] | आनरेरी | [a:nre:r.:] |
| Apparatus | [æpereitəs] | अपरेटस | [apre: ṭəs] |
| Mathematics | [mæθi'mætiks] | मैथमैटिक्स | [me: ṯhme:-tiks] |

---

१. य-श्रुति का आगम है।

२. हिन्दी की प्रवृत्ति है कि दीर्घ स्वरान्त अक्षरों में द्वितीय स्वर का लोप हो जाता है—

बकरा उच्चरित रूप बक्‌रा

करना " " कर्‌ना

चार अक्षरों के ह्रस्व स्वरान्त शब्दों में—

मानसिक ··· मान्‌सिक्‌

कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, नवीन सं०, नियम ४०, पृष्ठ ४६ और आगे।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Economics | [i:kɔ'nɔmiks] | इकनोमिक्स | [ikno:miks] |
| America | [ə'merikə] | अमरीका | [amri:ka:] |
| Operation | [ɔpəreiʃən] | आपरेशन | [a:pre:ʃən] |

४.१.२.३.२.५ अंग्रेजी के पाँच अक्षरों के शब्द के स्थान पर हिन्दी में चार अक्षर के शब्द—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Laboratory | [læbərətəri] | लैबरेटरी | [lɛ:bre:ṭəri:] |

४.१.२.३.३. इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी से हिन्दी में गृहीत शब्दों के अन्तर्गत सामान्यतः कोई विशेष आक्षरिक परिवर्तन नहीं हुआ है, फिर भी हिन्दी की प्रवृत्ति में जो शब्द अपने को फ़िट न कर सके उनमें निम्नांकित आक्षरिक परिवर्तन दोनों रूपों में हो गया—

१. अक्षरों की वृद्धि
२. अक्षरों की न्यूनता

अक्षरों की वृद्धि के निम्नलिखित कारण रहे हैं—

अ—अंग्रेजी के सन्ध्यक्षर स्वरों का हिन्दी में अभाव।
आ—अंग्रेजी के व्यंजन-गुच्छों का हिन्दी में अभाव।
इ—अंग्रेजी के आक्षरिक व्यंजनों[1] का हिन्दी में अभाव।

---

१. अंग्रेजी में दो आक्षरिक व्यंजन हैं—१. /n/ २. /l/

१.१—/n/ 'अ' के साथ :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Button | [bʌtn] | बटन | [baṭən] |
| Dozen | [dʌzn] | दर्ज़न | [dərɣən] |

'इ' के साथ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Basin | [beisn] | बेसिन | [be.sin] |

१.२—/l/ 'अ' के साथ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bundle | [bʌndl] | बण्डल | [bənḍəl] |
| Rifle | [raifl] | राइफल | [raiphəl] |
| Final | [fainl] | फाइनल | [ph/fainəl] |
| Double | [dʌbl] | डबल | [ḍabəl] |
| Colonel | [kə:nl] | कर्नल | [karnəl] |
| Parcel | [pa:sl] | पारसल | [pa:rsəl] |

'इ' के साथ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bicycle | [baisikl] | बाइसिकिल | [ba:isikil] |
| Middle | [midl,] | मिडिल | [miḍil] |
| Handle | [hændl] | हैंडिल | [hɛ:nḍil] |
| Pencil | [pensl] | पेन्सिल | [pe:nsil] |

साथ—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Bugle | [bju:gl] | बिगुल | [bigul] |

## ४. २. अंग्रजी के शब्दों की आवृत्ति

प्रेमचन्द के उपन्यासों पर आधारित

| | शब्द | आवृत्ति | | शब्द | आवृत्ति |
|---|---|---|---|---|---|
| १. | डाक्टर | ४१५ | २७. | इन्टर | ३८ |
| २. | पुलिस | ३४८ | २८. | गवर्नर | ३८ |
| ३. | मोटर | ३२० | २९. | अस्पताल | ३७ |
| ४ | जेल | १८८ | ३०. | इंस्पेक्टर | ३४ |
| ५. | मिनिट | १२६ | ३१. | पार्क | ३४ |
| ६. | स्टेशन | १२१ | ३२. | टिकट | ३३ |
| ७. | डिप्टी | ११४ | ३३. | थियेटर | ३२ |
| ८. | अफ़सर | १०२ | ३४. | रेल | ३२ |
| ९. | फीस | ८४ | ३५. | कौंसिल | ३० |
| १०. | बोर्ड | ६८ | ३६. | एजेण्ट | २९ |
| ११. | फिटन | ६८ | ३७. | सिगरेट | २९ |
| १२. | स्कूल | ६१ | ३८. | कम्पनी | २९ |
| १३. | रिपोर्ट-रपट | ५८ | ३९. | बैंक | २८ |
| १४. | अपील | ५७ | ४०. | सिनेमा | २८ |
| १५. | गवर्नमेंट | ५४ | ४१. | मास्टर | २८ |
| १६. | म्यूनिसिपैलिटी | ५४ | ४२. | सुपरिण्टेण्डेण्ट | २८ |
| १७. | जज | ५२ | ४३. | पिस्तौल | २७ |
| १८. | मेम्बर | ५२ | ४४. | प्रोफेसर | २७ |
| १९. | लालटेन | ५१ | ४५. | बेंच, जेलर | २६ |
| २०. | मिल | ५१ | ४६. | कमिश्नर | २५ |
| २१. | कालिज | ५० | ४७. | म्यु० बोर्ड | २४ |
| २२. | कैम्प | ४६ | ४८. | बोतल | २३ |
| २३. | कांस्टेबिल | ४५ | ४९. | जेहल-जेल | २३ |
| २४. | लेडी | ४१ | ५०. | मैनेजर | २३ |
| २५. | मेम | ४० | ५१. | नोट | २३ |
| २६. | कोच | ३९ | ५२. | अर्दली | २२ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ५३. | डिग्री | २२ | ८०. | ड्रामा | १३ |
| ५४. | बैंड | २० | ८१. | गिलास | १३ |
| ५५. | हाईकोर्ट | २० | ८२. | स्टेज | १३ |
| ५६. | लैम्प | २० | ८३. | टेलीफोन | १३ |
| ५७. | मैजिस्ट्रेट | २० | ८४. | ट्रस्ट | १३ |
| ५८. | हारमोनियम | २० | ८५. | वार्डर | १३ |
| ५९. | बैरिस्टर | १९ | ८६. | फायर | १२ |
| ६०. | डिक्री-डिग्री | १९ | ८७. | पतलून | १२ |
| ६१. | पार्ट | १९ | ८८. | बोर्डिङ्ग हाउस | ११ |
| ६२. | सिगार | १८ | ८९. | बटन | ११ |
| ६३. | क्लब | १८ | ९०. | युरोपियन | ११ |
| ६४. | कोट | १८ | ९१. | हैंडबैग | ११ |
| ६५. | नम्बर | १८ | ९२. | मोटरकार | ११ |
| ६६. | क्लर्क | १७ | ९३. | पैंसिल | ११ |
| ६७. | पार्टी | १७ | ९४. | प्लेग | ११ |
| ६८. | पालिटिकल | १७ | ९५. | रिंग | ११ |
| ६९. | फैशन | १५ | ९६. | टमटम | ११ |
| ७०. | साइकिल | १५ | ९७. | कार्ड | १० |
| ७१. | लाट | १५ | ९८. | कमेटी | १० |
| ७२. | वोट | १५ | ९९. | डाइरेक्टर, युनिवर्सिटी | १० |
| ७३. | बैग | १५ | १०० | हेडमास्टर | १० |
| ७४ | कप्तान | १४ | १०१. | मिस | १० |
| ७५. | लीडर | १४ | १०२. | पोलो | १० |
| ७६. | पेन्शन | १४ | १०३. | टेनिस | १० |
| ७७. | रजिस्टर | १४ | १०४. | बक्स | १० |
| ७८. | स्पीच | १४ | १०५. | मिसेज | १० |
| ७९. | सिविल सर्जन | १३ | १०६. | डेपूटेशन | ९ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| १०७. | इंजन | ९ | १३४. | अलबम | ६ |
| १०८. | इंजीनियर | ९ | १३५. | एसोसियेशन | ६ |
| १०९. | लैस | ९ | १३६. | किरस्तान | ६ |
| ११०. | लारी | ९ | १३७. | डिनर | ६ |
| १११. | मैट्रन | ९ | १३८. | फेल | ६ |
| ११२ | मिस्टर | ९ | १३९. | फुटबाल | ६ |
| ११३. | सूट | ९ | १४०. | ग्रामोफोन | ६ |
| ११४. | टैक्स | ९ | १४१. | हाकी | ६ |
| ११५. | वारएट | ९ | १४२. | प्रोग्राम | ६ |
| ११६. | केस | ८ | १४३. | रेजिमेंट | ६ |
| ११७. | चार्ज | ८ | १४४. | सेशन | ६ |
| ११८. | शोफर | ८ | १४५. | सेट | ६ |
| ११९. | फैशनेबिल | ८ | १४६. | स्टाम्प | ६ |
| १२०. | नोटिस | ८ | १४७. | ट्रस्टी | ६ |
| १२१. | पास | ८ | १४८. | बजट | ६ |
| १२२. | प्यानो | ८ | १४९. | वारनिश | ६ |
| १२३. | सब इन्सपेक्टर | ८ | १५०. | क्लास | ६ |
| १२४. | कार | ७ | १५१. | बी० ए० | ५ |
| १२५. | कांग्रेस | ७ | १५२. | बाइसिकिल | ५ |
| १२६. | मशीन | ७ | १५३. | कमीशन | ५ |
| १२७. | मैच | ७ | १५४. | डेमफूल | ५ |
| १२८. | मील | ७ | १५५. | गैलरी | ५ |
| १२९. | ओवरकोट | ७ | १५६. | हिज एक्सीलैंसी | ५ |
| १३०. | प्लेटफार्म | ७ | १५७. | एम० ए० | ५ |
| १३१. | पलटन | ७ | १५८. | मलेरिया | ५ |
| १३२. | प्राइवेट सेक्रेटरी | ७ | १५९. | मार्क | ५ |
| १३३. | रजिस्ट्री | ७ | १६०. | आफिस | ५ |

कुछ शब्दों का प्रयोग संयोग से पाँच से भी कम बार हुआ है। पर जन-

साधारण में ये शब्द बहुप्रयुक्त हैं और इनकी आवृत्ति[1] किसी भी अन्य शब्द से कम नहीं। अपने-अपने क्षेत्र में तो इन शब्दों की निश्चित रूप से अधिक

---

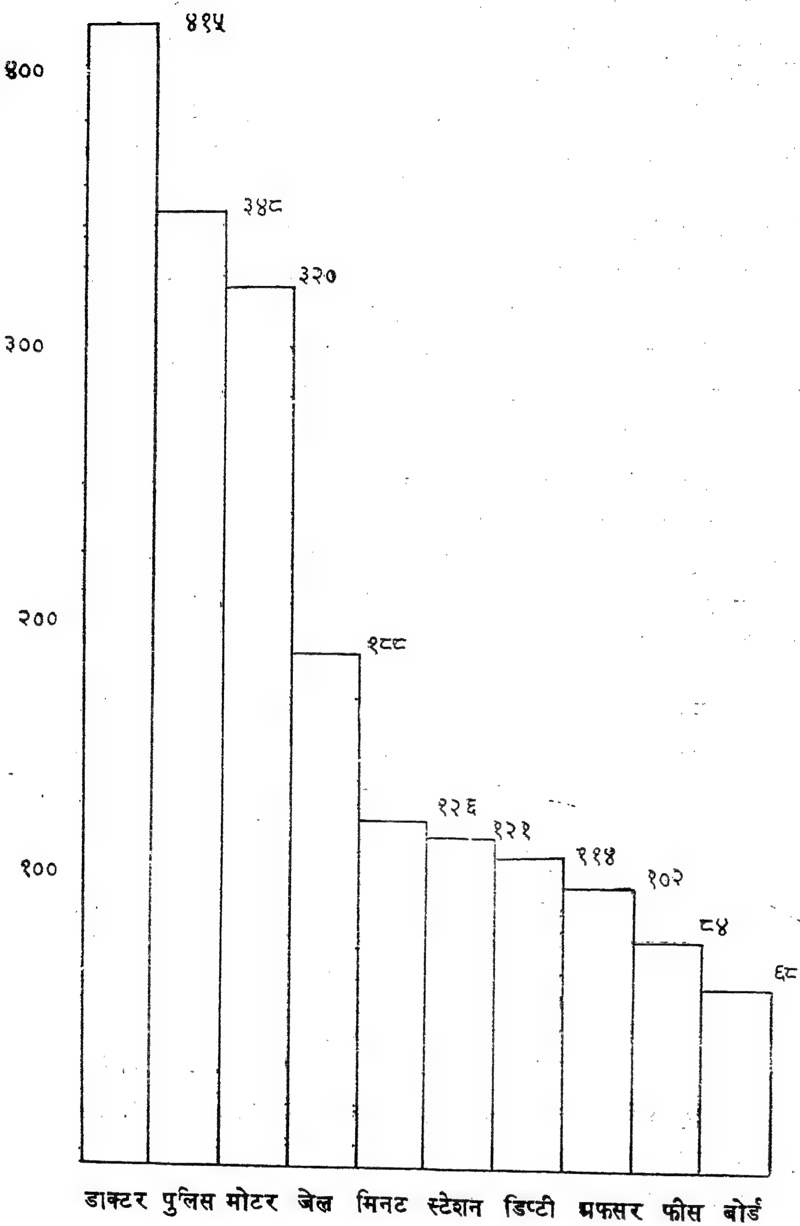
१. आवृत्ति मौखिक तथा लिखित दोनों आधारों से निकाली जा सकती है—

मौखिक आधार :—मौखिक आधार पर आवृत्ति हिन्दी और तमिल में श्री नयन* ने निकाली है। रेलवे में प्रयुक्त शब्दों की आवृत्ति के फल उन्होंने निकाले हैं। मौखिक रूप में आवृत्ति का कार्य आंशिक रूप में ही शुद्ध हो सकता है, इसीलिए श्री नयन ने अपने लेख में स्पष्ट किया है कि 'अपने अन्दाजे के अनुसार'......कुछ शब्दों की आवृत्ति नीचे दे रहे हैं।

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| रेल।रेलवे | १००० में | १२० | एक्सप्रेस | १००० में | ३० |
| ट्रेन | | ६० | कैरेज | | ३० |
| स्टेशन | | ८० | पोर्टर | | २० |
| टिकट | | ७० | कम्पार्टमेंट | | २० |
| प्लेटफार्म | | ६० | कनेक्शन | | २० |
| स्टेशन मास्टर | | ५० | शटल | | १० |
| मेल | | ५० | सीट | | १० |
| पैसंजर | | ४० | बिरैक (ब्रेक) वान | | १० |
| इंजन | | ३० | बालिस्टर | | १० से कम |

*श्री नयन का लेख 'हिन्दी और तमिल' देखिये जो 'दक्षिण भारत' नवम्बर १९५७ में प्रकाशित है।

लिखित आधार—मैंने इस सम्बन्ध में प्रेमचन्द के उपन्यासों पर कार्य किया है। प्रेमचन्द के सम्पूर्ण उपन्यास साहित्य के आँचल से अंग्रेजी शब्दों को एकत्र किया गया, तत्पश्चात् प्रत्येक शब्द की निश्चित आवृत्ति जानने के लिये वर्णमाला के अनुसार शब्दों का कार्डिंग किया गया। इस प्रकार यह ज्ञात हो सका कि प्रत्येक शब्द किस उपन्यास में कितनी बार आया है। सबसे अधिक आवृत्ति डॉक्टर शब्द की है। प्रथम दस शब्दों का रेखाचित्र संलग्न है। सम्पूर्ण शब्दों की संख्या ४९८ है, जिनमें से ५ और ५ से अधिक आवृत्ति के शब्दों को हम दे चुके हैं।


४१५
३४८
३२०
१८८
१२६
१२१
११४
१०२
८४
६८
४००
३००
२००
१००
डाक्टर पुलिस मोटर जेल मिनट स्टेशन डिप्टी अफसर फीस बोर्ड

आवृत्ति है :—एक्टर, एडवोकेट, एजेन्सी, बनियाइन, बैरङ्ग, बिल्टी, बिस्कुट, ब्लाउज, बम्ब, बुरुश, बस, कनस्तर, सीमेंट, चेयरमैन, चैक, कालर, कापी, डेरी, डिपो, डेस्क, डायरी, ड्राइवर, फैक्टरी, फिल्म, फाइल, फण्ड, फर्लाङ्ग, गजट, गैलन, गैस, होमियोपैथ, होस्टल, इंच, इन्कमटैक्स, इन्फ्लुएन्जा[1], लेवर, लवंडर, लेमोनेड, लेटरबक्स, लाइब्रेरी, लाइन, लाटरी, लेक्चर, मार्च, मैट्रिक, मिलिटरी, मिशन, मनीआर्डर, आर्डर, ओवरसियर, पैकट, पैडल, पेपर, परेड, फोटो, फोटोग्राफी, फोन, पिन, प्लेट, निमोनिया, पालिश, पाउडर, प्रेस, प्राइमर, प्राइवेट, प्रूफ, प्रोपेगंडा, क्वार्टर कुनेन, रसीद, रिकार्ड, रङ्गरूट, रन, स्काउट, सेकण्ड, सेक्रेटरी, सेशन जज, सिगनल, सोसायटी, अस्तबल, स्टीमर, स्टूल, स्टोव, सर्जन, सम्मन, तारकोल, टैक्सी, टी० बी०, टीम, टाई, ट्राम, ट्रंक, टाइप, टब, वाइसराय, वालंटियर, वोटर, वार्ड इत्यादि

कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिनकी आवृत्ति कम है और जनता में भी उनका प्रयोग बहुत कम होता है। निश्चय ही इन शब्दों का चलना कठिन है। उदाहरणार्थ हम अल्टरनेटिव, अगेन्स्ट, अप्रूवर, बोलशेविक, ब्रीचेज, कैरेक्टर, क्लोरोफार्म, कम्प्रोमाइज, कंजरवेटिव, कंशस, डेलीगेट, डिलिरियम, एमलशन मैजोरिटी, औपटिमिस्ट आदि शब्द ले सकते हैं।

| शब्द | उपन्यास | प्रथम प्रकाशन तिथि | आवृत्ति |
|---|---|---|---|
| डाक्टर | प्रतिज्ञा | १९०४ | ७ |
| | वरदान | १९०६ | २१ |
| | सेवा सदन | १९१४ | ३३ |
| | प्रेमाश्रम | १९१८ | ९८ |
| | निर्मला | १९२३ | ९८ |
| | रङ्गभूमि | १९२४ | ६९ |
| | कायाकल्प | १९२८ | १७ |
| | गबन | १९३० | १० |
| | कर्मभूमि | १९३२ | ५८ |
| | गोदान | १९३८ | ४ |
| | योग | | ४१५ |

१. १९५७ में तो इसकी लहर महामारी के रूप में सम्पूर्ण भारत में फैली जिसके फलस्वरूप इसका संक्षिप्त रूप 'फ्लू' शायद ही किसी के मुख पर न आया हो। कुछ काल तक तो इसकी आवृत्ति अधिकतम रही।

अध्याय ५

# रूप-विचार

तथा

# वाक्य-विन्यास पर अंग्रेजी का प्रभाव

अध्याय ५

# व्याकरण पर प्रभाव

५.० निस्सन्देह आगत शब्दों को किसी भी भाषा में उसी के व्याकरणिक रूपों में ढलकर चलना होता है। शब्द को अपने मूल रूप में ही भाषा में प्रवेश का सामान्यतः अधिकार रहता है। फिर भी जब ऐसे शब्दों की बड़ी संख्या हो जाती है तो वह ग्राहक भाषा के व्याकरण पर भी प्रभाव डालते हैं और ग्राहक भाषा के वैयाकरणों को उनके विषय में सोचना पड़ता है। यह समस्या वाक्य-विचार, शब्द-गठन, शब्द के व्याकरणिक रूप आदि सभी स्तरों पर उठ सकती है। साधारणत व्याकरण[1] को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

५. १—रूप विचार

५. २ —वाक्य विचार[2]

५. १ रूप-विचार के अन्तर्गत सर्वप्रथम संज्ञा और उसके विभिन्न रूपों पर विचार करना होगा। हिन्दी में अंग्रेजी के शब्दों को किस लिंग में रखा जाय और लिंगानुसार उनके रूपों को किस प्रकार परिवर्तित किया जाय, यह एक विकट प्रश्न है। अंग्रेजी के दो पृथक्-पृथक् रूप-मात्र हिन्दी में आकर एक हो गए। समध्वनीय भिन्नार्थक शब्दों (Homophone) का अर्थ-भेद प्रसंगानुसार ही जाना जा सकता है। ग्राहक भाषा संज्ञा के अनुसार उनका रूप भी अपने ही अनुकूल बना लेती है।

संज्ञा के बाद आगत शब्दों में विशेषणों की संख्या आती है। अन्य शब्द रूप (Parts of speech) तो बहुत कम ग्रहण किये जाते हैं। क्रियाएँ

---

१. हागन महोदय ने इसके अन्तर्गत १—लिंग २—संज्ञाओं के रूप ३—विशेषणों के रूप ४—क्रियाओं के रूप ५—समास-पद्धति ६—वाक्य-विचार माना है—Einar Haugen—The Analysis of Linguistic Borrowing Language, Vol. 26. P. 217.

२. इस सम्बन्ध में परिशिष्ट में कुछ विचार किया गया है।

सामान्यतः गृहीत नहीं होतीं। हिन्दी में अंग्रेजी की क्रियाएँ संज्ञा बनकर आईं, अतः उनका क्रिया-रूप प्रायः समाप्त हो गया है।

रचनात्मक प्रत्यय और उपसर्ग आदि तो विदेशी भाषा से बहुत कम आ पाते हैं,[१] पर आगत शब्दों में अपने ( ग्राहक भाषा के ) उपसर्ग, प्रत्यय लगाकर नवीन शब्दों की सृष्टि की जाती है; संकर तथा अनुवादमूलक सामासिक शब्दावली भी विकसित होती चलती हैं। कुछ शब्द लोक-निरुक्ति के आधार पर भी अपने नवीन रूप बदलते रहते हैं, जिनमें ध्वन्यात्मक परिवर्तन ढूँढ़ना हास्यास्पद होगा।

एक भाषा दूसरी भाषा से निम्नलिखित क्रम में शब्द, प्रत्यय तथा ध्वनि ग्रहण करती है।

| | | |
|---|---|---|
| अधिकतम | शब्द-रूप | संज्ञा<br>अन्य शब्द-रूप |
| निम्नतम | प्रत्यायादि | प्रत्यय<br>विभक्ति<br>ध्वनि |

यह निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जाता है :—

| | |
|---|---|
| शब्द - रूप ९९% | १%<br>अन्य |

१—जब किसी रचनात्मक प्रत्यय अथवा उपसर्ग-युक्त शब्दावली बढ़ती जाती है, तो कालान्तर में उसका उपसर्ग अथवा प्रत्यय देशी शब्दों के साथ भी आने लगता है।

२. मिलाइए—नार्वेजियन में अंग्रेजी शब्दावली का प्रतिशत इस प्रकार है —

| | | | |
|---|---|---|---|
| संज्ञा ७५.५% | क्रि०<br>१८ | वि०<br>३·४ | अन्य<br>२·६ |

Haugen—The Norwegian Language in America, University of Oslo.

हिन्दी में अंग्रेजी के शब्द-रूपों का प्रतिशत निम्नांकित तालिका से स्पष्ट किया गया है। यहाँ यह विशेष रूप से द्रष्टव्य है कि इनमें संज्ञा रूप ही अधिकतम हैं।

| | |
|---|---|
| संज्ञा ६१% | वि० ४.४% |

## ५.१.१ संज्ञा-शब्द

५.१.१ रूप-विवेचन—

सामान्यतः संज्ञा-शब्द अपरिवर्तित रूप में ही गृहीत होते हैं। विशेष रूपों में गृहीत कुछ संज्ञा-शब्दों का यहाँ विवेचन किया जा रहा है। इस विवेचन को दो भागों में रख सकते हैं—

५.१.१.१ दो विभिन्न रूपमात्रों का एकीकरण।

५.१.१.२ समध्वनीय भिन्नार्थक शब्द।

५.१.१.१ दो विभिन्न रूप-मात्रों का एकीकरण—

कभी-कभी ऐसा होता है कि दो विभिन्न रूपमात्र जिनका अर्थ ही भिन्न नहीं होता है वरन् जिनके उच्चारण में भी अन्तर होता है, दूसरी भाषा में जाकर अपना अर्थ-पार्थक्य रखते हुए भी रूपमात्र के भेद को मिटा देते है —

| | अंग्रेजी शब्द | उच्चारण | हिन्दी में गृहीत रूप |
|---|---|---|---|
| १ | Mile | [mail] | मील |
| | Mill | [mil] | |
| २. | Decree | [dikri:] | डिग्री |
| | Degree | [digri:] | |
| ३. | Gas | [gæs] | गैस। लालटेन तथा पेपर्स |
| | Guess | [ges] | |
| ४. | Course | [kɔ:s] | कोर्स। पाठ्यक्रम तथा कपड़ा। |
| | Coarse | [kɔəs] | |

| | अंग्रेजी शब्द | उच्चारण | हिन्दी रूप |
|---|---|---|---|
| ५. | Farm | [fa:m] | फ़ार्म-फारम (कृषि-क्षेत्र तथा प्रपत्र। |
| | Form | [fɔ:m] | |
| ६. | Cough | [kɔf] | कफ़। खाँसी तथा हाथ के बटन। |
| | Cuff | [kʌf] | |
| ७. | Patrol | [pə'troul] | पेट्रोल। मिलटरी, स्काउट तथा मोटर का पेट्रोल। |
| | Petrol | [Petrəl] | |
| ८. | Bomb | [bɔm] | बम। बम का गोला तथा तांगे का बम। |
| | Boom | [bu:m.] | |
| ९. | Coach | [koutʃ] | कोचवान का कोच ।कोच। गद्‌दीदार कुर्सी। |
| | Couch | [kautʃ] | |
| १०. | Tax | [tæks] | टिक्कस। कर तथा टिकट दोनों के लिए ग्राम में। |
| | Ticket | [tikit] | |
| ११. | Gimlet | [gimlit] | गिरमिट[1] |
| | Agreement | [ə'gri:mənt] | |

५.१.१.२ समध्वनीय भिन्नार्थक शब्द [Homonym-or Homophone]

कभी-कभी किसी विदेशी भाषा से शब्द का वही रूपमात्र गृहीत हो जाता है जो उस भाषा में पूर्ववत् प्रयुक्त होता है, फलतः संदर्भ से ही अर्थ का ठीक-ठीक ज्ञान हो पाता है अन्यथा भ्रम हो सकता है, जैसे फारसी से गृहीत 'आम'

१. नागरी प्रचारिणी सभा काशी—संक्षिप्त शब्द सागर, सं० १९९९, पृष्ठ ११५।

। साधारण । और अपने 'आम' । आम्र । में भ्रम हो सकता है । उदाहरणार्थ हम कुछ युग्म ले सकते हैं :—

| अंग्रेजी शब्द | उच्चारण | अर्थ | हिन्दी में गृहीत शब्द | हिन्दी का शब्द |
|---|---|---|---|---|
| १. Bar | [ba:] | वकालत | बार | बार । पुनरुक्ति । |
| २. Bill | [bil] | विधेयक | बिल | बिल । छिद्र । |
| ३. Chalk | [tʃɔ:k] | खड़िया | चाक | चाक । कुम्हार । |
| ४. Cork | [kɔ:k] | शीशी की डाट | काग | काग । कौआ । |
| ५. Fun | [fʌn] | मजाक | फन | फन[1]। साँप का । |
| ६. Lord | [lɔ:d] | शाही व्यक्ति | लाट | लाट । लम्बा । |
| ७. Cheese | [tʃi:z] | पनीर | चीज़ | चीज - वस्तु । |
| ८. Punch | [pʌntʃ] | छेद करना | पंच | पंच । ग्राम का मुखिया । |

## ५. १. १. ३ लिंग-विवेचन

५. १. १. ३. ०. हिन्दी में लिंग का अपना निजी महत्त्व है। इसका निर्णय करना एक समस्या है । हिन्दी के राजभाषा घोषित होने के बाद हिन्दीतर क्षेत्रों से कुछ ऐसे सुझाव आये हैं कि यदि हिन्दी को अहिन्दी भाषा क्षेत्र में आगे बढ़ना है, तो उसमें से लिंग को निकाल दिया जाय । यह प्रस्ताव कहाँ तक व्यावहारिक है, यह विचारणीय प्रश्न है। फिर भी हिन्दी में प्रयुक्त शब्दों का लिङ्ग-निर्णय करने का प्रयत्न श्री कामताप्रसाद गुरु, आचार्य किशोरीदास वाजपेयी तथा डॉ० हरदेव बाहरी ने किया है ।

५. १. १. ३. १. हिन्दी में लिङ्ग का पूर्णतया निर्णय करना कठिन है । इसके लिए व्यापक और पूरे नियम नहीं बन सकते, क्योंकि इसके लिये भाषा

१. फ़ारसी का भी शब्द 'फ़न' है जिसका अर्थ चालाक या चतुर होता है । यह भी शब्द हिन्दी में प्रचलित है । इस प्रकार एक ही रूपमात्र के तीन विभिन्न भाषाओं के तीन शब्द तीन भिन्न अर्थों में हिन्दी में प्रचलित हैं ।

में निश्चित व्यवहार का आधार है, तथापि हिन्दी में लिङ्ग-निर्णय दो प्रकार से किया जा सकता है :—

१—शब्द के अर्थ से।

२—शब्द के रूप से।

बहुधा प्राणिवाचक शब्दों का लिंग अर्थ के अनुसार और अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग रूप के अनुसार निश्चित करते हैं। शेष शब्दों का लिंग केवल व्यवहार के अनुसार माना जाता है और इसके लिये व्याकरण से पूरी सहायता नहीं मिल सकती।[1] डॉ० बाहरी भी विदेशी शब्दों का लिंग-निर्णय अर्थ साम्य और रूप साम्य के आधार पर ही करते हैं।[2]

५. १. १. ३. २. प्रस्तुत लेख में अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में गृहीत अंग्रेजी शब्दों के लिंग पर विचार करना है। मैंने हिन्दी में अंग्रेजी के लगभग २००० गृहीत शब्दों में से उन शब्दों को सर्वप्रथम पृथक् कर लिया जिनको हिन्दी भाषा-भाषी जनता ने स्त्रीलिङ्ग मान लिया है। कुछ शब्द अवश्य विवादास्पद हैं अन्यथा बहुप्रचलित प्रयोग के आधार पर उनका लिङ्ग निश्चित ही है।

५. १. १. ३. ३. रूप-साम्य के आधार पर ईकारान्त शब्दों को स्त्रीलिङ्ग मान लिया गया।[3] हिन्दी में कुछ अपवादों को छोड़कर समस्त ईकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग थे, इसी आधार पर अंग्रेजी के ईकारान्त शब्दों को हमने स्त्रीलिंग में ही माना है :—

उदाहरणार्थ—

| | |
|---|---|
| १. एजेंसी | ६. डिग्री |
| २. कम्पनी | ७. डायरी |
| ३. कमेटी | ८. सोसायटी |
| ४, चिमनी | ९. टैक्सी |
| ५. टाई | १०. फैक्ट्री आदि। |

---

१. हिन्दी व्याकरण—कामताप्रसाद गुरु [ लिंग निर्णय : २५७ ] संशोधित संस्करण, २००६, पृ० २४१।

२. डॉ० हरदेव बाहरी—हिन्दी में लिंग-विचार, हिन्दी अनुशीलन, वर्ष २, अंक ३, सं० २००६, पृ० १७।

३. वही, पृ० १७ तथा का० प्र० गुरु, हिन्दी व्याकरण—नि० २६५, पृ० २५१।

५. १. १. ३. ४. इस प्रकार के शब्दों की एक लम्बी सूची है जिस कोटि में लगभग ८० शब्द हैं। इनमें ईकारान्त वे शब्द भी हैं जो वस्तुतः अर्थ की दृष्टि से स्त्रीलिंग हैं, जिसमें 'लेडी' आदि शब्द आते हैं। वे सभी शब्द जिनमें [-ई] प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ बनाई गई हैं, इस कोटि में आ जाते हैं—

उदाहरणार्थ—

| | |
|---|---|
| १. अफसरी | ४. गवर्नरी |
| २. इंजीनियरी | ५. कलक्टरी |
| ३. डाक्टरी | ६. मिनिस्टरी |

फिर भी ईकारान्त शब्दों में कुछ ऐसे भी शब्द प्राप्त हुए हैं जो निश्चित रूप से अपवाद हैं—

| उदाहरणार्थ | आधार |
|---|---|
| १. अटरनी | एक प्रकार का मुख्तार |
| २. रिफ्यूजी | शरणार्थी |
| ३. सिटी | नगर |
| ४. रेफरी | पुरुष होने के कारण |
| ५. अरदली | चपरासी |
| ६. डैडी | पिता |
| ७. डिप्टी | अधिकतर पुरुष[1] ही होते हैं। |

५. १. १. ३. ५. स्त्रीलिंग प्रत्यय

५. १. १. ३. ५. १. स्त्रीलिंग बनाने के लिए अंग्रेजी के शब्दों में 'इन' प्रत्यय भी लगाते हैं।[2]

उदाहरणार्थ—

| | |
|---|---|
| १. मास्टर | मास्टरिन |
| २. डाक्टर | डाक्टरिन |
| ३. इन्स्पेक्टर | इंस्पेक्टरिन |

---

१. अब तो 'महिलाएं' भी होने लगी हैं। जब से 'इन्दिरा गाँधी' प्रधान मन्त्री बनी हैं 'मन्त्री' शब्द ही उनके लिए चल रहा है।

२. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण—नि० २८३, संशोधित संस्करण, २००६, पृ० २५८

५. १. १. ३. ५. २. स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'नी' प्रत्यय का ही अधिक प्रयोग होता है—

| | |
|---|---|
| १. डाक्टर | डाक्टरनी |
| २. मास्टर | मास्टरनी |

५. १. १. ३. ५. ३. कुछ ईकारान्त शब्दों में 'आइन' प्रत्यय लगाकर भी स्त्रीलिंग बनाया गया है—

डिप्टी — डिप्टआइन

५. १. १. ३. ६. इनके अतिरिक्त स्त्रीलिंग के अन्तर्गत वे शब्द आते हैं, जो व्यंजनान्त हैं।

५. १. १. ३. ६. १. शब्द का अन्तिम रूप 'स्वर व्यंजन' [vc] हो और स्वर दीर्घ ई [i:] हो। इस प्रकार के शब्दों की भी एक लम्बी सूची दी जा सकती है। उदाहरणार्थ कुछ शब्द दिये जाते हैं—

१. मशीन [म् अ श् ई न्]

कोई भी व्यंजन [v:c]

| | |
|---|---|
| २. टीम | ६. स्पीच |
| ३. फीस | ७. स्पीड |
| ४. सीट | ८. रील |
| ५. स्कीम | ९. सील |

१०. शीट

इस वर्ग के 'क्वीन' आदि शब्द तो स्वतः ही अर्थ की दृष्टि से स्त्रीलिंग हैं। इस नियम के एक दो अपवाद भी हैं, जैसेः—

सीन—सम्भवतः दृश्य पुल्लिंग के प्रभाव से

टीन[1]—धातु होने के कारण

इस वर्ग के एक शब्द के विविध लिंग भी द्रष्टव्य हैं—

पीस :—१. हमारी पीस हुई ( ताश का खेल )

२. मैंने एक पीस खरीदा ( कटपीस का टुकड़ा)

३. पीस भंग हो गई (शान्ति)

---

१. धातुओं को गुरुजी ने पुल्लिंग के अन्तर्गत रखा है, देखो व्याकरण नियम २४०।

५. १. १. ३. ६. २. दूसरी प्रवृत्ति जो शब्दों को स्त्रीलिंग बनाती है, वह है। अंग्रेजी के शब्द का अन्तिम रूप [in,] जिसको हिन्दी में इग् रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है—

उदाहरणार्थ हम निम्नलिखित शब्दों को ले सकते हैं—

| | |
|---|---|
| १. पिकेटिंग | ६. रोलिंग |
| २. कन्वेसिंग | ७. वोटिंग |
| ३. प्रिंटिंग | ८. एक्टिंग |
| ४. राशनिंग | ९. पेंटिंग |
| ५. स्प्रिंग | १०. मीटिंग |

इस कोटि में भी कुछ पूर्वप्रचलित अर्थ के कारण अपवाद मिल सकते हैं। जैसे—

ईअर रिंग अथवा एरिंग —कर्णफूल के कारण

लिविंग —जीवन स्तर

५. १. १. ३. ७. कुछ व्यंजानान्त शब्द अर्थ के कारण स्त्रीलिंग है और शेष को उसी अर्थ के हिन्दी में पूर्व प्रयुक्त शब्दों का लिंग प्राप्त हुआ है :—

प्रथम कोटि में मिस, मेम, मैडम, एक्ट्रैस, नर्स आदि रखे जा सकते हैं। दूसरी कोटि में निम्नलिखित शब्द हैं जिनके निकटतम अर्थ देने वाले पूर्व प्रचलित शब्दों के आधार पर लिंग निर्धारित हुआ है।[1]

| उदाहरण | आधार |
|---|---|
| बुक | किताब |
| वोट | नाव |
| आर्ट | कला |
| इंगलिश | भाषा |
| कमान | आज्ञा |
| कांग्रेस | सभा |
| कौंसिल | सभा |
| गवर्नमेंट | सरकार |
| चेअर | कुर्सी |

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—व्रजभाषा—(लिंग अनु० १४१) हिन्दुस्तानी एकेडेमी, १९५४।

| | | | |
|---|---|---|---|
| चेन | जंजीर | मेडिसन | दवाई |
| जाकेट | फितूरी | रिस्टवाच | घड़ी |
| ट्राम | गाड़ी | लाइन | रेखा |
| ट्रेन | गाड़ी | लिस्ट | सूची |
| कार | गाड़ी | लीग | सभा |
| ड्रिल | कवायद | शर्ट | कमीज |
| फीस | दक्षिणा | सर्विस | नौकरी |
| फिटन | गाड़ी | साइकिल | गाड़ी |
| इंक | स्याही | लाइफ | जिन्दगी |
| बटालियन | फौज | प्लेट | तश्तरी |
| बस | गाड़ी | रेल | गाड़ी |

५. १. १: ३. ८. कुछ शब्द दोनों लिंगों में प्रचलित है जिनमें से हम 'पतलून' ले सकते हैं। 'पतलून' टंगा है, और 'पतलून' टंगी है, दोनों ही रूप सुनने में आते हैं सम्भवतः पजामे के साथ होने के कारण इसको पुलिंग बना दिया गया हो। एक और बहुप्रचलित शब्द 'स्प्रिट' है जिसके लिंग पर भी विचार-विमर्श कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है। भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हुए भी इसके लिंग में परिवर्तन कर हिन्दी में यह निम्नलिखित अर्थों में गृहीत हुआ है।

| | |
|---|---|
| १. अर्क | स्परिट अच्छी है। |
| २. मदिरा का सार | |
| ३. उत्साह | काम करने के लिए स्प्रिट की आवश्यकता होती है। |
| ४. स्वभाव | |
| ५. प्रेतात्मा | मैंने स्प्रिट बुलाई। |

इस प्रकार यह शब्द विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है और स्त्रीलिंग में ही इसका प्रयोग अधिक होता है, पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसका प्रयोग पुल्लिंग में किया है—उसका स्पिरिट नया है।[२]

१. शब्द सागर—ना० प्र० सभा, काशी, ७वाँ खण्ड, छूटे हुए शब्द और अर्थ, पृष्ठ ३६६४।

२. श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी—हिन्दी साहित्य की भूमिका, तीसरी बार, १६४८ ई०, पृ० १२३।

५. १. १. ३. ६. यहाँ भाषावैज्ञानिक आधार पर कुछ नियम निर्धारित करने का प्रयास किया गया है, फिर भी कुछ विदेशी शब्द ऐसे हैं, जिनका लिंग-निर्धारण करना और उनको नियमबद्ध करना कठिन ही प्रतीत होता है। डॉ० धीरेन्द्र जी ने टेसन-स्टेशन शब्द लिया है जिसको पश्चिम[1] में पुलिंग और धुर पूर्व में स्त्रीलिंग माना जाता है।[2]

---

१. पश्चिमी हिन्दी का लिंग ही परिनिष्ठित हिन्दी में मान्य है। 'प्रान्तीयता' का प्रेम छोड़कर दिल्ली, मथुरा, आगरे के प्रयोगों का अनुकरण सबको करना चाहिये क्योंकि मेरी समझ में यहीं के प्रयोग शुद्ध और माननीय हैं। ० ० ०. दिल्ली, मथुरा, आगरा इन तीनों में मतभेद हो तो आगरे को प्रधानता देनी चाहिए।"—जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी—

हिन्दी में लिंग-विचार नवम् हिन्दी साहित्य सम्मेलन-बम्बई, सं० १६७६, पृ० १०६-११६।

२. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—ब्रजभाषा—लिंग—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद १६५४, अनुच्छेद १४१।

## वचन

### ५. १. १. ४ वचन-विवेचन

५. १. १. ४. ० अंग्रेजी के अनेक शब्दों को हमने मूल रूप में ग्रहण किया है, इससे हमारी दुर्बलता प्रकट नहीं होती है। सभी सजीव भाषाओं का यही हाल है। शब्द पराये अवश्य हों, पर उनको हमें अपनी व्याकरण पर ही ढालना चाहिए।[1] अंग्रेजी के शब्द हिन्दी में आते-जाते हैं, वे भी हिन्दी व्याकरण के अनुसार ही चलते हैं और उनको चलना भी चाहिये। जीवित समुदाय इन्हें लेकर अपनी निजी ध्वनि और व्याकरण के साँचे में ढाल लेता है।[2]

५. १. १. ४. १. इसी सम्बन्ध में राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद के विचार भी द्रष्टव्य हैं। 'ट्रेन', 'टिकट', 'लालटेन', इत्यादि शब्द प्रचलित हैं, इनका बहुवचन अंग्रेजी के नियमानुसार अन्त में 'एस' जोड़कर[3] नहीं बनाते हैं, वरन्

---

1 Einar Haugen—The Analysis of Linguistic Borrowing, Language, Vol-26, Page 217.

Bloomfield, L.—Language, 25. 6. New York, Feb. 1956, Page 453.

२. डॉ० बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषा-विज्ञान, सं० २०१३, पृ० १२८।

३. अंग्रेजी में बहुवचन बनाने की विधियाँ निम्नलिखित हैं—

/-z/ Voiced Consonants and Vowels,

/-iz/ Words ending in Sibilants,:s, z,ʃ,ʒ,c, i,

/-s/ Voiceless sounds p, t, k, f, θ

/-O /Sheep, Fish, Deer

/æ-e/ man

/oo-ee/Tooth, foot

/-en/ox

विस्तृत विवेचन के लिए देखिये—

Gleason, H. A.—An Introduction to Descriptive Linguistics, 1956, 98.

'ए' या 'ओ' जोड़कर ही बनाते हैं या बनाना उचित है।[1] 'स्टेशन' का स्टेशनों —न कि स्टेशन्स्— होगा। इसी में स्वाभाविकता है।[2]

५. १. १. ४. २. हिन्दी में बहुवचन के रूप निम्नलिखित प्रकार से बनते हैं:—[3]

५. १. १. ४. २. १—पुल्लिग व्यञ्जनान्त तथा कुछ स्वरान्त संज्ञाओं में प्रथमा एकवचन तथा बहुवचन के रूप समान होते हैं, जैसे—

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| घर | घर |
| आदमी | आदमी |
| बर्तन | बर्तन |

५. १. १. ४. २. २—स्त्रीलिंग आकारान्त तथा व्यञ्जनान्त संज्ञाओं में प्रथमा बहुवचन में [-एँ] लगता है, जैसे—

| एकवचन | बहुबचन |
|---|---|
| रात | रातें |
| औरत | औरतें |
| कथा | कथाएँ |

५. १. १. ४. २. ३—पुल्लिग आकारान्त शब्दों में प्रथमा बहुवचन में 'आ' के स्थान में [-ए] का प्रयोग होता है, जैसे—

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| लड़का | लड़के |
| साला | साले |

---

१. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद—हिन्दी सर्वमान्य राष्ट्रभाषा, प्रताप, दिनांक २-११-१६४७, पृ० १७।

२. डॉ० बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषा-विज्ञान, सं० २०१३, पृष्ठ १२६।

३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १६४६, पृष्ठ २५६-२५७।

इनका गुरु[1] जी ने अपवाद भी दिया है।

५. १. १. ४. २. ४—स्त्रीलिंग ईकारान्त शब्दों में अनुस्वार-युक्त [-इयां] कर दिया जाता है। जैसे, लड़की-लड़कियाँ, लठिया-लठियाँ।

५. १. १. ४. २. ५. अन्य समस्त विभक्तियों के बहुवचन शब्द में समान रूप से—ओं लगता है, जैसे—घरों, लड़कों, पोथियों इत्यादि।

ईकारान्त शब्दों में ई ह्रस्व हो जाती है और 'ओं' के स्थान पर 'यों' हो जाता है।

नोट—बहुवचन का भाव प्रकट करने के लिये—लोग, गण, जाति, जन, वर्ग आदि समूहवाचक शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है।

५. १. १. ४. २. ६. हिन्दी में बहुवचन की प्रवृत्ति को दुनीचंद जी[2] ने निम्नांकित चार्ट में प्रकट किया है—

---

१. देखिये कामताप्रसाद गुरु—नि०२८६ पृ० २६२-६३। हिन्दी व्याकरण।

१. साला, भानजा, भतीजा, बेटा, पोता को छोड़कर काका, मामा, लाला, नाना, दादा, राना, पंडा, और सूरमा आदि के दोनों वचनों में एक ही रूप।

२. "ऋ" "न" से अन्त होने वाले संस्कृत से बने शब्दों में आकारान्त बहु० में अविकृत रहते हैं, जैसे—पिता, योद्धा, राजा, आत्मा, देवता। यौगिक में दोनों जैसे—लड़का-बच्चा, लड़के-बच्चे।

३. व्यक्तिवाचक आकारान्त पुल्लिग संज्ञाएँ अविकृत रहती हैं, जैसे—सुदामा, रामलीला।

२. श्री दुनीचंद—पंजाबी और हिन्दी का भाषा विज्ञान, सं० १६८२, पृष्ठ १८२।

| | अकारान्त पु० | | शेष पुल्लिग | | ईकारान्त स्त्री० | | शेष स्त्री० | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | एक० | बहु० | एक० | बहु० | एक० | बहु० | एक० | बहु० |
| कर्ता | आ | ए | — | — | ई | आं[1] | — | एं |
| कर्म | ए | ओं | — | ओं | — | ओं[2] | — | ओं |

उक्त चार्ट को दूसरे प्रकार से निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है[3]—

कर्ता बहुवचन— e: ⌣ ए ⌣ ẽ: ⌣ एँ ⌣ ã: ⌣आं

कर्म बहुवचन— õ: ओं

५. १. १. ४. ३. उक्त नियमों के आधार पर ही अंग्रेजी के शब्दों का बहुवचन बना लिया गया है और आज हिन्दी के रूप में प्रचलित हैं।

५. १. १. ४. ३. १. नियम दो के अनुसार जिन अंग्रेजी शब्दों को स्त्रीलिंग[4] मान लिया गया है, उनमें [–ẽ] लगाकर ही बहुवचन बनाया गया, जैसे—अपीलें, फाइलें, सीटें, लालटेनें, मशीनें, मिसें, मोटरें, नर्सें, बोतलें, पलटनें, रिपोर्टें, स्कीमें और स्प्रिंगें आदि।

५. १. १. ४. ३. २. नियम तीन से अनुसार आकारान्त पुल्लिग शब्दों में अन्तिम 'आ' के स्थान पर 'ए' हो गया है। जैसे—

| एकवचन | बहुवचन |
|---|---|
| डिप्लोमा | डिप्लोमे |
| ड्रामा | ड्रामे |
| फार्मूला | फार्मूले |

१. 'इ' के साथ होने के कारण—य श्रुति का आगम हो जाता है।

२. वही कारण।

३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सन् १६४६, पृ० २५०।

| | पुल्लिग | | स्त्रीलिंग | |
|---|---|---|---|---|
| | एक० | बहु० | एक० | बहु० |
| | आकारान्त शब्द (कुछ) | | | |
| मूलरूप | —आ | —ए | — | —एं |
| विकृतरूप | —ए | —ओं | — | —ओं |
| | अन्य | | | |
| मूलरूप | — | — | — | —एं—आँ |
| विकृतरूप | — | —ओं | — | —ओं |

४. स्त्रीलिंग मानने के आधार एवं विवेचन के लिये देखिये—लिंग प्रकरण ५. १. १. ३.

५. १. १. ४. ३. ३. नियम चार के अनुसार समस्त ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में अन्तिम 'ई' को ह्रस्व इ में बदल कर —याँ जोड़ दिया जाता है, जैसे—

| शब्द | कर्त्ता बहुवचन | कर्म बहुवचन |
|---|---|---|
| कापी | कापियाँ | कापियों |
| डिग्री | डिग्रियाँ | डिग्रियों |
| फैशनवाली | फैशनवालियाँ | फैशनवालियों |
| लेडी | लेडियाँ | लेडियों |
| पार्टी | पार्टियाँ | पार्टियों |

५. १. १. ४. ३. ४. नियम पाँच के अनुसार शेष शब्दों में [ओं] लगाकर बहुवचन बनता है, जैसे—डायरेक्टरों, डाक्टरों, दर्जनों, हंटरों, इंजेक्शनों, लेक्चरों, मास्टरों, मिनटों, पैक्टों, बूटों, बक्सों, कार्डों, क्लर्कों आदि।

ईकारान्त पुल्लिंग शब्द में ई के कारण य-श्रुति का आगम हो जाता है, जैसे—अरदली-अरदलियों।

५. १. १. ४. ४. इस प्रकार उक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी के सभी गृहीत शब्द हिन्दी के व्याकरण के ढाँचे पर ढाले गये हैं, फिर भी अपनी वेश-भूषा में कुछ शब्द इतने प्रचार में आ चुके हैं कि उन पर भी विवेचन अपेक्षित है। इन शब्दों में सर्वप्रथम 'फुट' को लिया जा सकता है, जिसका अंग्रेजी बहुवचन 'फीट' भी प्रचलित है। श्री चन्द्रबली पांडे इस पर विचार करते हुए लिखते हैं "यहाँ हिन्दी में फुट का बहुवचन अंग्रेजी के ढंग पर फीट बनाया जा रहा है, जो हिन्दी की दृष्टि से नितान्त अशुद्ध है। हम हिन्दी में इसे इस प्रकार नहीं लिख सकते हैं कि "एक गज में कितने फुट हुए, फिर यह फीट का प्रयोग कैसा। यह तो हिन्दी नहीं, हिन्दी भाषा का उपहास है।"[1]

इसी शब्द के बहुवचन पर विचार करते हुए बाबूराव विष्णु पराड़कर कहते हैं "फुट का बहुवचन फुट ही होता है और दो फुट, तीन फुट लिखना

---

१. चन्द्रबली पाण्डे—राष्ट्रभाषा पर विचार, प्रथम सं०, २००२, सरस्वती मन्दिर, काशी, पृष्ठ ११० ।

चाहिए न कि दो फीट या तीन फीट। स्कूलों में पढ़ाई जाने वाली गणित की पुस्तकों में "फीट" देखकर मुझे तो "फिट" आने लगता है। इसी प्रकार स्टेशन 'इस्टेशन' बनकर आया, पर इसका बहुवचन स्टेशन नहीं बना।" राह में हमने बड़े-बड़े स्टेशन देखे न कि स्टेशन्स देखे।" ......अंग्रेजी में भी हिन्दी से कई शब्द गये हैं, जैसे—जंगल, पंडित आदि। उनके बहुवचन अंग्रेजी के भाषा के नियमों के अनुसार जंगल्स,[1] पंडित्स आदि होते हैं। शब्दों को भाषान्तरित होने के साथ ही साथ व्याकरणान्तरित भी होना चाहिए।"[2]

राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद का कथन था कि "ड्राइवर" का हिन्दी में रहना अच्छा है, किन्तु "ड्राइवर" को हिन्दी का जामा पहनना होगा और बहुवचन बनाने के लिये 'एस'[3] की तलाश नहीं करनी होगी।[4]

५. १. १. ४. ५. समय-समय पर देश के राजनीतिक नेताओं और साहित्यिकों के प्रयत्न के बाद भी अनेक शब्द विदेशी जामा पहने हुए भारतीयों के मध्य स्थित हैं, पर इतना निश्चित है कि उनका प्रयोग निश्चित क्षेत्र में होता है, उदाहरणार्थ मैं अपने अध्ययन की सामग्री के आधार पर कुछ शब्दों के प्रयोगों को ले सकता हूँ।

१. वर्कर्स—कांग्रेस वर्कर्स की मीटिंग आज संध्या को मेरे यहाँ होगी।

२. एडवोकेट्स—एडवोकेट्स एसोसियेशन।[5]

---

१. 'जंगल' का बहुवचन अंग्रेजी में 'जंगल्स' न होकर 'जंगल्ज़' होगा।

२. बाबूराव विष्णु पराड़कर—राष्ट्रभाषा हिन्दी, सं० क्षेमचन्द्र सुमन, सन् १६४८, पृ० ६६।

३. इस स्थल पर 'एस' की तलाश के स्थान पर 'ज' की तलाश होगी। (केवल अंग्रेजी भाषा-भाषी द्वारा।)

४. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद—शब्द पराये हों व्याकरण हमारी ही रहेगी कर्मवीर—१-११-१६४१, पृष्ठ १२।

५. क० म० मुन्शी—अभिशाप, हिन्दी अनुवाद, तृतीय सं०, पृष्ठ ६३।

३ बेड्स—बेड्स-अस्पताल में।[1]

४. केसिज—केसिज [केसेज़] डाक्टर तथा वकील।[2]

५. प्रेज़ेन्ट्स[3]—विवाह के अवसर पर।

६. टर्म्स—व्यापार में, व्यवहार में।[4]

७. स्वीपर्स—हिन्द स्वीपर्स समाज की स्थापना।[5]

५. १. १. ४. ६. यह उचित है कि इस प्रकार के बहुवचन रूपों का प्रयोग किसी भी भाषा के लिए अपमानजनक है, फिर भी कुछ शब्द अपने बहुवचन-रूप में अधिक प्रचलित हो चुके हैं।

बहुप्रचलित शब्द 'फीस' अंग्रेजी शब्द 'फी' का ही बहुवचन है। यह शब्द अपनी अंग्रेजी की वेशभूषा में इतना अधिक मान्य है कि इसको तो स्वीकार करना ही होगा, क्योंकि आज के युग में कोई कार्य बिना 'फीस' दिये होता नहीं। फिर 'फीस' तो निश्चित रूप से बहुवचन ही रहा और 'फीट' भी, पर हम भूल गये इन बहुवचन रूपों को और इस रूप में गृहीत शब्दों का फिर से बहुवचन बनाने का प्रयत्न करने लगे। ऐसा अन्य भाषाओं[6] में भी मिलता है।

अंग्रेजी शब्द Drawers ( a sliding box ) [drɔːəz] हिन्दी में अंग्रेजी उच्चारण के अनुसार बहुवचन रूप 'दराज' में ही प्रचलित है। Match-box [mætʃ bɔks] का बहुप्रचलित रूप हिन्दी में माचिस

---

१. जैनेन्द्र—जैनेन्द्र की कहानियाँ, भाग ५, सन् १९५३, पूर्वोदय प्रकाशन, पृष्ठ १५७।

२. उदयशंकर भट्ट—नये मोड़, प्रथम सं०, मसिजीवी प्रकाशन, पृष्ठ १२।

३. भगवतीचरण वर्मा—इन्स्टालमेंट, सं० २००६, पृष्ठ ५।

४. इलाचन्द जोशी—सुबह के भूले, वि० सं०, सन् १९५४, पृष्ठ २०४।

५. दैनिक हिन्दुस्तान, शुक्रवार, ६ सितम्बर, १९५७, वर्ष २५, अंक २४५–३।

६. Einar Haugen—Analysis of Linguistic Borrowing, Language, Vol 26, Page 218.

वस्तुतः Matches [mætʃiz] का रूप है जिसकी अन्तिम ध्वनि अघोष हो गई है।

### ५. १. २. विशेषण

एक भाषा दूसरी भाषा से सबसे अधिक संज्ञा शब्दों को ही लेती है। इसके बाद "विशेषण" रूपों को ही लिया जा सकता है। सर्वनाम तो मुश्किल से ही एक भाषा से दूसरी भाषा में प्रवेश कर पाते हैं।

### ५. १. २. १. अंग्रेजी के विशेषण जो बिना परिवर्तन के प्रयुक्त होते हैं —

१. १ ज्यूडिसियल, डिविजनल, ऐडीशनल, इंडस्ट्रियल, इम्पीरियल एजूकेशनल, फाइनेन्सियल।

१. २ मेडीकल, लोकल, सेन्ट्रल, स्पेशल, सोशियल, लिबरल, रायल, पोलिटिकल, जनरल, क्रिटिकल, नेशनल, फाइनल।

१. ३ आनररी, प्राइमरी, आर्डिनरी, लिटररी, वैटरनरी, मिशनरी।

१. ४ असिस्टेंट, क्लास, डबल, ग्राण्ड, सैकण्ड, फैन्सी, ओवर, जूनियर, क्रास, क्रेक, फ़ाइन, रफ़, इंगलिश, पेटेण्ट, गोल्डन, हेड, हाफ।

१. ५ मर्सराइज्ड, सुगरकोटेड, क्लीनशेव्ड, सिविलाइज्ड, बौन्ड, बाइल्ड[1], इड्यूकेटेड[2]

१. ६ स्टैंडिंग, इन्ट्रेस्टिंग, हाल्टिंग।

१.७ कार्बोलिक, कास्टिक।

---

१. निराला—सुकुल की बीबी; तृतीय सं०, २०१२, पृष्ठ ६१।

२. 'इड्यूकेटेड हिन्दू, सिविलाइज्ड, इंगलिसाइज्ड केशवसेन' हरिश्चन्द्र चन्द्रिका, नव० १८७३, पृष्ठ ३८;

## ५. १. २. २. अंग्रेजी के शब्द जो प्रत्यय लगाकर विशेषण बना लिये गये हैं—

आर्डरी, अपीली, अफसरी, स्कूली, स्लेटी नंबरी, चाकलेटी, गोलफ़ेमी, योरोपिय, बोतलिया, थर्डरेटी, मार्का,[1] ब्लेकमारकेटी।

नोट :—मोटे छपे शब्दों को अधिक व्यवहृत माना जा सकता है।

## ५. १. ३ क्रिया

अंग्रेजी के वे शब्द जो क्रिया-रूप में प्रयुक्त होते हैं, हिन्दी में बहुत कम प्राप्त होते हैं। इस प्रकार के केवल दो प्रयोग मिलते हैं :—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | रूल | रूलना | दबा देना |
| २. | फिल्म | फिल्माना<br>फिल्माया[2] | फिल्म बनाना |

अन्य अंग्रेजी क्रियाओं का प्रयोग हिन्दी में क्रिया रूप में न करके संयुक्त क्रिया में होता है—

१. बहुप्रयुक्त

२. कमप्रयुक्त

| | | |
|---|---|---|
| ५. १. ३. १ बहुप्रयुक्त | १. १ टू आर्डर | आर्डर देना<br>— आना<br>— मिलना |

---

१. पुर्तगीज शब्द भी 'मार्का' है।

२. अ—बाद में इसकी सफलता से प्रभावित होकर ए० वी० एम० ने इसे 'बहार' के नाम से हिन्दी में भी 'फिल्माया' हिन्दुस्तान १२–१–१९५८, वर्ष २६, अंक १२-३, पृष्ठ १०।

आ—उन्होंने मानो अपने अंचल को 'फिल्मा' दिया है। सुप्रभात दिवाली विशेषांक, नवम्बर १९५७, पृ० १६।

इ—अब शत प्रतिशत इसको ही फिल्माया जाता है। 'हाई आवर' कैलाश वाजपेयी। ज्ञानोदय, वर्ष ८, अंक १०, अप्रैल १९५७, पृ० ८५।

| | | | |
|---|---|---|---|
| | १.२ | टू चार्ज | चार्ज देना |
| | | | — लेना |
| | | | — लगना |
| | | | — लगाना |
| | | | — पड़ना |
| | १.३ | टू फिट | फिट करना |
| | १.४ | पैक करना | पैक करना |
| ५.१.३.२ कमप्रयुक्त | ३.१ | टू इन्वाइट | इन्वाइट किया |
| | २.२ | टू इन्टरव्यू | इन्टरव्यू करना |
| | | | — लेना |
| | २.३ | टू एक्ट | एक्टिंग करना |
| | २.४ | टू रिस्क | रिस्क उठाना |
| | २.५ | टू सरेण्डर | सरेण्डर किया |
| | २.६ | टू सस्पेंड | सस्पेंड किया |
| | २.७ | टू सेटिल | सेटिल किया |
| | २.८ | टू डिसकस | डिसकस करना |
| | २.९ | टू डिसमिस | डिसमिस करना |
| | २.१० | टू ड्राइव | ड्राइव करना |
| | २.११ | टू फिक्स | फिक्स करना |
| | २.१२ | टू पम्प | पम्प करना |
| | २.१३ | टू बुक | बुक करना |
| | २.१४ | टू कापी | कापी करना |
| | २.१५ | टू नोट | नोट करना |
| | २.१६ | टू जैम | जैम होना |
| | २.१७ | टू मैच | मैच करना |
| | २.१८ | टू स्टार्ट | स्टार्ट करना |
| | | | — होना |
| | २.१९ | टू सर्वे | सर्वे करना |
| | २.२० | टू फ़ील | फ़ील करना |

### ५. १. ३. ३ कृदन्त

बोटिंग, वोटिंग, चीटिंग, हैंडिंग, रि-टचिंग, शंटिंग, पेरिंटग, कनवेसिंग, पोलिंग, मीटिंग, राशनिंग, रेलिंग, ट्रेनिंग, शूटिंग, प्रोसीडिंग, प्लानिंग।

उपर्युक्त क्रियाओं का प्रयोग कुछ क्षेत्रों में अधिक अवश्य होता है, किन्तु कुछ क्षेत्रों में बहुत ही कम, क्योंकि ये मध्य वर्ग तक ही सीमित रहते हैं, जनसाधारण में प्रचलित नहीं हैं; और यह है भी प्रकृति के प्रतिकूल कि हिन्दी में शब्द न लेकर अन्य भाषा के व्याकरणिक रूप भी लिये जायें। यह हिन्दी के लिए उचित नहीं, वरन् चिंत्य है।

### ५. १.४ मिश्र शब्द

५. १. ४. ० इस कोटि में उन शब्दों को सम्मिलित किया जाता है, जिनमें मूल शब्द के साथ कोई अपना निरर्थक या सार्थक प्रत्यय अथवा उपसर्ग जोड़ दिया जाता है।[1]

५.१.४.१ निरर्थक-प्रत्यय-युक्त—इस कोटि के अन्तर्गत वे शब्द आते हैं, जिनमें कोई निरर्थक प्रत्यय जोड़ लिया गया हो, पर साथ ही अर्थ में कोई अन्तर नहीं पड़ता है। ऐसे शब्द कम पाये जाते हैं, फिर भी उदाहरणार्थ निम्नलिखित शब्द लिये जा सकते हैं—

| हिन्दी में प्रयुक्त रूप | अंग्रेजी शब्द | निरर्थक प्रत्यय |
|---|---|---|
| फूटा | फुट | आ |
| बक्सा | बक्स | आ |

५.१.४.२ सार्थक प्रत्यय तथा उपसर्ग से युक्त—हिन्दी में अनेक शब्द इस प्रकार के प्रचलित हैं जिनका मूल अपनी भाषा का है और सार्थक उपसर्ग अथवा प्रत्यय अंग्रेजी भाषा के हैं या मूल रूपमात्र अंग्रेजी तथा उपसर्ग अथवा प्रत्यय हिन्दी का है।

५. १. ४. २. १. वे शब्द जिनमें मूल रूप-मात्र हिन्दी का है —

---

१. Einar Haugen—The Norwegian Language in America, Vol. I& II; Chapter XV (Edition I)

१—विदेशी उपसर्गों[1] द्वारा निर्मित—

| | | |
|---|---|---|
| अ—हेड | : | हेडपंडित |
| आ—हाफ़ | : | हाफ़कमीज |
| इ—डबल | : | डबलरोटी[2] |

२—विदेशी प्रत्यय द्वारा निर्मित—

१. अं०—डम् : हि० डम्[3] : गुरुडम[4]

१. Inflections and suffixes can be adopted along with loanwords and thus become productive in the new –Einar Haugen, Problem of Bilingualism Lingua II/271-290.

२—डबल रोटी के लिए दूसरे बहुप्रयुक्त शब्द पावरोटी के लिए अन्य पृष्ठ भी द्रष्टव्य हैं।

"पुर्तगाली में 'पाव' का अर्थ हैं रोटी किन्तु हम 'पावरोटी' का व्यवहार करते हैं। 'रोटी' शब्द का दो बार प्रयोग होने के कारण इसके लिये 'डबल रोटी' पड़ गया।"—डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल, भाषा विज्ञान और हिन्दी, प्र० सं०, भारतीय विद्या भवन, प्रयाग, १९५७, पृष्ठ ८८।

दो बार रोटी के समानार्थी शब्द के प्रयोग से 'डबल' पड़ जाना विचारणीय है। किसी भी मोटे आदमी के लिए स्वभावतः 'डबल हो रहे हो।' कह दिया जाता है फिर मोटी रोटी के लिए जो घर पर बनाने वाली मोटी से भी अधिक मोटी है और विदेशी है इस भाव को प्रकट करने के लिये 'डबल' का प्रयोग समीचीन प्रतीत होता है।

३. भाववाचक संज्ञा के लिये विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता है, जो हिन्दी प्रत्यय-पन (गुरुपन) से भिन्न है। इसमें कुछ व्यंग्य की सी ध्वनि आ गई है।

त्रिलोकी नारायण दीक्षित—हिन्दी पर अन्य भाषाओं का प्रभाव, सम्मेलन पत्रिका, भाग ३४, सं० १–३, पृ० ६।

४. डॉ० शीतकंठ मिश्र—खड़ीबोली का आन्दोलन—प्रथम संस्करण, सं० २०१३, पृ० २५३।

डॉ० श्रीकृष्णलाल—आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास—सन् १९५२, पृ० ११।

निराला—चाबुक, प्रथम संस्करण, पृ० ४०।

जयशंकर प्रसाद—तितली, स० २००८, सं० भारती भंडार, पृ० ११६।

बद्रीप्रसाद 'आर्य'—'गुरुडम' फैलाता स्वार्थों की बाहें विशाल' कविता 'मानवता' धर्मयुग ७–८–१९५५।

२. अं०—इज़्म् : हि० इज़म : बुद्धिज़म[1]
३. अं०—प्रूफ : हि० प्रूफ : हीटप्रूफ, वाटरप्रूफ झेंपप्रूफ[2]
४. अं०—इस्ट् : हि० इस्ट : सनातनिस्ट, समाजिस्ट[3]
५. अं०—आइट : हि० आइट : महासभाइट[4]
६. अं—इयन : हि० ईयन : मराठीयन[5]

५. १. ४. २. २. वे शब्द जिनमें मूल रूपमात्र अंग्रेजी के हैं :—

१. उपसर्गों द्वारा निर्मित—

१. १ देशी उपसर्ग, जैसे—१. स—: सहित : अं० क्लैप : सक्लैप[6]

२. अ—: बिना : अं० लीग : अ-लीगी[7]

१. २ विदेशी उपसर्ग, जैसे—१. बे—: बिना : अं० टिकट : बेटिकट[8]

२. प्रत्ययों द्वारा निर्मित—

२. १ देशी प्रत्यय, जैसे—१. पन[9] : भाववाचक : प्रीमियर : प्रीमियरपन संज्ञा बनाने के लिये काँग्रेसःकाँग्रेसीपन

---

१. शान्तिप्रिय द्विवेदी—युग और साहित्य, द्वितीय सं० १९५०, इंडियन प्रेस लि०, पृ० १२३।

२. बोलचाल में प्रयुक्त।

३. डॉ० श्रीकृष्णलाल—आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, १९५२, पृ० १९८।

४. रविशंकर शुक्ल—हिन्दी वालों सावधान, सं० २००४, पृ० ७२।
ये शब्द भारतीय अंग्रेजी में ही प्रयुक्त होते हैं।

५. डॉ० रघुवीर—भाषण, हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, दिनांक २५-१२-५६।

६. निराला-सुकुल की बीवी, सं० २०१२, पृ० १३।

७. रामचन्द्र वर्मा—'अच्छी हिन्दी' सं० २००७, पृ० ४४।

८. रेल विभाग में विशेष प्रचलित है।

९. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, नि० २२३, सन् १९४९, पृ० २४०।
डॉ० उदयनारायण तिवारी—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, नि० २४८, स० २०१२ पृ० ४२०।

२. ए[1] : विशेषण बनाने के लिये
मार्क : मार्के

३. वाला[2] : संज्ञा पद बनाने के लिये[3] गाड़ीवाला, मोटरवाला आदि तद्धित प्रत्यय कर्तृ अर्थ में संज्ञाओं के साथ।[4]

डॉ० बाबूराम सक्सेना[5] ने इस 'वाला' प्रत्यय पर विचार करते हुए इसका प्रयोग निम्नलिखित चार अर्थों में किया है —

| | | |
|---|---|---|
| ३. १ कर्तृवाचक | : करनेवाला | : वह जो करता है। |
| ३. २ सम्बन्धवाचक | : गाड़ीवाला | : वह जो गाड़ी रखता है। |
| ३. ३ सम्बन्धित | : गाँववाला | : वह जो गांव से सम्बन्धित है। |
| ३. ४ निश्चयार्थक | : छोटावाला बक्स | : वह छोटा बक्स जो औरों से छोटा है। |

अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों में उपर्युक्त चारों प्रकार के उदाहरण मिलते हैं —

---

१. 'पते की बातें' के आधार पर 'मार्के की बातें' बना लिया गया।

२. Kellogg. Grammar of Hindi Languages sec. 613 तथा 615.

Turner—Nepall Dictionary under "gwalo", 1931, Page 152.

३. डॉ० उदयनारायण तिवारी—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास नि० २५६, स० २०१२, पृ० ४२३।

४. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, संशोधित संस्करण, पृ० ४६५। 'वाला' प्रत्यय के विस्तृत विवेचन के लिए द्रष्टव्य है—लेखक का 'वाला प्रत्यय और उसके प्रयोग' अभिनव भारती, वर्ष ३, अंक १।

५. डॉ० बाबूराम सक्सेना—The Suffix 'wala' in Modern-Indo-Aryan languages, 7 th All India Oriental Confere nce, Baroda, Dec. 1933, Page 175.

३. १ फैशनवाली : वह जो फैशन करती है।

३. २ हैटवाला : वह जो हैट सिर पर रखता है।

हंटरवाला : वह जो हंटर रखता है।

मोटरवाला : वह जो मोटर रखता है।

गैसवाला : वह जो गैस रखता है।[1]

३. ३ डिपोवाला : वह जो डिपो से सम्बन्धित है।

होटलवाला : वह जो होटल से सम्बन्धित है।

जेलवाला : वह जो जेल से सम्बन्धित है।

पलटनवाला : वह जो पलटन से सम्बन्धित है।

पुलिसवाला : वह जो पुलिस से सम्बन्धित है।

३. ४ मीलवाला : वह जो मील का बना है, कोल्हू का नहीं।

३. ४ कम्पटीशनवाला : वह जो कम्पीटीशन से पास होकर आया है।[१]

४—आइन : स्त्रीलिंग बनाने के लिये[२] : डिप्टी : डिप्टियाइन-डिप्टीआइन

५—नी : स्त्रीलिंग प्रत्यय[३] : डाक्टर : डाक्टरनी

: मास्टर : मास्टरनी

---

१. बम्बई में 'गैसवाला' का अर्थ यह नहीं है कि जो गैस रखता है वरन् यह शब्द वह व्यक्ति जो पैट्रोमैक्स गैस की लालटेन बेचता है के अर्थ में प्रचलित है—जी० सी० विहृटवर्थ, एन ऐंग्लो इंडियन डिक्शनरी, सन् १८८५, पृ० १०२। उत्तर भारत में भी यह शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस प्रकार 'साइकिलवाला' का अर्थ है, वह जो साइकिल बेचता है।

२. कम्पटीशनवाला में कम्पटीशन अंग्रेजी शब्द तथा 'वाला' विशेषण प्रत्यय लगकर बना है। इसका प्रचार आई० सी० एस० परीक्षा में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों के लिये होने लगा। इस प्रकार यह शब्द उन आई० सी० एस० पास व्यक्तियों के अर्थ में प्रयुक्त होने लगा, जिन्होंने १८५६ ई० से प्रारम्भ होने वाली इस परीक्षा को पास किया हो ट्रेवेलियन ने तो सन् १८६४ में 'कम्पटीशन वाले के पत्र' प्रकाशित किये हैं।

इंडियन एन्टीक्वेरी, भाग ८, पृ० २०१।

३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, नि० २०२, सन् १९४९, पृ० २३४।

| | | |
|---|---|---|
| ६—इया | : देशवासीवाचक पद[1] | : इंगलैंड : इंगलैंडिया[2] |
| ७—ईय | : गुणवाचक विशेषण | : पलटन : पलटनिया |
| | | : कांग्रेस : कांग्रेसिया |
| | : ऊनवाचक | : गिलास : गिलसिया |
| ईय | : विशेषणसूचक | : योरोप : योरोपीय |

८—ई

'ई' प्रत्यय का निम्नलिखित दस प्रकार से प्रयोग होता है—

| | | |
|---|---|---|
| भाववाचक | हँसना | हँसी |
| कारणवाचक | रेतना | रेती |
| संज्ञा पद से विशेषण | भार | भारी |
| ऊनवाचक | रस्सा | रस्सी |
| व्यापारवाचक | तेल | तेली |
| भाववाचक | बुद्धिमान | बुद्धिमानी |
| समुदायवाचक | बीस | बीसी |
| भाववाचक | चोर | चोरी |
| स्त्रीलिंगवाचक[3] | घोड़ा | घोड़ी |
| भूषणार्थक[4] | अँगूठा | अँगूठी |

उक्त १० प्रयोगों में से अधिकांशतः भाववाचक का प्रयोग ही अधिक मिलता है। जैसे, बैरिस्टरी, अफसरी, मास्टरी, मेम्बरी, डाक्टरी, लीडरी,

१. डॉ० उदयनारायण तिवारी—हि० भा० उ० वि०, नि० २२४, सं० २०१२, पृ० ४१०।

२. पादरी एथरिंगटन—(व्याकरण) भाषा-भास्कर, सन् १९०५, मुखपृष्ठ के पृष्ठ भाग पर।

३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, नि० २०५, सन् १९४९, पृ० २३५।

४. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, संशोधित संस्करण, पृष्ठ ४५९।

कमिश्नरी,[1] और एजेण्टी[2] आदि।

विशेषणों का प्रयोग, जैसे, फिल्मी, मशीनी, स्कूली, नम्बरी[3] आदि। निम्नलिखित कुछ शब्दों का प्रयोग भी प्रत्यय की भाँति होने लगा है। जैसे,

| | | | |
|---|---|---|---|
| मार | मारने की क्रिया | पाकेट | पाकेटमार |
| धारी | धारण करने वाला | सूट | सूटधारी |
| वाद | किसी पक्ष के तत्त्वों द्वारा निश्चित सिद्धान्त | रोमांस | रोमांसवाद |
| कार | करनेवाला | ट्रेजेडी | ट्रेजेडीकार |

२. २. विदेशी प्रत्यय, जैसे—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. गिरी | मूल फारसी | —गीरी[4] | कुलीगिरी, लाटगिरी |
| २. खाना | फारसी स्थानवाची प्रत्यय[5] | —खाना | जेलखाना, जोमखाना, बोतलखाना, बग्गीखाना, मिस्त्रीखाना |
| ३. दार | फारसी-दार[6] रखनेवाला | | प्लेटदार, लेबलदार, लैसंसदार, नम्बरदार, लाइनदार, स्प्रिंगदार, डिजाइनदार, रोलदार[7] |

१. विभागों का बोध भी होता है।

२. पोलिटिकल ऐजण्ट का दफ्तर—फैलन—हिन्दुस्तानी डिक्शनरी, सन् १८७९, पृष्ठ ४०।

३. बुरे भाव में प्रयुक्त।

४. डॉ० तिवारी—हि० भा० उ० वि०, नि० २६६, पृ० ४२५।

५. वही, नि० २६३, पृष्ठ ४२४।

६. वही, नि० २७०, पृष्ठ ४२५।

७. फैलन—हिन्दुस्तानी डिक्शनरी, सन् १८७९, पृष्ठ ७१७।

| | | |
|---|---|---|
| ४. इस्तान | फा० स्थानसूचक संज्ञाएँ[1] | इंगलिस्तान |
| ५. आना | फा० —आन[2] | लीडराना |
| ६. बाज | फा० —बाज। करनेवाला -ई- भाववाचक संज्ञाएँ[3] बनाने के लिए | लेक्चरबाज, लेक्चरबाजी; पार्टीबाज, पार्टीबाजी, ट्रिकबाज से ट्रिकबाजी। |
| ७. वार | फारसी विशेषण[4] | नम्बरवार |
| ८. नुमा | दिखाने वाला, आकार का[5] फारसी विशेषण | पतलूननुमा, बटननुमा, शेडनुमा, स्पीचनुमा। |
| ९. वान | फारसी—वान कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनाने के लिए | कोचवान |
| १०. ची | तुर्की प्रत्यय[6] फारसी के माध्यम से | मिडिलची; गोलची (गोलकीपर के लिए) |

टिप्पणी—कुछ विदेशी फारसी तथा अरबी शब्दों का व्यवहार भी प्रत्यय की भाँती होने लगा है।

| | | |
|---|---|---|
| १. फा० शाही | शाहों या बादशाहों का | हेलटशाही[7] |

१. गुरु—हिन्दी व्याकरण, संशोधित सं०, नि० ४३९, पृष्ठ ४७४।
२. डॉ० तिवारी—हिं० भा० उ० वि०, नि० २६२, पृष्ठ ४२४।
३. वही, नि० २७३, पृ० ४२६।
४. गुरु—हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ ४७१।
५. वही—पृष्ठ ४७३।
६. वही—हिन्दी व्याकरण, अरबी तद्धित प्रत्यय, पृष्ठ ४८०।
७. नादिरशाही के आधार पर क्रूरता के लिए बना लिया गया।

२. अरबी साहिब आदरसूचक शब्द लाटसाहब, मेमसाहब[१]
विशेष बिल्टी बिल । अं ।+टी[२]

एक अंग्रेजी शब्द में भी विभिन्न रचनात्मक प्रत्यय लगाये जा सकते हैं—

१. अफसरी भाववाचक संज्ञा
२. अफसरवाद भाषण, नेहरू जी, हिन्दुस्तान,
३. अफसरगीरी वर्ष २६, अंक १४।३.
४. अफसरपन भाववाचक संज्ञा
५. अफसरनी स्त्रीलिंग

### ५. १. ५. समस्त पद

इस कोटि के अन्तर्गत वे समस्त पद आते हैं जिनका एक भाग विदेशी हो और दूसरे भाग में अपनी भाषा का शब्द जोड़ लिया जाय।

५. १. ५. १. दोनों पद, प्रधान
५. १. ५. १. १. प्रथम पद आगत शब्द—डाक्टर—वैद्य, डैमफूल-सूअर।
५. १. ५. १. २. द्वितीय पद आगत शब्द—किताब-कापी, पान-सिगरेट, कागज-पेंसिल, वकील-बैरिस्टर।
५. १. ५. २. द्वितीय पद प्रधान
५. १. ५. २. १. प्रथम पद संख्यावाचक विशेषण—दो फुटा
५. १. ५. २.२. प्रथम पद विशेषण —लौट-कालर

१. मेमसाहिबा के स्थान पर मेमसाहब ही अधिक प्रचलित है।
२. बिल अंग्रेजी शब्द Bill है और 'टी' बंगला का पर प्रत्यय है। बिल का अर्थ है 'लेन-देन का हिसाब अथवा हिसाब का पर्चा।' 'टी' अथवा 'टा' बगाली लोग प्रायः संख्यासूचक शब्दों के अन्त में ठीक इसी तरह जोड़ देते हैं जैसे—हिन्दी में 'ठो' अथवा 'ठें' जोड़ देते हैं—राममूर्ति मेहरोत्रा—शब्दों का इतिहास, साहित्य सन्देश, वर्ष ८, पृ० ४६०। इसको डॉ० धीरेन्द्र वर्मा अंग्रेजी शब्द Billet से मानते हैं—English Loan Words in Hindi, Alld. Usity. Studies, Vol: VIII, Page 47. ना० प्र० सभा के कोष में भी बिलेट से ही व्युत्पत्ति मानी है।

५. १. ५. २. ३. अन्य—कौंसिल-भवन, क्रास-मुद्रा, क्रास-कीलित, इंजन-घर, मोटर-घर, क्लब-घर, टिकट-घर, फैशन-प्रेमी, जेल-द्वार, बुनाई-मास्टर महिला-ब्लाक, प्रसाद-ग्रुप, चतुर्वेदी-ग्रुप सील-बन्द और रेल-पथ

५. १. ५. ३. निरर्थक सामासिक पद[1]—गारद्-सारद प्रत्येक में द्वितीय पद निरर्थक है। हैड-फैट, डाक्टर-फाक्टर टीम-टाम

## ५. १. ६. संकर शब्द

५. १. ६. ०. इस कोटि में वे ही मिश्रित शब्द आते हैं, जिनमें किसी शब्द का एक भाग दूसरी भाषा से गृहीत हुआ हो और शेष भाग अपनी भाषा का हो। उदाहरणार्थ—हम अग्नि-बोट (Agun boat) शब्द को ले सकते हैं, जिसका अर्थ स्टीमर के रूप में किया जाता है। यह स्पष्ट ही है कि इसका प्रथम भाग 'अग्नि' संस्कृत शब्द है और द्वितीय बोट (Boat) आंग्ल भाषा का है। बम्बई में मल्लाहों में इसका उच्चारण आग-बोट(Ag bot) के रूप में पाया जाता है। इसका प्रयोग सर्वप्रथम सन् १८५३ में डब्ल्यू० डी० आरनौल्ड महोदय ने किया था।[2] हागन महोदय तो गृहीत शब्दों के अन्तर्गत

---

१. इस कोटि में और भी अनेक पद रक्खे जा सकते हैं।

२. हाब्सन—जाब्सन, द्वितीय सं० १६०३ जेलखाना, मेमसाहब शब्द इस पुस्तक में इसी कोटि में रक्खें हैं पर उनमें प्रत्यय विशेष ही सम्मिलित होने के कारण ऐसे सभी शब्दों को यहां 'मिश्र शब्द' के अन्तर्गत ही रक्खा है।

संकर शब्दों को पूर्णतः सम्मिलित करने के लिए पक्ष में नहीं हैं।[१] फिर भी वह दूसरे स्थान पर ऐसे शब्दों को गृहीत शब्दों के अन्तर्गत मान लेते हैं।[२] वस्तुतः ये शब्द भी समस्त-पद के समान ही हैं पर इनमें दोनों शब्द घुलमिलकर एक बन जाते हैं।

हाब्सन-जाब्सन में तो इस प्रकार के ही शब्द सम्मिलित किये गये हैं। तब से अब तक इस कोटि में शब्दों की वृद्धि हुई है।

५. १. ६. १. वे शब्द जिनमें प्रथम भाग अंग्रेजी के आगत शब्द हों–

१. १ रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी

१. २ कम्पनी सिक्का,[३] कम्पनीबाग

१. ३ लेनडोरी[४]

१. ४ जेलोन्मुखी

१. ५ सील मोहर[५]

१. ६ पावरोटी[६]

१. ७ काजघर[७]

५. १. ६. २. वे शब्द जिनमें द्वितीय भाग अंग्रेजी के आगत शब्द हों—

२. १ गनीबेग[८]

२. २ लाठीचार्ज

---

१. Haugan, Einar—The Norwegian Language in America, Vol. I. Introduction—It is not a part of borrowing process rather does it give evidence of an intimate fusion into the large of borrowed material since it has become production in the new language.

२. वही, अध्याय पन्द्रह।

३. १९वीं शताब्दी में प्रचलित था। फ़ैलन—डिक्शनरी, सन् १८७९, पृष्ठ ६४४।

४. तम्बू बनाने के लिए रस्सी के साथ-साथ अफसरों के पीछे चलने वाले व्यक्तियों के लिए होने।

५-७. सभी शब्द अनुवादमूलक समस्त पद हैं।

८. गनी (Gunny) वस्तुतः संस्कृत शब्द (गोणी) है, जिसका हिन्दी रूप गनी हो गया।

२.३ कांजीहौज[1]
२.४ सभा सोसायटी[2]
२.५ गुदड़ी-क्लोट[3]
२.६ खण्ड पीस[4]

५.१.७. अंग्रेजी शब्दों के मुहावरे

अंग्रेजी शब्दों से युक्त प्रचलित मुहावरों का विभाजन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है।

५.१.७.१. जिन मुहावरों में अंग्रेजी के शब्द तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हैं—

| | |
|---|---|
| १. मिनटों में | शीघ्र ही। |
| २. पाकेट गरम करना | घूँस देना। |
| पाकेट गरम होना | रिश्वत लेना। |
| ३. पालिश करना | खुशामद करना। |
| ४. पोप लीला | पाखंड। |
| ५. ब्रेक लगाना | काम रोकना। |
| ६. सील मोहर देना | बन्द करना। |

१. 'हाउस का अन्तिम 'स' घोष हो गया है। इस शब्द के विस्तृत विवेचन के लिये देखिये परिशिष्ट पृ० ५.१।

२. अनुवादमूलक समस्त शब्द है।

३. वही। Gudr'i—kalot—English baby's napkins frequently used by ayas and Eng.ladies in Northern India. The two words mean precisely the same thing Gudri in hindi—Ragged quilt. Kalot—(not cloth) but of clout rag piece of used for mean purposes—R. C. Temple—Corruption of Eng., Indian Ant., Vol XI. P 26.

४. एक प्रकार का ब्लाउज़ बनाने का टुकड़ा, जिसमें बाँह और गले में एक पट्टी आती है।

| | |
|---|---|
| ७. स्टीम भरना | जोश भरना। |
| ८. वारनिश करना | चमक लाना। |
| ९. बटन खोलना | उदार बन जाना। |
| १०. एक इंच भी | थोड़ी सी भी। |
| ११. लेक्चर देना | अधिक लम्बी बात करना। |
| लेक्चर झाड़ना | जोश के साथ बोलना। |
| लेक्चर पिलाना | अधिक समझाना। |
| १२. मनीआर्डर करना | बाहर भेजना। |
| १३. पारसल करना | कहीं दूर भेजना। |
| १४. नोटिस देना | बाहर भेजना। |
| १५. टिकट कटाना | जाना। |
| १६. साइनबोर्ड | बाह्य दिखावा। |
| १७. सोडावाटर का जोश | क्षणिक उत्तेजना। |
| १८. परोल मिलाना | भेदिया बनाना।[१] |
| १९. बिल जारी करना | हुंडी करना।[२] |
| २०. कम्पास लगाना | सर्वेक्षण करना।[३] |
| २१. मार्शल ला | कठोर नियम।[४] |
| २२. कण्ट्रोल करना | रोक लगाना।[५] |

१. पलवल मिलाना—पैरोल देना—फैलन द्वारा प्रयुक्त, सन् १८७९, पृष्ठ ३९६।

२. वही, पृष्ठ २९६।

३. वही, पृष्ठ ९४४।

४. कर्मभूमि, प्रेमचन्द, सं १९३२, पृष्ठ १।

५. राजस्थानी में इससे एक कहावत भी विकसित हो गई है—
"मरे की सांड़ और कंट्रोल की खांड़ कदेई नहयाल कानी करै।"
बिना नकेल की ऊँटनी और कंट्रोल की खांड़ से हैरान ही होना पड़ता है —डॉ० कन्हैयालाल 'सहल'—कहावतों का उद्भव और विकास, सम्मेलन पत्रिका, भाग ४१, सं० ४, पृष्ठ ४२-६१।

५. १. ७. २. जिन शब्दों का प्रयोग विकृत रूप में होता है—

५. १. ७. २. १.

| | | |
|---|---|---|
| Alarm | अलारम बजाना | खतरा |
| | अलारम बजा देना | बच्चों को रुला देना। |
| Court | कोरट छूटना | कोर्ट आफ वार्ड्स से छूटना। |
| | कोरट बैठाना | कोर्ट आफ वार्ड्स में जाना। |
| | कोरट होना | कोर्ट आफ वार्ड्स में बड़ी भारी हानि होना। |
| Mark | मार्के की बात | महत्त्वपूर्ण बात। |
| Messquote | मिस्कौट करना | गुप्त परामर्श। |
| Line | लैन डोरी | पेश-खेमा। |
| Pension | पेन्शन देना | छुट्टी कर देना। बैठी रोटी।[1] |
| Fire | फैर उड़ाना | गोली मारना। |
| Lace | लैस होना | तैयारी होना। |

५. १. ७. २. २.

| | | | |
|---|---|---|---|
| Guard | गारदः | गारद में रखना | हवालात में बन्द करना। |
| Plaster | पलास्टरः | पलास्तर ढीला करना | शिथिल होना। |
| | | पलास्तर बिगाड़ना | पस्त करना। |
| | | पलास्तर करना | पस्त करना। |
| | | पलास्तर बिगड़ना | शिथिल होना। |
| Bearing | बैरंगः | बैरंग लौटाना | विफल लौटाना। |
| | | बेरंग लौटना | विफल लौटना। |
| Round | रौंद : | रौंद पर जाना | गश्त पर जाना। |
| Command | कमान : | कमान बोलना | लड़ाई पर जाना। |
| | | कमान पर जाना | लड़ाई पर जाना। |

१. फैलन—हिन्दुस्तानी डिक्शनरी, सन् १८७९, पृष्ठ ३७०।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Plato | अफलातूँ : | अफलातूँ बनना | होशियार बनना। व्यंग में। चालक होना, अपनी बुद्धि पर गर्व। |
| Attention | टिचन : | टिचन रहना | तैयार रहना। |
| Front | फिरंट : | फिरंट होना | विरुद्ध होना। |
| Bottle | बोतल : | बोतल चढ़ाना | शराब पीना। |
| | | बोतल ढालना | शराब पीना। |
| Pantaloon | पतलून : | पतलून से बाहर | नाराज होना।[1] |
| Drill | दलेल : | दलेल बोलना | दंड देना। |
| Camp | कम्पू : | कम्पू के बिगड़े | विद्रोही। चरित्र भ्रष्ट।[2] |
| Receipt | रसीद : | रसीद करना (चाँटा) | मारना। |

५. १. ७. ३. संक्षिप्त रूप से—

L. T. एल० टी०, एल० टी० पेलना– विशेष खुशामद करना।[3]

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि जो शब्द जनता में अधिक प्रयुक्त होने लगते हैं मानव साधारणतः उन शब्दों को ही प्रयुक्त नहीं करता वरन् उन शब्दों से भाव ग्रहण कर मुहावरों का निर्माण भी करता है और कालान्तर में मुहावरे बोलचाल में आने लगते हैं। इस सूची में जो शब्द हिन्दी की प्रकृति के अनुसार बिल्कुल कट-छँटकर ठीक हो गये हैं वे ही अधिक प्रचलित हैं, उदहरणार्थ—गारद, पलास्तर, बैरंग, रौंद, बोतल, दलेल, पाकेट, इंच और लेक्चर आदि शब्द लिये जा सकते हैं।

## ५. २. वाक्य-विचार

वाक्य-विचार मूलतः अनुसन्धान के लिये निर्धारित विषय की सीमा में नहीं आता है फिर भी इस सम्बन्ध में कुछ कार्य किया गया है, जिसके लिये देखिये परिशिष्ट संख्या-७।

---

१. 'पजामें से बाहर होना' के आधार पर बना लिया गया।

२. फैलन—हिन्दुस्तानी डिक्शनरी, सन् १८७९, पृष्ठ ९४४।

३. श्री नारायण चतुर्वेदी—विनोद शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ, होली, सं० २०१३ भूमिका। दीक्षा महाविद्यालयों में विशेष व्यवहृत।

अध्याय ६

# अँग्रेजी के आगत शब्दों का अर्थ-परिवर्तन

अध्याय ६

# अंग्रेजी के आगत शब्दों का अर्थ-परिवर्तन

६.०. एक भाषा से दूसरी भाषा में समान्यतः शब्द बिना अर्थ-परिवर्तन के गृहीत होते हैं किन्तु कभी-कभी उनमें अन्तर भी हो जाता है। एक ही शब्द विभिन्न वातावरण एवं स्थानों पर भिन्न-भिन्न अर्थ प्रकट करता है। उदाहरणार्थ 'ग्लास' अपने तत्सम रूप में काँच का ही द्योतक है पर उसका तद्भव रूप 'गिलास' पानी पीने के पात्र के अर्थ में प्रयुक्त होता है। आगत शब्द गृहीत रूप में स्थानीय संस्कृति से प्रभावित होकर नवीन अर्थ ग्रहण कर लेता है।[1] प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री ब्रील के अनुसार सामान्यतः अर्थ-परिवर्तन तीन दिशाओं में होता है।

६.१. **अर्थ-संकोच**—प्रायः जब शब्द जन्म लेते हैं तो उनमें एक बड़ी शक्ति होती है। उनका अर्थ भी अधिक सामान्य तथा व्यापक होता है। एक ही व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द दुनिया के व्यापारों में पड़कर और भी संकुचित हो जाता है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ शब्दों के अर्थ में भी संकीर्णता आती जाती है। एक भाषा से एक शब्द जब दूसरी भाषा में प्रवेश करता है तो उसमें सभी दिशाओं में अर्थ-परिवर्तन सम्भव है किन्तु संकोच की दिशा सबसे अधिक विस्तीर्ण है। यही कारण प्रतीत होता है कि भाषा-शास्त्री ब्लूमफील्ड ने अर्थ-परिवर्तनों के नियमों में इसको प्राथमिकता दी है। सभी शब्दों में अर्थ-संकोच निश्चित अवस्था में ही नहीं होता है। उसमें भी विभिन्न कोटियाँ स्थापित की जा सकती हैं।

६.१.१. **अर्थ का बहुत अधिक सीमित हो जाना**—इस कोटि में वे शब्द आते हैं, जो अपने किसी विस्तृत भाव को छोड़कर किसी निश्चित तथा सीमित अर्थ में रूढ़िगत हो जाते हैं। उदाहरणार्थ, 'स्टेशन' लिया जा सकता है। इसका यह अर्थ कि 'कोई चीज कहीं आकर ठहरे' गृहीत न होकर केवल

---

१. नीडा, ई० ए०—गोड्ज वर्ड्ज इन मैन्ज लैंग्वेज तथा तारापुरवाला—साइन्स ऑव लैंग्वेज, पृष्ट ८१-८२

'रेलवे स्टेशन' के रूप में अर्थ सीमित कर लिया गया। दोनों भाषाओं में अर्थ-व्यापकता का रखाचित्र हम इस प्रकार दे सकते हैं :—

अंग्रेजी में 'स्टेशन' शब्द का अर्थ

हिन्दी में 'स्टेशन' शब्द का अर्थ

इसी कोटि में 'कांग्रेस', 'लीग', 'मोटर', 'साइकिल' आदि शब्द लिये जा सकते हैं।

कांग्रेस—अंग्रेजी में इसका अर्थ है सम्मिलित होना, मिलन, विचार-विमर्श की औपचारिक बैठक।[1]

सन् १८८५ में सर्वप्रथम राजनीतिक कार्य से कुछ व्यक्तियों की बैठक हुई। व्यक्तियों का यही सम्मिलन संस्था के रूप में प्रचलित हो गया। इस प्रकार आज कांग्रेस 'राष्ट्रीय महासभा' के लिये रूढ़ हो गया, जिसको देश का बच्चा-बच्चा जानता है।

लीग—सामान्य हित की सहायता और रक्षा के लिए आपसी संगठन।[2] हिन्दी शब्द सागर[3] में इसके दो अर्थ दिये हैं—

१. विशिष्ट दलों का किसी उद्देश्य से सम्मिलन।
२. बहुत बड़ी संस्था।

जिस प्रकार कांग्रेस का प्रयोग सामान्य से विशेष के अर्थ में बदलकर एक संस्था विशेष का द्योतक हो गया, उसी प्रकार 'लीग' भी एक संस्था विशेष के अर्थ में सीमित हो गई। लीग से तात्पर्य 'मुस्लिम लीग' से लिया जाता है तथा इस संस्था से संबंधित व्यक्तियों को 'लीगी' कहा जाने लगा।

मोटर—वह जो गति प्रदान करे। गाड़ी के लिए शक्ति देने वाली मशीन। अब सामान्यतः मोटर कहने से मोटर-चालित 'कार' अथवा 'लारी' का ज्ञान होता है।

साइकिल—अंग्रेजी में इसका अर्थ है—आवर्तनीय समय। किसी भी चक्र के अर्थ में प्रयुक्त यह शब्द आज भी 'बाइसिकिल' के लिए प्रयुक्त होने लगा।

---

१. आक्सफोर्ड कन्साइज डिक्शनरी, सन् १९४२, पृष्ठ २३८।
२. वही, पृष्ठ ६४६।
३. हिन्दी शब्दसागर, सं० २००८, पृष्ठ १०३५।

६.१.२. **अर्थ-संकोच विभिन्न क्षेत्रों में**—इस कोटि में वे शब्द आते हैं जो किसी एक भाव को छोड़कर भिन्न अर्थ प्रकट करने लगते हैं। उदाहरणार्थ 'मशीन' शब्द लिया जा सकता है। 'मशीन' का जो सामान्य अर्थ है वह अपने भिन्न-भिन्न क्षेत्र में बहुप्रयुक्त मशीन के रूप में सीमित हो गया; किसी टाइप की दूकान पर 'मशीन' मात्र से अर्थ टाइप-राइटर का लिया जाता है। घरों में इसका अर्थ केवल बहुप्रयुक्त 'कपड़ा सीने की मशीन' के रूप में लिया जाता है। माइक्रोनेशियन भाषा[1] में भी 'मशीन' का अर्थ कपड़ा सीनेवाली मशीन के अर्थ में संकुचित हो गया है। 'मशीन का रेखाचित्र इस प्रकार दिया जा सकता है—

अंग्रेजी में 'मशीन' शब्द की अर्थ-व्यापकता

हिन्दी में 'मशीन' शब्द के सीमित क्षेत्र

स्कूल—स्कूल का यह अर्थ कि 'कोई ऐसा स्थान जहाँ ज्ञान-विज्ञान की बात सीखी जा सके' हिन्दी में ग्रहीत न हो सका। स्कूल का मूल अर्थ जहाँ अपने मूल रूप में कुछ शिष्टों के प्रयोग में सीमित रहा वहाँ जनसाधारण में इसका अर्थ प्राइमरी, मिडिल तथा हाई स्कूल की शिक्षा प्रदान करने वाली संस्था ही लिया जाता है।

६. १. ३. **संकोच की तीसरी अवस्था**—इस कोटि के शब्द अपने मूल अर्थ को त्याग कर किसी विशिष्ट पदार्थ का अर्थ देने लगते हैं और अर्थ काफी संकुचित हो जाता है। उदाहरणार्थ 'गैस' शब्द को लिया जा सकता है।

गैस—यह एक रासायनिक पद्धति से निर्मित वायुरूप है, जो अनेक प्रकार, से काम में लायी जाती है। इसके द्वारा प्रकाश करने की भी व्यवस्था की गई और ऐसी व्यवस्था को गैस-लाइट, गैस का हंडा कहा गया। 'गैस' जल रही है का तात्पर्य है कि गैस द्वारा संचालित किसी यंत्र से प्रकाश किया जा रहा है।

---

१. इंगलिश लोन वर्ड्ज इन माइक्रोनेशियन लैंग्वेज— लैंग्वेज भाग २१, पृष्ठ २१४।

अंग्रेजी में गैस

हिन्दी में गैस

**तिजोरी**—इसका अंग्रेजी शब्द है 'ट्रेजरी' जिसका अर्थ है = वह स्थान या मकान जहाँ कोश रखा जाता है। स्थान विशेष से इसका अर्थ लोहे या संदूक या छोटी अलमारी के रूप में जिसमें रुपये आदि रक्खे जाते हैं, संकुचित हो गया।

६. १. ४ **संकोच की चौथी अवस्था**—इस कोटि में वे शब्द आते हैं जिनमें प्रथमतः तो विकास दृष्टिगत होता है पर कालान्तर में वही अर्थ किसी निश्चित सीमा में संकुचित हो जाता है। साथ ही साथ शब्द का मूल अर्थ भी शिष्ट समाज में चलता रहता है। उदाहरणार्थ 'गिलास' ले सकते हैं।

**गिलास**—अंग्रेजी में यह काँच का पर्यायवाची है। हम इसका प्रयोग शीशे से बने हुए एक विशेष प्रकार के पात्र के लिए भी करने लगे जो पानी पीने के काम में आता है। अब शीशे के स्थान पर अन्य धातु से बने हुए पात्र को भी गिलास कहा जाता है। इस शब्द में अर्थ-संकोच के बाद अर्थ-विस्तार भी है।

अंग्रेजी में गिलास :
'ग्लास'

हिन्दी में 'गिलास' :

६. १. ५. **अर्थ-संकोच की पाँचवीं अवस्था**— इस कोटि में वे शब्द आते हैं, जो अपने अर्थ को छोड़कर अपने ही क्षेत्र में किसी दूसरे अर्थ में संकुचित हो जाते हैं। उदाहरणार्थ, 'रेल' शब्द लिया जा सकता है जो 'पटरी' के अर्थ को छोड़कर पटरी पर चलने वाली गाड़ी के अर्थ में संकुचित हो गया।

'रेल' शब्द की अर्थ-व्यापकता का रेखा-चित्र—

अंग्रेजी में

हिन्दी में

कंडील—रुई की बत्ती के चारों ओर लिपटी हुई मोम ही कैंडल है जिससे कृत्रिम प्रकाश की व्यवस्था की योजना की जाती है। अंग्रेजी शब्द 'कैंडल' का ही रूप 'कंदील' है। इसका अर्थ हो गया 'मिट्टी अबरक या कागज की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।'

मिसकोट—यह शब्द हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र में गुप्त परामर्श या षड्यंत्र के अर्थ में प्रचलित है। इसका प्रचार तथा प्रयोग गाँवों में विशेषकर होता है। वस्तुतः अंग्रेजी के किस शब्द से यह संबंधित है, यह विवादास्पद है। इस शब्द के तीन स्रोत माने जा सकते हैं—

अ—मिस-कोट = किसी बात को गलत करना।[1]
आ—मेस-कोट = गन्दी चीजों को फैलाना।[2]
इ—मेस-कोट = अं० मेस—हिं० कोट। घर।[3]

इतना निश्चित है कि इसका प्रथम भाग अंग्रेजी का है। मेरी दृष्टि में द्वितीय व्युत्पत्ति अधिक ठीक है।

सपरेटा—इसका मूल अं० शब्द है, 'सैपरेटर'। इसका अर्थ है वह यन्त्र जिसके द्वारा दूध से मक्खन निकाल लिया जाता है। मक्खन निकले हुए दूध के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

६. १. ६. विविध—

बैरंग—अंग्रेजी में इसका अर्थ है 'ले जाने का कार्य': बियरिंग—bearing [bearin,] हिन्दी में इसका प्रयोग बिना महसूल, स्टांप आदि के लगे हुए पत्र आदि के लिए किया जाता है। इन पत्रों में एक विशेष प्रकार की मोहर लगा

---

१. Mis-quote—quote wrongly—Oxford Concise Dictionary; १९४२, पृष्ठ ७२८।

२. Mess-quote—make a mess of dirty things, muddle (business), वही, पृष्ठ ७१६।

३. Mess (house)—becomes mescott in petitions being a mixture of English mess and Hindi kot (house)—R. C. Temple. Some Corruptions ot English from Port Blair, Indian Antiquary. Vol. XXX, पृष्ठ १६३।

दी जाती है। बैरंग पत्र अर्थात् वह पत्र जो इस विशेष प्रकार की मोहर को लगाये हुए है। इस प्रकार के पत्रों की वापस लौट जाने की सम्भावना रहती है। यह तभी होता है जब पत्र का पाने वाला उचित पैसे नहीं देता है। इसी भाव को लेकर 'बैरंग लौटना' तथा 'बैरंग लौटाना' मुहावरे भी प्रचलित हो गये हैं।

**ऐण्ट्रेन्स**—प्रवेश करना। यह शब्द दसवीं श्रेणी की परीक्षा के लिए सीमित हो गया है।

६. २. **अर्थ-विस्तार**—अर्थ-संकोच की विपरीत अवस्था का नाम अर्थ-विस्तार है जिसमें विशेष से सामान्य की ओर प्रवृत्ति होती है। प्रथमतः किसी विशेष के अर्थ में प्रयुक्त शब्द धीरे-धीरे सामान्य अर्थ में प्रयुक्त होने लगता है। इस प्रकार के उदाहरण किसी एक ही भाषा में अधिक पाये जाते हैं, अन्य किसी भाषा से आये हुए शब्दों में ऐसा परिवर्तन कम होता है। फिर भी कुछ शब्द इस कोटि के हैं।

६. २. १. **प्रथम अवस्था**—इस कोटि में वे शब्द आते हैं, जो अपने निश्चित क्षेत्र में ही प्रचलित रहते हैं पर साथ ही दूसरी दिशा में भी अर्थ विस्तार करते हैं, उदाहरणार्थ हम 'बटन' शब्द को ले सकते हैं। 'बटन' अपने सामान्य अर्थ के अतिरिक्त बिजली के स्विच के मध्य में उठे हुए भाग के लिए भी प्रयुक्त होने लगा है। जैसे, बिजली की घंटी को बजाने के हेतु मध्य में उठे हुए भाग के लिए इसका प्रयोग अँग्रेजी में भी होने लगा।

**अर्थ-व्यापकता का रेखा-चित्र**—

अंग्रेजी में 'बटन'

हिन्दी में 'बटन'

**टिकट**—अंग्रेजी में प्रयुक्त 'स्टाम्प' शब्द का व्यवहार केवल कचहरी तक ही सीमित रहा। पोस्ट आफिस के स्टाम्प शब्द का स्थान भी टिकट ने ही ले लिया। आज टिकट सभी क्षेत्रों में प्रयुक्त होता है। मैंने स्वयं पोस्ट आफिस के क्लर्कों के मुँह से इसका व्यवहार होते हुए सुना है। बहुत से भारतीयों को विदेशों में इसके अशुद्ध व्यवहार पर काफी लज्जित होना पड़ता है।

६. २. २. **द्वितीय अवस्था**—संसर्ग में आई हुई चीज के नाम से मूल शब्द का भी संकेत होने लगता है, जो उसके साथ में आती है।

**क्रिकिट**[1]—घास के मैदान में क्रिकिट खेला जाता है। घास के एक विशेष ढंग के बोने मात्र को माली लोग क्रिकिट कहने लगे हैं।

**चाप्स**—'चाप्स' तथा 'चिप्स' आदि शब्दों में केवल सम्पादन की क्रिया को ही गृहीत किया गया है। इसके बनाने की क्या विधि है इसकी ओर ही ध्यान दिया गया और जो इन शब्दों का मूल भाव है उसको छोड़ दिया गया है।

**६. २. ३. तृतीय अवस्था**

**कापी**— हिन्दी में यह शब्द उन पुस्तिकाओं के लिए प्रयुक्त होता है जिसमें लिखने के लिए कोरे कागज लगे हुए हों।[2] वस्तुतः यह अंग्रेजी के कापी-बुक शब्द के प्रथम भाग कापी के ही अर्थ में अन्तर करके प्रयुक्त किया जाता है जिसमें विद्यार्थियों के लिए हूबहू नकल करने के हेतु पंक्तियाँ छपी रहती हैं। आज यह शब्द किसी भी सामान्य पुस्तिका के लिए लिया जाता है। इस भाव में अंग्रेजी भाषा में 'नोट-बुक' प्रचलित है। कापी का अन्य संज्ञाओं की तरह बहुवचन कापियाँ भी बना लेते हैं।

**बैरा**—प्रारम्भ में इस शब्द का प्रयोग उन व्यक्तियों के लिये हुआ, जो पालकियाँ उठाया करते थे आज इसका प्रयोग किसी भी साहब के चपरासी के अर्थ में किया जाने लगा है।

६. ३. **अथादेश**—"अर्थ में इतना अधिक अन्तर हो जाय जिससे उसका मौलिक अर्थ बिल्कुल नष्ट हो जाय और बिल्कुल विपरीत अर्थ प्रचलित हो जाय" ऐसी अवस्था को प्राप्त शब्द इस कोटि में रखे जाते हैं। इस पद्धति में बहुत अधिक समय लगता है, अतएव इस प्रकार के उदाहरण पर्याप्त नहीं मिलते. उदाहरणार्थ हम एक शब्द ले सकते हैं।

**लैस**—हिन्दी में यह शब्द कपड़े पर चढ़ाने के लिए फीते के अर्थ में ही प्रयुक्त नहीं होता वरन् हथियारों और वर्दी से सजा हुआ अर्थ भी प्रकट करता है—कटिबद्ध, तैयार। फैलन महोदय ने भी इसका अर्थ ड्रेस-पोशाक लिखा है। इससे तैयार के अर्थ में प्रचलित मुहावरों का प्रचलन भी हुआ।

साधनों से लैस—प्रेमचन्द, कायाकल्प

---

१. डॉ० बाबूराम सक्सेना—अर्थ-विज्ञान, पटना विश्वविद्यालय, सन् १९५१, पृ० ९६।

२. ना० प्र० सभा—संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर, सं० २००८, पृ० २२५।

लैस कर दिया — प्रेमचन्द, मानसरोवर, भाग १

सूट-टाई से लैस—राम जी लाल, ऋण की ओट में

वैज्ञानिक शिक्षा से लैस—नरेश वेदी, हिन्दुस्तान ७ जून, १६५६

श्री शास्त्री नेहरू जी के नवीनतम निर्देशों से लैस होकर जा रहे हैं, हिन्दुस्तान १ दिसम्बर, १६६० ।

६. ४. भेद का भेदीकरण—किसी विशेष भाव के द्योतक शब्द किसी व्यवस्थित क्रिया के द्वारा विचित्र अर्थों में कार्य करने लगते हैं और अलग से ही शब्द बन जाते हैं । इस क्रिया को भेदीकरण कहते हैं । भाषा ज्यों-ज्यों विकसित होती है, उसमें भी भेद भाव बढ़ता जाता है । दो भिन्न-भिन्न सभ्यताओं के मिलने से एक भाषा में उनके पर्याय प्रचलित होते हुए भी दूसरी भाषा में गृहीत होते रहते हैं और फलस्वरूप यदि उनके पूर्व उस भाषा में पर्याय प्रचलित भी हों तो भी कुछ समय अपना विशेष अर्थ रखने के कारण प्रचलित हुए बिना नहीं रहते ।

डॉक्टर—पूर्व प्रचलित शब्द वैद्य, हकीम, कविराज के होते हुए भी अंग्रेजी विधि से चिकित्सा करने वाले तथा चीरफाड़ द्वारा इलाज करने वाले विशेष व्यक्ति को ही डॉक्टर कहा जाता है । यही कारण है कि एक साधारण व्यक्ति भी डॉक्टर और वैद्य के अन्तर को समझता है ।

स्कूल—पाठशाला और मदरसा होते हुए भी अंग्रेजी ढंग से संचालित विद्यालय को स्कूल ही कहा जायगा ।

६.५. अर्थापकर्ष—किसी भाषा का जब कोई शब्द बुरे भाव से संबंधित हो जाय तो वह शब्द इस कोटि में आयेगा । नादिरशाही, हिटलरशाही, हैलटशाही शब्द आज अत्याचार के लिए सीमित हो गये हैं । इसका प्रयोग किसी अच्छे कार्य करने वाले व्यक्ति के लिए कदापि नहीं किया जा सकता । अं० शब्द 'पालसन' और 'बटरिंग' का जो अच्छे भाव से 'खुशामद' अर्थ में परिवर्तन हुआ है वह किससे छिपा हुआ है ।

६. ६. मंगलभाषित—अशुभ-सूचक बातें बचा-बचाकर-गोल-मोल शब्दों में प्रकट की जाती हैं । कुछ बातों का तो उच्चारण तक करना असभ्यता का सूचक समझा जाता है, इनमें प्रातःकाल का दैनिक क्रिया आती है । इसलिये उसे दिसा, जंगल; टट्टी, पाखाना आदि विभिन्न शब्दों में प्रगट करते हैं ।

आज शिक्षित वर्ग में इसके लिये 'इंगलैण्ड' का प्रयोग भी किया जाता है। 'लन्दन' शब्द का प्रयोग भी इस अर्थ में मिलता है। 'बाथरूम' का प्रयोग स्नानागार के लिए ही नहीं होता वरन् पेशाबघर के लिए भी होने लगा है।

६. ७. **अंगांगी अंतरण**—इस कोटि में वह शब्द आता है जिसका अर्थ प्रकट करने के लिए सम्पूर्ण के लिए एक भाग का ही प्रयोग किया जाय। लालकुर्ती, रेडशर्ट का प्रयोग इस कोटि का है। गान्धी टोपी जैसे कांग्रेसी होने का भाव प्रकट करती है उसी प्रकार 'रेडशर्ट' शब्द भी यह घोषित करता है कि यह अमुक संस्था का सदस्य है।

६. ८. **व्यंग्यार्थ**—कुछ सुन्दर शब्दों का प्रयोग व्यंग्य में भी किया जाता है। ऐसा प्रयोग अधिकांशतः उन्हीं शब्दों को लेकर होता है जिनका प्रयोग बड़े लोगों के लिए अथवा महानता के अर्थ में होता है। दो व्यक्तियों के मध्य में जब कोई अपनी बात छाँटने लगे तो कहा जाता है—बड़े आये हो जज बनकर। लाट साहब, गवर्नर, कलक्टर आदि शब्दों का प्रयोग व्यंग्य में बड़े बने हुए व्यक्ति के लिए होता है। नये ईसाई के लिए 'पादरी' साहब का प्रयोग सुना जाता है।

६. ९. **विशेषण से विशेष्य के अर्थ में—**

**ब्लैक-बिलैक**—युद्धकाल में कण्ट्रोल होने पर बेकायदे कण्ट्रोल की वस्तु क्रय करना ब्लैक कहलाता था। यह शब्द इतना अधिक प्रचलित हो गया है कि अकेले ब्लैक से ही यह भाव प्रकट किया जाने लगा है। आजकल इस शब्द के अनेक मजेदार प्रयोग मिलते हैं, जैसे, बिलैक किया है, बिलैक का माल है, बिलैक के भाव मिलेगा, बिलैक से मैं ला सकता हूँ, बिलैक की कमाई खायी है।

**डबल**—डबल का अर्थ है 'दूना' लेकिन आज किसी भी मोटी चीज के लिये डबल शब्द का प्रयोग किया जा सकता है। अंग्रेजी ढंग से सिकी हुई रोटी (ब्रेड) मोटी होने के कारण ही 'डबल रोटी' कहलायी। मोटे व्यक्ति के लिए डबल का प्रयोग सुना जाता है। दौड़कर तेज आने के लिए डबल मार्च का प्रयोग चल पड़ा जिसके स्थान में केवल 'डबल' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है।

**कंडम**—हिन्दी में किसी भी बेकार, व्यर्थ वस्तु के लिए इसका प्रयोग किया जाता है, जो बिल्कुल निम्नकोटि की हो। अंग्रेजी में इसका प्रयोग क्रिया रूप में

होता है। हिन्दी में इसका प्रयोग विशेषण की तरह प्रारम्भ हुआ। आज तो विना संज्ञा के प्रयोग के भी इसका प्रयोग होने लगा है। शब्द के अर्थ में इतना अन्तर नहीं हुआ है जितना उसके प्रयोग की विधि में। किसी भी खराब वस्तु के लिए कहा जायेगा 'क्या कंडम उठा लाये हो'।

६.१०. **अन्य रोचक परिवर्तन—**

**लैनडोरी**—इस सामासिक पद में प्रथम पद 'लैन' अंग्रेजी शब्द 'लाइन' का अपभ्रंश रूप है। इसका अर्थ है 'पंक्ति। अंग्रेजी में इसके अन्य प्रयोग भी हैं। हिन्दी में प्रयोग होता है क्रमशः एक व्यक्ति के पीछे दूसरे व्यक्ति का चला आना, अधिक बच्चों के लिए भी, साहब लोग अथवा मिनिस्टरों के पीछे चलने वालों की लम्बी कतार के लिए, उन रस्सों के अर्थ में जो कैम्पों के काम में आते हैं।

**गड्ड्याम**—यह अंग्रेजी का गोड डाउन यू ( God down you ) का ही संकुचित रूप है। इसका विशेषण रूप (-ई ) प्रत्यय लगाकर गड्ड्यामी भी बनता है। फैलन ने इसके दो रूप दिये हैं—

गड्ड्याम बोली-अंग्रेजी बोली।
गड्ड्याम जूती-अंग्रेजी जूती।

**खण्डपीस**—एक प्रकार का ब्लाउज का विशेष कपड़ा, जिसमें बाँह और गले की पट्टी एक ही सी रहती है।

इस प्रकार उक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि अर्थ-परिवर्तन विभिन्न दिशाओं में सम्भव है। किस प्रकार कालान्तर में शब्द अपने भाव, अर्थ तथा रूप बदलते रहते हैं। यह एक बहुत ही रोचक विषय है जिसके प्रति प्रयोगकर्ता उदासीन रहता है और कभी-कभी बिल्कुल अनभिज्ञ। 'टिन' धातु से निर्मित होने के कारण ही पीपे बेचारे 'टिन' या 'टीन' कहलाते हैं। 'राउण्ड' शब्द ही 'रौंद' बनकर प्रयुक्त किया जाने लगा।

अध्याय ७

# आगत-शब्दानुवाद

अध्याय ७

# आगत-शब्दानुवाद

अनुवाद का मूल अर्थ है—कही हुई बात फिर से कहना, चाहे यह बात अपनी कही हुई हो चाहे किसी दूसरे की। इससे बात दोहराने का मुख्य उद्देश्य उसका स्पष्टीकरण या कुछ विशिष्ट विवेचन मात्र होता है पर बाद में इस अर्थ ने कुछ ही रूप धारण कर लिया। आजकल अनुवाद का अर्थ होता है—'एक भाषा में कही हुई बात या बातें दूसरी भाषा में ज्यों की त्यों कहना या बतलाना।[1]' प्रसिद्ध भाषाविद् निडा[2] महोदय ने अनुवाद की तीन प्रणालियाँ निश्चित की हैं—

१. शाब्दिक अनुवाद
२. भावानुवाद
३. पर्यायों के आधार पर अनुवाद।

७. १. शाब्दिक अनुवाद—

शब्द को एक दूसरी भाषा के शब्द द्वारा बदल देना मात्र ही इसके अन्तर्गत नहीं आता है वरन् व्याकरणिक रूप के स्थान पर दूसरी भाषा के व्याकरणिक रूप को रख देना भी अनिवार्य है। इस प्रकार इस विधि द्वारा किये गये अन्तर्पंक्ति अनुवाद तथा अविकल अनुवाद कभी-कभी व्यर्थ तथा हास्यास्पद[3]

१. रामचन्द्र वर्मा—वार्ता, आकाशवाणी, प्रयाग से प्रसारित, दि० १०-१-५६।

२. Nida, E. A.—Bible Translating, 1947, American Bible Society, New York. Page 11.

३. अंग्रेजी शब्दों और वाक्यों का अविकल अनुवाद बहुधा हास्यास्पद होता है। उदाहरणार्थ, इस वाक्य को लीजिये 'दिल्ली के ग्वालों ने असेम्बली भवन के सामने प्रदर्शन किया।' अथवा 'कामायनी—एक अध्ययन।' उस दिन राष्ट्रपति ने बताया। इन शब्दों से एक लेख प्रकाशित किया गया है, किस दिन? 'इस प्रकार का अनुवाद आवश्यक है।'—डॉ० अमरनाथ झा, शिकोहाबाद, प्रांतीय सम्मेलन, अध्यक्षपदीय भाषण, ना० प्र० प०, वर्ष ६० अंक ३-४ सं० २०११, पृ० ३२०।

सिद्ध होते हैं। ऐसा बहुधा होता है कि एक भाषा की शब्दावली व उसके भाव दूसरी भाषा की शब्दावली तथा उनके भावों से नहीं मिलते। साथ ही व्याकरणिक प्रयोग भी दो भाषाओं के भिन्न होते हैं। इस प्रकार इस विधि से कभी-कभी अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

७. १. १. हास्यास्पद—

उदाहरणार्थ, इस कोटि के कुछ निम्नलिखित अनुवाद—

| | |
|---|---|
| White collar | सफेद कालर। |
| Iron will | इस्पाती इच्छा।[१] |
| Iron bones | इस्पाती हड्डियाँ।[२] |
| Cannot go against | विरुद्ध नहीं जा सकते।[३] |
| Save skin | चमड़ा बचाना। |
| Raod-way | सड़क पथ।[४] |
| Children's corner | बच्चों का कोना।[५] |
| Colour blind | रंग का अन्धा।[६] |
| Screaming bomb | चीखते हुए बम।[७] |
| Sky horses | आकाश घोड़ा।[८] |
| Scorched earth policy | दग्ध भू नीति।[९] |

१. नव प्रभात दैनिक, दि० २३-७-५६।

२. यज्ञदत्त शर्मा, भुनिया की शादी, प्रथम सं०, पृष्ठ ४३।

३. सरकार जानती है कि राजा और नवाब हमारे विरुद्ध नहीं जा सकते हैं—रामचन्द्र वर्मा, अच्छी हिन्दी, सं० २००८, पृ० ४८।

४. ट्रान्सपोर्ट मिनिस्ट्री द्वारा बनाये गये शब्द।

५. उत्तर प्रदेश पंचायती राज्य पत्रिका, दि० १५-५-१९५६, पृ० २५।

६. जानकीशरण वर्मा, सरल शरीर विज्ञान, सन् १९४०।

७. प्रभाकर माचवे—पारिभाषिक शब्दावली, हंस, वर्ष १८, अंक १, अक्टू० १९४७, पृ० ४९-५५।

८-९. वही।

| | |
|---|---|
| Point of vision | दृष्टि बिन्दु । |
| Point of view | विचार-बिन्दु । |
| Sleeping suit | रात में सोने की पोशाक ।[1] (हास्यास्पद बनाने के लिए) |

प्रारम्भ में विरोध होते हुए भी निम्नलिखित शब्दों का इतना अधिक प्रचार हुआ कि वे आज भी मान्य हैं—

| | |
|---|---|
| Angle of vision | दृष्टि विन्दु ।[2] |
| A bird's eye view | विहंगम दृष्टि । |
| Art for arts sake | कला कला के लिए । |
| Art for God's sake | कला परमात्मा के लिए । |

हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुकूल उचित अविकल अनुवाद निम्नलिखित उदाहरणों के रूप में हो सकता है—

| | |
|---|---|
| Solar treatment | सौरोपचार |
| Biting insect | कर्तक कीट |
| Cattle-shed | ढोरशाला |
| Saving bank | बचत बैंक । |
| Blind fire | अन्ध शलक |

७. २. भावानुवाद—

शब्द तो केवल भावों के वाहक होते हैं। वह तो किसी वस्तुविशेष या भावविशेष को स्पष्ट करने के लिए चिह्न मात्र हैं—इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। अतएव अनुवाद करते समय उस शब्द के अस्तित्व से अधिक उस भाव का ध्यान रखना चाहिये जो उसमें निहित है। अंग्रेजी के यदि किसी शब्द का हिन्दी में अनुवाद करना चाहते हैं, तो यह सोचना होगा कि उस भाषा में कहने वाला व्यक्ति इसके स्थान पर और कौन-सा शब्द प्रयुक्त करता। साथ ही भावानुवाद करते समय अनुवाद के स्थान पर अनुवादक महोदय व्यक्तिगत दृष्टि से उसका विश्लेषण न करने लगे ऐसा करने से मूल

१. जी० पी० श्रीवास्तव, लतखोरी लाल—चतुर्थ सं० १९५१, पृ० ४।
२. रामचन्द्र शुक्ल—हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं० २००२, पृ० ४२५।

शब्द का अस्तित्व ही नष्ट हो जायगा, अतएव भावानुवाद करते समय भी अनुवादक को मूल के निकटतम ही रहना चाहिए। एक उदाहरण द्वारा इस विधि को समझना आवश्यक है—ब्लेक (Black) का शाब्दिक अनुवाद काला है पर भावानुसार तथा शब्द का भी ध्यान रखते हुए निम्न चार स्थलों पर उसका उचित अनुवाद भिन्न-भिन्न रूप में किया गया है।

| | |
|---|---|
| Black-board | श्यामपट्ट |
| Black-market | चोर बाजार |
| Blackout | अंधेरा |

इसी प्रकार होम (Home) का अर्थ गृह या घर है पर निम्नलिखित तीन शब्दों में उसका अर्थ भिन्न हो गया है।

| | |
|---|---|
| Home Govt. | गृह सरकार |
| Home guard | रक्षक दल |
| Home signal | निकट चिह्न |

अंग्रेजी के प्रभाव से गोल्डन (Golden) का बहुत प्रचार हुआ, पर भावानुसार इसके अनुवाद भिन्न-भिन्न किये गये—

| | |
|---|---|
| Golen chance | सुनहरा अवसर[1] |
| Golden period | सतयुग[2] |
| Golden number | विशेष अंक[3] |
| Golden jubilee | स्वर्ण जयंती[4] |
| Golden success | शानदार सफलता (भाषण में) |
| Golden future | स्वर्णिम भविष्य (भाषण में) |

ट्यूब (Tube) एक प्रकार की रेलगाड़ी का भावानुवाद भूमिगत गाड़ी

---

१. प्रेमचन्द, रंगभूमि, भाग १, सन् १९५५, पृष्ठ ६६।

२. धनंजय भट्ट, भट्ट निबन्धमाला, दूसरा भाग, सं० २००४, पृ० १२८।

३. महावीरप्रसाद द्विवेदी—संकलन, सं० १९८८, पृ० १५५।

४. मुंशी—प्रतिशोध, अनुवाद, प्र० सं०, पृ० २६५, ३१८ स्वर्ण जयंती पचासवीं संवत्सरी।

होगा। सेकण्ड का शब्दानुवाद द्वितीय होते हुए भी विधान परिषद् के लिए भावानुवाद 'अनुमोदन' करना पड़ा।

एक्टिव (Active) के लिए सक्रिय या फुर्तीला ठीक रहेगा पर विशेषण का प्रयोग भावानुसार होगा—

| | |
|---|---|
| Active debt | चालू ऋण |
| Active habit | कर्मण्य स्वभाव |
| Active help | सक्रिय सहायता |
| Active step | क्रियात्मक पग |

बुरे भाव से संबंधित वस्तु का अनुवाद देशवासी अपनी इच्छानुसार करते हैं—

रौलट—काला कानून

रायल (Royal) विद्यार्थी कुछ पढ़ने-लिखने में शिथिल होते हैं अतएव इसी के आधार पर रायल क्लास का अर्थ तथा उसका भावानुवाद तृतीय श्रेणी कर दिया गया।[1]

श्री श्याम सुन्दर भंवर[2] ने भावानुवाद पर विचार-विमर्श करते हुए कुछ अच्छे अनुवाद सुझाये हैं—

| | |
|---|---|
| Store-keeper | भंडारी |
| Book keeping | पुस्तपालन के स्थान पर बहीखाता ही ठीक रहेगा। |
| Tug of war | गजग्राही[3] |

---

१. मुंशी—स्वप्नद्रष्टा, अनुवाद, प्र० सं०, पृष्ठ १८८।

२. श्यामसुन्दर भंवर—पारिभाषिक शब्दों का निर्माण, वीणा, अप्रैल, १९४९, पृ० २९२-९३।

३. गजेन्द्र-मोक्ष की कथा प्रचलित ही है, उसी आधार पर 'गजग्राह' गुजरात में प्रचलित है। काका कालेलकर—सबकी-बोली, वर्ष १, अंक ४, कुछ विचारणीय शब्द नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ४४ सं०, १९९६, पृ० ४२१ इसी आधार पर ( long jump ) के लिए हनुमान कूद तथा ( high jump ) के लिए अंगद कूद रखा है।

कभी-कभी-शब्दानुवाद तथा भावानुवाद दोनों नहीं चल पाते जैसे बाइसिकिल के लिए द्विचक्रीयवाहन तथा पैरगाड़ी दोनों ही न चल सके। उसके स्थान पर उसके ही छोटे रूप साइकिल तथा-'वाहक' का ही प्रचार अधिक रहा।

भावानुवाद करते समय 'चतुर' और सुयोग्य अनुवादक दूसरी भाषा के शब्दों और अभिव्यंजनों को अपनी भाषा में जो रूप प्रदान करते हैं उससे उनकी भाषा का निखार और शोभा बहुत कुछ बढ़ जाती है। अंग्रेजी से अनुवाद करते समय तो हमने अपनी भाषा को बहुत कुछ 'अंगरेजियत' का ही जामा पहना रक्खा है और हिन्दी का 'हिन्दीपन' बहुत कुछ हटाते चलते हैं।[1] इसी विचार से सहमत होते हुए विश्वनाथ शास्त्री लिखते हैं "शब्द सामग्री एकत्र करने में बड़ी सावधानी अपेक्षित होती है। उसमें भाषा की स्वाभाविकता को तनिक भी धक्का न लगने पाए इसका पूर्ण ध्यान रखना नितान्त आवश्यक है।[2]

रेडटेप (Red-tape) के लिए लालफीता और उससे ही लालफीताशाही बना लेते हैं पर 'दीर्घसूत्रता' का ध्यान भी नहीं रहता।

अंग्रेजी और भारतीय दृष्टिकोण में अन्तर हो सकता है। सन् १९५७ की ओरियण्टल कान्फ्रेंस का उद्घाटन करते हुए डॉ० राजेन्द्रप्रसाद[3] ने कहा कि अंग्रेजों ने इसका नाम अपने दृष्टिकोण से ओरियण्टल रक्खा था। आज हमको यह नाम रखना शोभा नहीं देता। अंग्रेज लोग अपने देश की भौगोलिक स्थिति से कुछ देशों को दक्षिण पूर्व कहते थे, पर हमारी दृष्टि से उन देशों की दिशा में अन्तर हो सकता है अतएव यदि हम भी उनकी ही नकल के आधार पर दक्षिण पूर्व कहें तो मूर्खता होगी। बाबू गुलाबराय[4] ने भी कुछ मुहावरों का अनुवाद अपने देश की भौगोलिक एवम् सांस्कृतिक परिस्थिति के अनुसार सुझाया है।

---

१. रामचन्द्र वर्मा, वार्ता, आकाशवाणी, प्रयाग दिनांक १०-१०-५६।

२. विश्वनाथ शास्त्री भारद्वाज, हिन्दी में पारिभाषिक शब्द, ना० प्र० प०, वर्ष ५७, अंक ४, पृ० ३६१-६६।

३. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद—भाषण उद्घाटन, दिनांक २७-१२-५७।

४. बाबू गुलाबराय, मेरे निबन्ध, प्रथम संस्करण १९५५, (गयाप्रसाद एंड सन्स), पृ० २१६।

वार्म रिसेप्शन ( Warm reception ) मुहावरा प्रचलित हुआ इंगलैण्ड जैसे ठंडे देश में, भारत गरम देश है यहाँ तो प्रचलित होगा—हृदय को शीतल करना ( Breaking the Ice ) का अनुवाद भारत की प्रकृति के अनुकूल होना चाहिये—मौन भंग करना। कार्य प्रारम्भ करना।

Killing two birds with one stone से इंगलैंड की हिंसात्मक प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। भारत जैसे अहिंसक देश के लिए तो इसका अनुवाद होगा—एक पन्थ दो काज।

| अंग्रेजी शब्द या वाक्यांश | शाब्दिक अनुवाद | भावानुवाद |
|---|---|---|
| Precious stone | कीमती पत्थर | जवाहिरात |
| Oil-seeds | तेल के बीज | तिलहन |
| House-breaker | मकान तोड़ने वाला | सेंध लगाने वाला |
| Hunger strike | भूख-हड़ताल | अनशन |
| White ant | सफेद-चींटी | दीमक |
| D. O. | | अर्द्ध घरेलू चिट्ठी[1] |
| Drawing room Literature | | गोष्ठी-साहित्य[2] |

७. ३. निकटतम पर्यायों के आधार पर अनुवाद—

यह उपर्युक्त दो छोरों का मध्यम मार्ग है। अविकल अनुवाद और भावानुवाद का मध्यम मार्ग ही आदर्श अनुवाद की कसौटी है। इससे एक ओर अविकल अनुवाद की त्रुटियों का बचाव हो जाता है, दूसरी ओर अनावश्यक व्याख्या से बचत हो जाती है। इस प्रकार अनुवाद भाषा की स्वाभाविक प्रकृति के अनुकूल हो जाता है। इसके लिए अनुवाद में तीन आवश्यक तत्त्व रहने चाहिए।

(अ) व्यावहारिक भाषा का ही रूप अनुवाद में परिलक्षित होना चाहिए।

(आ) भाव होना चाहिए।

---

१. राय कृष्णदास, अनास्था सं० २००५, पृष्ठ २१।

२. डॉ० श्री कृष्णलाल, आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, १९५२, पृष्ठ ३८९।

(इ) वास्तविक रूप का अर्थ उससे प्रकट होता रहे।
इस हल के लिए निम्नलिखित चार बातें आवश्यक हैं—

७. ३. १. शब्द रूप
७. ३. २. व्याकरणिक रूप
७. ३. ३. शब्द वर्ग
७. ३. ४. जनरुचि

७.३. १. शब्द रूप—

जिस अनुवाद में जन-भाषा प्रयुक्त नहीं होती वह जनसाधारण में बोधगम्य कैसे हो सकती है। अतएव अनुवाद के क्षेत्र में इस ओर भी दृष्टि रखना आवश्यक है।[1] Excuse, pardon, Forgive सबके लिए क्षमा कह देने मात्र से कार्य नहीं चलेगा। विशेष प्रचलित शब्दों की अर्थी सीमा संकुचित करके ही ठीक तरह से इसका परिसीमन करना चाहिए, जो विच्छिन्न न हो सकें। साथ ही हमें अपने यहाँ के उपसर्ग प्रत्ययों आदि के पुराने अर्थों पर पूरा-पूरा विचार करके इस दृष्टि से उनमें आवश्यक परिवर्तन तथा सुधार करने पड़ेंगे कि वे अपने अंग्रेजी प्रतिरूपों तथा समकक्षों का ठीक तरह से काम दे सके और उनका प्रतिनिधित्व कर सके।[2] 'गैरज' में निहित अर्थ के आधार पर ही इसका अनुवाद 'मोटरखाना' किया गया।

७. ३. २. व्याकरणिक रूप—

इस कोटि में उदाहरण रूप में हम ले सकते हैं कि अंग्रेजी में। Many। के बाद आने वाली संज्ञा एकवचन होती है, पर हिन्दी में उसके अनुवाद 'कई' के बाद उसके वचन के अनुसार संज्ञा का बहुवचन वाला ही रूप रहता है। इसी प्रकार Two या one के बाद अंग्रेजी क्रिया बहुवचन होगी, पर हिन्दी में 'दो' 'या एक' के बाद एकवचन। भाषा की प्रकृति उसकी संज्ञाओं, विशेषणों, विभक्तियों और क्रियाओं का कहाँ तक साथ देती हैं इस ओर भी दृष्टि रखना बहुत आवश्यक है।[3]

---

१. इसके लिए देखिये इसी अध्याय का परिशिष्ट-१।
२. रामचन्द्र वर्मा, 'हिन्दी में अनुवाद' वार्ता, इलाहाबाद से प्रसारित, १० जनवरी १९५६।
३. वही, अच्छी हिन्दी, स० २००७, पृष्ठ ४७।

७. ३. ३. शब्द-वर्ग—

यदि भाषा की प्रवृत्ति के अनुकूल प्राकृतिक रूप में शब्द न रखे हुए हों तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। पाठक भी इससे असमंजस में पड़ जाता है।[1]

दोनों भाषाओं का एक ही क्रम—

| | |
|---|---|
| 'Literary' criticism | 'काव्य' समीक्षा |
| 'Poetic' truth | 'काव्यगत' रूप |
| 'Foolish' adventure | 'मूर्ख' का साहस |
| 'Sound' impulse | 'नाद'-सौन्दर्य |
| 'Play' impulse | 'क्रीड़ा' वृत्ति |
| 'V' column | 'पाँचवा' दस्ता |
| 'Light' house | 'दीप' गृह |
| 'Natural' beauty | 'नैसर्गिक' दृश्य |
| 'Public' servant | 'जन' सेवक |
| 'Intellectual' present | 'बौद्धिक' भेंट |
| 'Sea' sickness | 'समुद्री' बीमारी |
| Air Raid reporting control ship | हवाई छापा रिपोर्ट नियन्त्रण पोत |
| Air transport Liason officer | हवाई परिवहन-सम्पर्क अफसर |

कभी-कभी क्रम उलट जाता है—

| | |
|---|---|
| Apparent 'feeling' | अनूभूत्याभास |
| *Q*uit 'India' | 'भारत' छोड़ो |
| Non 'moral' | 'नीति'-निरपेक्ष |

अंग्रेजी क्रम के स्थान पर हिन्दी में क्रम बदल कर सामासिक पद हो जाता है—

| | |
|---|---|
| Line of Bomb | बम-पातन |
| Spirit of sacrifice | बलि-स्फूर्ति |

१. Nida, E. A.—Bible Translating, First Edition, Page 18.

| | |
|---|---|
| Art of reading | वाचन-कला |
| Story of design | व्यवस्थात्मक-कहानी |
| Unity of impression | प्रभावान्वित |
| Power of Resistance | प्रतिकार-शक्ति |

अंग्रेजी में सामासिक पद और हिन्दी में अनुवाद करने पर 'की' का प्रयोग—

| | |
|---|---|
| Night-dress | रात की पोशाक |
| Horse-power | घोड़े की शक्ति |

कभी-कभी अनुवाद हास्यास्पद भी हो जाते हैं—

| | |
|---|---|
| Shutter fixed | खिड़की स्थिर |
| Girls' vocational School | बालिका व्यवसाय विद्यालय[1] |
| Govt. fever Hospital | प्रभुत्व-ज्वर चिकित्सालय[2] |

७. ३. ४. जनरुचि—

कभी-कभी किसी शब्द का अनुवाद करना इतना निरर्थक रहता है कि वह चल नहीं पाता—रेडियो के लिए नभोवाणी[3] और वायुयन्त्र[4] किसी भी तरह न चल सके, हाँ, आकाशवाणी अवश्य कुछ चल रहा है जो कि एक पुराने शब्द का ही नवीन रूप है। साइकिल के लिए द्विचक्रीयवाहन नहीं चल सकता। 'सिनेमा' के लिए 'रूपवाणी'[5] न चल सका। 'होल्डोल' के

---

१. एक विद्यालय पर साइनबोर्ड लगाया गया पर बाद में हटा लिया गया, बेचारी हिन्दी, कल्पना, जून, १९५६।

२. एक सरकारी अस्पताल पर।

३. सरस्वती–निरंकुश—[चतुरानन की पदच्युति] सितम्बर १९४७, पृष्ठ २०४-२०६।

४. गोरखनाथ—राजकीय कोष, सन् १९४८, पृष्ठ ५९।

५. डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी—आर्यभाषा और हिन्दी, द्वि० सं०, पृष्ठ २३३।

लिए 'सर्वलपेट्ट'[1] हास्यास्पद है और जनता उसको स्वीकार न कर सकेगी।

इस सम्बन्ध में यदि ऐतिहासिक दृष्टि से शब्दों के अनुवाद पर विवेचन किया जाय तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है—

| अंग्रेजी शब्द | अनुवाद[2] | समय |
|---|---|---|
| Railway train | कल की गाड़ी | सन् १८७० से पूर्व |
| Engine | धुआंकस | सन् १८७०-७७ के मध्य |
| Barometer | शीतोष्णमापक यन्त्र | सन् १८७०-७७ के मध्य |
| Station | रेलघर | सन १६०० के समीप |
| Delta | त्रिकोण मण्डल | सन् १६०० के समीप |

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये शब्द उस कोटि में आते हैं जो आगत शब्दों के स्थान पर गढ़े गये हैं और न चल सके तथा कालान्तर में उनको स्वतः हट जाना पड़ा और अंग्रेजी का शब्द ही चलता रहा।

| अंग्रेजी शब्द | अनुवाद | समय | प्रचलित अनुवाद |
|---|---|---|---|
| politics | राजविद्या[3] | सन् १८७० से पूर्व | राजनीति |
| judge | विचारपति | सन् १८७०-७७ | न्यायाधीश |
| Museum | विचित्रवस्तु संग्रह | सन् १८७०-७७ | अजायबघर |
| University | प्रधान शिक्षालय, | वही | विश्वविद्यालय |
| Dictionary | शब्द कल्पद्रुम | वही | कोश |
| Member | सभ्य | वही | सदस्य |
| Library | सरस्वती भंडार | वही | पुस्तकालय |
| vice-president | सभा उपपति | वही | उपसभापति, अध्यक्ष |

१. सरस्वती, सितम्बर, पृष्ठ २०४-२०६।
English influence on Hindi Language and Literature (1870-1920).

२. ये अनुवाद डॉ० विश्वनाथ की थीसिस से लिए गये हैं, सन् १६५०, पृष्ठ १४३-१६१।

३. सन् १८६० में इसके लिये राज्य शासन 'विद्या' बना पर वह भी न चल सका।

| | | | |
|---|---|---|---|
| Enlightened | नई तलाश के लोग | वही | नई रोशनी के लोग |
| Appendix | उपस्तम्भक[1] | वही | परिशिष्ट |
| physics | पदार्थशास्त्र | सन् १९०० के समीप | भौतिकशास्त्र |
| Mechanism | कलकी | वही | यन्त्रविद्या |
| Critic | गुणदोष विवेचक | वही | आलोचक |

उपर्युक्त कोटि उन शब्दों की है जिसमें शब्द ठीक से न बन पाये अथवा किसी भी कारण से न चल सके तथा कालान्तर में किसी अन्य शब्द द्वारा हटा दिये गये।

| अंग्रेजी शब्द | अनुवाद | समय |
|---|---|---|
| Debate | वाद-विवाद | सन् १८७०-७७ |
| Comedy | सुखान्त | वही |
| Urgent | जरूरी | वही |
| Column | स्तम्भ | सन् १९०० के समीप |
| Exhibition | प्रदर्शनी | वही |

इस कोटि में वे शब्द रक्खे जा सकते हैं जिनका अनुवाद जो प्रारम्भ में हुआ वह आज भी चल रहा है। 'सर्टीफिकेट' का अनुवाद सन् १८७७ में प्रशंसापत्र हुआ पर सन् १८९० के आसपास प्रशंसापत्र को' Testimonial के लिए उपयुक्त समझा गया और 'सर्टीफिकेट' के लिए फिर से एक नया शब्द 'प्रतिष्ठापत्र' बनाया गया पर दुःख है कि आजतक इन शब्दों का निश्चित प्रयोग स्थिर न हो सका और सर्टीफिकेट ही चल रहा है।

७.४. अनुवाद में एकरूपता—

अनुवाद के क्षेत्र में एकरूपता होना परमावश्यक है, पर प्रारम्भिक अवस्था में इसका निर्वाह होना कठिन होता है। एक ही शब्द का अनुवाद भिन्न-भिन्न लेखक तो भिन्न-भिन्न करते ही हैं, पर कभी-कभी एक ही लेखक दो स्थलों पर एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न अनुवाद प्रयुक्त करता है—

---

१. 'अवशेष'—शिवप्रसाद सितारेहिन्द—हिन्दी व्याकरण।

अ—एक ही लेखक द्वारा भिन्न-भिन्न अनुवाद—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Subjective | ज्ञातृपक्ष[1] | Objective | ज्ञेयपक्ष[1] |
| | अन्तर्वृत्तिनिरूपक[2] | | बाह्यार्थ-निरूपक[2] |

आ—अनेक लेखकों द्वारा भिन्न-भिन्न अनुवाद—

| | | |
|---|---|---|
| Subjective | आत्मगत[3] | परगत[3] |
| | सब्जेक्टिव[4] | आब्जैक्टिव[4] |
| | व्यक्तिगत[5] | वस्तुगत[5] |
| | आत्मनिष्ठ[6] | वस्तुनिष्ठ[6] |
| | अध्यान्तरिक[7] | आत्मनिरपेक्ष[7] |
| व्यक्तित्वप्रधान | विषयीगत[8] | विषयगत[9] |

Standard —
परिनिष्ठित[10]
आदर्श, प्रमाण[11]
स्टैंडर्ड-सूत्र[12]
मर्यादा
आदर्शीकरण
साधु[13]

१. रामचन्द्र शुक्ल—चिन्तामणि, भाग २, सं० २०१०, पृ० १७।
२. वही, पृष्ठ १७२।
३. डॉ० सुधीन्द्र—हिन्दी काव्य में युगान्तर, सन् १९५०।
४. जैनेन्द्र—साहित्य का श्रेय और प्रेय, सन् १९५३, पृष्ठ १३७। शान्तिप्रिय द्विवेदी—सामयिकी, सन् १९४८, भोलानाथ, हिन्दी साहित्य, १९५४, पृ० ५५।
५. सत्येन्द्र—समीक्षा के सिद्धान्त, सन् १९५२, पृ० ५४।
६. डॉ० प्रसाद—भाषा विज्ञान का कोश, स० १३०९, तथा ८५८।
७. डॉ० श्रीकृष्ण लाल—थीसिस में पीछे पारिभाषिक शब्दावली, हि० सा० का विकास, १९५४, पृष्ठ ३९१।
८. हजारीप्रसाद द्विवेदी—विचार और वितर्क, सन् १९५४, पृष्ठ १८३।
९. राजनाथ शर्मा—साहित्यिक निबन्ध, सन् १९५४, प्र० सं०, पृ० ४२४।
१०. हजारीप्रसाद द्विवेदी—विचार और वितर्क, सन् १९५४, पृ० १५३।
११. डॉ० प्रसाद—भाषा विज्ञान का कोश, सं० १२८४।
१२. बालकृष्ण भट्ट—भट्ट निबन्धमाला, प्रथम भाग, सं० २००४, पृष्ठ ५१।
१३. राजबली पाण्डेय—ना० प्र० अ०, हीरक जयन्ती, पृष्ठ २०९।

७.५० विभिन्न विधियाँ—

अंग्रेजी के एक-एक शब्द के स्थान पर अनेक 'शब्द' का दूसरा पक्ष यह है कि अंग्रेजी के अनेक शब्दों के स्थान पर एक ही शब्द विभिन्न विद्वानों द्वारा अनुवादित होना—

| अंग्रेजी शब्द | हिन्दी अनुवाद |
|---|---|
| Realistic | वास्तविक[१] |
| Factual | वास्तविक[२] |
| Actual | वास्तविक[३] |
| positive | वास्तविक[४] |

अनुवाद करते समय यह भी आवश्यक नहीं कि अंग्रेजी के शब्द का प्रति-शब्द एक ही हो। स्थान-स्थान पर उसके भावानुसार शब्द बदल सकते हैं। जैसे, निम्नलिखित शब्दों में 'जनरल' (General) शब्द के स्थान पर तीन यौगिक शब्दों में तीन पृथक्-पृथक् शब्द हैं—

| अंग्रेजी शब्द | हिन्दी अनुवाद |
|---|---|
| General Administration | प्रसूत शासन |
| General Council | महापरिषद् |
| General Good | लोकहित |

इसी प्रकार अंग्रेजी के विभिन्न अर्थों को प्रगट करने वाले शब्दों एवं प्रत्ययों के स्थान पर हिन्दी का केवल एक ही प्रत्यय काम दे सकता है —

| अंग्रेजी शब्द | हिन्दी अनुवाद |
|---|---|
| Cabinman | केबिनवाला |
| Craneman | क्रेनवाला |
| 2 engined | दो इंजनवाला |
| Gate-keeper | फाटकवाला |
| Wheeler | पहियोंवाली |

---

१. रामचन्द्र शुक्ल—चिन्तामणि, भाग २, सं० २०१०, पृष्ठ १७२।
२. सुमित्रानन्दन पन्त—गद्यपथ, १९५३, पृष्ठ ५१।
३. विधि पत्रिका, भाग २, अंक २, पृष्ठ १६।
४. नन्ददुलारे—बीसवी शताब्दी, प्रथम सं०, पृष्ठ ११।

'स्टोर' का अनुवाद भंडार होगा, पर 'स्टोरकीपर' (Store-keeper) का अनुवाद भंडारवाला न होकर 'भंडारी' मात्र ही होगा। कभी-कभी अनुवाद करते समय अपना कोई शब्द न रखकर जनता में प्रचलित कोई दूसरे विदेशी शब्द को ही रख देते हैं—

| अंग्रेजी शब्द | अनुवाद |
| --- | --- |
| Booking-office | टिकट-घर |

७.६. प्रसार—

कभी-कभी नवीन आगत शब्दों का अनुवाद न करके पुराने शब्दों के अर्थ में ही प्रसार कर दिया जाता है—इस प्रक्रिया को प्रसार कहते हैं। संस्कृत के पुराने शब्द 'पण्य' का प्रयोग आज 'कोमोडिटी'। (Commodity) के लिए किया जाने लगा। संस्कृत का एक शब्द है— 'शक्ति'। कभी–कभी सामर्थ्य के स्थान पर भी इसका प्रयोग हो जाता है। अंग्रेजी के प्रभाव के कारण अब यह 'सैन्यशक्ति' में भी आता है, 'प्रेरकशक्ति' के लिए भी प्रयुक्त होता है। निगम Corporation के अर्थ में।

७. ७. वाक्यांश, मुहावरे और लोकोक्तियों का अनुवाद—

| अंग्रेजी | हिन्दी |
| --- | --- |
| Good-morning | सुप्रभात |
| Shake-hand | करमर्दन |
| Honey-moon | नवयुग्म |
| point of vision | दृष्टिविन्दु |
| Change of climate | वायुपरिवर्तन |
| Continuity of thought | विचारक्रम |
| All round | सर्वतोमुखी |
| Standard of excellence | उत्कृष्ट की माप |
| Red-hot | रक्ततप्त |
| Castle in air | हवामहल |
| Crystal-clear | स्फटिक |
| Angle of vision | दृष्टिकोण |
| After that | तदनन्तर |
| After sometime | कालान्तर |

| | |
|---|---|
| According to order | आज्ञानुकूल |
| Generally | साधारणतः |
| Above-said | उपरोक्त । उपर्युक्त |
| Well-wisher | शुभचिन्तक |
| On the other hand | दूसरी ओर |

| अंग्रेजी रूप | हिन्दी अनुवाद |
|---|---|
| A barking dog is more useful than sleeping lion | भूँकता हुआ कुत्ता ज्यादे काम का सोते हुए सिंह से ।[1] |
| Tree of knowledge. | ज्ञान के वृक्ष ।[2] |
| A thing of beauty is joy for ever. | सौंदर्य-वस्तु ही सतत् आनन्द है ।[3] |
| Poetry is the criticism of life. | काव्य जीवन का अनुशीलन है ।[4] |
| Life means giving. | जीवन का अर्थ दान है ।[5] |
| Even his failings lean to Virtuescide. | दुर्गुणों का आधार भी गुण हैं ।[6] |
| God helps those who help themselves. | राम सहायक उनके होते हैं ।[7] जो अपने ही स्वयं सहायक । |
| Last mile stone. | मेरे जीवन के अन्तिम पाहना ।[8] |
| Posterity is very selfish and cruel. | संतति बड़े स्वार्थी और निर्मम हैं ।[9] |

१. बालकृष्ण भट्ट—भट्ट निबन्धमाला, सं०—धनंजय भट्ट, द्वितीय भाग, सं० २००४, पृष्ठ ४ ।

२. वही, पृष्ठ १७७ ।

३-४. डॉ० सत्येन्द्र—समीक्षा के सिद्धान्त, सन् १९५२, पृष्ठ ७१ ।

५. बनारसीदास चतुर्वेदी—संस्मरण, सन् १९५२. पृष्ठ १२० ।

६. वही, भारतीय ज्ञान विद्यापीठ, काशी, पृ० १२३ ।

७. बच्चन—बंगाल का काल, द्वितीय सं० १९५०, पृ० २२ ।

८. रामचन्द्र शुक्ल—चिन्तामणि, भाग २, सं० २०१०, पृ० २२५ ।

९. उपेन्द्रनाथ 'अश्क'—पैंतरे, सन् १९५५, पृ० २४ ।

| | |
|---|---|
| Instrument of one's hand. | अपने को 'किसी के' हाथ का औजार बन जाने दो।[1] |
| Eat, drink and be merry. | खाओ, पीओ और मौज करो।[2] |
| To let grass grow under the feet. | पैर के नीचे घास उगने देना।[3] |
| To turn a new leaf in History. | नया पन्ना उलटे इतिहास हुआ है<br>नूतन वीर्य विकास—'जय बोल'—<br>(गुप्त जी) |
| To catch red-handed. | रंगे हाथ पकड़ना।[4] |
| Castle in the air. | हवाई किले।[5] |
| To call a spade a spade. | मैं तो कुल्हाड़ा को कुल्हाड़ा कहूँगा। |
| Blood and sword. | खून और तलवार।[6] |
| God is law. | विधाता विधान एक है।[7] |
| Honesty is the best policy. | ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है।[8]<br>सारल्यं सत्तमों मार्गः।[9] |
| Simple living & highest thinking. | साधारण जीवन उच्च विचार।[10] |

---

१. धर्मवीर भारती—निकष २, पृष्ठ १६३।

२. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—मध्यकालीन धर्म साधना, सन् १६५२, पृ० ११।

३. डॉ० भोलानाथ, हिन्दी साहित्य, सन् १६५४, पृ० ६०।

४. डॉ० श्रीकृष्ण लाल—आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, सन् १६५२, पृष्ठ १६७।

५. वही, पृष्ठ १६७।

६. अमृतराय—नयी समीक्षा, १६५०, पृष्ठ ८२।

७. जैनेन्द्र—साहित्य का श्रेय और प्रेय, सन् १६५३, पृष्ठ ४१।

८. इलाचन्द्र जोशी—विवेचन, दिसम्बर, सं० २००७, पृष्ठ २३०।

६. भट्ट निबन्धमाला—द्वितीय भाग, सं० धनंजय भट्ट, सं० २००४, पृष्ठ ७७।

१०. उषादेवी मित्रा—वचन का मोल, प्रथम सं०, पृष्ठ २७।

| | |
|---|---|
| Love is blind. | प्रेम अन्धा होता है ।[१] |
| Love and smoke can never be hidden. | प्रेम और धुँआ छिपाये नहीं छिपता ।[२] |
| Might is right. | क्षत्रबल ही परम बल है । |
| Every thing is fair in love and war. | प्रेम और युद्ध में सब कुछ माफ है ।[३] |
| Habit is a second nature. | आदत दूसरे तरह का एक स्वभाव होता है ।[४] |
| Knowledge is being. | असली जानना पाना है ।[५] |
| Knowing is becoming. | जानना परिणति ही पाना है ।[६] |
| Example is better than precept. | वह सफल है जो स्वयं Example में से आता है ।[७] |
| Square in the hole. | चौकोर छेद में गोल खूंटी ।[८] |
| Argument is but self justification. | तर्क आत्मरक्षात्मक है ।[९] |
| Do as Romans do. | रोम में रहो रोमनों की तरह ।[१०] |

१. चंडीप्रसाद हृदयेश—नंदन निकुंज, सन् १६२२, पृष्ठ २६ ।
विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'—भिखारिणी, सन् १६५२, पृ० ५०

२. गुलाबराय—नवरस, पृ० १८७ ।

३. नवभारत टाइम्स—२७ दिसम्बर, १६५६ ।

४. भट्ट निबन्धमाला, प्रथम भाग, सं० २००४, पृ० ४४ ।

५. जैनेन्द्र—साहित्य का श्रेय और प्रेय, सन् १६५३, पृ० ७६ ।

६. वही, पृ० २४ ।

७. जैनेन्द्र—साहित्य में श्रेय और प्रेय, सन् १६५३, पृ० २२८ ।

८. यह उल्टा अनुवाद है—११८ धर्मवीर भारती—निकष २, पृ० ५१ ।

६. जैनेन्द्र—साहित्य में श्रेय और प्रेय, सन् १६५३, पृ० २५४ ।

१०. होना चाहिये जैसा देश वैसा भेष ।

| | |
|---|---|
| Show is show, it is not duty. | शो को शो समझिये शो ड्यूटी नहीं ।[१] |
| Good company in a journey is worth a couch. | यात्रा में अच्छी संगति गाड़ी के समान है ।[२] |

कभी-कभी यह पहचानना कठिन प्रतीत होता है कि अमुक कहावत अपना निजी है कि किसी विदेशी कहावत का अनुवाद मात्र है—

| | |
|---|---|
| Carry coal to New Castle. | उल्टे बांस बरैली जांय |
| Look not a gift horse in the mouth. | धर्म की गाय के दाँतों का क्या कहना ।[३] |

कहीं-कहीं तो पूरे के पूरे वाक्य का अनुवाद करके रख दिया ज[illegible] है—

| | |
|---|---|
| It is good to have a giants strength but bad to use it like giant | शक्ति होना अच्छा है पर [illegible]व की तरह उसका उपयोग करना अच्छा नहीं है ।[४] |
| Words were in the beginning and word was God. | प्रारम्भ में शब्द समूह ही थे और शब्द ही ईश्वर था ।[५] |

## ७. ८. पारिभाषिक शब्दावली

### ७. ८. १. ध्वनिसाम्य पर बनाये गये शब्द—

अंग्रेजी के शब्दों के समानार्थक शब्द ध्वनि साम्य पर भी गढ़ लिये हैं ।

(अ) अपनी भाषा की धातु से निर्मित—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Survey | सर्वेक्षण | Oxygen | ओषजन |
| Interim | अन्तरिम | Nitrogen | नेत्रजन |
| Ultimatum | अल्टीमेटम | Avalanch | अवलांश |

१. झावरमल बनारसीदास—गुप्त निबन्धावली, सन् १९४९, पृष्ठ १८२ ।

२. डॉ० कन्हैयालाल 'सहल'—विदेशी कहावतों का इतिहास, साहित्य, वर्ष ६, अंक ७, पृ० ५७-६१ ।

३. वही ।

४. गुलाबराय—नवरस, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ४७२ ।

५. धनंजय भट्ट—भट्ट निबन्धमाला, भाग २, सं० २००४, पृष्ठ ११४ ।

(ब) अंग्रेजी के शब्दों को ही अपनी प्रवृत्ति के अनुकूल बना देना—

| | | | |
|---|---|---|---|
| Acedamy | अकादमी | Technique | तकनीक |
| Party | पत्ती | Dagbal | दागबेल |

७. ८. २. विभिन्न अर्थों को प्रकट करने के लिए शब्द—

वैसे किसी भी 'प्रधान' के लिए 'सभापति' का प्रयोग कर लिया जाता है। आज किसी भी सभा के प्रधान के लिए सभापति से काम चल सकता है, पर उसका अर्थ विकास सभी स्थलों के प्रधान के लिए समुचित हो गया है—

| | | |
|---|---|---|
| President — | देश के प्रधान के लिए | —राष्ट्रपति |
| | सार्वजनिक सभा के प्रधान के लिए सभापति | —सभापति |
| | राज्य परिषद् के प्रधान के लिए | —प्रधान परिषद् |

इस प्रकार अंग्रेजी के शब्द के द्वारा जो भ्रम उत्पन्न हो जाता है वह हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली से मिट जाता है। अन्य विभागों के प्रधान के लिए देखिये—

| | | |
|---|---|---|
| Chairman— | नगरपालिका तथा जिलाबोर्ड का प्रधान | —अध्यक्ष |
| | किसी भी लिमीटेड कम्पनी का प्रधान | —सभापति |
| Speeker— | लोक सभा का प्रधान | —अध्यक्ष |

ऐसे ही हमारा सभापति अंग्रेजी के दो शब्दों के लिए दो भिन्न स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है—

| | | |
|---|---|---|
| सभापति | Chairman— | किसी लिमीटेड कम्पनी का प्रधान |
| | President— | किसी सार्वजनिक सभा का प्रधान |

दूसरी ओर अध्यक्ष

| | |
|---|---|
| Chairman | नगरपालिका का प्रधान |
| Speeker | लोकसभा का अध्यक्ष |

इस सम्बन्ध में एक और शब्द देखिये—गवर्नर पहिले वह प्रान्त का प्रधान था अब राज्य का। अंग्रेजी शब्द में कोई परिवर्तन नहीं हुआ पर हिन्दी में—

| | |
|---|---|
| प्रान्त के प्रधान होने के नाते | प्रान्तपति |
| राज्य के प्रधान होने के नाते | राज्यपाल चलाया गया। |

इस विषय पर आकाशवाणी देहली से गत ११ मार्च १९५७ को एक वार्तालाप गोष्ठी डॉ० नगेन्द्र, बालकृष्ण शर्मा तथा रामचन्द्र टंडन के मध्य हुई। विचार विमर्श के पश्चात् उन्होंने कुछ शब्दों के विभिन्न शब्द निश्चित किये। उदाहरणार्थ, दो शब्द दे रहा हूँ—

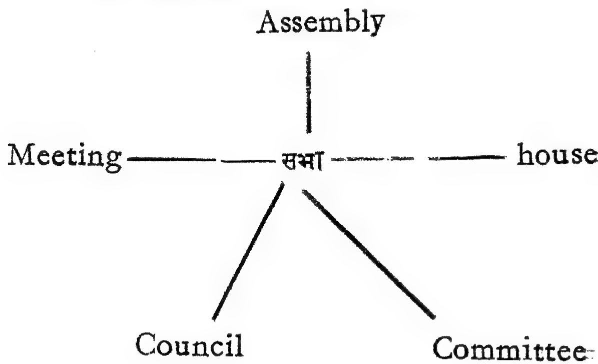
| | | |
|---|---|---|
| attachment | के लिए | नत्थी, संलग्नता, आसक्ति अनुरक्ति, राग। |
| Case | के लिए | १. विषय, प्रसंग, अवस्था, स्थिति। |
| | | २. मामला, मुकदमा, अभियोग। |
| | | ३. कारक। |
| | | ४. उदाहरण, रोगी |

७. ८. ३. अंग्रजी के अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द—

इसके लिए मैं एक बहुप्रचलित शब्द 'सभा' का उदाहरण लेकर स्पष्ट करना चाहता हूँ—

| | |
|---|---|
| Legislative Assembly | विधान सभा |
| Meeting | सभा |
| House of Commons | लोकसभा |
| Council of State | राज्यसभा |
| All India Congress Committee | अखिल भारतीय महासभा |

इस प्रकार सभा की स्थिति यह रही—



५. ८. ४. सूक्ष्म अर्थ प्रकट करने वाले अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर हिन्दी शब्द—

| | |
|---|---|
| Development | परिवर्धन |
| Growth | वृद्धि |
| Evolution | विकास |

स सम्बन्ध में श्री रामचन्द्र वर्मा जी ने विशेष कार्य किया है, जिसका ज्वलन्त उदाहरण उनकी 'शब्द-साधना' है। बाधा से सम्बन्धित शब्द देखिये—

| | |
|---|---|
| Hinderance | अड़चन |
| Clog | अर्गल |
| Obstruction | अवरोध |
| Difficulty | कठिनता |
| Barrier | परिध |
| Bar | बाध |
| Impediment | रुकावट |
| Check | रोध |

इसके बाद भी उनको विघ्न के लिए बाधा की आवश्यकता प्रतीत हुई।

रक्षा-विभाग के अन्तर्गत Dismiss के लिए विसर्जन और Disperse के लिए वियोजन बनाना पड़ा। इसी प्रकार हमले से सम्बन्धित अंग्रेजी में चार शब्द हैं, जिनका अर्थ भी पृथक् रखने के लिए हिन्दी में प्रचलित चारों शब्दों के लिए पृथक्-पृथक् शब्द निश्चित कर लेना पड़ा।

| | |
|---|---|
| Attack | आक्रमण |
| Aggression | हमला, ध्वनि साम्य पर, अग्रघर्षण |
| Invasion | चढ़ाई |
| Charge | धावा |

भौतिकशास्त्र में 'हीट' के लिए ऊष्मा और टेम्परेचर के लिए 'ताप' बनाने पड़े। जिसके लिए बहुप्रचलित शब्द तापक्रम को छोड़ना पड़ा

७. ८. ५. संकर शब्द—

कुछ संकर शब्दों का भी निर्माण आवश्यक समझा गया है, जो भाषा में रम चुके हैं।

७. ८. ५. ये शब्द चार कोटि के होते हैं —

| | |
|---|---|
| (अ) संस्कृत-अंग्रेजी | (अ) पोलिंग-स्थान, प्रेस-स्वातन्त्र्य |
| (आ) संस्कृत-उर्दू | (आ) जन्मदर, प्राकृतिक नक्शा |
| (इ) अंग्रेजी-उर्दू | (इ) जिला-बोर्ड, रोजगार-ब्यूरो |
| (ई) अंग्रेजी-हिन्दी | (ई) आग-बोट |

७. ८. ५. २. अंग्रेजी शब्दों में ही प्रत्यय, उपसर्ग आदि लगाकर बनाना—

| | |
|---|---|
| Voltaic | वाल्टीय |
| Galvenometer | गैलवेनोमापी |
| Cyl ndrical | सिलिंडराकार |
| Registered | रजिस्ट्रीकृत |
| Censorship | सेंसरी |
| Shareholder | शेअरधारी |

इस कोटि में अनेक शब्द रखे जा सकते हैं जो प्रचलित भी हैं।

७. ८. ६. बहु प्रचलित उर्दू शब्दों का स्थान—

देश में प्रचलित उर्दू शब्दों को भी यथास्थान काम में लाना होगा। इसी आधार पर निम्नलिखित शब्दों को अपना लिया गया।

| | |
|---|---|
| Bureaucracy | दफतरशाही |
| Candidate | उम्मीदवारी |
| Community | बिरादरी |
| Land-Revenue | मालगुजारी |
| Drill | कवायद |

| | |
|---|---|
| Mark | निशान |
| Exercise | मश्क |

इस सम्बन्ध में सांस्कृतिक परम्परा का ध्यान रखते हुए कभी-कभी अधिकतम आवृत्ति (Frequency) होते हुए भी कुछ शब्दों को त्यागना पड़ता है, उदाहरणार्थ—ला (Law) के प्रचलित रूप कानून शब्द को अगर लें तो उसी के आधार पर शब्द बनाने होंगे और फिर हमारे सामने मेकन्ननः, मुकन्नन आदि रूप भी आयेंगे जो न हमारी प्रवृत्ति के अनुकूल हैं और न बोलचाल में प्रचलित ही।

| अंग्रेजी | संस्कृत के आधार पर | उर्दू के आधार पर |
|---|---|---|
| Law | विधि | कानून |
| Legal | वैध | कानून मरुजा |
| Legalist | विधि परायण | निजाम बिल अम्लका |
| Lawless | विधिहीन-विरुद्ध | काननजिकन या मतीलिक-उ-एनान |
| Legislature | विधायी | मुकन्ननः,कानून साजान |
| Legislator | विधायक | मुकन्नन |
| Law-maker | विधिकर्ता | बाजये कयानीन |

इस प्रकार यह स्पष्ट ही हो गया कि किस प्रकार संस्कृत की एक धातु से शब्द बना लेने ठीक रहेंगे जो अन्य प्रान्तीय भाषाओं में भी प्रचलित हैं और हमारी प्रवृत्ति के अनुकूल भी।

७. ८. ७. अन्य प्रान्तों में प्रचलित शब्द—

मराठी, बंगला, गुजराती तथा दक्षिण की सम्पन्न भाषाओं में तमिल तेलुगु, कन्नड़, मलयालम आदि में प्रचलित शब्द भी लेने होंगे—

| अंग्रेजी | अनुवाद | भाषा सम्बन्धित नाम |
|---|---|---|
| Establishment | सिब्बन्दी | कन्नड़, तमिल, तेलुगु |
| Party in power | अथिका रूढ़ पक्ष | मराठी |
| Memorandum | यादी | मराठी |
| Brackets | बन्धनी | बंगला |
| Debit | नामें डालना | मारवाड़ी |
| Executive | कार्य अंग (कार्याङ्ग) | कन्नड़ |

| | | |
|---|---|---|
| Coir | कयिरू | तमिल |
| Whip | प्रतोद् | मराठी |
| Net | निवल | कन्नड़ |

७. ८. ८. देश की सांस्कृतिक परिपाटी का ध्यान रखते हुए कुछ प्रचलित अंग्रेजी के शब्दों के साथ-साथ हिन्दी शब्द भी चलाने होंगे जिससे कालान्तर में वह उनका ध्यान ग्रहण कर सकें।

| | | |
|---|---|---|
| Act | एक्ट | अधिनियम |
| Bill | बिल | विधेयक |
| Gazette | गजट | राजपत्र |
| Syndicate | सिंडीकेट | अभिपद |
| Veto | वीटो | रोध अधिकार |
| Platoon | पलटन | गुल्म |
| Company | कम्पनी | गण |
| Battalion | बटालियन | वाहिनी |

७. ८. ६. बहुप्रचलित अंग्रेजी शब्दों का ग्रहण—

इस कोटि में 'स्टेशन' जैसे शब्द ले सकते हैं पर वह भी 'रेलवे स्टेशन' के अर्थ में रुढ़ हो गया। रेडियो, स्टेशन, मिलिटरी स्टेशन, मैटरोलौजिकल स्टेशन तथा स्टेशरएड आदि के अर्थों में नहीं चल सकता। इस प्रकार के शब्दों की एक लम्बी सूची दी जा सकती है। ऐसे कुछ शब्दों की सूची निम्न हैं—

डेयरी, राशन, क्रीम फिनायल, बैंक, डेल्टा, गारंटी, लाइसेंस, कौरम, बल्व, कालर, गैस, पैट्रोल, ग्लीसरीन, पिस्तौल, फिल्म, रेडियो, रबड़, टेलीफोन पम्प, चिमनी, कैमरा, वीकर, ब्रेक, बम आदि।

७.९ कविता में अनुवाद—

ज्यों-ज्यों गद्य के क्षेत्र में अंग्रेजी शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा, त्यों-त्यों इन शब्दों का प्रयोग पद्य के क्षेत्र में भी होने लगा। पर यह प्रयोग सीमित क्षेत्रों में ही होता था और विशेषकर हास्य में। अंग्रेजी शब्दों, वाक्यशों मुहावरों आदि का प्रयोग अनुवाद के माध्यम से अनेक कवियों की कविताओं में प्राप्त होता है। छायावादी युग तो इससे प्रभावित रहा है। अंग्रेजी के

शब्दों और मुहावरे ही नहीं वरन् कविता पंक्तियों तक के अनुवाद रखे जाने लगे—

| अंग्रेजी मुहावरे | हिन्दी अनुवाद |
|---|---|
| Dreamy smile | स्वप्निल मुस्कान |
| Golden touch | सुनहले स्पर्श |
| Silvery | रूपहले |
| Broken heart | भग्न हृदय |

आचार्य शुक्ल ने भी इस प्रकार के प्रयोगों की ओर 'चिन्तामणि में निर्देश किया है—

| | |
|---|---|
| prosaic life | गद्यमय जीवन |
| Golden dream | सुवर्ण स्वपन |
| Dreamy atmosphere | स्वपन अनिल |
| Dreamy splendour | स्वप्निल आभा |
| Innocent breath | बच्चों के तुतले भय सी[1] |

अन्त में इस प्रकार की प्रवृत्ति विशेष देखी जाती है -

| | |
|---|---|
| Heavenly light | स्वर्गीय प्रकाश—तुझको पहना जगत देख ले । यह स्वर्गीय प्रकाश—पल्लव पृ०५ । |
| Divine-light | बाल रजनी-सी अलक सी डालती |
| Underlined | भ्रमित हो शशि के बदन के बीच में अचल रेखांकित कभी थी करती। |
| Translate | प्रमुखता मुख की सुछवि के काव्य में हे विधि फिर से अनुवादित कर दो। |
| Innocent | कान से मिले अज्ञान नयन |
| Dreamy smile | सहज पा सजा-सजीला तन। सुप्ति की ये स्वप्निल मुस्कान। |
| Golden age | कहाँ आज वह पूर्ण पुरातन वह सुवर्ण का काल। |

१. रामचन्द्र शुक्ल, चिन्तामणि, भाग २, सं० २०१०, पृष्ठ २२५।

पूरी-पूरी पंक्तियों का अनुवाद[1]—

| | |
|---|---|
| Then, sing ye birds, | गाओ, गाओ, विहग बालिके, |
| Sing, sing a joyous song | तरुवर से मृदु मंगल-गान। |
| In the golden lighten the sunk in sin | मेरा सोने का गान वह सुवर्ण संसार। |
| I laugh when I passly thunder—Shelly | कड़क-कड़क कर हँसते हम जब थर्रा उठता है संसार। |

अन्य कवि भी इस प्रभाव से बच न सके। महादेवी पर प्रभाव देखिये[2]—

| | |
|---|---|
| The fountain mingle with the rever | वह सरिता है चली जा रही—है चंचल अविराम। |
| And river in the Ocean —Shelly | थकी हुई लहरों को देते दोनों तट विश्राम। |

रत्नाकर जी पर प्रभाव[3]—

| | |
|---|---|
| Vacant look | इमि बिलखत बतरात थकित चितवत 'चखरीते'। |

७. १०. पद-सम्बन्ध—अंग्रेजी और हिन्दी की प्रवृत्ति इस सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न है। अजानवश कभी-कभी नितान्त अशुद्ध अनुवाद हो जाता है। एक लेखक महोदय ने History of Modern Indian Education का अनुवाद 'भारतीय शिक्षा का आधुनिक' इतिहास किया। अंग्रेजी में modern 'भारतीय शिक्षा' का विशेषण है जबकि हिन्दी में 'इतिहास' का। इस प्रकार के भ्रामक तथा अशुद्ध अनुवादों से बचना होगा।

७. ११. इस भाँति की विभिन्न प्रणालियाँ हैं जिनके द्वारा शब्दों का आगमन आज प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में देश की विभिन्न संस्थाओं, लेखकों, भाषाविदों एवं समाचार-पत्रों के माध्यम से हिन्दी के भांडार में हो रहा है। कभी-कभी एक शब्द जो पूर्व प्रचलित था, आज हटा देना पड़ता है।

---

१. निराला—पंत और पल्लव, पृष्ठ १३, २६, ३२।

२. गुलाबराय—रहस्यवाद और हिन्दी कविता, प्रथम सं० २१७।

३. पं० कृष्णशंकर शुक्ल—कविवर रत्नाकर, सं० १९९२, पृष्ठ ३३३।

जैसे, Appendix के लिए अनुक्रमणिका बनाया, किन्तु आज उसके स्थान पर परिशिष्ट ही अधिक चलता है। शब्द बनते बिगड़ते चलते हैं। कुछ काल के कुठार से समाप्त हो जाते हैं, कुछ घिस-पिटकर गोल-मटोल लुढ़कते ही चलते हैं और कुछ तो ऐसे जमकर बैठ जाते हैं कि हटाये नहीं हटते, हिलाये नहीं हिलते। इसमें साइकिल को ले सकते हैं। कितना प्रयत्न हुआ द्विचक्रीय-वाहन, पैरगाड़ी आदि शब्दों को चलाने का,पर क्या हुआ और 'कार' के आगे हवागाड़ी तो बेचारी हवा में ही उड़ गई। तो फिर यदि गैलरी के लिए 'दीर्घा' बक्स के लिए 'प्रकोष्ठ' सिनेमा के लिए 'रूपवाणी' डबल मार्च के लिए 'दुगुना मार्च' रेडिओं के लिये 'वायुयन्त्र' आदि शब्द नहीं चले तो क्या आश्चर्य ?

हाँ, आश्चर्य तो यह है कि कुछ विद्वान अपने शब्दों को विदेशी वेशभूषा में देखकर पहचान भी नहीं पाते और फिर उसको विदेशी समझकर नवीन शब्द गढ़ लेते हैं—

Gunny bag में 'गनी' भारतीय शब्द है।

Dak में 'डाक' के स्थान पर पत्र।

कुछ लोग नितान्त भ्रामक शब्द बना लेते हैं। 'बेंच' और 'तिपाई' दो शब्द हैं, दो भाव लिये हुए हैं। पहला शब्द अंग्रेजी का है और दूसरा हिन्दी का। बेंच के स्थान पर तिपाई चलाना हास्यास्पद होगा।

अध्याय ७

# परिशिष्ट-१

## फार्म का अनुवाद

| | | |
|---|---|---|
| Money order Form | मनीआर्डर फार्म | धनादेश आजकल |
| M. O.-8/239-A/ 11-6-57 | एम० ओ०८/७०५/ ५-२-१२ | M. O.-8/663/ 22:6-54 |
| Money Order | रूप्य प्रेष्य | मनीआर्डर |

| अंग्रेजी | शूद्धतम हिन्दी | व्यावहारिक हिन्दी |
|---|---|---|
| A. O. Stamp | ए० ओ० मुद्रांक | लेखा-परीक्षा दफतर की मुहर[1] |
| Oblong M. O. stamp on issue | निष्कासनकालिक रूप्य प्रेष आयताकार मुद्रांक. | भेजते समय मनीआर्डर की लम्बी मोहर |
| Month stamp | माहसूचक मुद्रांक | महीने की मोहर |
| Amount (In figure) | राशि-अंकों में | रकम अंकों में |
| Issued for Rs... | ...रुपया निष्कासित किया गया | ...रु० आ० के लिए भेजा गया |
| M. O. Clerk | रूप्य प्रेषलिपिक | मनीआर्डर क्लर्क |
| Issuing post master | निष्कृति डाक नियंत्रक | भेजने वाला पोस्टमास्टर |
| All the entries below should be filled by the remitter | निम्नांकित रिक्त स्थानों की पूर्ति प्रेषक करें | नीचे के सब स्थान रुपये भेजने वाले को भरने चाहिए |

---

१. यह भ्रम होता है कि लेखा-परीक्षा दफतर की मोहर लगेगी, जबकि इस स्थान पर किसी विशेष लेखा-परीक्षा दफतर की ओर निर्देश करने के लिए मोहर होती है।

| | | |
|---|---|---|
| Amount | राशि | रक़म |
| Name and address of the payee (In full) | प्राप्तकर्ता का नाम और पूरा[1] पता | रुपया पाने वाले का नाम व पता |
| Date | तिथि | तारीख |
| Signature of remitter | प्रेषक का हस्ताक्षर | भेजने वाले का हस्ताक्षर |
| Acknowledge | प्राप्ति स्वीकृति पत्र | प्राप्ति पत्र |
| Name of payee | प्राप्तिकर्ता का नाम | रुपया पाने वाले का नाम |
| Amount of Order | प्रेष की राशि | मनीआर्डर की रकम |
| Name and address of the remitter (In full) | प्रेषक का नाम तथा पूरा पता | भेजने वाले का नाम व पूरा पता |
| Date stamp of the Office of payment | निष्कृति[2] कार्यालय दिनांक व मुद्रांक | अदायगी वाले डाकघर की तारीख वाली मुहर |
| Name stamp of the office of issue | निष्कृति कार्यालय नाम मुद्रांक | भेजने वाले डाकघर की मुहर |
| Coupon | कूपन | कूपन |
| The remittter may write here any communication to the payee and must write his name address overleaf. | प्रेषक इस स्थान पर प्रासिकर्ता को कोई संवाद तथा पृष्ठभाग पर उसका नाम तथा पता लिख सकता है। | भेजने वाला रकमपाने वाले को जो संदेश भेजना चाहें, यहाँ भेजने वाला रकमपानेवाले को लिख सकता है और अपना नाम व पता इसके दूसरी ओर |

१. 'पूरा' विशेषण केवल पते के साथ ही रह जाता है, जबकि अंग्रेज़ी में वह नाम व पता दोनों का विशेषण है।

२. Payment तथा Issue दोनों का अनुवाद 'निष्कृति' कर दिया गया है।

३. His का अनुवाद अशुद्ध किया गया, जो आगे चलकर ठीक कर दिया गया है।

| | | |
|---|---|---|
| Head-Office | प्रधान-कार्यालय | मुख्य डाक-घर |
| Sub-Office | उपकार्यालय | उपडाक-घर |
| Received the sum specified on the reverse | पृष्ठभाग पर निदेशित राशि प्राप्ति की | दूसरी ओर दी हुई रकम प्राप्त की |
| Indentifiers Certificate | प्रमाणकर्ता का प्रमाण-पत्र | पहिचानने वाले का प्रमाण-पत्र |
| Round M. O. stamp on payment | निष्कृत-अधिकार-प्रदायक रूप्य प्रेष वृताकार मुद्रांक | रकम देने के समर्थक के लिए मनीआर्डर की गोल मोहर |
| Oblong M. O. Stamp on payment | निष्कृति उपरान्त रूप्य प्रेष आयताकार मुद्रांक | मनीआर्डर की अदायगी की लम्बी मोहर |
| Siguature of Witness | साक्षी का हस्ताक्षर | गवाह का हस्ताक्षर |

अध्याय ८

# उपसंहार

अध्याय ८

# उपसंहार

८. ०. सम्पूर्ण अध्ययन पर सामूहिक रूप से दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जहाँ एक ओर हिन्दी में गृहीत अंग्रेजी के शब्दों की प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं, वहाँ दूसरी ओर हिन्दी और अंग्रेजी का तुलनात्मक अध्ययन भी परिलक्षित होता है। अंग्रेजी इस समय राजकाज की भाषा है और अब उसके स्थान पर हिन्दी भारत की राजभाषा होने जा रही है, ऐसी स्थिति में यदि दोनों भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक आधार पर तुलनात्मक विवेचन हो जाय तो यह कम महत्त्वपूर्ण नहीं। इस प्रकार अध्ययन स्वतः दो भागों में विभाजित हो जाता है—१—आगत शब्दों से सम्बन्धित। २—हिन्दी तथा अंग्रेजी का तुलनात्मक अध्ययन।

## ८. १. आगत शब्दों का अध्ययन

८. १. ०. सम्पूर्ण कार्य हिन्दी में अंग्रेजी आगत शब्दों से सम्बन्धित है। प्रारम्भ में ही आगत शब्दों का सैद्धान्तिक पक्ष स्पष्ट करने की चेष्टा की गई है। आगत शब्दों के द्वारा किसी देश की संस्कृति का अध्ययन किया जा सकता है। हिन्दी के समृद्ध होने का यह शुभ लक्षण है कि जहाँ एक ओर उसमें अरबी-फारसी के हजारों शब्द गृहीत हुए वहाँ अब अंग्रेजी से भी (एक बड़ी संख्या में) शब्दों का समावेश हो रहा है। अंग्रेजी स्वतः एक सर्वभक्षी भाषा है, जिसकी शब्दावली का लगभग ८० प्रतिशत[1] भाग विदेशी है, यही कारण है कि आज अंग्रेजी इतनी सम्पन्न और शक्तिशाली बन सकी है, कि कोई भी भाषा उसके सम्मुख नहीं ठहरती।

ऐसी ही भाषा के स्थान पर हमको हिन्दी भाषा को आसीन करना है

---

१. अगर बहुप्रचलित २०,००० शब्द लिए जायें तो—

| | | | |
|---|---|---|---|
| एंग्लो सेक्सन | ३६८१ | वही | २५ |
| जर्मन, इत्यादि | १३५६ | इटैलियन, स्पेनिल | २२८ |
| फ्रेंच | ६५२ | ग्रीक सीधे तथा परोक्ष | २४६३ |
| लेटिन से सीधे | २८८० | सेमेटिक | ६७१ |
| लेटिन से परोक्ष | ६१२६ | अन्य भाषाएँ | ६५४ |
| संकर अन्य | ६७५ | | |

Roland G. Kent—Language and Philoso phy, 1st Ed. Page 15,

तो निश्चय ही हिन्दी को हमें समर्थ बनाना होगा। उसमें विदेशी शब्दों को पचाने की क्षमता उत्पन्न करनी होगी। ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में काफी बड़ी संख्या में शब्द ग्रहण करने होंगे। प्रचलित, सरल, बोधगम्य और अपनी प्रवृत्ति में ढले हुए सभी अंग्रेजी शब्दों को अपनाना होगा। इससे दो लाभ होंगे—एक ओर भाषा सम्पन्न होगी, विश्वव्यापी अंग्रेजी शब्दावली के माध्यम से और दूसरी ओर अनुवाद और नवीन शब्द गढ़ने की समस्या भी हल हो जायेगी। ऐसा कहने से मेरा यह तात्पर्य नहीं कि आवश्यक, कठिन तथा नुकीले शब्द, जिन्हें हिन्दी अपने साँचे में फिट न कर सके, भर लिये जायँ क्योंकि ऐसा करने से वे साथ भी तो न दे सकेंगे। अतः हमको मध्यम मार्ग ही अपनाना होगा।

८. १. १. पिछले अध्यायों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अंग्रेजी शब्दावली की पहचान कितने ढङ्ग से हो सकती है—

८. १. १. (१) नवीन वर्ण के कारण से—इस कोटि में हम 'स्ट' को उदाहरणार्थ ले सकते हैं।[1] ऑ का बढ़ जाना।

८. १. १. (२) नवीन ध्वनियों से—'ज़' और 'फ़' की ध्वनियाँ पहले ही अरबी-फारसी के माध्यम से आ गई हैं, किन्तु उसका वास्तविक रूप कुछ काल तक न पच सका था, पर अंग्रेजी के माध्यम से आने वाले शब्दों के कारण ये ध्वनियाँ अब पर्याप्त बोली जाने लगी हैं। हिन्दी ही क्या कन्नड़[2] प्रदेश में मुझे ज्ञात हुआ कि केवल 'काफ़ी' शब्द के द्वारा ही 'फ़' ध्वनि वहाँ पर्याप्त प्रचलित हो गई है।

८. १. १. (३) नवीन ध्वनि गुच्छों से—आदि—ट्व, ट्य, ट्, ब्ल, ड्य, प्ल, फ्र, थ्र, स्ट, स्ल, तीन ध्वनियों के गुच्छ[3] बलय, स्प्ल, स्प्र, स्ट्र, स्टय, स्क्र, स्व, अन्तः—क्ट, फ्ट्, स्ट, ल्ट्, क्स, प्स, ट्स, र्स, र्ल, र्फ।

---

१. इससे पूर्व हिन्दी 'ष्ट' मिलता था। Pronounced as 'ist.' अब इसका उच्चारण भी कष्ट के समान ही होता है पर फिर भी हम कष्ट ही लिखते हैं। प्रारम्भ में भारतेन्दु काल में ही यह प्रथा चली थी कि मास्टर को माष्टर लिखा जाय, पर यह आगे चल न सकी।

२. यह सूचना मुझे मैसूर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्रीकंठिया जी से प्राप्त हुई।

३. बोलचाल में इनका अस्तित्व नहीं रहता परन्तु लिखित आधार पर पहचाने जा सकते हैं।

८. १. १. (४) ध्वनितों के नवीन बंटन से—अब तक मध्य तथा अन्त में 'ड' का प्रयोग हिन्दी शब्दों में नहीं होता था, किन्तु 'रेडियो' 'कार्ड' जैसे शब्दों के मध्य और अन्त में 'ड' का प्रयोग कर स्वनिमात्मक बंटन को समाप्त कर दिया है।

८. १. १. (५) नवीन अक्षरात्मक स्वरूप से—'टोटली' को 'पोटली' के आधार पर पोट ली पढ़ा जावेगा, जबकि वस्तुतः टो टल+ई है।

८. १. १. (६) विदेशी प्रत्यय तथा उपसर्ग से युक्त होने से : गुरुडम, इस प्रकार हिन्दी की प्रवृत्ति के विरुद्ध नवीन तथा असम्बद्ध ध्वनियों के संयोग से एकदम विदेशी शब्द स्पष्ट हो जाते हैं।

८. १. २. आगत शब्द जब भाषा में प्रवेश करते हैं तो उनमें से कुछ शब्द अपनी वेशभूषा नवीन भाषानुसार बदल लेते हैं और इस प्रकार वे उस भाषा के रङ्ग में इतने रङ्ग जाते हैं कि उनका पहचानना कठिन ही नहीं, असम्भव हो जाता है। कुछ अपने व्यक्तित्व को सम्हाल कर रखते हैं, वे ही शब्द भाषा में खटकते रहते हैं और अपने पृथक् व्यक्तित्व के कारण शीघ्र ही उसी प्रकार पहचान लिये जाते हैं जिस प्रकार एक विदेशी यात्री। ये विदेशी शब्द अपनी विदेशी वेशभूषा को जब स्थायी रूप से पहने रहते हैं तो कालान्तर में उनमें प्रयुक्त नवीन ध्वनि, ध्वनि सम्मिलन, व्यंजन-गुच्छ तथा अक्षर भी भाषा में उसी प्रकार प्रवेश पा लेते हैं जैसे विदेशियों के प्रभाव से उनकी वेशभूषा कोट, पतलून, कमीज, बुशर्ट, आदि ने भारतीय वेशभूषा में प्रवेश पा लिया है, साथ में धोती-कुर्ता भी चल रहा है। अन्ततोगत्वा कोई एक भाषा किसी एक पद्धति में रहकर बहुपद्धतिमय हो जाती है।

८. १. ३. यहाँ एक और तथ्य का ध्यान रखना आवश्यक है कि विदेशी भाषा से वही शब्द ग्राहक भाषा में खप सकते हैं जो छोटे हों और जिनका गठन ग्राहक भाषा के शब्दों के अनुकूल हो। यही कारण है कि अंग्रेजी के छोटे तथा बहुप्रचलित रूप व्यं-स्व-व्यं C. V. C. नमूने के शब्द—बैग, कप आदि हिन्दी में आसानी से घुलमिल गये हैं और इनको बदलने की आवश्यकता नहीं हुई। द्व्याक्षरिक की अपेक्षा एकाक्षरिक शब्द आसानी से घुलमिल जाते हैं। वैसे जब किसी विशेष कारण से त्र्याक्षरिक या बहुआक्षरिक शब्द भी लेने पड़ते हैं तो जनता में अनेक रूप चलते रहते हैं जैसे, Constable तथा Municipality[1] के चार-पाँच रूप एक आवृत्ति के साथ चल रहे हैं।

१. इस शब्द के अनेक रूपों के लिए देखिये, पृ० ६८।

जब एक छोटा शब्द भी नवीन गठन के कारण फिट नहीं हो पाता तो विभिन्न वर्गों में विभिन्न रूप से बदल लिया जाता है और उसके अनेक रूप चलते रहते हैं। जैसे, Cinema सिनिमा के सिनेमा, सनेमा, सनीमा, सलेमा, सिनमा आदि अनेक रूप[1] चलते हैं।

८. १. ४. किसी भाषा की पद्धति एवं उनमें शब्दों के गठन की प्रणाली विदेशी शब्दों को पचाने में विशेष प्रभाव डालती है। गठन की दृष्टि से तिब्बती और चीनी भाषा हिन्दी से सर्वथा पृथक् हैं यही कारण है कि दोनों देशों के साथ सहस्रों वर्षों से सांस्कृतिक सम्बन्ध होते हुए भी इन भाषाओं के शब्द नहीं के बराबर हैं, हाँ, हमारे शब्द अवश्य इन भाषाओं में हैं, पर उनका रूप कितना बदल गया है, यह भी द्रष्टव्य है। उदाहरणार्थ, आज विश्व में व्याप्त अपने 'पंचशील'[2] शब्द को ही ले सकते हैं—

| | | |
|---|---|---|
| बर्मी | Panzithila | —पंजीथिला |
| तिब्बती | Inatshul | —इङ्त्शुल |
| चीनी | Wu-chich | —वुचिच |
| जापानी | Go-kai | —गोकाई |
| इंडोनेशिया | Pantja sjila | —पंत्य स्यिला |

अपना ही शब्द जब विदेश की यात्रा से वापिस लौटता है तो उसकी पहचान करना कभी-कभी उसी प्रकार दुष्कर हो जाता है जैसे कभी-कभी पिता को अपने विदेश से लौटे हुए आमूल-चूल परिवर्तित पुत्र को पहचानने में देर लगती है। उदाहरणार्थ—

| | |
|---|---|
| शिष्य | Schech |

'शिष्य' शब्द जब 'Schech' रूप में वापिस लौटा तो कैसा लगा? कभी-कभी अपने देश का शब्द विदेशियों द्वारा प्रचलित होने पर अपना रूप बदल लेता है। जैसे, तमिल शब्द 'शुरूट्टू' 'Suruttu' को ही लीजिये, जो अंग्रेजों के ही द्वारा Cheroot रूप में प्रचलित हुआ और आज 'चुरुट'

१. हमारे महल शब्द के अंग्रेजी में रूप देखिए—
Mal, Maol, Mahl, Mehal, Mehaal, Mhal, Mohaml—G. Subha Rao. 'Indian Words in English, 1954/39.

२. डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी के सौजन्य से प्राप्त।

के रूप में ही प्रचलित है। बहुप्रचलित शब्द 'शेम्पू' 'Shampoo' अपने ही देश का है जो सन् १७६२ के लगभग यहाँ से विदेश यात्रा को गया था।[1] इसी प्रकार कवीन्द्र रवीन्द्र का सर्वप्रचलित नाम 'टैगोर' भी अंग्रेजी की ही कृपा का फल है। जो वस्तुतः 'ठाकुर' था। उड़िया भाषा का 'हीर कुद' हिन्दी में 'हीराकुड' और साथ ही 'हीराकुण्ड' चल पड़ा। 'चन्द्र' से चन्द्रा-साहब बन गये, 'गुप्त जी' से 'गुप्ता जी' हो गये।

८. १. ५. विदेशी भाषा से गृहीत शब्दों के कारण तीन दिशाओं में ग्रहण की प्रवृत्ति हो सकती है—१—शब्द। २—ध्वनि। ३—व्याकरणिक रूप।

तीनों में से प्रथम कोटि में ही आगत शब्द आते हैं। विदेशी ध्वनि और ध्वनि-सम्मेलन कम गृहीत होते हैं। कोई भी भाषा व्याकरणिक रूपों को तो ग्रहण करती ही नहीं। फिर जैसा कि हम पूर्व अध्यायों में देख चुके हैं कि हिन्दी का ध्वन्यात्मक तथा व्याकरणात्मक रूप अंग्रेजी के शब्दों से प्रभावित हुआ है और निश्चित रूप से हिन्दी का स्वरूप अंग्रेजी के शब्दों से पूर्व कोई दूसरा था और आज दूसरा। वैसे सामान्यतः जब कोई शब्द एक भाषा से दूसरी भाषा में आता है तो वह शब्द उस ग्राहक भाषा के अनुरूप उच्चारण के निकटतम मित्राक्षर शब्द से, जो उस भाषा में वर्तमान है के अनुरूप उच्चारण से प्रभावान्वित होकर कुछ अक्षरों का लोप करके अथवा कुछ नये अक्षरों को जोड़ कर इसके अनुकूल बना लिया जाता है।[2]

साधारणतः विदेशी भाषा से आने वाले शब्दों में अर्थ परिवर्तन नहीं होता फिर भी हमें कुछ ऐसे शब्द प्राप्त हुए जिनमें विभिन्न दिशाओं में अर्थ परिवर्तन हुआ है। कौन नहीं जानता कि 'गिलास' अपने परिवर्तित रूप में केवल एक पात्र के रूप में ही सर्वप्रचलित है।

८. २. तुलनात्मक अध्ययन—

८. २. ०. जैसा कि मैंने उल्लेख किया है कि अध्ययन से इतर भी इस क्षेत्र में कुछ कार्य हो गया है। विश्व की दो महत्त्वपूर्ण भाषाएँ हिन्दी तथा अंग्रेजी जो मूलरूप से एक ही कुटुम्ब की विकसित भाषाएँ हैं, सहस्रों वर्षों से दो दिशा में विकास के फलस्वरूप कहाँ तक एक दूसरे के निकट हैं, कितना इन दोनों में साम्य है और कितना वैषम्य, इसका भी स्थान-स्थान पर दिग्दर्शन हुआ है।

१. ओंकारनाथ श्रीवास्तव, अंग्रेजी में पूर्वीय भाषाओं के कुछ शब्द, कल्पना, अक्तू० १९५२, पृ० ७०६-११।

२. हिन्दी शब्द सागर, ८वां भाग, सन् १९२९, पृष्ठ २१।

८. २. १. यह कार्य ध्वनि स्तर पर विशेष विस्तार से किया गया है। हिन्दी और अंग्रेजी की ध्वनियों और व्यंजन-गुच्छों तथा अक्षर-स्वरूप का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। ध्वनि, गुण, मात्रा, बलाघात या सुर का दोनों भाषाओं में कहाँ तक प्राधान्य है, इस पर भी सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

८. २. २. तुलनात्मक अध्ययन का दूसरा पक्ष भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी के विभिन्न रूपों में द्रष्टव्य है। इससे प्रत्येक भारतीय आर्य तथा अनार्य भाषा की विशेषताओं तथा ध्वनि-प्रणाली का भी आभास मिल जाता है। हिन्दी की बोलियों में भी अंग्रेजी के शब्दों के विभिन्न रूप जानने की इच्छा हुई और तत्सम्बन्धी एक चार्ट भी परिशिष्ट में दिया गया है।[1]

८. ३. आवृत्ति के सम्बन्ध में अभी कार्य आगे किया जा सकता है, जिसके आधार पर हम शब्दों को अपनी शब्दावली में रख और निकाल सकते हैं। अनुवाद का विषय तो अपने में स्वतन्त्र है। राजकाज की भाषा हिन्दी करने के लिए सम्पूर्ण अंग्रेजी में लिखे गये अपने विशाल साहित्य, अभिलेखों एवं अधिनियमों का हिन्दी में अनुवाद करना होगा, जिसका अभी केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। इस दिशा में कार्य प्रारम्भ हो गया है किन्तु अभी तो उसका प्रथम चरण ही है। इस कार्य को गतिपूर्ण बनाना होगा और साथ ही अनुवाद सम्बन्धी विस्तृत नियमों को भी निर्मित कर उसका अनुसरण करना होगा। हिन्दी की स्वाभाविकता बनाये रखने के लिए इस दिशा पर काफी मनोयोग से मनन करना होगा। प्रस्तुत निबन्ध में तो मैं अनुवाद की विभिन्न दिशाओं में प्रवृत्तिगत दिग्दर्शन के लिए केवल प्रवेश मात्र ही कर सका हूँ।

८. ४. शब्दों की संख्या की ओर मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया है, फिर भी मैं समझता हूँ कि यह संख्या लगभग २००० होगी। विदेशी भाषाओं से आये हुए शब्दों में यह संख्या अरबी-फारसी के बाद तीसरे स्थान पर आती है। शब्दों की संख्या की दृष्टि से यह अध्ययन नहीं किया गया है। यह तो प्रवृत्तिगत अध्ययन है। यदि यह कहा जाय कि किसी द्रुतगति से चलती हुई चीज का यह स्नेपशाट है तो कोई अत्युक्ति न होगी।

---

१. देखिये परिशिष्ट सं० ४।

# परिशिष्ट

## १—परिशिष्ट

# प—१.१. भाषा में आगत शब्दों के सम्बन्ध में विचार

डॉ० उदयनारायण तिवारी—संसार में आज कोई ऐसी भाषा नहीं है जो विशुद्ध है, तथा जिसमें विदेशी शब्दों का समावेश नहीं है।......वैदिक युग से लेकर आज तक, निरन्तर हमारी भाषा में, नए भावों तथा विचारों को प्रकट करने के लिये विदेशी-शब्द समाविष्ट होते रहते हैं।

× × ×

अंग्रेजी ने तो आधुनिक भाषाओं को इतना प्रभावित किया है कि अंग्रेजों के भारत छोड़ देने के बाद भी इसका बहिष्कार कठिन हो रहा है।[१]

श्री कामताप्रसाद गुरु—फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि भाषाओं से जो शब्द हिन्दी में आये हैं वे विदेशी कहाते हैं। अंग्रेजी से आजकल भी शब्दों की भरती जारी है। विदेशी शब्द हिन्दी में ध्वनि के अनुसार अथवा बिगड़े हुऐ उच्चारण के अनुसार लिखे जाते हैं।[२]

श्री जैनेन्द्र—हमें यदि बातें सुननी और समझनी हैं, तो उसमें अंग्रेजी शब्दों का आना बहुत घबराने या शर्मिन्दा होने की बात नहीं है। यदि मैं कह गया और आपको समझने में सुविधा हो गई, तो यह अच्छी ही बात है। आप मुझसे हिन्दी भाषा चाहते हैं तो वही सही। वह भाषा तब पुस्तकीय भाषा होगी—शायद शुद्ध पर बेजान।[३]

---

१. डॉ० उदयनारायण तिवारी—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, सं० २०१२, पृ० २१२।

२. श्री कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, सं० संशोधित, पृ० ३३।

३. श्री जैनेन्द्र—श्रेय और प्रेय, प्रथम सं०, पृ० ४००।

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—सम्पर्क आने पर भी आवश्यक विदेशी शब्दों को अछूता सा मानकर न अपनाना अस्वभाविक है। यत्न करने पर भी यह कभी संभव नहीं हो सका है। अनावश्यक विदेशी शब्दों का प्रयोग करना दूसरी बात है। मध्यम मार्ग यही है कि अपनी भाषा के ध्वनि समूह पर विदेशी शब्दों के रूपों में परिवर्तन करके उन्हें आवश्यकतानुसार सदा मिलाते रहना चाहिये। इस प्रकार शुद्धि करने के उपरान्त लिये गये विदेशी शब्द जीवित भाषाओं के शब्द-भंडार को बढ़ाने में सहायक ही होते हैं।[१]

श्री न० चि० केलकर—अभिजात हिन्दी तो बहुधा संस्कृतमय ही रहेगी, तो भी उर्दू, फ़ारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि-आदि भाषाओं के शब्द सर्वथा त्याज्य नहीं हो सकते।[२]

श्री बदरीनाथ भट्ट—हज़ार रोक-थाम करने पर भाषाओं का प्रभाव एक दूसरी पर पड़ जाता है। इस भाषा-संघर्ष के समय कितने ही शब्द अपना देश छोड़कर दूसरी जगह जा सकते हैं, कुछ दोनों देशों में अड्डा जमाये रहते हैं। लड़ाई में घायल हो जाने के कारण कुछ का रूप बदल जाता है, कुछ बेचारें अपनी जान से ही हाथ धो बैठते हैं।[३]

श्री बाबूराम सक्सेना—जनसमुदाय अन्य जनसमुदायों के संपर्क में आने पर विचारों का आदान-प्रदान करता है और इसलिए यह स्वभाविक ही है कि 'विशेष रूप से नए विचारों का बोध कराने वाले' एक के शब्द दूसरे जनसमुदाय के व्यवहार में आ जाँय। जीवित जनसमुदाय इन्हें लेकर अपनी निजी ध्वनि और व्याकरण के साँचे में ढाल लेता है।[४]

बाबूराव विष्णु पराड़कर—अन्य भाषाओं में से शब्द लेने में कोई आपत्ति

---

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, सं० १९४९, पृ० ७२-७३।

२. न० चि० केलकर—पूना अधिवेशन, ना० प्र०, प्र०, वर्ष ६०, अंक ३-४, पृ० ३०६।

३. बदरीनाथ भट्ट—हिन्दी, षष्ठ सं०, सं २००६, पृ० १८।

४.—डॉ० बाबूराम सक्सेना—सामान्य भाषा-विज्ञान, सं० २०१३, पृ० १२८।

नहीं, वरन् लेने चाहिये । पर इसके साथ एक शर्त है । शब्द मूलतः चाहे जिस भाषा के हों, पर जब हम लें तो उन्हें अपना-सा बनाकर लें अर्थात् उनकी ध्वनि हमारी भाषा की ध्वनि से मिलती-जुलती हो । मूल ध्वनि की रक्षा करने का प्रयत्न केवल व्यर्थ ही नहीं, हानिकारक भी हैं ।[1]

डॉ० बुद्धप्रकाश—मनुष्य के सामाजिक संपर्क और व्यापारिक आदान-प्रदान के विस्तार के साथ शब्द भी एक भाषा से दूसरी भाषा में जाने-आने लगे । कुछ पारिभाषिक शब्दों के पूरे समूह एक भाषा से दूसरी भाषा में पहुँचते गये । रसायन शास्त्र की यूनानी-लतीनी शब्दावली, राजनीति की फ्रेंच वाक्य पद्धति और घुड़दौड़ की अंग्रेजी भाषा सभी भाषाओं में घुस गई ।..... शब्दों की यात्रा के साथ सांस्कृतिक तत्त्व भी इधर से उधर घूम गये ।[2]

......यह स्पष्ट है कि भाषा और संस्कृति का अभिन्न संबंध है । संस्कृति भाषा का प्राण है तो भाषा संस्कृति का परिधान । एक शब्द में सांस्कृतिक इतिहास की पूर्ण प्रक्रिया छिपी है ।

श्री ब्रजरत्नदास—इसी प्रकार अंग्रेजी के कितने चलते शब्द भी इनके द्वारा प्रयुक्त हुए हैं और उनका तत्सम रूप नहीं लिया गया है । टिकट अंधूरी, मजिस्टर, कमेटी, किरिस्तानी, और पतलून आदि शब्द शुद्ध अंग्रेजी शब्दों के बिगड़े रूप हैं पर, बोलचाल में इसी प्रकार प्रयुक्त होते आये हैं और इसीलिए इसी रूप में रखे गये हैं ।[3]

डॉ० भगवानदास—हिन्दी में जो संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि के शब्द लिये जाँय वे अपने शुद्ध रूप में बर्तें जाँय । हिन्दी की बोली के अनुसार उनकी शक्ल कुछ बदली जाय । कुछ सज्जनों का विचार है कि एक देश को छोड़कर आदमी दूसरे देश में जा बसता है और अपना पुराना पहनावा छोड़कर उस देश के पहरावे को धारण कर लेता है तभी उस देश के आदमियों

---

१. बाबूराव विष्णु पराड़कर—राष्ट्रभाषा हिन्दी, सं० क्षेमचन्द्र, सन् १९४८, पृ० ६९ ।

२. डॉ० बुद्धप्रकाश—शब्द और संस्कृति, ना० प्र० प०, वर्ष ६०, अंक ३-४, पृ० १८५-२१४ ।

३. ब्रजरत्नदास—भारतेन्दु भाषा और शैली, सन् १९४८, पृ० ८० ।

में मिल पाता है नहीं तो विदेशी बना रहता है इसलिये ऐसे शब्दों का रूप भी बदल लेना अच्छा होगा।[१]

मदन गोपाल—जो चीज़ अपने देश में नहीं होती, दूसरे देश से आती है उसका नाम भी दूसरे देश से आता है और अगर वह अपने गले के माफ़िक हो तो ज्यों का त्यों हमारी जबान का शब्द बन जाता है जैसे गुलाब, बर्फ़, रेल, बटन, मोटर वग़ैरा। अगर हमारे गले के माफ़िक न हो तो थोड़ा सा हेरफेर करके उसे अपना लिया जाता है जैसे बोतल इंजन, टिकट और लालटेन। अंग्रेजी शब्दों को अपनाने के लिए हमें अक्सर स्वर ही बदलने पड़ते हैं।

........किसी शब्द से परहेज़ करना सिर्फ़ इसलिए कि वह परदेसी है ठीक नहीं। जीत आखिर में उसी शब्द की होगी जो आसान है चाहे वह अरबी का, अंग्रेजी का या रूसी का हो। उसे एक दफ़ा हमारी बोली में आना चाहिये। क्लास शब्द को ही लो श्रेणी, जमाअत दोनों से छोटा है इसलिए रहेगा। स्कूल, पाठशाला, विद्यालय और मदरसे से अच्छा है। ऐसे सैकड़ों अंग्रेज़ी शब्द सिर्फ़ अपने हलकेपन की वजह से हमारी बोली में आ गये हैं और रहेंगे चाहे कोई लाख जतन करे। इसी तरह बहुतेरे फ़ारसी वग़ैरा के शब्द हमारी बोली के नश बन गये हैं।—भाषा, १९५१, पृष्ठ ४३-४४।

महावीरप्रसाद द्विवेदी—विदेशी शब्दों का प्रयोग बुरा नहीं।...... शब्द चिरस्थायी और सबके समझने लायक होने चाहिये (बस)......बहुत से लेखक संस्कृत व्याकरण के अनुसार दूसरी भाषा के शब्दों में भी पर-सवर्ण, षत्व और णत्व का विधान रखते हैं। तथा अन्जुमन की जगह अञ्जुमन, पोस्टमास्टर की जगह पोष्टमाष्टर और गवर्नमेन्ट की जगह गवर्नमेण्ट। यह अनुचित प्रतीत होता है।......भाषा का स्वभाव जैसे अस्थिर रहने का है वैसे परस्पर एक दूसरे के शब्दों को अपने में शामिल करने का भी है।[२]

---

१. डॉ० भगवानदास—राष्ट्रभाषा हिन्दी, सं० क्षेमचन्द्र, सन् १९४८, पृ० ८०।

२. महावीरप्रसाद द्विवेदी—वाग्विलास, सन् १९२८, पृ० १०६-१०७।

...जो शब्द बोलचाल में आते हैं...फिर चाहे वे फ़ारसी के हों, चाहे अरबी के हों, चाहे अंग्रेजी के हों...उनका प्रयोग बुरा नहीं कहा जा सकता। पुस्तक लिखने का मतलब सिर्फ यह है कि उसमें जो कुछ लिखा गया है। उसे लोग समझ सकें।[१]

**डॉ० माताप्रसाद गुप्त**—१८५७ ई० तक समस्त हिन्दी प्रदेश अंग्रेजी शासन की परिध में आ चुका था, और उसके अनन्तर यह निरन्तर अधिकाधिक अंग्रेजी साहित्य और संस्कृति से प्रभावित होने लगा था।[२]

**श्री राधिकारमण प्रसाद सिंह**—हाँ, जो विदेशी शब्द हमारे यहाँ जाने कब से पल रहे हैं, जिन्हें हम अपना चुके हैं, पचा चुके हैं, जो हमारी जबान की डाल पर खिल-खुल रहे हैं, उनकी जगह नये-नये अनोखे शब्द गढ़ने की योजना तो अपने हाथों अपना गला घोंटना है, जैसे, भाषा वह, जो बोली जाती है, वह नहीं जिसे समझाने के लिये कोश चाहिये।

...अंग्रेजी के जाने कितने शब्द हमारे यहाँ खप गये, खप रहे हैं। आने दीजिये कितने ऐसे क्षेत्र हैं कि हम उनसे कुछ पायेंगे ही, कुछ खोयेंगे नहीं। आखिर अंग्रेजी से रिश्ता तर्क कर दुनिया के कारवार से अपना विस्तार समेट अलग हो जाना है, जैसे,······अंग्रेजी से अपना पड़ला छुड़ा पाना आसान नहीं, मगर जहाँ चाह है, वहाँ राह भी।[३]

**डॉ० राजेन्द्रप्रसाद**—जब से अंग्रेजी का दौर-दौरा हुआ है, तब से अंग्रेजी के शब्द भी अच्छी संख्या में घुस आये हैं। इससे हिन्दी की दुर्बलता नहीं प्रमाणित होती। सभी सजीव भाषाओं का यही हाल है। नित नये शब्द उनमें आते हैं और उनके भण्डार को बढ़ाते हैं। यह आवश्यक है और अनिवार्य है। नये विचार, नई भावनाएँ, नये आविष्कार दिन-प्रतिदिन होते हैं। उनके लिये नये शब्द काम में लाये जाते हैं और जहाँ से सुविधा से मिल जाते

---

१. महावीरप्रसाद द्विवेदी—संकलन, पृ० ४१।

२. डॉ० माताप्रसाद गुप्त—हिन्दी पुस्तक परिचय, प्रथम सं०, पृ० ७।

३. श्री राधिकारमण प्रसाद सिंह—भाषा का सवाल; साहित्य, वर्ष ७, अंक १-४-५—५६।

हैं, जीती जागती भाषा उन्हें ले लेती हैं और उन्हें लेकर भी वह अपना अस्तित्व और व्यक्तित्व नहीं खोती। हाँ, इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि बिना जरूरत विदेशी शब्द न लिये जाँय और यह हिन्दी भी नहीं करती। विदेशी भाषा का आसानी से प्रचलित हो जाना इसका प्रमाण है कि इस भाषा में उसके लिए स्थान खाली था।[1]

**श्री रामचन्द्र वर्मा**—जब पारस्परिक सम्पर्क के कारण एक जाति की भाषा का दूसरी जाति पर प्रभाव पड़ता है, तब उनमें शब्दों का आदान-प्रदान भी अवश्य होता है। यही कारण है कि जातियों की भाँति कोई भाषा भी अपने विशुद्ध और मूल रूप में नहीं रहने पाती। प्रत्येक भाषा में अन्यान्य भाषाओं के शब्द तो आकर मिलते ही रहते हैं और एक भाषा में दूसरी भाषाओं के अनुकरण पर नये शब्द भी बनने लगते हैं।[2]

**श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी**—यत्र-तत्र मैंने अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया है, जैसे व्यावहारिक जीवन में सरकारी सिक्कों का प्रयोग करता हूँ। जब तक नये सिक्के (हिन्दी शब्द) नहीं बन जाते, मेरे जैसे निर्धनों को उन्हीं परिचित सिक्कों से काम चलाना पड़ेगा। हिन्दी में जिस अनुपात से नवीन साहित्य बन रहा है, उस अनुपात से पारिभाषिक शब्द नहीं बन रहे है।[3]

**आचार्य शिवनाथ**—अंग्रेजी शिक्षा के परिणाम स्वरूप भारतीय समाज का उच्चवर्ग अंग्रेजी साहित्य के संपर्क में आया और भारतेन्दु-युग के प्रायः सभी साहित्यकार इसी वर्ग के थे।...भारतेन्दु-युग के निबंधकारों में से अंग्रेजी शब्दों का अत्यधिक प्रयोग करनेवाले श्री बालकृष्ण भट्ट दिखाई पड़ते हैं...... भारतेन्दु-युग से ही अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग की अच्छी चाल दिखाई पड़ती है।[4]

---

१. डॉ० राजेन्द्रप्रसाद—शब्द पराये हों;—व्याकरण हमारी ही रहेगी, कर्मवीर १-११-१६४१, पृ० १२।

२. रामचन्द्र वर्मा, अच्छी हिन्दी, सं० २००७, पृ० ५३।

३. शान्तिप्रिय द्विवेदी—युग और साहित्य, भूमिका, पृ० ५

४. शिवनाथ—भारतेन्दु-युगीन निबन्ध, सं० २०१०, पृ० ३७-३८ व ८८।

**राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द**—जब अंग्रेज बहादुर आये और हिन्दू-मुसलमान उनके तावे हुए सब लोग उन्हीं के अंग्रेजी शब्द जहाँ तक जिसे मालूम हों, उनसे बोलने में काम में लाने लगे। हम देखते हैं जौहरी अंग्रेजों के सामने अपने जवाहिरों को अंग्रेजी नामों से पुकारते हैं। सुनार सोने चाँदीं का फर्क अंग्रेजी नामों से बतलाते हैं। वजाज कपड़े अंग्रेजी नामों से दिखलाते हैं। खानसामां खिदमत्गार चपरासी क्या शागिर्द पेशेवाले और क्या बाज़री दूकान्दार और मुआमलें-मुक़द्दमे वाले सैंकड़ों अंगरेजी शब्द अपनी बोली में मिलाते जाते हैं। वरन् इसमें अपनी बड़ाई समझते हैं। ………… हिन्दी भाषा का फारसी, अरबी, तुर्की और अंग्रेजी शब्दों से अथवा अपभ्रंशों से खाली करने का उद्योग वैसा ही है जैसा कोई अंग्रेज अंग्रेजी को यूनानी रूपी फ्रांसीसी अलीमानी इत्यादि परदेशी शब्द और अपभ्रंशों से खाली करना चाहे अथवा जैसी वह हजार वर्ष पहले बोली जाती थी उसके अब बोले जाने का प्रयत्न करे।[१]

**आचार्य श्यामसुन्दरदास**—जहाँ नई जातियों के संसर्ग तथा नये भावों के उदित होने से हमारी भाषा में नये शब्दों का आगम रोकना असम्भव है वहाँ अपने पूर्व रूप को न पहचानने के कारण अपने प्राचीन शब्द भण्डार से सहायता लेना भी स्वाभाविक है। आवश्यकता इस बात की है कि अपना नैसर्गिक न भूला जाय और भाषा को दासत्व की बेड़ी न पहनाई जाय।[२]

… … समाचार पत्रवाले नित्य ही संस्कृत की खाल ओढ़ाकर अँगरेजी शब्दों की प्राण-प्रतिष्ठा किया गरते हैं।[३]

यह स्पष्ट है कि विदेशी शब्दों को लेकर उनका उच्चारण अपनी भाषा के अनुकूल बनाकर अपने शब्द भाण्डार में सम्मिलित करना ही अपने गौरव के अनुकूल होगा। इस अवस्था में नए उच्चारणों को अपनी वर्णमाला में

---

१. राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द—हिन्दी व्याकरण, सन् १८७६, पृ० ७७-७८ व ७९।

२. आचार्य श्यामसुन्दरदास—हिन्दी भाषा, सन् १९५४, पृ० ६३-६४।

३. वही, पृ० १५९।

स्थान देने और उनके लिये नए चिह्नों के बनाने की आवश्यकता नहीं है—हमारी लिपि—साहित्यिक लेख १९४५, पृष्ठ ११९-१२० ।

**संसदीय हिन्दी परिषद्**:—जो शब्द चालू हैं, उनका प्रयोग करने से भाषा की ताक़त बढ़ती है ।[1]

**डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी**:—मैं अन्य भाषाओं से शब्द लेने का बिल्कुल विरोधी नहीं हूँ । परन्तु विदेशी शब्दों को हमारी उच्चारण-परम्परा और ध्वनि-परिवर्तन के सिद्धान्त के अनुकूल होकर ही आना चाहिए । किसी शब्द का परिनिष्ठित रूप वह है जो हमारे ध्वनि संस्कार के सिद्धान्त के अनुकूल है । प्रत्येक भाषा के तत्सम उच्चारण को हम लेने लगेंगे तो हमारे बूते का यह कार्य नहीं हो सकेगा और अराजकता तो आयेगी ही ।[2]

**श्री हरिनारायण आप्टे**:—दो राष्ट्रों के पास-पास होने से ही एक दूसरे के शब्दों और विचारों में बहुत कुछ मिश्रण हो जाता है । अँगरेज तो यहाँ शतक से सत्ता चला रहे थे । अतएव उनकी भाषा के शब्द, मुहावरे और उनके विचार यदि हमारी भाषा में आ गये तो आश्चर्य ही क्या है ? हमारा कोश बढ़ना चाहिए । जहाँ सोना मिले वहाँ से लाना चाहिये ।...... ... हमारी भाषा में जो शब्द नहीं हैं, उन्हें दूसरी भाषा से लेना चाहिए । उन पर अपना सिक्का मारकर उन्हें अपना लेना चाहिये ।[3]

**श्री हेमचन्द्र जोशी** :—जो शब्द विदेशों से आकर उसमें घुल-मिल गये हैं, वे पराई शब्द-संपत्ति हैं, किन्तु ये विदेशी शब्द इस समय हिन्दी के हो गये हैं और उसकी समृद्धि तथा नाना भाव पदार्थ आदि को व्यक्त करने की क्षमता को और भी बल दे रहे हैं ।

पराई शब्द-संपत्ति भी निजी भाषा के बहुत बड़े अभाव की पूर्ति करती है ।[4]

---

१. संसदीय हिन्दी परिषद् की गोष्ठी, नई दिल्ली, १३-१२-५४, साहित्य, वर्ष ६, अंक १ ।

२. डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—विचार और वितर्क, प्र० सं०, पृ० १५७ ।

३. सम्पादकीय : सरस्वती, प्रयाग, अगस्त १९५४ ई० ।

४. हेमचन्द्र जोशी : —हिन्दी परम्परा और विदेशी शब्द-सम्पत्ति, सरस्वती, वर्ष ५९, खण्ड १, सं० ३, पृ० १६१-६४ ।

**Bloomfield, L.**—Every speech-community learns from its neighbours. Objects, both natural and manufactured, pass from one community to the other, and so do patterns of action such as technical procedures, warlike practices, religious rites, or fashions of individual conduct. This spread of things and habits is studied by ethnologists, who call it cultural diffusion.[1]

* * *

Cultural loans show us what one nation has taught another.[2]

* * *

**Carroll, J. B.**—Languages borrow forms and meanings from other languages or adapt their own linguistic forms to the disignation of items borrowed from other cultures as the Navab Language does in describing a watch as a round. Thin object goes round.[3]

* * *

For one thing, a language system may be regarded as a cultural 'marker'. Hence as a guide in indicating the boundaries of a cultural area or as an aid in tracing the spread of culture by migration and by cultural borrowing, linguistic facts are often far more reliable than other cultural markers, such as tools used by a culture or its style of articulation. Tools and styles of architecture are much more readily borrowed than certain aspects of language.[4]

* * *

**Casagrande, Joseph B.**—Language may be viewed both as a part of culture and as an index to culture.......... Loan

---

1. Bloomfield, L: Laguage, 1956, Page 445.
2. Ibid., 458, Cultural Borrowing Chap. 25.
3. Carroll, J. B. : The study of language, 1955, Page 52.
4. Ibid., Page 112.

words are perhaps the most interesting category for the student of acculturation and culture change.[1]

* * *

**Cohen.**—Very little has so far been done synchronically towards developing a reliable method aimed at identifying foreign words. The existence of foreign words is sometimes to easily taken for granted by equating them with 'Loans' thereby relegating the problem of identification from the synchronic to the diachronic level.[2]

* * *

**Dillon, myles.**—Cultural borrowing much depends upon the degree of intimacy between the two proper concerned and the Degree of mutual intelligibility of their languages.......... Cultural borrowing is commonly confined to our familiar words.[3]

* * *

**Firth, J. R.**—One of the most fascinating branches of philology is the study of borrowed words or loan words, as they are technically called.[4]

* * *

A loan word may bring with it a new pattern suited to its class or type as in English. Borrowing from French, both nominals and verbals when completely naturalised the prosodic system of the type or class of word in the borrowing languaeg dominant.[5]

* * *

**Gleason, H. A.**—Borrowing is just what its name implies.... The copying of a linguistic item from speakers of another speech

---

1. Casagrande, Joseph B.—Comonche Linguistic Acculturation, I. J. A. L. 1954-20 Page 140.
2. Cohen.—The Phonemes of English, 1952, Page 54.
3. Dillon, Myles—Linguistic Borrowing and Historical Evidence, Lang. Vol. 21, 1945 Page 12.
4. Firth, J. R.—The Tougne of man, 1st Ed. Page 99.
5. Ibid., Sounds and Prosodies, T. P. S., 1948, Page 150.

form. The most evident instances are those in which the two forms of speech are quite different. The loan words sometimes preserve characteristics by which their foreign origin can be readily discerned.........[1].

* * *

**Graff, W. H.**—The greatest difficulty in the appraisal of a coincident vocabulary is created by the fact that words travel from one language to another with extraordinary ease. No language has a purely autochthonous vocabulary some borrow with unscrupulous parastism[2]........Once, however, a foreign word becomes part and parcel of a language, it loses its foreign character and its phonetic make up changes just like the rest of lexical material.[3]

* * *

**Gray, Louis, H.**—Foreign words are those whose phonology shows that they have come from other linguistic stocks or areas in consequence of political, military, religious, economic or other contacts so that we may fairly infer for example from purely linguistic evidence.........From the point of view of social linguistics a study of the relations between the native and the foreign words in the vocabulary of language and still more of the types and categories of the words borrowed reveals both the extent and nature of the intercourse between the borrowers and the lenders.........Terms taken over represents a concept or thing previously unknown among the people borrowing it.[4]

* * *

**Groom, Bernard.**—That a language should borrow foreign

---

1. Glesson, H. A.—An introduction to descriptive Linguistic, 1956, Page 290.
2. Graff, W. H.—Language and Languages, 1952, Page 346.
3. Ibid., Page 244.
4. Gray, Louis H.—Foundation of language, 1939, Page 130.

ideas when they are needed is of course desirable, but in case unable to naturalize the words, it borrows, is disquieting.[1]

* * *

**Haugen, Einar.**—Certainly the study of loan words has brought out a great many important facts about language and its degrees of internal coherence. Only the infiltration of foreign elements occassioned by interlingual influence has revealed the comparative independence of various linguistic features.[2]

* * *

The language itself becomes at once a means of communication and a cultural trait, which binds the group together and sets it off from other groups.........Loan-word has been used as evidence of cultural diffusion, on the assumption that cultural influence inevitably leads to a borrowing of terminology. In practices we discover that the use of loan words may far exceed the actual cultural novelties introduced by one group to another and on the other hand, it may effect very inadequately the actual extent of influence since it is only one of the possible ways in which one language reacts under the influence of another......... The process of borrowing was also a process of learning. New words did not necessarily represent new objects or experience but they inevitably brought with them new attitudes towards experience.[3]

* * *

For any large scale borrowing a considerable group of bilinguals has to be assumed. The analysis of borrowing must, therefore,

---

1. Groom, Bernard.—A Short History of English Words, 1953, Chap. 8.
2. Hangen, Einar.—The Bilingualism, Lingua II, Page 271-290.
3. Haugen, Einar.—The Bilinguals Dilemma, The Norwigian language in America, 1st Ed.

begin with an analysis of the behaviour of borrowing, particularly in the historical studies of individual languages.[1]

* * *

The borrowing is linguistic diffusion and can be unambiguously defined as the attempt by a speaker to reproduce in one language pattern patterns which he had learned in another.[2]

* * *

**Kaka Kalelakar.**—Familiar Words—For this purpose, they ......should accept the best words and should be guided not by the etymology or origin of the word but by its familiarity. Borrowed words must be made to conform to the grammar and phonetic pattern of the native language. Writers View, Kaka Kalelakar, April 9, 1957, Hindustan Times.

**Henderson, Eugenie, J. A.** —Loan...by the fact that their phonological stracture stands a part in some way from what appears to be regular pattern of the language in which they occur..........Foreign-words may be taken into a language in own way :—

(a) They may recast in a form already acceptable to the borrowing language.

(b) They may retain some alien features and so introduce new phonological pattern.[3]

**Hoenigswald, H. M.**—New contrasts may be created as a result of borrowing. Aside from the instances in which a foreign sound is taken over bodily and added to the list of contrasting

---

1. Haugen, Einar.—The Analysis of Linguistic Borrowing. Lang. Vol. 26-21.

2. Ibid., The Norwigian Language in America, 1st Ed. Page 352.

3. Henderson, E. J. A.—The phonology of Loan words in some South-East Asian Language T. P. S., 1951-131-158.

phonemes (e. g. /f/ in Russia) loan word may introduce a contrast between what had upto then been non-contrasting varia nts.[1]

---

**Jespersen, O.**—Linguistic borrowing is really nothing but imitation and the only way in which it differs from a childs imitation of its parents speech is that there something is imitated which form a part of a speech that is not imitated as a whole. .........No language is entirely free from borrowed words, because no nation has ever been completely isolated. Contact with other nations inevitably lead to borrowings though their number may vary very considerably.[2]

**Nida, E. A.:**—Words are employed as symbols for every part of culture when cultural elements are borrowed one culture by another, the words for such cultural features of one society often accompany feature. Al..o, when a cultural feature of one society is like that one another, the word of a foreign language may be used to designate this feature in the borrowing society.[3]

---

**Paul, Hermann:**—Mixture of language in this more restricted sense is, in the first instance, the influence exercised by one language upon another when the languages are either wholly unconnected or though originally connected are so for differentiated that one has to be specially learnt by those who are acquainted with the others....... Words are accordingly adopted for ideas for which no words to express them. As a rule, both the idea and the word to express are taken together from the same source.........The process of borrowing transcends its

---

1. Hoenigswald, H. W.—Sound change and Linguistic structure, Lang. Vol. 22-142.
2. Jespersen, O.—Language its Nature and Development 1954, Page 208.
3. Nida, Eugene, A.—Linguistic Interludes 1947, Page 161.

actual need when the foreign language and culture is prized higher than the native and when accordingly the mixture of words and phrases taken from the foreign language passes as specially elegant or tasteful.

Borrowed words are subject to much the same as laws as newly coined words. The first employer of such words has no intention commonly speaking of making them usual.[1]

* * *

**Pike, K. L.:**—Loan words should be respelled as pronounced by speakers of the Vernacular, and not as pronounced by speakers of the trade language, unless strong social or governmental pressure prevents one from doing so.

* * *

A word taken from one language and utilized by a second.[2]

* * *

**Pittman, Dean:**—If a loan word is needed, it is best to borrow it from the trade language......Such loan words should always be modified, if necessary, to fit the pattern of pronunciation of the native language. In other words, one should make sure that every combination of phonemes used as a loan word also actually occurs in native words.[3]

* * *

**Sapir, Edward :**—Languages, like cultures, are easily sufficient into themselves. The necessities of Intercourse bring the speakers of languages into direct or indirect contact with

1. Paul X, Hermann—Principal of the History of language, 1888, Page 456 Translated by Strong, H. A.
2. Pike, K. L—Phonemics, 1954, Page 142 and 242.
3. Pittman, Dean—Practical Linguistic, 1948 pages 158-9.

those of neighbouring or culturally dominant languges. The intercourse may be friendly or hostile. It may move on the humdrum plane of business and trade relations or it may consist of a borrowing or interchanges of spiritual goods—art, science, religion.[1].

* * *

**Savory, T. H.:**—The communication is effected by words. Words are fundamentally movements of the body with which a specific significance is associated......... These are the words which, after they have been borrowed have become so widely used and so familiar in their new context that they have thrust their origins into oblivion.[2]

* * *

**Sayce, A. H.:**—Wherever the distance between the two languages or two levels of culture is great enough, the attempt to imitate is either given up altogether or else becomes a failure. The modes of borrowers are read into the language he borrows... Words, Sounds, idioms, suffixes and even the grammatical forms may be and constantly are borrowed from one dialect by another, and it is not too much to say that a thoroughly pure and unmixed language does not exist among the civilized races of mankind.[3]

* * *

**Schach, Paul:**—Loan shifts in which there is a semantic overlapping between the native and acquired meanings are designated as loan synonyms, there in which new meaning is common with the old are classified as loan homonyms.[4]

* * *

---

1. Sapir. Edward—Language, 1949, Page 192.
2. Savory, T. H.—The Language of Science, 1953, Page 39.
3. Sayce, A. H.—Introduction to the Science of Language, 1890, Page 172.
4. Schach, Paul—Semantic Borrowing in Pennsylvaina German, American speech, Vol. 26, Page 257.

**Sten e, Aasta.**—Loan words are of the classical fields of Linguistic research. The etymologist and the lexicographer have had to deal with them as part of the Vocabulary. Cultural history has been traced by the marks left in the Loan word material of different epoches. Loan words provide a measure by which the phonological development of the past is traceable.[1]

* * *

**Sturtevant, Edger H.**—As a matter of fact, every known language has been largely influenced by its neighbours through bilingual speakers and man who uses two languages is sure to confuse them, especially at the points where they do not precisely correspond. The English Vocabulary has been enormously enlarged by loans from various foreign languages.[2]

* * *

**Sweet, Henry.**—Whenever two dialects or languages come in contact there is sure to be influenced either on one side or on both, the influence being generally much stronger on one side. Even when the two languages are so distinct as to show no outward sign of being cognate, there may be still be influence which indeed, depends mainly on the intimacy of the intercourse between the speakers of the languages.........Result of influence is called borrowing.[3]

* * *

**Vendreys, J.**—On the other hand, Vocabulary is never fixed because it depends upon circumstances. Each speaker continues to build up his Vocabulary from the begining of his life to its end, by a series of borrowings from his sorroundings.[4].........Cultural words are particularly liable to be borrowed. They are trans-

---

1. Stene, Aasta—English Loan Words in Modern Norwigian, 1945, 1.
2. Sturtevant. Edgar, H.—An Introduction to Linguistic Science, 1947, Page 142-43.
3. Sweet, Henry—The History of Language, 1900, page 76.
4. Vendreys, J.—Language, 1954, page 1921.

ported along with the object they denote, the objects serve them as a vehicle and sometimes carry them to a great distance.[1]

* * *

**Whitney, W. D.**—It is also true that real historical correspondence may exist between isolated words in two languages or anything more than a borrowing by the one out of the stores of expression belonging to the other.........The introduction of cultured and Knowledge of art and science may bring in a Vocabulary of expression for the knowledge communicated, the conception taught or promoted but it cannot touch the most intimate fund of speech words.[2].

* * *

**Whorf, Benjamin Lee.**—Words are cultural facts, and cultural facts of a particularly rigid and resisting sort, as being held in and year marked by those great, intricate firmly set organisations called languages....A Loan word may be defined as a word that at some time was first used in context with other words of a given language, having never before been used in context with these words, for the reason that the users has heard and understand its meaning in a different language in which it was in context with words of that languages.[3]

* * *

**Weinreich Uriel.**—When a speaker of language uses a form of foreign origin not as an on-the-spot borrowing from language 'Y' but because he had heard it used by others in X-utterances, then this borrowed element can be considered from the descriptive point of view to have become a part of Language.[4]

---

1. Vendreys, J.—Language, 1952, page 227.
2. Whitney William Dwight—Language and the Study of Language, 1867, pages 185 and 197.
3. Whorf, Benjamin Lee—Loan Words in Ancient Mexico-Studies in Linguistics, Vol. 5, No. 3, 1947, Page 49-65.
4. Weinreich, Uriel—Languages in Contact, 1953.

२. परिशिष्ट

# प—२. एक रोचक कहानी[१]

हिन्दी के प्रयोग के साथ अंग्रेजी का प्रयोग कितना आवश्यक एवं अपरिहार्य हो गया था, इससे सम्बन्धित यह एक रोचक कहानी यहाँ अविकल रूप में उद्धृत है।

चार बजे शाम का वक्त है, हम दिन भर की रियाज़त और दर्दसरी के बाद अपने कमरे में एक कोच पर लेटे हुए आराम कर रहे हैं और चुरुट पीते जा रहे हैं। चंद अहबाब और एक ताज़ावारिद मेहमान जो कल सुबह रुसखत होने वाले हैं। अवध अखबार की एक खत किताबत पर जिसका उनवान उर्दू जबान में अंग्रेजी अलफाज़ है, बहस करके दिमाग चाटे जाते हैं। हम कहते हैं कि उर्दू जबान में अंग्रेजी अलफाज़ जरूर शामिल होते जाँय इस वास्ते उनके समझने की कोशिश करनी चाहिए। वह कहते हैं कि अंग्रेज़ी का एक लफ़्ज उर्दू में इस्तेमाल न करना चाहिये। मैं कहता हूँ कि बग़ैर अंग्रेजी अलफ़ाज के बोले हुए इस ज़बान में चारा नहीं है। वह कहते हैं कि हमने अहद कर लिया है कि कभी अंग्रेजी लफ़्ज न बोलेंगे। मैं कहता हूँ कि बहुत बेहतर। आपके अहद में मैं भी शरीक़ हूँ और इन्शा-अल्लाह-ताला कल

---

१. यह कहानी १ फेब्रुअरी, १८८७ ई० के 'अवध अखबार' नामक समाचार पत्र में छापी गई थी, जिसको फिर खड़ीबोली का पद्य, भाग २, में परिशिष्ट के रूप में उद्धृत किया गया था। यह कहानी वहीं से यहाँ उद्धत की गई है—अयोध्याप्रसाद खत्री—खड़ीबोली का पद्य, भाग २, १८८७, पृ० १७-२२ तथा बिहार राष्ट्रभाषा, पटना, द्वारा प्रकाशित खत्री स्मारक ग्रंथ, १९६०, पृ० २७५-२७८।

सुबह से एक लफ्ज अंगरेजी का उर्दू में ना मिलाएँगे। अब इस बहस में ग्यारह बज गये और हम लोग आव व गिज़ा से फरागत हासिल करने के बाद यह अहद करके सो रहते हैं कि कल सुबह से अंगरेजी का कोई लफ्ज उर्दू तहरीर और न तक़रीर में इस्तेमाल करेंगे और जो शख्स ऐसा करेगा उसका मुँह बन्द कर देंगे या उसके हाथ से कलम लेकर तोड़ डालेंगे। दो-एक घंटे सोकर सात बजे के करीब बेदार हुए।

हम—कोई है ?

आदमी—जी।

हम—क्या बजा है ?

आ०—हुज़ूर, अंधेरे में मुझको न मालूम होगा। कहिये, घड़ी उठा लाऊँ।

हम—अच्छा।

आ०—कौन सी घड़ी लाऊँ, टाइमपीस या क्लौक ?

हम—महज़ वक्त बताने वाली।

आ०—उसका हाल मुझको मालुम नहीं है।

हम—अभी दो घड़ियों का नाम लिया है उसमें से वह ला जिसका पहिले नाम लिया था।

आ०—अब मुझे याद है कि किसका नाम पहले और किसका नाम बाद लिया था ?

हम—अच्छा, फिर नाम लो।

आ०—आप मुझसे जिस घड़ी को कहिये वह ले आऊँ।

हम—अच्छा, जाने दो; एक वह ले आवो, तम्बाकू लपेटा हुआ पत्ता, जो हम पीते हैं।

आ०—तम्बाकू का पत्ता इस समय कहाँ से आये ? दूकाने खुलने दीजिये।

हम—अबे, वह जो बकस ? ऐ तोवा ! सन्दूकचा ? में रखे हुए हैं।

आ०—हुज़ूर, सन्दूकचा मैं न छुऊँगा। उसमें औवल तो कुलफ़ लगा होगा, दूसरे अगर खुला हो तो उसमें रुपया, पैसा रक्खा होगा।

हम—भाई, वह सन्दूकचा नहीं, दूसरा लकड़ी का खाना ऐसा जिसमें

तम्बाकू की भिलड़ियाँ रखी हुई हैं। जिनको हम हुक्के के बदले पीते हैं और तुम लाते हो।

आ०—साहब, हमको पहेलियाँ बूझना नहीं आत साफ़-साफ़ कहिये।

हम—अच्छा, मुंह धोने का पानी और मिस्वाक ले आवो।

आ०—(नीम का मिस्वाक और पानी रखकर) लीजिये।

हम—यह नहीं, अंगरेजी मिस्वाक जिसमें बाल ऐसे लगे होते हैं।

आ०—पल्लू की मिस्वाक, वह कहाँ है ? यह नीम की मिस्वाक तो अपने लिये लाया था, वर्ने यह भी इस वक्त नहीं मिलती।

हम—नाश्ता के लिए वलायती टिकियाँ और मुफ़तिर ले आव।

आ०—दूसरी क्या चीज आपने बताई ?

हम—वह पानी जो हम पीते हैं, छाना हुआ।

आ०—फ़िल्टर का पानी ?

हम—हाँ, हाँ, भाई।

आ०—( डेवढ़ी पर आकर भामां ) वलायती टिकियां नाश्ते के लिये दे जाव।

आ०—कह देना वलायती टिकियों के लिए आज आदमी लनडन भेजा जायगा।

आ०—हज़ूर, भामां ने कहा है विलायती टिकियाँ नहीं है।

हम—कहना; वही मामूली नाश्ता, जो आता था भेज दो।

आ०—(थोड़ी देर के बाद आकर) हज़ूर बिस्कुट दिये हैं।

हम—हाँ; यही माँगते थे।

आ०—( आपस में ) आज मिया की तबियत कुछ बहक गई है। अजब बातें करते हैं। अभी कहा था कि वलायती टिकियाँ ले आव और जब कई मर्तबे चक्कर खाकर मैं बिस्कुट ले आया तो कहने लगे कि हाँ, यही माँगते थे।

हम—(बाहर आकर) यहाँ आव।

आ०—जी।

हम—गाड़ीवान को बुला लाव।

आ०—गाड़ीवान आज छकड़ा लेकर बाहर गया है।

हम—वह नहीं है, दूसरा गाड़ीवान जो घोड़ों की गाड़ी हाँकता है।

आ०—क्या कोचवान को बुला लाऊँ।

हम—हाँ।

आ०—( अस्तबल में जाकर ) अरे भाई, गाड़ीवान चलो तुमको मियाँ बुलाते हैं।

हम—गाड़ीवान तुम और तुम्हारे बाप। हम शरीफ़ आदमी हैं, बग्गी हाँकने से गाड़ीवान थोड़ा हो जाऊँगा।

आ०—अरे खफ़ा न हो, आज यह खिताब मियाँ ने तुमको दिया है। वहाँ चलकर देखो तो कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं।

को०—कहिये हुज़ूर।

हम—एक छोटी गाड़ी दो पहियों वाली ले आव।

मेहमान—हजरत नौ बजा चाहते हैं, रेल का वक्त आ गया है। अब स्टेशन जाने की जल्दी कीजिये।

हम—लाहौलबिला कूवत! तुमने तो आज आफ़यत तंग कर दी और अखिर वही किया जो हम कहते थे।

मेहमान—क्यों? क्या?

हम—कोई अहद किया था।

मेहमान—हाँ, तो फिर?

हम—मैं आज सुबह से हैरान वो परेशान हूँ। न तो अभी तक मुँह धोआ है, न नाश्ता किया, न कंघी,. न कपड़े बदले। जो काम करना चाहता हूँ वह अहद माने होता है।

मेहमान—हाँ।

हम—भाई जान, मेरी आदत थी, सुबह को उठकर एक चुरुट पीता था। ब्रुश से दाँत साफ़ करता था बाद उसके दो एक बिस्कुट खा कर नाश्ता करता था। पानी मैं हमेशा फ़िल्टर का पिया करता हूँ। इन सब चीजों को अजब-अजब तरकीबों से मैंने बताया और तबियत पर निहायत जोर देकर तर्जमा करना चाहा मगर कुछ न हुआ। आदमी अपने दिल में कहता होगा मियाँ को आज, खोदा जाने क्या हो गया है? बिस्कुट के बदले मैंने विलायती टिकियाँ तलब कीं भामां ने जवाब दिया कि लनडन को आदमी भेजा गया है।

मेहमान—(कहकहे लगा कर) ऐ लाहौलबिला कुवत। तोबा! तोबा!

हम—तुमने सारी कैफ़ियत सुनी ही नहीं, वरना हँसते-हँसते लोट जाते।

३. परिशिष्ट

# कविता में आगत अँग्रेजी शब्दों का प्रयोग

अजी सुनो—

ओ, बाबूजी डबल भेंस।
मेरी कुटिया में घुस आई,
समझा होगा शायद तूने
इसको कालिज का खुला मेस।[१]

यदि भैंस बँधी होती तो क्यों
हो पाता एसा विकट क्लैश।[२]

यहाँ कालिजों,
होस्टिलों की बड़ी फील्ड में
नृत्य का ज्ञान किये बिना मित्र
सोसायटी रहती सदा ही अधूरी।[३]

मिल के मजदूर कहीं मिल के
'डिस्पर्स, जलूस-से झूमने आते।[४]

अरे 'शेल्टर' की समाधि में
स्वयं मिलेगी पड़ी धर्म-चूति।[५]

वे टाई अपनी बांध रहे
मैं गांठ सुलझता हूँ।[६]

---

१. गोपालप्रसाद व्यास-अजी सुनो, १९५६, पृ० १।
२. वही, पृ० ३।
३. वही, 'ठंडी' सड़क, पृ० ६।
४. वही, पृ० ७।
५. वही, पृ० ३५।
६. वही, पृ०७१।

मैं आगे पीछे दौड़ दौड़
कपड़ों की क्रीज़ सम्हाल रही ।
टेबुल पर ब्रेकफास्ट रखती,
कुर्सी पर उन्हें बिठाल रही ।[१]

× ×

उनकी भौंहें सिगनल समझो
वे चढ़ी कहीं खैर नहीं
तुम उन्हें नहीं डिस्टर्ब करो,
ए हटो बजाने दो प्यानों ।[२]

× ×

तुम समझो उन्हें स्टीम गैस
अपने डिब्बे को जोड़ चलो
जो छोटे स्टेशन आएँ, उन
सबको पीछे छोड़ चलो ।[३]
सूर सूर तुलसी ससी ।
उडगन केशवदास ।
पन्त-निराला बल्व हैं,
लालटेन हैं व्यास ।[४]

× ×

मैं मेलट्रेन हो जाता हूँ,
बुद्धी भी फक फक करती है ।
भावों का रश हो जाता है
कविता बस, उमड़ पड़ती है ।[५]

× ×

मच्छर का इंजेक्शन लगते ही,
जो चेतना आती है ।[६]

---

१. गोकुलप्रसाद व्यास, अर्जी सुनो, १९५९, पृष्ठ ७१, २. वही, पृष्ठ ८६, ३. वही, पृष्ठ ८७, ४. वही, पृष्ठ १३५, ५. वही, पृष्ठ १४६, ६. वही, पृष्ठ १४७ ।

क्यों चर्चिल सी अक्ल तुम्हारी
लेबरमयी हुई जाती है।[1]

अमृत और विष—

मूढ़ माईथोलोजी व्यर्थ आइडियोलोजी।
रहने न पाये सड़ा देने को विचार-नर।[2]

× ×

किसी हंसीन की मोटर से दबकर मरजाना।
ये लुत्फ यार हमारे नसीब ही में न था॥[3]

**कवि भारती—**

हम ठीक तरह चढ़ भी न सके
घर-घर-घर-घर चल पड़ी ट्राम।
दुबले मोटे लम्बे नाटे
यात्री बेंचों पर जड़े हुए।[4]

× ×

उसकी फाइल सी भरी आँखों के नीचे
रातों जगी हुई कालस है,
पीले से गालों पर है कुछ शेव बढ़ी-सी।

× ×

उसका जीवन जीवनहीन मशीन बन गया।

× ×

बढ़ता जाता वह मशीन सा
चांदी के पहियों पर चलती हुई
मोटरों के स्वर सुनता।

---

१. गोपालप्रसाद व्यास— अजी सुनो, १६५६, पृष्ठ १६२।
२ उदयशंकर भट्ट—व्रजकिशोर चतुर्वेदी, आधुनिक कविता की भाषा १६५१, पृष्ठ १४ से उद्धृत।
३. भगवतीचरण वर्मा—इन्स्टालमेंट, प्रथम सं०, २४।
४. वही—कवि भारती, सं० २०१०, पृष्ठ ४३६।

क्रीम सेंट की खुशबू भरी मोटरें जातीं ।[1]

× ×

बस प्लेट फार्म की टिकट शेष ।[2]

गुप्त निबन्धावली—

दो आना एक पत्र को टका पोस्टेज साथ ।

× ×

प्रति पंगति आना जुगल कोउ नोटिस देह ।[3]

× ×

कहाँ है टेनिसघर दिखलाव
कहाँ मछली वा बना तालाब ।

× ×

हमारे अंग लगी रहती पोमेटम परफ्यूम

× ×

लिखे मैंने डेंसिंग के ढंग,
और सिंगिंग है उसके संग ।

× ×

मम मुख पौडर रोज सो मानहु खिल्यो गुलाब ।[4]

× ×

रह गये म्यूनिसिपलिटी आफिस थाना बोतलखाना ।

× ×

राजा के पास था पर वाटर पुरुफ अच्छा ।[5]

---

१. गिरजाकुमार माथुर—मशीन का पुर्जा, कवि भारती, सं० २०१०, पृष्ठ ६९७ ।
२. भारत भूषण अग्रवाल—कवि भारती, स० २०१०, पृष्ठ ७०४ ।
३. गुप्त निबन्धावली, प्रथम सं०, पृष्ठ २४ ।
४. वही, पृष्ठ ६६९ ।
५. वही, पृष्ठ ६८७ ।

आज बोतलवासिनी का खूब ही अभिषेक हो

× ×

सूप चाप कटलेट मँगाओ खूब भरपेट के पलेट।[1]

× ×

भिड़ गये जंगी मुल्की लाट,
चक्की से चक्की का पाट।[2]

× ×

गुरखों की पलटन बुलवाई।[3]

ग्राम्या :—

रंग रंग के खिले फ्लाक्स वखीना, छपे डियांथस,
नत दृग ऐरिटहिवनम तितली सी पेंजी पापी खालस,
हंसमुख कैंडीटपट रेशमी चटकीले नैशटरशम,
खिली स्वीट पी,…एवंडंस, फिलवारकेट औ ब्लू वैटम,
दुहरे कानेशंस, स्वीट सुलतान सहज रोमांचित,
ऊँचे आली हाँक, लार्कस्पट पुष्प सतंभ से शोभित।
झूले बहु मखमली, रेशमी, मृदुल गुलाबों के दल,
धवल मिसेज एड् कार्नेगी, ब्रिटिश क्वीन हिम उज्ज्वल।
जोसेफ हिल सनबर्स्ट पीत, स्वर्णिम लेडी हेलिडन,
ग्रेट मुगल रिचमंड, विकच ब्लैक प्रिंस नील लोहित तन
फेअरी क्वीन, मारगेरेट मृदु, वीलियम शीन चीर पाटल
बटन रोज गहु लाल, ताम्र माखनी रंग के कोमल[4]

× ×

सुभग रूज, लिपस्टिक, ब्रौस्टिक, पौडर से मुखरंजित,
अंगराग, क्यूटेक्स, अलक्तक से बन नख शिख शोभित,[5]

१. गुप्त निबन्धावली, प्रथम सं०, पृष्ठ ६६१।
२. वही, पृष्ठ ७०६।
३. वही, पृष्ठ ७१५।
४. पन्त—सौंदर्य कला, 'ग्राम्य' चतुर्थ सं०, पृष्ठ ७६ व ७८।
५. वही—आधुनिका, ग्राम्या, सं० वही, पृष्ठ ६३।

रेडियो, तार, औ फोन, वाष्प, जल, वायुयान,
मिट गया दिशावधि का जिनसे व्यवधान मान, [१]

**चौखे चौपदे—**

क्यों पले पीसकर किसी को तू
है बहुत पालिसी बुरी तेरी,
हम रहे चाहते घटाना ही। [२]

**दूसरा सप्तक—**

कुछ और डिजाइन भी हैं, ये इल्मी…
यह लीजे चलती चीज नयी, फिल्मी। [३]

× ×

गर्मी की दोपहर में
तपे हुए नभ के नीचे
काली सड़कें तारकोल की
अंगारे-सी जली पड़ी थीं। [४]

× ×

एब अकेला तांगा था दूरी पर
कोचवान की काली-सी चाबुक है बल पर
वौ बढ़ता था।

× ×

भाग रहा वह तारकोल की जली
अंगीठी के ऊपर से।

× ×

---

१. पन्त सौन्दर्य कला—सूत्रधार, ग्राम्य, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ ८८।
२. अयोध्यासिंह उपाध्याय—चौखे चौपदे।
३. भवानीप्रसाद मिश्र, 'गीतफरोश', दूसरा सप्तक, सन् १९५१, पृष्ठ २७।
४. शकुन्तला माथुर—दोपहरी, पृष्ठ ३७।

बड़े घरों के श्वान पालतू
बाथरूम में पानी की हल्की ठंडक में
नैन मूंदकर लेट गये थे।

× ×

बिस्तर को फेंक
बीच प्लेटफार्म
मुंह बेरुखी से
घूमता है वहाँ।

× ×

भागता शौक से
स्टेशन पर कुली
ढोता है बोझा
ढोता है शक्तिभार [१]

× ×

गन्दा नहीं जीवन
सुन्दर है पहलू
पुर्जा एक बनता
भारी मशीन का[२]

× ×

आलोचनायें सो रही
बेफिक्र
परवाह नहीं
है सीटें तो रिजर्व[३]

---

१. शकुन्तला माथुर—जिन्दगी का बोझ, दूसरा सप्तक, सन् १९५१ पृष्ठ ३८ व ४७।
२. वही, पृष्ठ ४८।
३. वही, पृष्ठ ४९।

गोमती, तट,
दूर पेंसिल रेखा-सा वह झूरमुट,

× ×

आरयन ब्रिज की कमानी,[१] बांह मस्जिद की बिछीं हैं।
धोबियों का हाँक,

× ×

कलकत्ते के फुटपाथों पर,
मनुज खून में लथपथ डूबा अपनी सारी संस्कृतियों से ऊब ऊब[२]

× ×

एटम ओ 'उदजन बम' है नभगामी महलों के करमे।[३]

× ×

भद्दी मोटी लालटेन के घूम रहे गोदामों में थे मोटे वार्डर
जांच रहो रेलों के पहियों हथोडियों से घनघन करके,
मोटे ओठों में चुरुट जल रहा।
अरमान की छाती में सारा इंजन का शोर भर रहा
जाने किस राक्षस की आँखों जैसी लाल हरी लाइटें चमक रहीं
सिगनल खम्भों की।[४]

× ×

मेरे प्राणों के पहिये भूमि बहुत नाप चुके हैं।
सिनेमा की रीलों सा कसके लिपटा है सभी कुछ
मेरे अन्दर।[५]

---

१. नरेशकुमार मेहता—चाहता मन, दूसरा सप्तक, वही, सं०, पृष्ठ १२३।
२. वही, समय देवता, वही, पृष्ठ १३७।
३. वही, पृष्ठ १३८।
४. वही, पृष्ठ १३६।
५. रघुवीरसहाय—अनिश्चय, 'दूसरा सप्तक' वही, सं० पृ० १९५।

महा अन्याय हा हा हो रहा है,
कहें क्या कुछ नहीं जाता कहा है।
मरें असगर, बिसेसर और काली,
मरें घर ग्रान्ट, ग्राहक और राली।[१]

× ×

स्वदेशी वस्त्र की हमको बड़ाई,
विदेशी लाट ने भी है सुनाई।

× ×

न कश्मीरा न मखमल छोड़ते हम,
न लैनल फयल्ट से मुख मोड़ते हम।[२]

× ×

मुझ बिन तुझे चैन से रहना,
भाई मुश्किल है सच कहना।
जजी, मुन्सिफ़ी, मैजिस्ट्रेटी,
मैंने तेरे लिए समेटी।

हाकिम अहलकार, बैरिस्टर;
सब बिठलाये तेरी खातिर।
बैद हकीम डाक्टर, सरजन,
जो हैं सब रोगी के दुश्मन।[३]

× ×

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है कैपिटलिस्ट।[४]

---

१. महावीरप्रसाद द्विवेदी—स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार, जुलाई, १९०३।
२. वही।
३. वही, शहर-गाँव, अप्रैल १९०६।
४. रामरतन भटनागर–निराला: एक अध्ययन, सन् १९४७, पृ० ३२०।

बालमुकुन्द गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ—

सबके सब पंजाबी हैं लायल्टी में चकनाचूर।
सारा ही पंजाब देश बन जाने को है लायलपूर।

× ×

केवल दो डिसलायल थे वाँ एक लाजपत एक अजीत।[1]

× ×

बड़े लाट साहब, सताई हूँ मैं,
तेरे पास फरियाद लाई हूँ मैं।[2]

× ×

पढ़े हम सुख से लिटरेचर, सैंकड़ों कविता शेक्सपियर।
सुने सीखे कितने ही लेक्चर, लिबर्टी, लाजिक और कल्चर।[3]

बावरा अहेरी—

गोधूली की धूल को मोटरों के धुएँ को भी,
पार्क के किनारे पुष्पिताग्रकर्णिका की आलोक खिंची तन्वि रूप रेखा को।
और दूर कचरा जलानेवाली कलकी उद्दंडचिमनियों को, जो,
धुंआ यों उगलती हैं मानों उसी मात्र से अहेरी को छरा देगी।[4]

× ×

बाहर देख आया हूँ
और भी जाते हैं,
बीड़ी-सिगरेट फूंक आते हैं
या कि पान खाते हैं,

× ×

किन्तु यहाँ आसपास
घुमड़न है त्रास है,
मशीनों की गड़गड़हट में
भोली आत्माओं की अनुरणन की मोहमयी प्यास हैं।[5]

---

१ बालमुकुन्द गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, प्र० सं०, पृ० २२६।
२. वही, पृष्ठ ३४४।
३. वही, पृष्ठ ३८१।
४. अज्ञेय—बावरा अहेरी, प्रथमावृत्ति, पृष्ठ १६।
५. वही, पृष्ठ, ४८।

**बंगाल का काल—**

पच्छिम की है एक कहावत
इसको सीखो
इसको घोखो
गाड हेल्प्स दोज़
हू हेल्प देमसेल्ब्ज़
राम सहायक उनकेउ होते
जो अपने हैं स्वयं सहायक।[1]

× ×

यू हैव टू गिव यो पीपुल,
दि सेंस आफ़ हंगर...
अपने देशवासियों को है तुम्हें
देना है अर्थ भूख का ।[2]

× ×

स्टार्विंग मिलियन
भूखे अनगिन,
ह्वीसकी, ब्रैंडी, शैम्पेन की
बोतल की बोतल के मुँह से
काग उड़ रहे थे पल-पल पर[3]

× ×

ब्रेड, एंड स्पीच विद द किंग,
ब्रे एंड नाट टू मच टाकिंग...
बस दो बातें मोटी मोटी
अपना राजा, अपनी रोटी।[4]

---

१. बच्चन—बगाल का काल, द्वितीय सं०, सन् १९५०, पृ० २२।
२. वही, पृष्ठ २७।
३. वही, पृ० २८।
४. वही, पृ० ४९।

करेज फ्रेण्ड,
वी शैल नाट वांट ब्रेड नाऊ।
वी आर ब्रिंगिग यूद बेकर
द बेकरेस ऐंड बेकर्स ब्वाय्।[1]

भड़ाम सिंह शर्मा—

तमाम कौम एडिटर बनी है लीडर।
सबब है यह कि कोई और दिल्लगी न रही।[2]

मूर्ख मण्डली—

मिलता अगर सुयोग मुझे, तो होता एक कोई ना भी—
डाक्टर, बैरिस्टर, या मिस्टर अथवा पब्लिक का हामी।[3]

× ×

बस खोले 'काग' खट से, पी जा उण्डेल झट से।
है जी मजा 'बनारस' बोतल है रेलगाड़ी,
दे दो चियर्स हुरे एञ्जिन चले खुशी का।[4]

× ×

हम हैं लेंप केरासिन का खुद जलें, जलाये ग्रारों को।[5]

यथार्थ और कल्पना—

छतरी. झोला, फायल भूषित,
पगडण्डी पर,
फुटपाथों पर,

---

१. बच्चन, बंगाल का काल, द्वितीय सं०, सन्, १९५०, पृष्ट ५०
२. जी० पी० श्रीवास्तव—भड़ाम सिंह शर्मा, पृ० ८८।
३. रूपनारायण पांडेय—मूर्ख मण्डली, पृ० २८।
४. वही, पृष्ठ ७७, ४६।
५. वही, पष्ठ ८१।

साइकिल से पैदल ही या,
क्रीजहीन पतलून,
निकर या— × ×
कागज की सज्जित फायल-सा
चला जा रहा था—उड़ा जा रहा[1]—

रो पड़े तुम—
रांची के फुटपाथ पर
मैं देखता सिलेपश[2]
× ×
जी हाँ मोटर
मोटर बनो मशीन की
और आप भी मशीन के ।[3]

भारतेन्दु ग्रन्थावलीः—
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई ।
हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई ।[4]
मरी बुलाऊँ देश उजाड़ूँ मँहगा करके अन्न ।
सबके ऊपर टिकस लगाऊँ धन हैं मुझको धन्न ।[5]
× ×
होटल में मदिरा पिये, चोट लगे नहिं लाज ।
लेट लए ठाढे रहत, टोटल देवे काज ।[6]
× ×
बढ़े बृटिश वाणिज्य में हमको केवल सोक ।
जज्ज कलक्टर होइहैं हिन्दूनहिं तित धाई ।[7]

---

१. उदयनारायण भट्ट—दफ्तर का बाबू, प्र० स०, ५५-६३ ।
२. शशिकर—रो पड़े तुम, अपना प्रकाशन, प्र० स०, पृष्ठ ६८ ।
३. वही, पृष्ठ ७०
४. ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रन्थावली, प्र० सं०, भाग १, पृष्ठ ४७० ।
५. वही, पृष्ठ ४७३ ।
६. वही, पृष्ठ ४८२ ।
७. वही, भारतेन्दु, देशप्रेम, पृष्ठ ३५६ ।

करि वारड कानून अनेकन कुलहि बचायो ।
विद्या दान महान नगर पति नगर चबायो ।[1]

× ×

'डिसलायल' हिंदुन कहत कहां मूढ़ ते लोग ।
दृग भरि निरखहिं आज ते राजभक्ति संयोग ।[2]

× ×

खुलिहैं 'लोन' न युद्ध बिन लगिहै नहिं टिक्कस ।[3]

× ×

जदपि और लाटनहू को जन नाम उच्चारत ।[4]

× ×

**माता**

वक्तव्यों, भाषणों, बयानों
गाउनों बनी गर्व की भाषा ।
जब तक लाला किले में मरने—
वालों का लख रही तमाशा ।

× ×

वायुयान के टिकटों से क्या
बलि के देश पहुँच पाओगे ?
अपने दुर्भाग्यों के रोने
गीत बना कबतक गाओगे[5]

---

१. ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रन्थावली; प्र० स०, भाग २, पृ० ७६
२. वही, पृ० ७६५ ।
३. वही, पृ० ७६६ ।
४. वही, पृ० ८१७ । अंग्रेंजी, ग्रेंजुएट, रेल, पुलिस पर मुकरियां, पृ० ८१०-११ पर द्रष्टव्य हैं ।
५. माखनलाल चतुर्वेदी, 'विदा' माता, प्र० सं, पृ० ६ ।

अन्न नहीं है, फीस नहीं है
पुस्तक है न सहायक हाय।

× ×

बूट चाहिये, सूट चाहिये
कालर हैट और नेकटाय
केन चाहिये, चेन चाहिये
घड़ी सहित फिर डेली चाय
देखो इन पर लिखा न होवे
कहीं 'मेड इन हिन्दुस्तान'
क्योंकि हमीं तो हैं इस बूढ़े
भारत के भावी विद्वान।[१]

रेलवे लाइन के किनारे पर—

लेकिन ये घर अचल हैं
टेलीफोन एक्सचेंज की तरह[२]

सुवेला—

अणुबम से शृङ्गार पा चुका
सपना विश्व विजय का[३]

साहित्यकार का दायित्व—

मैंने मन में कहा 'तुम्हारी मुक्ति' अभी होना है बाकी
तार कंटीले, बम, टैंकों के काले धब्बे खाकी।[४]

साहित्य में हास्यरस—

ब्रजभाषा मोस्ट रद्दी है,
खाँखा की गद्दी है

१. माखनलाल चतुर्वेदी—'भारत के भावी विद्वान', १९०७, माता, पृष्ठ ४४।

२. रमेश कुन्तल 'मेघ', कल्पना, दिसम्बर १९५७, पृष्ठ ७२-७३ से उद्धृत।

३. शम्भूनाथ 'शेष', सुवेला, प्र० स०, पृ० १९।

४. गोपालकृष्ण, साहित्यकार का दायित्व, पृ० ३२।

नूतनता मौलिकताहीन है
दीन अनवीन है
और स्वच्छन्द मेरा रागघट बढ़ है—
छन्द रबड़ है।
ओल्ड ब्रजभाषा में कलंक है सुलंक है।
डर्टी पर्यक है।[१]

हंसमाला—

आग उगलता तोपों के अगणित जन बने निवाले।
लाखों घर—टैंकों बम्बारों के—हो गए हवाले।[२]

हिन्दी कविता में युगान्तर—

यदि स्त्रियाँ शिक्षा पातीं तो परदा सिस्टम होता दूर,
और शिक्षित हो वे धारण क्यों करती चूड़ी-सिन्दूर।[३]

× ×

ईश गिरजा को छोड़ यीशु गिरजा में जाय
शंकर सलोने मैन मिस्टर कहावेंगे
बूट पतलून कोट कम्फर्टर टोपी टोप डाट,
घूमेंगे घमंडी बने रंडी का पकड़ हाथ
पियेंगे बरंडी मीट होटल में खावेंगे।
फारसी का छार सी उड़ाय अंगरेजी पढ़
मानों देवनागरी का नाम मिटावेंगे।[४]

---

१. प्रेमनारायण—साहित्य में हास्यरस, सं० सन् १९४७, पृ० १२१-२२।
२. नरेन्द्र—चेतावनी सं०, २००३, पृ० ४१-६२।
३. डॉ० सुधीन्द्र—रामचरित उपाध्यय, पृ० २०७।
४. शंकर, डॉ० सुधीन्द्र—हिन्दी कविता में युगान्तर, प्र० सं०, पृ० २०६।

फरिया चीरफाड़ कुबरी की पहिनालो पचरंगी गौन ।
अब तक लेडी लाल तिहारी कहिये और बजेगी कौन ॥[1]

× ×

अगुवा बनूं, जेल में जाऊँ, जाऊँ पिंड छुड़ाय ।[2]

× ×

जैसा गुण है यहाँ हवा में
प्राप्त नहीं डाक्टरी दवा में । [3]

× ×

शहर की पलटन का दस्ता मुक्ति को जाता है आज ।[4]

× ×

भड़क भुलादो भूतकाल की सजिए वर्तमान के साज,
फैशन फेर इँडिया भरके गोरे गाड बनो ब्रजराज ।
गौरवर्ण वृषभान-सुता का काढ़ो काले तन पर टोप,
नाथ उतारो मोर मुकुट को सिर पै सजो साहिबी टोप ।[5]

विश्वास बढ़ता ही गया—

छिन्न-भिन्न फ़ासिस्तवाद की चर्बी चर्चित

लोहा-ताबां चाँदी सोना,
प्लैटिनम् पूरित अंतर
छिपे गर्भ में जाने कितने
माणिक, लाल, जवाहर ।[6]

---

१. शंकर, डॉ० सुधीन्द्र—हिन्दी कविता में युगान्तर, प्र० सं०, पृ० २१२।
२. वही, पृ० २१९ ।
३. मैथलीशरण गुप्त, डॉ० सुधीन्द्र—हिन्दी कविता में युगान्तर, पृ० २२४
४. वही, पृ०, २७७
५. वही, पृष्ठ ४७२ ।
६. शिवमङ्गल सिंह सुमन, विश्वास बढ़ता ही गया, प्र० सं०, पृ० २९

क्रमि-कीट-सदृश फुट-पाथों पर
मनु की प्यारी सन्तान मिट गई बिलख-बिलख ।[१]

× ×

भूल मत करना, नहीं मैं सिंधु तट पर
अस्थिर-मन-सा रेलवे का एक वेटिंग रूम ।[२]

× ×

अभी बैरा दे गया है टोस्ट बासी और ठंडी चाय ।
आज तक उसने न जानी इस अचेतन केटली के भी हृदय की हाय[३]

———

# खड़ीबोली का पद्य

## तीसरा भाग

### ४—परिच्छेद

### यूरेशियन स्टाइल

अल्पंच—१६ जुलाई सन् १८८५ से वक़ीये मजमून ।

यूरेशियन वासीख़

साथ सरसु वह को यों होता था हम दोनों का ।
शब को एक जाप गलत होता था ग़म दोनों का ।
हाय ! क्या क्या नहीं करता था गिला एक से एक ?
एक मोमेण्ट जो रहता था जुदा एक से एक ।
चुप रहो, चुप रहो, अच्छा नहीं अब तूल मक़ाल
कुछ भी मोडेस्टी का इन्सान को लाज़िम है ख्याल ।[४]

---

१. शिवमंगल सिंह 'सुमन' विश्वास बढ़ता ही गया, प्र० स०, पृ० ४० ।
२. वही, पृ० ७४ ।
३. वही, पृ० ७५ ।
४. अयोध्याप्रसाद खत्री,—खड़ीबोली का पद्य, २ भाग, सन् १८८७, पृष्ठ १०

(१२ वीं फरवरी १८८६ से)
उर्दू-अंग्रेजी की खिचड़ी —
क्यों नहीं ब्लैक जेर मशके ह्वाइट नाउ ए डेज़ ?
यह हैं पावरफुल वह है बेज़ार वो माइट नाउ ए डेज़ ।[1]

---

५ वां परिच्छेद

## अशुद्ध हिन्दी

### यूरोपियन स्टाइल

ध्यान में जिस दम नई तहजीव को लाटा है हम ।
छोड़कर कावे को लन्डन में चला जाटा है हम ।
नाचघर में या कमीटी में अगर जाटा है हम ।[2]

---

१. अयोध्याप्रसाद खत्री— खड़ी बोली का पद्य, दूसरा भाग, सन् १८८७, पृष्ठ १३ ।
२. वही, पृष्ठ १५ ।

## प—४ परिशिष्ट

## अंग्रेजी शब्दों के बोलीगत रूप

### प—४.१

| अंग्रेजी शब्द | भोजपुरी | अवधी | ब्रजभाषा | राजस्थानी |
|---|---|---|---|---|
| १. Almonium | अलमुनियम<br>ललमुनियाँ | अलमुनियाँ | अलमोनियम | अलमोनअम |
| २. appeal | अपिलिया | अपील | अपील | अपील |
| ३. Barrister | बालिस्टर | बालिस्टर<br>बालिट्टर | बालिस्टर | बालेस्टर |
| ४. Black | बिलेक | बिलेक | बिलैक | ब्लेक |
| ५. Boycott | बैकाठ | बैकाट | बाईकाट | बाईकाट |
| ६. Camp | कम्फ | कम्पु | — | कैम्प |
| ७. Centre | सन्टर | सएटर | सएटर | सएटर |
| ८. Cheque | चिक | चिक | चिक | चिक |
| ९ Class. | किलास । गि | किलास | किलास | किलास |

| अंग्रेजी शब्द | भोजपुरी | अवधी | ब्रजभाषा | राजस्थानी |
|---|---|---|---|---|
| १०. Collector | कलट्टर | कलक्टर | कलट्टर | कल्टर |
| | कलक्टर | कलटर | | |
| ११. Communists | कौमनिस्ट | कमुनिट्ट | — | कौमनिस्ट |
| | | कमुनिस्ट | | |
| १२. Connection | कनकसन | कनक्सन | कनकसन | — |
| | | कनेक्सन | | |
| १३. Control | कनटरौल | कंटरौल | कन्टरौल | कंटरोल |
| | कन्टौर | कंटौर | — | — |
| १४. Doctor | डागडर | डाग्डर | डाकदर | डागदर |
| १५. Driver | डरेबर | डरेबर | डिलेबर | डलेबर |
| १६. Estimate | इसमिट | इस्टीमेट | — | अस्टिमेट |
| १७. Export | इस्पाट | एस्पर्ट | — | अक्सपर्ट |
| १८. Fail | फेल | फेल | फैल | फैल |
| १९. Fire | फायर | फैर | फैड़ | फेर |
| | फेर | | | |
| २०. Follower | फौलोअर | फलोबर | — | — |
| २१. Form | फाहरम | फारम | फारम | फारम |
| | फारम | | | |

| अंग्रेजी शब्द | भोजपुरी | अवधी | ब्रजभाषा | राजस्थानी |
|---|---|---|---|---|
| २२. Fund | फन (खार) | फंड़ु | फरण्डु | फरण्ड |
| २३. Guard | गाट | गाट | गाट | गाट |
| २४. Half | हाफ-हाप | हाफ-हाप | हाप | हौफ |
| २५. Harmonium | हरमुनियाँ | हरमुनियाँ | हरमुनिश्राँ | हरमुनियो |
| २६. High-Court | हायकोट | हाईकोट | हाईकोट | हाईकोरट |
| २७. High School | हायस्कूल | हाईइस्कूल | हाईइस्कूल | हाइ स्कूल |
| २८. Hospital | इसपिताल | अस्पताल | असपताल | हसपताल |
| | हस्पताल | हस्पताल | — | — |
| २९. Injection | जकैशन | इंजेक्शन | जंगसन | — |
| ३०. Inquiry | इनकुआरी | इन्क्वैरी | इनक्वैरी | अनक्वारी |
| ३१. Inspector | निसपिट्टर | इंस्पट्टर | सपट्टर | निसपेटर |
| | इनिसपिट्टर | | | |
| ३२. Jail | जेहल | जेहेल | जेल | जेल |
| ३३. Judgement | जजमैंट | — | जजमंटु | झजमेंट |
| ३४. License | लइसन | लैसन | ल्हैसंस | लाइसन |
| | लैसन | — | — | — |
| ३५. Light | लैट | लैट | लैट | लेट |
| ३६. Laudspeaker | लौडस्पीकर | लौडइस्पीकर | लौडसपीकर | लौडस्पीकर |

| अंग्रेजी शब्द | भोजपुरी | अवधी | ब्रजभाषा | राजस्थानी |
|---|---|---|---|---|
| ३७. Medal | मिडिल | मिडिल | मेडल | मेडल |
| ३८. Meeting | मिटिन | मीटिंग | मीटिंग | मटिंग |
| ३९. Member | मिंबर | मेंबर | मेम्बरु | मेम्बर |
| | मेम्बर | — | — | — |
| ४०. Military | मलेटरी | मलेटरी | मलेटर | मिलट्री |
| ४१. Minister | मेनिस्टर | मिनिस्टर | मनिस्टर | मनेस्टर |
| | मनिस्टर | — | — | — |
| ४२. Money Order | मनीआडर | मनीआडर | मनीआडर | मनीआडर |
| ४३. Notice | लोटिस | नोटिस | नोटस | नोटस, लोटस |
| ४४. Officer | आफसियर | अपसर | अफसर | होफिसर |
| | अप्सर | | | |
| ४५. Operator | आपरेटर | अपरेटर | — | अपरेटर |
| ४६. Order | ओडर, आडर | अडर | ओडर | — |
| ४७. Paddle | पैडिल | पैडिल | पैडिल | पैडल |
| ४८ Petromax | पंटलैट | — | — | — |
| ४९. Platform | प्लाटफारम | पलेटफारम | पलेटफारम | पिलेटफारम |
| ५०. Point | पैंट | पैंट | — | — |

| अंग्रेजी शब्द | भोजपुरी | अवधी | ब्रजभाषा | राजस्थानी |
|---|---|---|---|---|
| ५१. Postcard | पोस्टकाट | पोस्काट | पोसकाट | पोस्काट |
| | पोसकाट | — | — | — |
| ५२. Practice | पराटिस | पराटीस | पराटिस | पराटीस |
| ५३. Private | प्रायबिट | पराइवेट | प्राइवेट | प्रैवेट |
| | परायवेट | — | — | — |
| ५४. Propoganda | परोपगण्डा | — | — | प्रोपगंडा |
| ५५. Puplic | पबली | पब्लिक | पबलिख | पबलिग |
| ५६. Quota | कोटा | कोटा | कोटा | कोटा |
| ५७. Reserve | रिजरब | — | रिजरब | रिजरेफ |
| ५८. Right | रेट | रेट | रेट | रेट |
| ५९. Round | रोन | रौंड | — | रूंड |
| ६०. School | इस्कूल | इस्कूल | इसकूल | सकूल |
| ६१. Secretary | सिकरेटरी | सिकरेटरी | सैकेटरी | सिक्रेट्री |
| | सिकट्ररी | सिकट्री | — | — |
| ६२. Signal | सिंगल | सिंगल | सिंगल | सिंगल |
| ६३. Down | डोन | डौन | डोन | डोन |
| ६४. Socialist | सुश्लिंग | सुसलिट | सोसलिस्ट | सोशलिस |
| ६५. Station | टीसन | टेसन | अस्टेसुनु | ठैसण |

| अंग्रेजी शब्द | भोजपुरी[1] | अवधी[2] | व्रजभाषा[3] | राजस्थानी[4] |
|---|---|---|---|---|
| ६६. S.P. | इसपी | एसपी | एसपी० | — |
| ६७. Tablet | टेब्लेट | — | — | टेबलेट |
| ६८. Third Class | थड़किलास | थड़ुकिलास | ठिडकिलास | थल्डकिलास |
| ६९. Time | टैम | टैम | टैम | टैम |
| ७०. Tractor | टक्टर | — | टिटेक्टर | टेकटर |
| ७१. Training | टरेनि<br>टरेनी | — | — | टर्निंग |
| ७२. Type | टैप | टैप | टैप | टैप |
| ७३. Volunteer | मोलंटियरी<br>बोलण्टियरी | — | बौलंटीयर | — |
| ७४. Voucher | भौचर | बउचर | बाउचर | बोचर |
| ७५. Warder | वार्डर | — | — | वार्डर |

नोटः—विभिन्न बोलियों के बोलीगत रूप मुझको निम्नलिखित सहयोगियों से प्राप्त हुए हैं।

१. भोजपुर—श्री अमरबहादुर, रिसर्च फेलो, दकन कॉलेज, पूना

२. अवधी—श्री देवीशंकर द्विवेदी, हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा।

३. व्रजभाषा—श्री चन्द्रभान रावत, प्राध्यापक किशोरीरमण कॉलेज, गाँव, लोहवन, मथुरा।

४. राजस्थानी—श्री उमापतिराय चन्देल, प्राध्यापक, नवलगढ़ डिग्री कॉलेज, नवलगढ़, राजस्थान।

# ४.२ परिशिष्ट

## ब्रजभाषा[1] में प्रयुक्त कुछ शब्द

| | | |
|---|---|---|
| 1. | Accountant | ऐकौन्टैन |
| 2. | Actor | ऐकटर |
| 3. | Advocate | ऐडवोकेट |
| 4. | Agenda | अजंडा |
| 5. | Agent | ऐजंट्ट |
| 6. | Almirah (P) | अलबारी |
| 7. | Appeal | अपील |
| 8. | Arrow-root | अरारोट |
| 9. | Assembly | असम्मली |
| 10. | Atom Bomb | अटमबम्म, बम्बाट |
| 11. | Attention | टिचन |
| 12. | Bag | बैग |
| 13. | Band | बैंड, बीन |
| 14. | Bank | बंक |
| 15. | Barrister | बालिस्टर |
| 16. | Barrack | बारिग |
| 17. | Battery | बैटरी |
| 18. | Bearing | बैरंग |
| 19. | Bench | बेंच, बिरंच |
| 20. | Cycle | बाइसिकिल, बावरीसिकिल |

१. ब्रजभाषा के ये शब्द मुझे श्री चन्द्रभान रावत, लोहबन (मथुरा) के सौजन्य से प्राप्त हुए।

| | | |
|---|---|---|
| 21. | Bill | बिलु |
| 22. | Biscuit | बिसकुट्ट |
| 23. | Black | बिलैक |
| 24. | Blouse | बिलाउज़ु, बिलौज |
| 25. | Board | बोरड, बोड |
| 26. | Bodice | बौडी |
| 27. | Body-guard | बोडीगाट |
| 28. | Bolt | बोलट्ट |
| 29. | Bonus | बोनस |
| 30. | Bottle | बोतल |
| 31. | Box | बक्स |
| 32. | Boycott | बाईकाट |
| 33. | Brake | बिरेखु |
| 34. | Brush | बुरुसु |
| 35. | Budget | बजट |
| 36. | Bugle | बिगुल |
| 37. | Building | बिलडिंग |
| 38. | Bulb | बलबु |
| 39. | Bundle | बंडलु, बिंडल |
| 40. | Bush-shirt | बुस्सैट, गुरसैट (धोबी) |
| 41. | Business | बिजनेस |
| 42. | Button | बटन |
| 43. | C. I. D. | सी० आई० डी० |
| 44. | Cigar | सिगार |
| 45. | Cigarette | सिगरेट, सिकरेट |
| 46. | Cinema | सिनेमा, सलीमा, सनीमा, सलेमा |
| 47. | Circus | सरकस |
| 48. | Civil-Surgeon | सिविलसरजन |
| 49. | Class | क्लास |
| 50. | Clerk | किलरक |

| | | |
|---|---|---|
| 51. | Clip | क्लिफ़ |
| 52. | Cut-piece | कटफीस |
| 53. | Court | कौरट |
| 54. | Court-Inspector | कोटसाब |
| 55. | Calender | कलंडर |
| 56. | Camera | कैमरा |
| 57. | Canister | कनस्तरु, कनस्टर |
| 58. | Captain | कप्तान |
| 59. | Car | कार |
| 60. | Card | कारडु |
| 61. | Cartridge | काराइस |
| 62. | Case | केस |
| 63. | Cash | कैस |
| 64. | Certificate | साटीफिकट |
| 65. | Chance | चान्स |
| 66. | Chain | चैन |
| 67. | Chairman | चीअरमैन |
| 68. | Charge–sheet | चारसीट |
| 69. | Charge | चार्जु, चारज |
| 70. | Checker (Ticket) | टिकटचैकरु |
| 71. | Check | चिक, चैक |
| 72. | Chief | चीफ साब |
| 73. | Collar | कालर |
| 74. | Collector | कल्लटरु |
| 75. | College | कौलेजु |
| 76. | Colonel | कर्नल |
| 77. | Command | कमान |
| 78. | Commission | कमीसनु |
| 79. | Committee | कमैटी |
| 80. | Company | कम्पिनी |
| 81. | Compounder | कम्पोटर |

| | | |
|---|---|---|
| 82. | Condemn | कंडम |
| 83. | Conductor | कंडकटरु |
| 84. | Congress | कांगरेस |
| 85. | Constable | कानिस्टिबिल |
| 86. | Control | कंटरोल |
| 87. | Coolie | कुली |
| 88. | Copy | कापी, काफी |
| 89. | Council | कौंसिल |
| 90. | Coupon | कूपन |
| 91. | Cream | क्रीम, करीम |
| 92. | Curfew | करफ़ू |
| 93. | Current | करंट |
| 94. | Dairy | डेरी |
| 95. | Decree | डिगरी |
| 96. | Deputy | डुपटी |
| 97. | Design | डिजाइनि |
| 98. | Diary | डाअरी, डेरी |
| 99. | Dismiss | डिसमिस |
| 100. | Doctor | डांकदर |
| 101. | Dozen | दरज़न |
| 102. | Driver | डिरेवर |
| 103. | Duty | डूटी |
| 104. | Ear-ring | ऐरन |
| 105. | Election | अलेक्सन |
| 106. | Engine | अंजन |
| 107. | Engineer | अंजीनियर |
| 108. | Entrance | ऐन्टरेन्स |
| 109. | Estate | इस्टेट |
| 110. | Factory | फैक्टरी |
| 111. | Fail | फैल |
| 112. | Fancy | फैन्सी |

| | | |
|---|---|---|
| 113. | Fashion | फैसनु, फैसनेबुल |
| 114. | February | फैब्रुरी, फर्बरी |
| 115. | Fees | फीस |
| 116. | File | फाइल |
| 117. | File | फैइल |
| 118. | Film | फिलम |
| 119. | Firm | फैरम |
| 120. | Fit | फिट |
| 121. | Foot | फुट |
| 122. | Fountain-pen | फौन्टनपेन |
| 123. | Fund | फंड |
| 124. | Furlong | फरलांग |
| 125. | Gas | गैस |
| 126. | Glass | गिलास |
| 127. | Godown | गोदाम,गुदाम |
| 128. | Government | गबरमंट |
| 129. | Governor | गवरनर |
| 130. | Gramophone | फौनोगिराफ, फौनेगिलास |
| 131. | Guarantee | गारंटी |
| 132. | Guard | गाड, गाट |
| 133. | Handle | हंडिल, हैंडल |
| 134. | Harmonium | हरमुनियां |
| 135. | Head-Master | हेडमास्टर |
| 136. | High-Court | हाईकोरट |
| 137. | High-school | हाईइस्कूल |
| 138. | Hockey | हौकी |
| 139. | Holder | हौंडिल |
| 140. | Homeopathic | हौमिग्रोपैथक |
| 141. | Hospital | अर्सपताल, हसपताल |
| 142. | Hotel | होटल |
| 143. | Hunter | हनटर |

| | | |
|---|---|---|
| 144. | Ice-cream | आइसकरीम |
| 145. | Inch | इंच |
| 146. | In-charge | इनचारज |
| 147. | Income-tax | इनकमटिकस |
| 148. | Influenza | इनफलूजा |
| 149. | Injection | इंजंक्सन |
| 150. | Inspector | सपट्टर |
| 151. | Jacket | जाकट |
| 152. | Jail | जेल, जेहल |
| 153. | Jailor | जेलर |
| 154. | Joint | जांट |
| 155. | Joker | जौकर |
| 156. | Judge | जज्ज |
| 157. | Jumper | जमफरु |
| 158. | Junior | जूनिअर |
| 159. | Lace | ल्हैस |
| 160. | Lady | लेडी |
| 161. | Lamp | लंप |
| 162. | Lantern | लालटेन |
| 163. | Late | लेट |
| 164. | Leader | लीडर |
| 165. | Lecture | लेक्चर |
| 166. | Letter-box | लेटरबकस |
| 167. | Library | लाइबरेरी |
| 168. | License | ल्हैसंस |
| 169. | Lieutenant | लफटंट |
| 170. | Line | लैनि |
| 171. | Loafer | लोफरु |
| 172. | Locket | ल्हाकट |
| 173. | Long-cloth | लट्ठा |
| 174. | Lord | लाट |

| | | |
|---|---|---|
| 175. | Lottery | लौटरी |
| 176. | Machine | मसीन |
| 177. | Madame | मेंम |
| 178. | Magistrate | मजिस्ट्रेट्ट |
| 179. | Majority | मेजारिटी, मजरौटी |
| 180. | Malaria | मलेरिया |
| 181. | Manager | मनेजर |
| 182. | March | मार्च |
| 183. | Mark | मार्का |
| 184. | Marshall Law | मार्सल्ला (पीटना) |
| 185. | Master | माट्टर, म्हास्टर |
| 186. | Matches | माचिस |
| 187. | Medal | मेडिल |
| 188. | Meeting | मीटिंग |
| 189. | Member | मेंबर |
| 190. | Party | पाल्टी |
| 191. | Middle | मिडिल, मिडिलची |
| 192. | Mile | मील |
| 193. | Military | मलेटरी |
| 194. | Minister | मनस्टर |
| 195. | Minute | मिलट, मिन्ट |
| 196. | Misquote | मिसकौट |
| 297. | Mission | मिसन |
| 298. | M. L. A. | ऐमेले |
| 299. | Money-order | मनीआडर |
| 200. | Monitor | मानीटर |
| 201. | Motor | मोटर |
| 202. | Mufler | मफलर |
| 203. | Necktie | टाई |
| 204. | Necklace | नकलस, नखलस |

205. Notice नोटिस
206. Number लंबर
207. Nurse नर्स
208. Office आपिस
209. Officer आपिसर, हौपीसर
210. Operation अपरेसन, औपरेसन
211. Orderly अरदली
212. Over-coat ओवरकोट
213. Pocket पाकिट
214. Panataloon पतलून
215. Parade परेड
216. Parcel पारसल
217. Park पारक
218. Patent पेटेंट
219 Petrol पेटरोल
220. Pencil पेंसल
221. Pension पिंसन
222. Permit परमिट
223. Petticoat पेटीकोट
224. Phynile फिनैल
225. Phita (P) फीता
226. Photo फोट्ट
227. Pistol पिस्तौल
228. Plaster पलस्तर
229. Plastic पलास्टिक
230. Platform पलेटफारम
231. Platoon पलटन
232. Pneumonia निमौनिआं
233. Police पुलिस
234. Policy पौल्सी
235. Polish पालिस

| | | |
|---|---|---|
| 236. | Polling | पोलिंग |
| 237. | Post-Card | पोस्टकारड |
| 238. | Powder | पौडर |
| 239. | Press | पिरेस |
| 240. | Primary | प्राइमरी |
| 241. | Private | पिराइवेट |
| 242. | Programme | परोगराम |
| 243. | Propaganda | प्रौपगंडा |
| 244. | Public | पबलिक |
| 245. | Poultice | पुलटिस |
| 246. | Puncture | पिंचर |
| 247. | Quarter | क्वाटर |
| 248. | Quinine | कुनैन |
| 249. | Radio | रेडिया, रेडियाई |
| 250. | Rail | रेल |
| 251. | Railway | रेलबई |
| 252. | Ration | रासन |
| 253. | Receipt | रसीद |
| 254. | Receiver | रिसीवर |
| 255. | Record | रिकाड, रिकाट |
| 256. | Recruit | रंगरूट |
| 257. | Register | रजिट्टर, रजस्टर, रजिस्टर |
| 258. | Report | रपट |
| 259. | Revolver | रिवालबर |
| 260. | Rifle | रायफल, रैफल |
| 261. | Rubber | रबड़ |
| 262. | Rule | रूल |
| 263. | Sandle | संडल |
| 264. | Scene | सीन |
| 265. | School | इस्कूल |

| | | |
|---|---|---|
| 266. | Seat | सीट |
| 267. | Second | सैंकड |
| 268. | Secretary | सकेटरी, सकरेटी |
| 269. | Session | सेसन |
| 270. | Sentry | संतरी |
| 271. | Shoot | सूट |
| 272. | Signal | सिगनल, सिंगल |
| 273. | Sign-board | सानबोड |
| 274. | Silver | सिलवर |
| 275. | Slate | सलेट |
| 276. | Sleeper | सिलीपट |
| 277. | Slipper | सिलीपट |
| 278. | Society | सुसाइटी |
| 279. | Sodawater | सोडावाटर |
| 280. | Special | इसपेशल |
| 281. | Spirit | इसप्रिट |
| 282. | Stage | इसटेज |
| 283. | Stamp | इस्टाम्प |
| 284. | Station | अट्टेसुन |
| 285. | Stool | इस्टूल |
| 286. | Suit | सूट |
| 287. | Summons | सम्मन |
| 288. | Superintendent | सुपरडेंट |
| 289. | Sweater | सूटर |
| 290. | Tandem | टमटम |
| 291. | Tank | टैंक |
| 292. | Tarcoal | गोलतार |
| 293. | Tax | टिकस |
| 294. | Telephone | टेलीफून |
| 295. | Theatre | ठैठर |

| | | |
|---|---|---|
| 296. | Thermometer | थरमामीटर |
| 297. | Third | थड्ड |
| 298. | Ticket | टिकस |
| 299. | Tiffin | टिपन |
| 300. | Tin | टीन |
| 301. | Tractor | टिरेकटर |
| 302. | Treasury | तिजूरी |
| 303. | Trump | तुड़प |
| 304. | Tube | ट्यूब |
| 305. | Tub | टप |
| 306. | Tumblar | टामलोट |
| 307. | Truck | टिरक |
| 308. | Trunck | टिरंक |
| 309. | Type | टाइप, टाइफ |
| 310. | Typhoid | टाइफाइड |
| 311. | Under-wear | अण्डरवीयर |
| 312. | Varnish | वार्नेस |
| 313. | Verandah (P) | वरंडा, वरम्दा |
| 314. | Volunteer | वालंटिअर |
| 315. | Vote | बोट, वोटर |
| 316. | Waistcoat | वास्कट |
| 317. | Warrant | वारंट्ठ |
| 318. | X-ray | एक्सरा, फोट्ट |
| 319. | Buckles | बकसुआ |
| 320. | Bus | बस |
| 321. | Chimney | चिमनी |
| 322. | Candle | कन्डील |
| 323. | Connection | कनक्सन |
| 324. | Girder | गाटर |

325. Hook हुक्कु
326. Junction जंगसन
327. Quota कोटा
328. Trick टिरक
329. Voucher बाउचर

परिशिष्ट ५

# कुछ विवादास्पद शब्द

## प–५. १. काँजीहौज

'काँजीहौज' शब्द उत्तर भारत के नगरों तथा गाँवों में प्रयुक्त होता है। यह उस स्थान-विशेष का सूचक है जो चारों ओर से बन्द होता है और जिसमें खेती आदि को हानि पहुँचाने वाले लावारिस पशु बन्द किये जाते हैं।[१] चौपायों के मालिक दण्डस्वरूप कुछ धन देकर उनको छुड़ा ले जाते हैं। इस शब्द से मिलते हुए अन्य शब्द भी हिन्दी भाषा के विशाल प्रदेश में व्यवहृत होते हैं, । जिनमें 'कानीहाउस', 'कानीहौद',[२] 'काँजीहाउस' आदि उल्लेखनीय हैं। इतना निर्विवाद है कि इसका प्रथम रूप—काँजीहौज—ही बहुप्रचलित है, शेष रूप किसी निश्चित भू-भाग में ही प्रचलित हैं। 'काँजीहौज' सर्वत्र प्रयुक्त होता है तो 'कानीहाउस' पश्चिम में अधिक और 'कानीहौद' पूर्वी जिलों में प्रचलित है। यह शब्द हिन्दी-क्षेत्र में ही प्रयुक्त नहीं होता वरन् सम्पूर्ण भारत में इसके समानार्थी अन्य शब्द प्रयुक्त होते हैं, जो रूपात्मक दृष्टि से भी इस शब्द से मिलते हुए हैं; यथा मराठी-कोंडवाडा[३]; कन्नड़-कौंडवाडा[४] उड़िया-काँजिया हत्ता[५]; बँगला- खुआंड़।[६]।

१. हिन्दी शब्द सागर, ना० प्र० सभा, काशी, पहलाखण्ड, पृष्ठ ५२०।

२. प्रेमचन्द जी ने 'प्रेमाश्रम' में इस रूप का ही प्रयोग किया है, दे० पृ० २६६ तथा ३०३, सं० १९४८ ई०।

३. कृष्ण लाल वर्मा, हिन्दी-मराठी कोश, प्र० सं०, पृष्ठ १०४।

४. डॉ० हिरेमठ, धारवाड़ विश्वविद्यालय के सौजन्य से प्राप्त।

५. 'अहाता' का ही विकृत रूप 'हत्ता' है और 'हौद' पर 'हौज' के साथ 'हत्ता' का भी प्रभाव है—उड़िया रूप के लिए मैं प्रो० गोलोक बिहारी धल का कृतज्ञ हूँ।

६. बँगला रूप डॉ० सुकुमार सेन, अध्यक्ष, भाषा-विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय के सौजन्य से प्राप्त।

इस शब्द की व्युत्पत्ति पर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। विद्वान् भाषाविदों के विभिन्न विचारों को हम निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं—(अ) इस शब्द के दोनों भागों का सम्बन्ध अंग्रेजी से है। (ब) इस शब्द का द्वितीय भाग ही अंग्रेजी भाषा का है। (स) इस शब्द का प्रथम भाग तामिल भाषा का है।

(अ) वर्ग के अन्तर्गत निम्नलिखित व्युत्पत्तियाँ आती हैं—

कानीहाउस = कैनिन + हाउस —ना० प्र० सभा, काशी।[१]

काँजाहउस = काइन[२] + हाउस —वही।[३]

काँजीहौद = काँजी + हौज —डॉ० बेली,[४] डॉ० धीरेन्द्र वर्मा[५]।

काँजीहौद = काइन + हाउस —रामचन्द्र वर्मा।[६]

(ब) तथा (स) वर्ग के अन्तर्गत—

काँजीहौद = काँजी + हाउस —वृहद् हिन्दी कोश, काशी।[७]

एक ओर जहाँ कुछ भारतीय विद्वानों ने इस शब्द को अंग्रेजी का परिधान पहिना कर भारतीय भाषाओं में गृहीत माना है वहाँ दूसरी ओर सुब्बाराव

---

१. वृहत् शब्द सागर, सातवाँ खण्ड, १६३०, पृष्ठ ३८८३।

२. Kine-Cows-Middle English Ky-en a doubled plural of Anglo-Saxon cu'—a cow, the plural of which is cy-cf. scots kye--Chambers Twentieth Century Dictionary, 1935, पृष्ठ ५०१।

३. शब्द सागर, प्रथम भाग, काशी, पृष्ठ ५२०।

४. 'केंचिग हाउस' से मानते हैं—दे० टी० ग्रैहेम बैली, इंग्लिश वर्ड्ज इन पंजाबी, बो० ओ० ए० एस०, भाग ४, पृष्ठ ७८३-६०।

५. 'काइन हाउस' अथवा 'केंचिग हाउस' से मानते हैं—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, इंग्लिश लोन वर्ड्ज इन हिन्दी, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी स्टडीज़, भाग ८-१, सन् १६३२, पृष्ठ ४०।

६. रामचन्द्र वर्मा, प्रामाणिक हिन्दी शब्द कोश, पृष्ठ २३८।

७. काँजी (तमिल) लावारिस पशु, हाउस (अं० घर), ज्ञान मण्डल लि०, बनारस, पृष्ठ २६३।

जैसे विद्वान्, जिन्होंने अंग्रेजी में भारतीय शब्दावली पर कार्य किया है, इस शब्द को भारतीय सिद्ध करते हैं। हाब्सन जाब्सन[१] में यह शब्द सम्मिलित गया जो निम्नलिखित अर्थों का परिचायक है—

१. रेजीमेंट की छोटी कोठरी।२. उत्तर भारत में पशुशाला।[२]

उक्त समस्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस शब्द का द्वितीय भाग अंग्रेज़ी शब्द 'हाउस' का ही विकृत रूप है, जो उचित है। अब प्रथम भाग की ही समस्या रह जाती है। प्रथम भाग को अंग्रेज़ी के 'काइन' अथवा 'कैनिन' या कैचिंग' का बिगड़ा हुआ रूप माना गया है, जो प्रामाणिक नहीं; क्योंकि 'काइन' शब्द अंग्रेज़ी में ही प्रचलित नहीं, आज उसके स्थान पर 'काउज़' प्रचलित है तो उसके पुराने रूप का ग्रहण सर्वथा अमान्य है और 'कैनिन' तथा 'कैचिंग' से भी किसी ध्वनि-परिवर्तन के नियम के अनुसार 'काँजी' नहीं बन सकता। ज्ञानमण्डल वाले कोश में 'काँजी' शब्द को तमिल शब्द लिखा है। मैंने इस शब्द का यथार्थ स्रोत ढूंढ़ने की विशेष चेष्टा की। तमिल में वस्तुतः 'काँजी' शब्द कम-से-कम इस अर्थ में कोई नहीं। तमिल में

---

१. अ–1. The cells (temporary lock up) of regiment in India, so called traditionally regiment of the innates.

2. Cattle-pound in Northern India—Hobson Jobson

ब—ऑक्सफ़र्ड इंग्लिश डिक्शनरी, भाग २, पृष्ठ ८३१।

१५. पशुशाला के अर्थ में एक साहित्यक प्रयोग द्रष्टव्य है—

"इन लोगों के लिए काँजीहौज भी तो नहीं। क्या ही अच्छा हो यदि द्विवेदी जी हरहट या हरहारी लेखक-लेखिकाओं के लिए भी काँजीहाउस खुलवाएँ।"—बनारसीदास चतुर्वेदी, संस्मरण, सन् १९५०, पृष्ठ ११७।

दो और शब्द हैं—१. कांची, जिसका अर्थ है—अव्यवस्थित, चलायमान[1] और, २. काणि, जिसका अर्थ है—आधिपत्य या आधिपत्य का अधिकार।[2] लेकिन इन दोनों शब्दों में से किसी से भी विवेच्य 'काँजी' शब्द का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं स्थापित किया जा सकता।

दक्षिण की एक और भाषा कन्नड़ में 'कोंचे'[3] शब्द है, जिसका अर्थ है—एक चारों ओर से उठी हुई दीवाल से घिरा हुआ टीले पर स्थित स्थान। 'अमरकोश' की कन्नड़ टीका में इसको 'शाला' के अर्थ में लिया गया है। मैसूर विश्वविद्यालय के कन्नड़ विभाग के अध्यक्ष डॉ० श्री कंठिया ने भी इसी शब्द से इसका सम्बन्ध स्थापित करने की मुझे सलाह दी। लेकिन अगर इस शब्द से इसका सम्बन्ध स्थापित किया जाय तो फिर 'काँजी' तथा 'हौज' दोनों ही शब्दों का एक ही अर्थ है और डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी के मतानुसार यह फिर अनुवादमूलक शब्द बन जावेगा।

कन्नड़ में एक शब्द 'कोंडा'[4] और है जिसका अर्थ है—जङ्गली भेड़ या बड़े काले मुँह का काला बन्दर जिससे भी यहाँ कोई 'काँजी' शब्द से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इससे भी उपयुक्त शब्द मुझको हाल ही की मेरी दक्षिण यात्रा में 'तुलु' भाषा में प्राप्त हुआ। यह शब्द 'काँजी' है, जिसका अर्थ है 'बछड़ा', और जो सामान्यतः किसी भी चौपाये के लिये प्रयुक्त हो सकता है। इस शब्द को ही मैं विवेच्य शब्द 'काँजीहौज' का प्रथम भाग मानता हूँ। इस शब्द की पुष्टि मैंने मद्रास विश्वविद्यालय में कन्नड़ के प्रोफ़ेसर श्री एम० भट्ट से की, जिन्होंने तुलु भाषा में विशेष कार्य किया है। तमिल में इसका समानार्थक शब्द 'कन्नु'[5] है, जिसका रूपात्मक दृष्टि से कोई सम्बन्ध नहीं है।

अस्तु, यह निष्कर्ष निकला कि 'काँजीहौज' शब्द एक सामासिक पद है, जिसका प्रथम भाग 'काँजी' दक्षिण की द्रविड़ भाषा 'तुलु' का शब्द है और

---

१. तमिल पर अगरादि, भाग १, पृष्ठ ५८१।
२. विलसन, ग्लोसरी अव् जुडीसियल एण्ड रेवेन्यू टर्म्ज़, पृष्ठ २५८।
३. किटल्ज़ कन्नड इंगलिश डिक्शनरी, पृष्ठ ४८२।
४. वही, पृष्ठ ४८५।
५. तमिल लेक्सीकन, मद्रास विश्वविद्यालय, १९२६, पृष्ठ ८२९।

द्वितीय भाग 'हौज' अंग्रेज़ी शब्द 'हाउस' का विकृत रूप है। इस प्रकार यह दो विभिन्न भाषाओं के शब्दों के योग से बना हुआ संकर शब्द है जो हिन्दी प्रदेश में ही नहीं, भारत के अधिकांश भू-भाग में प्रचलित है।

## प—५.२. कम्पाउण्ड

अंग्रेजी शब्द कम्पाउण्ड का अर्थ है—वह चाहर दिवारी, जिसमें कोई घर या फैक्टरी स्थित हो'[१] वह घिरी हुई भूमि है जो बगीचे युक्त अथवा बजंर हो और जो एङ्गलो-इण्डियन के घरों को चारों ओर से घेरे हुए हो।[२] आज किसी भी क्वार्टर, भवन, कोठी या बंगलों के चारों ओर की भूमि को कम्पाउण्ड कह सकते हैं। इस शब्द का सम्बन्ध भी विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न भाषाओं से स्थापित करने की चेष्टा की है।

अ—पुर्तगीज़ ...... कम्पो।[३]

आ—मलय .........कम्पोङ्ग।[४]

ई—फ्रेञ्च .........campagne।[५]

किन्तु अधिकांशतः व्यक्तियों ने सम्बन्ध मलय शब्द 'कम्पोङ्ग' से स्थापित किया है। इसका अर्थ मलय डिक्शनरी में इस प्रकार है—"एक चहार दिवारी,

---

१. आक्सफोर्ड कन्साइज़ डिक्शनरी, सन् १९४२, पृ० २३१।

२. इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग ८, पृ० २०२ तथा एक्ट w. w. Etymolgycal Dic. १९५३; Page 126.

३. Whitworth, An anglo-Indian Dictionary, 1885, Page 72।

४. Indian Antiquary, Vol. viii Page 202.

५. Soares—Influence of Portuguese Vocables in Asiatic Lang. 1936।

चारों ओर से घिरा हुआ स्थान, किलेबन्दी किया हुआ अथवा चारों ओर से घिरा हुआ गाँव, क्वार्टर, जिला या नगर का वाह्य भाग।"

इस प्रकार पुर्तगीज शब्द कम्पो ( campo ) का अपभ्रंश यह नहीं हो सकता।[1] उसका विशेषण प्रयोग—एकत्रित, घिरा हुआ भी प्राप्त होता है। चार्ल्स पायसन गार्ले स्काट महोदय ने इसका सीधा सम्बन्ध मलय शब्द कम्पोङ्ग ( Campong ) से ही जोड़ा है।[2] १६३१ में ही यह मान लिया गया कि यह कम्पाउण्ड शब्द एक एङ्गलो-इण्डियन शब्द है जो मलय कम्पोङ्ग का ही विकसित रूप है। १७७२ में हड्लेज़ ग्रामर में प्राप्त शब्दावली में पृष्ठ १२६ पर इसका अर्थ-'आंगन,' किसी भी घर के आगे या पीछे दिया हुआ है।

सन् १७८८ में लिखित इण्डियन वोकेबुलरी लन्दन में भी इसका अर्थ एक आंगन ही दिया हुआ है।

## प–५. ३. गोदाम

'गोदाम' शब्द की व्युत्पत्ति अभी तक अंग्रेजी शब्द' गोडाउन[3] से की जाती रही है। चूँकि गोदाम में अधिकतर माल भरा रहता है। इनका निर्माण प्रायः भूमिगत होता है, जहाँ पर पहुँचने के लिए नीचे उतरकर जाना पड़ता है। अतः इसी आधार पर अँग्रेजी में 'गोडाउन 'godown' शब्द गढ़ लिया गया।[4]

---

१. Scott. P. C. C.—Malayan Words in English, J.A.O.C. Vol. 17, 1896 Page 432.

२. Ibid, Page 130.

३. गोदाम—संज्ञा पु०। अं० गोडाउन। वह बड़ा स्थान जहाँ बहुत सा बिक्री का माल रखा जाता है। ना० प्र० संक्षिप्त शब्द सागर, सं० १९९६, पृ० ३३०।

४. गोदाम—अं godown फेलन डिक्शनरी 'सन् १८७९, पृ० १०१३। आक्सफोर्ड कनसाइज डिक्शनरी—सन् १९४२, पृ० ३८१।

वस्तुतः यह शब्द मलाया का है, जिसका आधार आगे दिया जावेगा। इसका प्रचार भारत के सभी प्रदेशों एवं भाषाओं में अंग्रेजों के आगमन से पूर्व हो चुका था। हाब्सन जाब्सन में भी गोडाउन[१] का सम्बन्ध सीधे मलय शब्द गोदोङ्ग। (gadong) 'से स्थापित किया गया है, जिसका भी अर्थ भण्डार ही है। इस शब्द का प्रचार सभी दिशाओं में पर्याप्त हुआ है।[२] विभिन्न भाषाओं में इसके निम्नलिखित रूप मिलते हैं:—

| | | |
|---|---|---|
| तेलुगु | गिडंगी-गिड्गी | वह स्थान जहाँ माल रखा जाता है |
| तमिल | कडंगु[३] | ,, ,, ,, ,, |
| सिंहली | गुदाम[४] | ,, ,, ,, ,, |
| मराठी | गोदी-गुदाम | ,, ,, ,, ,, |

विहृटवर्थ महोदय ने गोदाम शब्द को बंगाली 'गुदाम' से सम्बन्धित किया है, जिसका विकास द्रविड़ शब्द 'गिड्डेंगी' से माना है।[५]

इसी शब्द पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करते हुए श्री मह्डीसन महोदय ने इस शब्द का मूलतः सम्बन्ध मलय भाषा से स्थापित कर अनामीज् भाषा से और स्थापित किया है। अनामी में शब्द 'ह्वस्तैग' (Hwa-T' sang) है और यही शब्द मलय भाषा में 'गडांग' बन गया है। इस प्रकार गोडाऊन का सीधा सम्बन्ध मलय-अनामी-भाषा के माध्यम से चीनी भाषा के 'ह्वा-चंग' (Hwa-Ts'ang, शब्द से है, जिसका अनुवाद लोव्सचेड महोदय ने 'माल के लिए

---

१. हाब्सन जाब्सन—सन् १९०३।

२. मराठी व्युत्पत्ति कोष—कृष्णा जी पाण्डुरंग कुलकर्णी, प्रथम संस्करण, पृ० २४३।

३. तमिल ध्वनि प्रक्रिया के अनुसार प्रारम्भ में घोष ध्वनि नहीं आ सकती है। अतएव 'ग' का 'क' हो गया है। इस शब्द का अर्थ है—अर्थवस्तुओं के लिए भण्डार, जहाँ चीज पड़ी रहती हैं।

४. हिन्दी में 'गुदाम' रूप भी प्रचलित है, इस प्रकार सिंहली भाषा में प्रचलित शब्द हमारे अधिक समीप हैं।

५. विहृटवर्थ, जी० सी०—एन एंग्लो इण्डियन डिक्शनरी, सन् १८८५, पृ० १०८।

भण्डार' कहा है।[1] इसी सम्बन्ध में मह् डीसन महोदय ने आगे विचार करते हुए चीनी शब्द 'ह् व-चांग-ओ' का सम्बन्ध ख-ज़ा-ना 'खज़ाना' से स्थापित किया है। इस प्रकार बड़ी-तोड़ मरोड़ के साथ आपने इस शब्द का स्रोत खोज निकालने की चेष्टा की है। यह तो मानना ही पड़ता है कि भारत में प्रवेश करने से पूर्व यह शब्द मलय भाषा का रूप धारण किये हुए था।

उक्त विवेचन से इतना स्पष्ट हो जाता है कि गोदाम शब्द का सम्बन्ध अंग्रेजी शब्द 'गोडाउन' से न जोड़कर पूर्वी देश मलय से स्थापित किया जाय तो उचित रहेगा। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रचार भारत में और भारत की विभिन्न भाषाओं में विभिन्न रूप में हुआ। इस शब्द का ही सर्वाधिक प्रचलित रूप 'गोदाम' से अंग्रेजी में 'गोडाउन' बना लिया गया। इसी शब्द पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करते हुए तथा उसका स्रोत मलय भाषा स्वीकार करते हुए चार्ल्स पायन गार्लें स्काट महोदय ने इसका विकास भारत से स्वीकार किया है।[2]

भारत में सर्वप्रथम इसका उल्लेख १६ वीं शताब्दी में मिलता है[3] :—
१५७६...इसका प्रयोग भण्डार घरों के लिए 'गुदोंस' (Gudoes) के रूप में मिलता है।—हाक-कमेण्टरीज़ आव् अलबुर्कक़, भाग ३, पृष्ठ १२७।

१६१५-१६...फोस्टर महोदय के पत्र, भाग ३, पृष्ठ १०६, १५६, १८१ तथा भाग, ४, पृष्ठ २१३ में मिलता है।

---

१. एस० मह् डीसन—जर्नल अव् रायल एशियाटिक सोसाइटी अव बम्बई, भाग २८-१, पृ० २२।

२. चार्ल्स पायन गार्लें स्काट—द मलयन बार्ड्स इन इंगलिश-जर्नल अव् अमेरिकन ओरियण्टल सोसाइटी, भाग १७, सन् १८९६, पृष्ठ १३०।

३. आर० सी० टेम्पल—इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग ३०, पृ० ४५६। इस शब्द के १६१५ में प्राप्त तीन रूप मिलते हैं :—
गोदंग (godung) गोद्दन (gaddone) गोदन (godon)

## प—५. ४. बंगला

यह तो निर्विवाद है कि "बंगला" शब्द का निर्माण व्युत्पत्ति के आधार पर 'बंग+ला' से हुआ है, जिसमें 'ला' षष्ठी प्रत्यय है।[१] विलसन महोदय ने भी बंगला शब्द की व्युत्पत्ति 'बंगबंगाल से मानी है,[२] वह जो बंगाली फैशन का बना हो। बंगला शब्द का प्रयोग उस एक तले कच्चे मकान के लिए, जिस पर फूस व खपड़ों का छप्पर हो, छोटा हवादार और चारों ओर से खुला हुआ एक मञ्जिल का मकान, जिसके चारों ओर बरामदे हों अथवा छोटे हवादार कमरे, जो प्रायः मकानों की सबसे ऊपरवाली छत पर बनाये जाते हैं, किया जाता है।[३]

इस प्रकार के मकान विशेषतः बंगाल में बनाये जाते थे और उन मकानों को देखकर ही अंग्रेज लोग भी अपने लिये वैसे ही घर बनाने लगे और उन्हें वे 'बंगलो' कहने लगे। 'बंगलो' वह एक मञ्जिल का मकान है, जो विशेषतः ग्रीष्म के आतप से बचने के लिए फूसादि से बना लिया हो।[४]

इण्डियन एण्टीक्वेरी के आठवें भाग में भी बंगला उस एक तले मकान को कहा गया है, जिसकी छतें पिरामिडनुमा हो।[५] उत्तरी बंगाल में दो ही प्रकार के मकानों का प्रचलन था—१. बंगला २. चौआरी।

चौआरी में चारों ओर ढालू छत होती थी और उच्चश्रेणी के व्यक्तियों के लिये ही बनाया जाता था, क्योंकि बंगला एक छोटा सा घर निम्न-श्रेणी के व्यक्तियों के लिए ही बनाया जाता है, इसमें दो ओर ढालू छत होती है।[६]

---

१. मराठी व्युत्पत्ति कोष—कृष्णा जी पाण्डुरङ्ग कुलकर्णी, प्र० सं०, पृष्ठ ५३३।
२. व्हिटवर्थ, जे० सी०—एन एङ्गलो इण्डियन डिक्शनरी, १८८५, पृष्ठ ५४।
३. नागरी प्रचारिणी सभा शब्द सागर, पृष्ठ २३४०।
४. आक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी, १९३३, पृष्ठ ११७८।
५. इण्डियन एण्टीक्वेरी, भाग ८, पृष्ठ १७३-२०६।
६. जर्नल अव् रायल एशियाटिक सोसाइटी बङ्गाल, सन् १८७८, पृष्ठ २०६।

इस प्रकार के निर्मित बंगले का सर्वप्रथम प्रयोग सन् १६३१ में मिलता है[1] जबकि रानियों के लिए बंगाली फैशन पर 'बंगाली महल' बनाये जाते थे। बंगले के ढङ्ग के मकान बनाने की प्रसिद्धि अंग्रेजों से पूर्व ही भारत में हो चुकी थी। होजैज महोदय ने भी अपनी यात्रा के वर्णन में 'बंगला' शब्द का प्रयोग किया है। बंगले की निम्नलिखित विशेषताएँ रहीं :—

१ बंगला एक बाटिका के मध्य स्थित होता है।

२ चतुर्मुख फूलों के आधिक्य से रम्य दृश्य उपस्थित रहता है।

३ ग्रीष्म में शीतलता पहुँचाने के लिये इसको घास के मैदान से सज्जित रक्खा जाता है।

---

१. इलियट—बादशाहनामा, भाग ७।

परिशिष्ट—६

## प–६. लोक-निरुक्ति पर आधारित शब्द

किसी भी शब्द की व्युत्पत्ति का रहस्य जटिल एवं कष्टसाध्य है। यह मान लेना कि केवल विद्वान् ही निरुक्तिकार होते हैं, प्रर्याप्त भ्रमात्मक है। मनुष्य की स्वभावगत यह भावना कि अमुक शब्द कैसे बना और उसका मूल उद्गम क्या है, कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं रहती। यह तो विश्वव्याप्त भावना है। इस प्रकार बहुत से शब्दों का प्रचलित रूप जनसाधारण द्वारा प्रतिपादित होता है। ये शब्द शिष्ट समाज में भी कालान्तर में मान्य समझ लिये जाते हैं।

उदाहरणार्थ मैं कुछ शब्द देता हूँ—

| | |
|---|---|
| Artichoke | हाथीचोक[1] |
| Honorary | अनाड़ी मैजिस्ट्रेट |
| Parole | पलवल[2] |
| Acting | एक टांग[3] |
| Angrej | रंगरेज़[4] |

1. Fallen, S. W.—A new Hindustani Dictionary, 1879, Page 1193 डॉ॰ चटर्जी ने भी बंगाला में गृहीत शब्द 'हाथीचोक' को इस शब्द का ही बिगड़ा हुआ रूप माना है। वस्तुतः अंग्रेजी शब्द artichoke भ्रमात्मक व्युत्पत्ति से अंग्रेजी मे ही hearty choke बन गया था और फिर arti choke भी तो इटालियन शब्द articiceo का ही रूप है।
२. McKnight—English Words and Their Background 1923, Page 253. Fallon A new Hindustani Dictionary 1879, Page 366.
३. वही, पृष्ठ १०५।
४. वही, पृष्ठ १६४।

| | |
|---|---|
| Break-Van | वृखभान[1] |
| Signal | सिकन्दर[2] |
| Library | रायबरेली |
| Raspberry | रसभरी |
| Programme | प्रयोगराम[3] |
| Bomb Place | बम पुलिस |
| Tandem | टमटम |

प-६. २. विदेशी शब्दों के साथ-साथ विदेशी नामों पर भी इसका प्रभाव परिलक्षित होता है। विदेशी नामों को अपने अनुकूल बना लेना ही इसके मूल में प्रवृत्ति है :—

| | |
|---|---|
| Chelmsford | चिलमफोड़ |
| John Morley | जॉन मारले |
| Lieutinent | लपटन |
| Thomson | तानसेन |
| Andersen | इन्द्रसेन |
| Mex Muller | मोक्षमूलर[4] |

प-६. ३. इस प्रवृत्ति का प्रभाव वाक्यों पर भी पड़ता है—सन्तरी के मुख से, Halt, who comes there ?' वाक्य होल्ट, हुकमस दीयर' ही सुनाई पड़ता है और 'ठंडा टी' वास्तव में रेफ्रीजरेटर से ठंडी की गई चाय नहीं है, पर वह एक मिलटरी के जमादार द्वारा Stand at ease का ही विकृत रूप है।

---

१–२. राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द—हिन्दी व्याकरण '१८७६।

३. एक विद्यार्थी द्वारा उत्तर-पुस्तिका में प्रयुक्त।

४: हमारे नामों का भी इसी आधार पर कम रूप परिवर्त्तन नहीं हुआ।
Shah Shujaulmulk—cha Sugar Milk—S. Subba Rao, Indian Words In English; 1954, page 46:

## परिशिष्ट ७

# हिन्दी की वाक्य-रचना पर अँग्रेजी की छाया

प-७.०. इस विषय पर विस्तृत अनुसन्धान अपेक्षित है। किसी भी विदेशी भाषा के निरन्तर संसर्ग का प्रभाव उस भाषा की शब्दावली पर ही नहीं पड़ता वरन् उसके सामासिक प्रयोग, शब्दानुक्रम तथा वाक्यविन्यास पर भी पड़ता है।[1] लगभग १५० वर्षों से अँग्रेजी राज-भाषा के पद पर आसीन है। आशा है, शीघ्र ही हिन्दी इस पद को संभाल लेगी। इस काल में अँग्रेजी की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद का कार्य होता रहा है और साथ ही विचारकों तथा लेखकों के चिन्तन का माध्यम भी अँग्रेजी हो रही है। इस प्रकार कहीं प्रत्यक्ष तथा कहीं परोक्ष रूप से अँग्रेजी की वाक्य-रचना का प्रभाव हिन्दी पर पड़ता रहा। इस प्रकार का उल्लेख यत्र-तत्र श्री कामताप्रसाद गुरु,[2] श्री रामचन्द्र वर्मा[3] तथा श्री किशोरीदास वाजपेयी[4] ने अपनी-अपनी व्याकरण सम्बन्धी पुस्तकों में किया है। इस विषय पर विधिवत् लेखनी डॉ० विश्वनाथ मिश्र[5] ने अपनी थीसिस "हिन्दी भाषा और साहित्य पर अँग्रेजी का प्रभाव" में उठाई है।

मूलतः हिन्दी अँग्रेजी की वाक्य-रचना में अन्तर है। यदि दोनों भाषाओं से एक-एक वाक्य का उदाहरण लें :—

———

१. Vendreys, J—Language, London 1952, page 290.

२. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, नवीन संस्करण, पृष्ठ ६५७, ६५६, ६८०, ६८३ तथा ६९७।

३. रामचन्द्र वर्मा—अच्छी हिन्दी, सं० २००७, पृष्ठ ८०–१०६।

४. किशोरीदास वाजपेयी—हिन्दी शब्दानुशासन, प्रथम संस्करण।

५. विश्वनाथ मिश्र—हिन्दी भाषा और साहित्य पर अँग्रेजी का प्रभाव, थीसिस अंग्रेजी में अप्रकाशित, १९५०, प्रयाग विश्व-विद्यालय, पृष्ठ १८१।

हिन्दी — राम पढ़ता है ।
अँग्रेजी — Ram reads a book.

इससे स्पष्ट हो जाता है कि दोनों ही वाक्यों का प्रारम्भ तो कर्त्ता से होता है पर इसके आगे कोई साम्य नहीं ।

हिन्दी — कर्त्ता — कर्म — क्रिया
अँग्रेजी — कर्त्ता — क्रिया — कर्म

अँग्रेजी और हिन्दी की वाक्य-रचना को समझने के लिये दोनों ही भाषाओं में व्याकरण की पुस्तकें-द्रष्टव्य[1] हैं । वस्तुतः आज हमारे वाक्यों पर अँग्रेजी की छाया इतनी अधिक है कि इस बात पर खीज कर प्रसिद्ध कोशकार श्रीरामचन्द्र वर्मा[2] को कहना पड़ा "हमारे वाक्यों पर अँग्रेजी मानो सिर से पैर तक छायी रहती है । अब अँग्रेजी पढ़े-लिखों में कोट-पैंट और हैट पहनने-वालों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जाती है और हमारी भाषा का स्वरूप विकृत क्या बल्कि भ्रष्ट होता जा रहा है ।" कुछ उदाहरण देकर हम इस कथन को स्पष्ट करेंगे ।

प-७.१ सर्वनाम तथा संज्ञा का प्रयोग

"पानी जो बरसता है वह मीठा रहता है ।"[3] इस वाक्य के अन्तर्गत मुख्य उपवाक्य से 'पानी' संज्ञा और सर्वनाम 'वह' भी आया है । मुख्य उप-

---

१. अंग्रेजी वाक्य विन्यास के देखिए :—
Gespirsen,O—Analytic Syntax, 1937. Fries, C. C.—Ten Structure of English, 1952. Sweet, H.—A New English Grammar, 1950. Noam. Chomsky—Syntaetic Structure, 1957.

२. रामचन्द्र वर्मा—अच्छी हिन्दी, सं० २००७, पृष्ठ ३३७ । मिलाइए—धीरेन्द्र वर्मा—अंग्रेजी भाषा के प्रभाव के कारण हिन्दी व्याकरण में वाक्य-विन्यास सम्बन्धी इस प्रकार अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं । ( हिन्दी व्याकरण की समस्याएं, रेडियो से प्रसारित )

३. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, नवीन संस्करण, पृष्ठ ६५७ ।

वाक्य का रूप इस प्रकार होगा—पानी वह मीठा रहता है। इस वाक्य में सर्वनाम निरर्थक है। अँग्रेजी के सम्बन्धवाचक सर्वनाम की भाँति किये गये प्रयोग का यह फल है। अँग्रेजी में सम्बन्धवाचक सर्वनाम से प्रारम्भ होनेवाले विशेषण उपवाक्य मुख्य उपवाक्य में कर्त्ता को क्रिया से दूर फेंक देते हैं। इस प्रकार वाक्य-रचना आज हिन्दी में बहुत बढ़ रही है। जिसका निश्चित् रूप से सम्बन्ध अँग्रेजी-वाक्य-रचना से है। इस तथ्य को स्वीकार करते हुए डॉ० धीरेन्द्र वर्मा[1] उदाहरण स्वरूप निम्नलिखित वाक्य लिखते हैं :—

"आदमी, जो कल दिल्ली से आया था, आज प्रातः कलकत्ता चला गया।" हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार यह वाक्य होना चाहिए था "जो आदमी कल दिल्ली से आया था, आज प्रातः कलकत्ता चला गया।" सहायक वाक्य को मध्य में रखना अँग्रेजी व्याकरण की प्रकृति के अनुकूल है। इस सम्बन्ध में श्री कामताप्रसाद गुरु[2] ने भी प्रकाश डाला है—

"इस प्रकार की रचना, जिसमें पहले संज्ञा का उपयोग करके पश्चात् उसका सम्बन्धवाचक सर्वनाम रखते हैं और फिर कभी-कभी उस संज्ञा के बदले निश्चयात्मक सर्वनाम भी लाते हैं, अँग्रेजी सम्बन्धवाचक सर्वनाम की इस प्रकार की रचना के अनुकरण का फल जान पड़ती है।" यह रचना हिन्दी में आज-कल बढ़ रही हैं, परन्तु पिछले निश्चयवाचक सर्वनाम का उपयोग क्वचित होता है जैसे "सर्वदर्शी सर्वशक्तिमान जगदीश्वर जो घट-घट के अन्तर्यामी हैं, आपके मन में कुछ भी भय उत्पन्न न हुआ।"[3] राजा शिवप्रसाद गुटका, भाग

---

१. वही रेडियो वार्ता। अँग्रेजी व्याकरण के अनुसार वाक्य होगा :—
'The man, who came from Delhi, left Calcutta this morning.,

२. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ ६५७–५८।

३. प्रेमसागर में भी ऐसी रचना पाई जाती है, जिससे प्रकट होता है कि या तो यह रचना बहुत पुराना है और अँग्रेजी रचना से इसका कोई सम्बन्ध नहीं, किन्तु फारसी रचना से है। संस्कृत में ऐसी रचना नहीं है। या लल्लूलाल जी पर भी अँग्रेजी प्रभाव पड़ा है। प्रेमसागर का उदाहरण यह है—यह पाप-रूप, काल-आवरण, डरावनी-सूरत, जो आपके सम्मुख खड़ा है, सो पाप है। प्राचीन कविता में इस रचना के उदाहरण नहीं मिलते।

१-१-३—'जंबूद्वीप नाम का प्रदीप, जो दीपक समान मान को पाता है, प्रसिद्ध क्षेत्र है।" श्यामा स्वप्न—ठाकुर जगमोहन सिंह—"कहीं-कहीं नदी की तली मोटी रेत से, जिसमें बहुधा बारीक रेत भी मिली है, ढकी रहती है।"

गुरुजी यह निश्चय नहीं कर पाये कि लल्लूलाल जी पर अँग्रेजी का प्रभाव रहा अथवा नहीं ? इतना निश्चित है कि इस प्रकार की वाक्य-रचना के उदाहरण इनसे पूर्व नहीं मिलते हैं। अँग्रेजी से लल्लूलाल जी का सम्बन्ध विशेष रहा था, यह मानने में किसी को अपत्ति न होगी। फोर्ट विलियम कॉलेज में वे स्वयं रहे और उन्होंने वहाँ रह कर अँग्रेजी की ही प्रणाली पर एक ब्रजभाषा व्याकरण की रचना भी की तो फिर 'लल्लूलाल जी पर अँग्रेजी का प्रभाव पड़ा होगा'...सोच लेना कोई बड़ी बात नहीं।

आज तो इस प्रकार के वाक्यों की इतनी अधिक भरमार है कि इस प्रवृत्ति को रोकना सम्भव नहीं। लल्लूलाल जी के समकालीन तथा भारतेन्दु कालीन साहित्य से कुछ उदाहरण और लिये जा सकते हैं:—

(अ) इस सिर झुकाने के साथ ही दिन-रात जपता हूँ, उस अपने दाता को भेजे हुए प्यार को जिसके लिये यों कहा है—जो तू न होता तो मैं कुछ न बनता।[1]

(आ) कब मैं सुन्दर बालक सहित चन्द्रावली के मुँह, कि जो वन के रहने से भोर के चन्द्रमा सा मलीन हुआ होगा, देखोगी।[2]

(इ) आगे चलकर उत्तर की तरफ पहाड़ पर जो शिवपुरी नाम से प्रसिद्ध था, गया।

(ई) भवभूति ने जिनको प्रकृति का चित्र अपनी कविता में खींच देना खूब मालूम था, कई ठौर पर अश्रुपात का उत्तम वर्णन किया है—बालकृष्ण भट्ट

निस्सन्देह यह प्रवृत्ति हिन्दी की अपनी प्रवृत्ति नहीं है। इस प्रकार सर्वनाम

---

१. इंशाअल्ला खाँ—रानी केतकी की कहानी, सम्पादक श्यामसुन्दर दास, सं० २००७, पृ० २।

२. सदल मिश्र—नासिकेतोपाख्यान, सम्पादक श्यामसुन्दरदास, संवत् २००७, पृ० १६।

सम्बन्धवाचक का प्रयोग आज दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है और अंग्रेजी की ही प्रवृत्ति के अनुरूप हम उसको सम्बद्धपूर्वगामी शब्द के समीप रखते हैं जिसके फलस्वरूप कर्त्ता क्रिया से दूर जा पड़ता है और यह भूलकर कि कर्त्ता पूर्व ही आ चुका है फिर से कर्त्ता का प्रयोग कर बैठते हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति को अँग्रेजी में अन्तर्मुक्त वाक्य भी कहा जाता है। इसका प्रयोग कई रूपों में मिलता है।

(अ) संज्ञा के साथ — घन जो गरजता है, बरसता नहीं।[1]

(आ) क्रिया के अनन्तर—उसने काम किया जब तक कि उससे मना नहीं किया गया।[2]

(इ) एक वाक्य देखिए "उस दिन जब उनसे आग्रह किया गया, तब उन्होंने स्वीकार किया" इसके स्थान पर हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुकूल होना चाहिए "उस दिन उनसे आग्रह किया गया, तब उन्होंने स्वीकार किया।" अनुवाद के माध्यम से इस प्रकार के वाक्य बनने प्रारम्भ हुए। श्री प्रेमचन्द[3] भी इससे न बच सके—

"करीम का लगान, जो मैंने तुमको दिया है, चटपट दे दो।"

### ८-७.२. निक्षिप्त उपवाक्य[4]

हिन्दी में निक्षिप्त वाक्य बनाने की प्रवृत्ति नवीन है। इस पर भी अँग्रेजी की स्पष्ट छाया है। इसके भी कई प्रकार के प्रयोग मिलते हैं—

१. (अ) किन्तु मेरी लाचारी देख कर और मेरा आशय समझ कर, आशा है, मुझे क्षमा किया जायगा।[5]

---

१. The place, where he lived was near a swamp.

२. He worked until the watchman came in at midnight.

३. प्रेमचन्द—मुखदास, १९४५, पृ० १७।

४. 'When an independent clause inserted it is called parenthetic clause' Sweet—English Grammar, 1948 Rule 471.

५. नन्ददुलारे वाजपेयी—बीसवीं शताब्दी, प्रथम संस्करण, पृष्ठ १५।

(आ) कवि जीवन के पहले भी मुझे याद है, मैं घण्टों एकान्त में बैठा प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था।[१]

२. (अ) यह विवादग्रस्त विषय है - आँसू में प्रदर्शित प्रेम का स्वरूप—आचार्य शुक्ल कहते हैं।[२]

(आ) पल्लव काल में मैं उन्नीसवीं सदी के अंग्रेजी कवियों—मुख्यतः सैली, वर्ड्सवर्थ, कीट्स और टेनीसन—से विशेष रूप से प्रभावित रहा हूँ, क्योंकि इन कवियों ने मुझे मशीनयुग का सौन्दर्यबोध और मध्यवर्गीय संस्कृति का जीवन स्वप्न दिया है।[३]

३. हृदय के उद्गार—चाहे वे रूखे उद्गार ही हों—उसमें भरे हैं।

### प-७. ३. बल-प्रदान करने की विधियाँ

साधारणतः कर्ता अँग्रेजी तथा हिन्दी दोनों ही भाषाओं के वाक्यों में प्रारम्भ में प्रयुक्त होता है। अँग्रेजी[४] में बलप्रदान करने की सर्वसुलभ विधि यह है कि जिस शब्द को महत्ता प्रदान करनी हो, विशेष बल डालना हो, तो उस शब्द को अपने निश्चित स्थान से पूर्व ही प्रयुक्त किया जाये और यदि बन पड़े तो वाक्य के प्रारम्भ में रख दिया जाये। इस विधि के मूल में तात्पर्य यह है कि उस शब्द को अपने निश्चित स्थान से हटाकर किसी ऐसे स्थान पर रख दिया जाय जिससे वह विशेष रूप से चमके, अपना प्रभाव डाल सके। इसके लिए कभी-कभी प्रारम्भ या मध्य से हटाकर अन्त में भी डाल दिया जाता है।[५] इस दूसरी विधि को तो बहुत अपनाया गया है। गुरु जी[६] ने तो

---

१. पन्त—आधुनिक कवि की भूमिका, सं० २००६, पृष्ठ १।

२. शिवकुमार मिश्र—कामायनी और प्रसाद की कविता-गंगा, रवि प्रकाशन, १९४५,

३. पन्त—आधुनिक कवि की भूमिका, पृष्ठ १३।

४. Sweet, H.—A new English grammar, 1948 Part II, Rule 1765.

५. वही, नियम १७६६।

६. कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ ६१०

अपनी व्याकरण में इसका उल्लेख नियम संख्या ६६१ के अन्तर्गत किया है। हिन्दी में इसका प्रयोग पहले भी प्रचलित था। कैलोग[1] ने भी यत्र-तत्र इससे सम्बन्धित उदाहरण दिये हैं—

"जीती लड़की न दूँगा तुझे।" कर्म का सबसे अन्त में प्रयोग।

हिन्दी में यह प्रथा अधिक प्रचलित नहीं थी, फिर भी हिन्दी गद्य का विकास एक प्रकर से अँग्रेजी के भारत-राज्य-स्थापन के साथ-साथ हुआ। आज यह प्रथा बहुत बढ़ रही है। इसमें सन्देह नहीं कि इसका प्रभाव आज सर्वत्र परिलक्षित होता है।

श्री रामचन्द्र वर्मा[2] ने एक ही वाक्य को विभिन्न स्थलों पर जोर देकर तीन प्रकार से लिया, है, जिससे स्पष्टतः तीन अर्थ प्रकट होते हैं। संस्कृत में इस वाक्य को कैसे ही लिखिए अर्थ में अन्तर नहीं होता।

| | |
|---|---|
| उसने राम को घोड़ा दिया। | साधारण |
| राम को उसने घोड़ा दिया। | राम पर जोर |
| घोंड़ा उसने राम को दिया। | घोड़े पर जोर |

बल प्रदान करने के लिए शब्दों को निकालकर वाक्य के अन्त में रख देना भी बहुप्रचलित है। जैसे, "नाटक शब्द का अर्थ है, नट लोगों की क्रिया।"

"इस दुःखान्त नाटक में सबसे उल्लेखनीय पार्ट है एक गरीब कम्पोजीटर का जो अपने पास से आटा खरीदकर दे आया करता था।[3]

प-७.४ः पदरूपात्मक वाक्य[4]

इसके अन्तर्गत वे शब्द या शब्द-समूह आते हैं जो कर्त्ता या क्रिया के अभाव में स्वतः एक वाक्य का अर्थ व्यक्त करते हैं। रूप साम्य के आधार पर यह प्रतीत होता है कि यह अँग्रेजी के प्रभाव के फलस्वरूप है, किन्तु अनिवार्य

---

१. कैलोग—हिन्दी व्याकरण, सन् १६५५, नियम ६७८।३।प्र तथा ६२२।

२. रामचन्द्र वर्मा—अच्छी हिन्दी, सं० २००७, पृष्ठ ५५।

३. बनारसीदास चतुर्वेदी—संस्मरण, अगस्त ५२, पृष्ठ १३०।

४. Amorphous Sentences.

नहीं क्योंकि भाषा स्वयमेव ही इस प्रकार की प्रवृत्ति को जन्म देती है। यस्पर्सन महोदय[1] ने इसके कई भेद किये हैं :—

१. हाँ !
　नमस्कार।

२. अर्थ-विश्लेष्य वाक्य—शान्त।

३. उत्तर में प्राप्त एक शब्द—
　यह किसने किया ?—राम ने
　कौन अभी-अभी आया था ?—मोहन

४. कदर्थना—
　तुम गधे ! बेवकूफ !

५. तुकान्त
　नोट लो, वोट दो।
　रोटी दो, वोट लो।

६. अपराग—
　वह धूर्त, पाजी।

कुछ और उदाहरण देखिये :—

जी हाँ, हुई।[2]
किसी भी दशा में नहीं।[3]
…………अवश्य।[4]
मुस्कराकर। अच्छा।[5]
रानी—चल, झूठी।[6]

इस प्रकार के वाक्यों की बोलचाल में, उपन्यासों के कथोपकथन या नाटकों एवं एकाङ्कियों के संवादों में भरमार रहती है।

---

१. यस्पर्सन—वही, पुस्तक।
२. प्रेमचन्द—कायाकल्प, सन् १९५३, पृष्ठ १८ तथा ४९।
३. कायाकल्प—वही, पृष्ठ २३।
४. वही, पृष्ठ ४४।
५. वही, पृष्ठ ४७।
६. वही, पृष्ठ ५५।

प—७.५. अंग्रेजी में सोचना और हिन्दी में लिखना

'अँग्रेजी में सोचना और हिन्दी में लिखना' विधि के फलस्वरूप अँग्रेजी ढङ्ग पर वाक्य बनने लगे।

(१) प्रथम जाना क्रिया लगाकर क्रियार्थक संज्ञा का प्रयोग करना[1] बिल्कुल अँग्रेजी की नकल है। जैसे—जो बात मैं अभी आप लोगों से कहने जा रहा हूँ।

(२) मैं अभी कहूँगा के स्थान पर मैं अभी कहना चाहता हूँ।[2]

(३) मैं बहुत अनुगृहीत होऊँगा।[3]

(४) वह निकट भविष्य में आने वाला है।[4]

(५) मैं अभी इस समस्या पर प्रकाश डालूँगा।[5]

इस प्रकार छायाकलुषित वाक्य अँग्रेजी के अनुवाद के माध्यम से हिन्दी में भरते जा रहे हैं। इनमें कुछ प्रयोग तो इतने चल पड़े हैं कि उनको मान्य मानना ही पड़ेगा। 'प्रश्न' का प्रयोग काफी होता है। आप अमुक प्रश्न को लेकर लड़ रहे हैं। 'दृष्टिकोण' का आरम्भ में आचार्य शुक्ल जी ने कितना विरोध किया, पर आज वह मान्य है।

प—७. ६. विधेयश्रृङ्खला

एक ही वाक्य में अनेक विधेयों का लगातार प्रयोग करना इसके अन्तर्गत आता है। वैसे यह प्रवृत्ति एक ओर संस्कृत साहित्य में भी पर्याप्त मिलती है। कादम्बरी में ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। इससे भाषा में जान आ जाती हैं और भावों का एक चित्र सम्मुख उपस्थित हो जाता है। इस प्रकार की वाक्यरचना भाषा की स्वाभाविक प्रवृत्ति भी है। उदाहरणार्थ, कुछ वाक्य लिये जा सकते हैं—

---

१. I am going to say. के आधार पर।
२. I want to say. के आधार पर।
३. I will be thankful. के आधार पर।
४. About to come in near future. के आधार पर।
५. Throw light. के आधार पर।

"उस समाज में घुलमिल गये, जिसकी वाणी में, वेश में, व्यवहार में, पराधीनता का चोखा रंग चढ़ा होता है।"[1]

"अधमरे बूढ़े, ठठरियाँ लिये, मुँह में दाँत न पेट में आँत, जाँघ के ऊपर धोतियाँ या तहमद, ताल ठोक-ठोक कर उछल रहे थे, मानो उन बूढ़ी हड्डियों में जवानी धँस पड़ी हो।"[2]

## प—७. ७. निवेशित उपवाक्य

जब कभी किसी वाक्य के मध्य में कोई उपवाक्य इस तरह घुसा दिया जाय कि मूल वाक्य को दो भागों में बाँट दे, तो उस उपवाक्य को निवेशित उपवाक्य कहते हैं, जैसे, "जब कभी वह अवसर आवेगा, हम समझते हैं कि शीघ्र आवेगा, तब द्विवेदी जी की भाषा का चमत्कार देखने को मिलेगा।"[3]

"आरम्भ में जब उन्हें इसकी अभिज्ञता भी न थी—आत्म विश्लेषण का सूत्रपात भी न हुआ था—उनकी रचना में वह स्थूल वैयक्तिक स्वरूप धारण किये हुए रहा।"[4]

### मिश्र निवेशित वाक्य

जब निवेशित वाक्य के अन्तर्गत फिर से एक उपवाक्य आ जाय, तो इस प्रकार के वाक्य को मिश्र निवेशित वाक्य कहते हैं:—"इस विचार से उनके मत के विरुद्ध भी चलने का साहस किया, जो बड़ा भारी दुस्साहस हुआ लेकिन राष्ट्रभाषा के प्रतिष्ठित हो जाने के बाद हिन्दी में, यह समझता हूँ कि आज हमारे दृष्टिकोण में आवश्यक परिवर्तन होना चाहिए और हिन्दी को अपने दुराग्रह और हठ का स्रोत नहीं बनना चाहिए।"[5]

## प—७. ८. परिशिष्टात्मक वाक्य

वाक्य के अन्त में जब एक उपवाक्य और बढ़ा दिया जाय,[6] जैसे "मनुष्य-

---

१. प्रेमचन्द—कायाकल्प, सन १९५३, पृष्ठ १६२।
२. प्रेमचन्द—गोदान, पाठ्य सं०, नवीन सं०, पृष्ठ १६३।
३. व ४. नन्ददुलारे वाजपेयी, बीसवीं शताब्दी, पृष्ठ १५।
५. भाषण, शिक्षा-मन्त्री उ०प्र०, १५-११-५७
६. Sweet—वही, Syntax, Rule 472.

जीवन की धूलि अधिक सुरक्षित रह सकेगी—यह आशा मुझे अज्ञात रूप से सदैव आकर्षित करती रहेगी !"[1]

प—७. ९. संकुचित वाक्य[2]

संयुक्त तथा लम्बे वाक्यों के इस युग में यह पद्धति बढ़ती ही जा रही है। कभी-कभी बड़े-बड़े वाक्यों के भाव को छोटे रूप में कम से कम शब्दों में प्रकट करने के लिये इस पद्धित को अपना लिया जाता है। जैसे—"न उसमें पत्ते न फूल थे।" इस वाक्य का अर्थ है कि उसमें न पत्ते थे न फूल थे।

प—७. १०. सूचनार्थक उपवाक्य

अँग्रेजी के प्रभाव से निम्नलिखित सूचनार्थक उपवाक्य आज हिन्दी के हो चुके हैं—

सूचित किया जाता है······ निवेदन करता हूँ......

माँग की जाती है······ यह बात सिद्ध करती है······

यह आचार्य······का मत है······

प—७. ११. अँग्रेजी के प्रभाव से अनावश्यक शब्दों का प्रयोग

(१) 'सहित' और 'के साथ' के भ्रामक प्रयोग — आपका पत्र धन्यवाद सहित मिला। मैं एक दिन शान्ति के साथ बैठा हुआ था। आपकी पुस्तक धन्यवाद सहित लौटा रहा हूँ। वे लगन के साथ विद्यापीठ की सेवा कर रहे हैं।

(२) द्वारा — मैंने यह बात उनसे सुनी थी के स्थान पर मैंने यह बात उनके द्वारा सुनी थी—अँग्रेजी की छाया है।

हिन्दी में प्रयुक्त 'द्वारा' एक विशिष्ट भाव रखता है। यह टाइप मैंने

---

१. पन्त—आधुनिक कवि, भूमिका, सं० २००६, पृष्ठ ३।

२. गुरु जी—हिन्दी व्याकरण, नियम ७२५।

राम 'द्वारा' करवाया और यह टाइप भी राम से करवाया। दोनों वाक्यों के भिन्न-भिन्न अर्थ हैं। दूसरे वाक्य का अर्थ है कि टाइप का करनेवाला राम है, राम के अतिरिक्त कोई नहीं। प्रथम वाक्य का अर्थ हिन्दी में यह समझा जायेगा कि यह टाइप राम ने किसी अन्य व्यक्ति से कराया है। अतएव अंग्रेजी के 'बाई' शब्द के स्थान पर 'द्वारा' का प्रयोग भ्रामक है।

## ८—७.१२. विराम-चिह्नों का प्रयोग

हिन्दी में विराम-चिह्नों का प्रयोग अँग्रेजी की ही देन है। अँग्रेजी के प्रभाव से पूर्व केवल विराम ही प्रचलित था, कुछ हद तक अर्द्ध विराम भी। हिन्दी में, अभी तक इनकी समुचित नियमबद्धता तो नहीं है पर धीरे-धीरे इसका प्रयोग बढ़ रहा है। लम्बे, संयुक्त तथा मिश्र वाक्यों के अर्थ को स्पष्ट करने के लिये विराम-चिह्नों का प्रयोग आज आवश्यक हो गया है। विराम-चिह्नों के स्थानान्तर से अर्थ-भेद हो जाना सम्भव है।

कोष्ठक का प्रयोग भी आज बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। अंग्रेजी पढ़े-लिखे व्यक्ति जब सूक्ष्म भावों का स्पष्टीकरण हिन्दी में गढ़े नवीन पारिभाषिक शब्दों से प्रकट करना चाहते हैं तो उनके साथ में ब्रैकट में अँग्रेजी रूप दे देना अनिवार्य समझते हैं। यह दूषित प्रणाली है जिससे जटिलता का भान होने लगता है। पर कहीं-कहीं तो ब्रैकटों का प्रयोग महत्त्वपूर्ण भी प्रतीत होता है जैसे :

"उसका सांस्कृतिक समन्वय सर्वातिशयता (ट्रेन्सेण्डेण्टलिज़्म) के आलोक (दर्शन) को विकीर्ण करता है।[१]

"उसका वास्तविक (फ़ैक्चुअल) रूप है।"[२]

"प्रसाद जी का रहस्यवाद वास्तविक (पोज़ीटिव) सत्ता है।[३]

---

१. पन्त—आधुनिक कवि, भूमिका, सं० २००६, पृष्ठ ६।

२. वही, पृष्ठ ७।

३. नन्ददुलारे वाजपेयी—बीसवीं शताब्दी, प्रथम सं०, पृष्ठ ११।

उपर्युक्त उदाहरणों से प्रकट है कि हिन्दी के दो विद्वानों ने अंग्रेजी के दो पृथक्-पृथक् शब्दों के लिये, जिनके भाव भी पृथक् हैं, हिन्दी में एक ही शब्द गढ़ लिया है। जब तक पारिभाषिक शब्दावली के क्षेत्र में एकरूपता नहीं आ जाती तब तक इस सन्धि-युग में इस प्रकार की विभिन्नता स्वाभाविक ही है।

संक्षेप में अंग्रेजी का हिन्दी वाक्य-रचना पर यह प्रभाव है जिस पर विस्तृत अनुसन्धानात्मक कार्य अपेक्षित है।

परिशिष्ट ८

# अँग्रेजी शब्दों का आलंकारिक प्रयोग

प-८.० आलङ्कारिक प्रयोगों से नवीन अर्थ भाषा में विकसित होते हैं।[१] वक्ता का लक्ष्य शब्द के अर्थ को बिल्कुल स्पष्ट करना होता है। इसके लिए उसको तुलनात्मक पद्धति का आश्रय लेना पड़ता है। जब किसी अमूर्त्त भावना का स्पष्टीकरण करना होता है तो किसी मूर्त से उसकी तुलना की जाती है। लेखक या वक्ता अपने समीपवर्ती स्थल से उन बहुप्रयुक्त पदार्थों तथा उससे

---

१. Huge Walpole, Semantics—The Nature of Words and their meaning, Harvard Usity.; Chapter VII Metaphor, 1941 Page 144-58.

Ullman, Stephen—Words and their Use, Chap. 3; How Words change their meaning–Psychological similarity.

Ogden, C. K. & Richards, I. A.—The Meaning of Meaning, London, 1952, Page 191, 213, & 240

G. H. Vallins—The Making & Meaning of Words, London, Adam & Charles Black, 1949, Page 80.

Ernest Cassirer—Language and Myth (Translation) Dover Pub. Inc. 1946, Page 83-98. The Power of Metaphor. (S. K. Langer)

डॉ० कपिलदेव—अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन—अर्थविकास, १६५१, पृष्ठ २१६।

सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग ही उचित समझता है। जब उसका अपनी भाषा का कोष समाप्त हो जाता है, तो उन बहुप्रचलित विदेशी भाषा से भी गृहीत शब्दों को उपमान के रूप में ले लेने में हिचक नहीं करता। इसी विधि से अज्ञात भाव अथवा वस्तु को ज्ञात के माध्यम से स्पष्ट किया जाता है।

आगत शब्दों में आलङ्कारिक प्रयोग के लिए वे ही शब्द चुन लिए जाते हैं जो बहुप्रयुक्त होते हैं और साथ ही दिन-प्रतिदिन काम में आते हैं। बीसवीं शताब्दी विज्ञान के आविष्कारों की है, अतएव ऐसी शब्दावली में यदि वैज्ञानिक शब्द अधिक हों तो कोई आश्चर्य नहीं।

प-८.१ आविष्कार सम्बन्धी शब्दावली—इसको हम निम्नलिखित प्रकार से विभाजित कर सकते हैं—

प-८.१.१ यातायात सम्बन्धी

प-८.१.२ बिजली और बिजली से चालित

प-८.१.३ मशीनरी सम्बन्धित

प-८. १.१. यातायात सम्बन्धी

प-८. १.१.१ रेल उपमा—सतयुग, त्रेता, कलियुग काल की पटरी पर ढरकते जा रहे थे, रेल की तरह—[१]

—चलती हुई ट्रेन की भाँति सत्याग्रह।[२]

—तुम मुझे दृष्टि दो कि रेल की पटरी[३] की तरह युग के सामने उसे बिछा दूँ।[४]

—अन्तर भी रेल के इंजन की तरह झक-झक करने लगा।[५]

---

१. श्रीनारायण चतुर्वेदी—विनोद शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ, होली, २०१३ ई०, पृ० ५६।

२. शांतिप्रिय द्विवेदी—युग और साहित्य, संस्करण १९५०, पृष्ठ ७४।

३. रेल का अर्थ भी पटरी है।

४. श्रीनारायण चतुर्वेदी—विनोद शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ, सं० २०१३, पृष्ठ ६३।

५. इलाचन्द्र जोशी—निर्वासित, सं० २००३, पृष्ठ ३२०, भारती भण्डार, प्रयाग।

—रेल के इंजन के आगेवाली लालटेन की माफ़िक सूर्य ।[१]

—रेल का इंजन जोर से गोली लगे सिंह की तरह दहाड़ा ।[२]

—रेलवे सिगनल की तरह राजासाहब की मर्जी पर उठते और गिरते थे ।[३]

उदाहरण :—जैसे इंजन कोयला खा लेता है ।[४]

—शंटिंग के बाद रेल का इंजन जब स्थिर हो जाता है, तब उसमें से निकलने वाला सरलता पूर्ण शब्द दूर से जैसे लगता है ठीक वैसी ही आवाज कुछ देर तक महीप के कानों में बजती रही ।[५]

उत्प्रेक्षा :—मानो गाट बाबू रेलगाड़ी को झण्डी दिखा रहे हों ।[६]

रूपकातिशयोक्ति—इंजन को कोयला-पानी भी मिल गया ।[७]

—दोपहर भर उन्होंने जो स्टीम जमा की है, उसे निकाल रही है औरत की नाराजगी ।[८]

प-८ १.१.२. मोटर रूपक—चरित्र, जीवन की मोटर का पेट्रोल है ।[९]

—और लगे दौड़ाने मोटर और हवाई जहाज छन्द ।[१०]

---

१. धनञ्जय भट्ट—भट्टनिबन्धमाला, सं० २००४, पृष्ठ ६ ।

२. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १६५५, पृष्ठ २३० ।

३. बनारसीदास—संस्मरण, १६५२, पृष्ठ १३८ ।

४. प्रेमचन्द—गोदान, पाठ्य संस्करण नवाँ, सन् १६५२, पृष्ठ३१७ ।

५. इलाचन्द्र जोशी—निर्वासित, सं० २००३, पृष्ठ ४२४ ।

६. फणीश्वर नाथ रेणु—मैला आँचल, द्वितीय संस्करण, १६५७, पृष्ठ ३०५ ।

७. प्रेमचन्द—गोदान, पाठ्य संस्करण नवाँ, सन् १६५३, पृष्ठ १५६ ।

८. मुल्कराज आनन्द—कुली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ५७ ।

९. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १६५५, पृष्ठ ४८ ।

१०. डॉ० कपिलदेव सिंह—ब्रजभाषा बनाम खड़ीबोली, सन् १६५६, पृष्ठ २२० ।

उपमा—सत्याग्रह तो चरखे के लिए पेट्रोल का काम करता है ।[१]

—स्त्री केवल गति बनाये रखने के लिए मोबिल आइल है ।[२]

प-८.१.१.३. ऐरोप्लेन—रूपक—ऐरोप्लेन के रूप में उड़ती हुई हैं सुन्दरियाँ ।[३]

उपमा—एकाएक बड़ी सी काली मूँछें डकोटा प्लेन की तरह आती है ।[४]

प-८.१.१.४. सबमैरिन—उपमा—सबमैरिन सी आन्तरिक सतह में ।[५]

प-८. १.१.१.५. साइकिल—उपमा—उसी प्रकार लुढ़क गया जिस प्रकार तेजी से भागती हुई साइकिल एकाएक 'बर्स्ट' होकर लुढ़क पड़ती है ।[६]

—आवाज साइकिल के 'बर्स्ट' पहिये की तरह ।[७]

उदाहरण—जैसे बच्चे को गिराकर साइकिल भगा लाया हो । [८]

प-८. १.२. बिजली और बिजली से चालित

प-८. १.२.१. करण्ट उपमा—ऐसा लगा कि ए०सी० करेण्ट छू गई है ।[९]

उत्प्रेक्षा—मानो बिजली का करेण्ट लग गया हो ।[१०]

उदाहरण—जैसे शरीर में पुनः करेण्ट दौड़ा ।[११]

---

१. पहाड़ी—बया का घोंसला, दूसरा संस्करण, १९५१, पृष्ठ ३३ ।
२. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १९५५, पृष्ठ १३, ।
३. रामवृक्ष बेनीपुरी—पैरों में पंख बाँधकर, सं० २००६, पृष्ठ २३८ ।
४. धर्मवीर भारती—निकष २, जनवरी १९५६, पृष्ठ ४२
५. शान्तिप्रिय द्विवेदी—युग और साहित्य, सन् १९५०, पृष्ठ ५४ ।
६. सुरेन्द्र वर्मा—साइकिल चैम्पयन, मनोरमा, मार्च १९५७, पृष्ठ ३० ।
७. वही, पृष्ठ ३, साइकिल के विभिन्न भागों से आठ उपमाएँ दी गई हैं ।
८. राजेन्द्र यादव-उखड़े हुए लोग, सन् १९५५, पृष्ठ १० ।
९. धर्मवीर भारती—निकष २, पृष्ठ ३८ ।
१०. सूरजनारायण—अन्ना केरेन्नि, अनुवाद, सन् १९५५, पृष्ठ १६० ।
११. विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'—भिखारिणी, तृतीय सं०, १९५२ पृष्ठ ६७ ।

प-८. १.२.२. बल्व—उपमा—बिजली के टार्च के बल्वों की तरह निस्तेज होकरभी चमक रही थी ( आँखें )[१]

रूपक—अफसर तो सरकार की प्रेस्टिज प्रकाश का बल्व है, जो अपनी पावर के अनुसार चमकता है।[२]

उदाहरण—जैसे स्विच दबाने से बल्व में छिपा आलोक[३]। तत्काल उसके मुख की मुस्कान तिरोहित हो गई जैसे किसी ने अचानक बिना पूर्व-सूचना के बिजली का बटन ऊपर को खटकाकर 'स्विच आफ़' कर दिया और बिजली का बल्व बुझाकर कमरा अन्धकारमय हो उठा।[४]

प-८. १.२.३ हीटर—उपमा – तेज हीटर की सी गर्मी।[५]

प-८. १.२.४ टेलीविजन—उपमा—टेलीविजन के पट से।[६]

प-८. १.२.५ एक्सरे—रूपक – मनोवैज्ञानिक एक्सरे किरणों के प्रयोग द्वारा।[७]

प-८. १.२.६ बैलून—उपमा – रह-रहकर कालकूट से भी अधिक तीव्र और उग्र विषयुक्त हाइड्रोजन से उसकी छाती बैलून की तरह फूल उठती थी—चरम विस्फोट के लिए।[८]

मन को उस घोर नारकीय स्थिति में हायड्रोजन भरे बैलून की तरह हल्का कर देती और एक उन्मुक्त उड़ान की अनुमति से उसके प्राण पुलकित हो उठते हैं।[९]

---

१. यशपाल—धर्मयुद्ध, सन् १९५४, पृष्ठ १५।
२. उदयशंकर भट्ट—पर्दे के पीछे, प्रथम संस्करण, पृष्ठ १७३।
३. महादेवी वर्मा—स्मृति की रेखाएँ, पञ्चम संस्करण, सं० २०११, पृष्ठ १५।
४. इलाचन्द्र जोशी—प्रेत और छाया, सं० २००४, पृ० २१५।
५. वही, निर्वासित, सं० २००३, पृष्ठ १६५।
६. वही, निर्वासित, सं २००३ पृष्ठ, १८३-८४।
७. वही, विवेचना, द्वि० संस्करण, सं० २००७, पृष्ठ ५४।
८. वही, प्रेत और छाया, सं० २००४, पृष्ठ ३४।
९. वही, निर्वासित, सं० २००३, पृष्ठ ४३७।

रूपक—हमारे छायावादी कवियों ने अपनी रहस्यमयी वासना की डोर से काल्पनिक वेदना के हाइड्रोजन से भरे हुए रंगीन भाव रूपी छोटे-छोटे बैलूनों को उड़ाकर प्रतिकार डोर को तोड़ डाला और प्रतिकार से बैलून निरुद्देश्य अवस्था में अनन्त के पथ पर भटकते हुए अलक्ष्य दिशा की ओर उड़ते हुए शून्य में विलीन होते गये।[१]

प-८. १.२.७. सिनेमा—उदाहरण : सिनेमा में जो बाक्स आफिस-हिट की है वही कविता जगत में चौकाने की कला (शौक टेकनीक) बनकर छा रही है।[२]

प-८. १.२.८. प्रेस—रूपक : प्रेस वह गंगा है जिसमें स्नान करने के बाद व्यक्तिगत विचार सामाजिक हो जाया करते हैं। एक बार प्रेस रूपी गंगा में स्नान करने के बाद जो निकली वह पब्लिक बन गई।[३]

प-८. १.२.९. टाइप : वे हमारे जीवन का फाउण्ड्री डिपार्टमेण्ट दिखलाते हैं, जिसके टाइप के ही व्यक्ति हमारे सामने से दिनरात गुजरते रहते हैं किन्तु प्रेमचन्द के उपन्यास दिग्दर्शक ही नहीं संशोधक भी हैं। गलत साँचे अथवा गलत टाइपों को रद्द करके वे निर्माण का नया मॉडल भी देते हैं।[४]

प-८. १.३. मशीनरी सम्बन्धित

प-८. १.३.१. मशीन उपमा—मशीन की तरह काम करता।[५]
मशीन की तरह जड़ और सक्रिय।[६]

---

१. इलाचन्द्र जोशी—विवेचना, सं० २००७, पृष्ठ ४३, इससे सिद्ध होता है कि जोशी को यह प्रयोग कितना प्रिय है।

२. नामवर सिंह—इतिहास और आलोचना, सन् १९५६, पृष्ठ ६१।

३. हजारीप्रसाद द्विवेदी—विचार और वितर्क, सन् १९५४, पृष्ठ २३९।

४. शान्तिप्रिय द्विवेदी—युग और साहित्य, सन् १९५०, पृष्ठ २९४।

५. यज्ञदत्त शर्मा—झुनिया की शादी, प्रथम संस्करण, पृष्ठ १२२।

६. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १९५५, पृष्ठ २५८।

मशीनगन की तरह फायर पर फायर करता चला ।
( गालियों के लिए )
बढ़ता जाता वह मशीन सा चाँदी के पहियों पर।
चलती हुई मोटरों के स्वर सुनता ।[१]

उपमेयोपमा—मशीन तो मशीन है ।[२]

रूपक —उसका जीवन जीवनहीन मशीन-सा बन गया ।[३]
कवित्त-छन्द की प्रेसिंग मशीन में कसे जाने पर ।

उत्प्रेक्षा —कठपुतली मुस्कराई मानो मशीन की जोर से ।[४]

उदाहरण—चला जा रहा था जैसे कोई मशीन चल रही हो ।[५]

अन्य— अभिनन्दन-ग्रन्थ के मशीनीकरण का जो सुझाव दिया ।[६] सुनना नहीं चाहता व्यर्थ की बातों की मशीन बन जाओ, तुम अपने हाथों को चलने दो अनवरत ।[७]

प-८. १.३.२. स्टोव—रूपक-शरीर का स्टोव बुझा-बुझा सा रहता है ।[८]

प-८. १.३.३. स्पिरिट—उपमा—उसका सारा उत्साह स्पिरिट की तरह उड़ गया ।[९]

प-८. १.३.४. ग्रामोफोन उपमा—जिस प्रकार फोनोग्राफ के रेकर्ड पर सुई पड़ने से सरस संगीत लहरी लहराने लगती है उसी प्रकार

---

१. गिरजाकुमार माथुर—कवि भारती, पृष्ठ ६६७-६८ ।

२. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, १९५५, पृष्ठ २५८ ।

३. गिरजाकुमार माथुर—कवि भारती, पृष्ठ ६६७, ६८ ।

४. धर्मवीर भारती—निकष २, सन् १९५६, पृष्ठ ५० ।

५. मुल्कराज आनन्द—कुली, प्र० स०, पृष्ठ ८८ ।

६. विनोद शर्मा—अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ ८३ ।

७. सुरेन्द्रकुमार दीक्षित—मनुष्य और मशीन, पृष्ठ ३६-४४; युग-चेतना, वर्ष ३, अङ्क ७ ।

८. कृष्णचन्द्र—फूल और पत्थर, सन् १९५२, पृष्ठ ४८ ।

९. फणीश्वरनाथ रेणु—मैला आँचल, १९५७, पृष्ठ २८३ ।

भूमण्डल रूपी फोनोग्राफ के आकाश-रूपी रेकर्ड प्लेट पर मन्दिर के नुकीले कञ्चन कलश की सुई पड़ने से भक्ति के गीत-सुधा की लीला लहरी चारों ओर लहरा रही थी।[1]

प-८.१.३.५. स्प्रिंग – उपमा—स्प्रिंग की तरह।[2]

प-८.१.३.६. पेण्डलम— उपमा—जैसे एक ओर खींचकर छोड़ा हुआ पेण्डुलम उतने ही वेग से दूसरी ओर जा टकराता है।[3]

प-८.१.३.७. बैरोमीटर—उसे लेखक के मानसिक जगत् की प्रतिक्रियाओं का 'बैरोमीटर' बनाने के लिये विवश करता है जो केवल यह रिकार्ड करता चले कि वह कुण्ठा, अनास्था, मानवद्रोही भावनाओं और निराशा की ठंडी आँधियों का तापमान कितना है।[4] आलोचक न तो लेखकों की नामावली तैयार करने वाला क्लर्क है और न लेखक के अवचेतन मन की प्रतिक्रियाओं को अङ्कित करने वाला बैरोमीटर ही।[5]

प-८.२. डाक्टरी सम्बन्धी शब्दावली

प-८.२.१. कुनैन उपमा—सुगरकोटेड कुनैन की तरह।

प-८.२.२. ग्लेसरीन उपमा—ग्लीसरीन की तरह शीतल एवं सुखस्पर्श।[6]

प-८.२.३. सोडावाटर उपमा—सोडावाटर का सा जोश ( क्षणिक उत्तेजना )

प-८.२.४. इंजेक्शन—हिन्दी जगत् की जनता के मर्मस्थल पर इंजेक्शन दिये जाते रहे।

प-८.२.५. थाइसिस उपमा—क्षिप्रगति से बढ़ने वाले थाईसिस की तरह साहित्य का रोग बढ़ रहा है।[7]

---

१. शिवपूजन रचनावली, प्रथम खण्ड, स० २०१२, पृष्ठ २००।
२. राजेन्द्र यादव–उखड़े हुए लोग, सन् १९५५, पृष्ठ ७४ तथा २२६।
३. महादेवी वर्मा—स्मृति की रेखाएँ, स० २०११, पृष्ठ ४८।
४. शिवदानसिंह चौहान—साहित्यकार का दायित्व, सङ्कलन—गोपाल कृष्ण कौल, सन् १९५५, पृष्ठ ३२।
५. वही, पृष्ठ ३४।
६. नागार्जुन—नई पौध, सन् १९५३, पृष्ठ १४४।
७. इलाचन्द्र जोशी—विवेचना, सं० २००७, पृष्ठ ३४।

प-८.२.६. हिप्नोटाइज-उपमा—उनमें से एक की दृष्टि छप्पर से लटकती हुई सम्भवतः सत्तू गुड़ जैसे मिष्टान्नों की गठरी को हिप्नोटाइज कर रही थी।[१]

प-८.३. मनोरञ्जन की सामग्री

प-८.३.१. फुटबाल—उपमा—फुटबाल की तरह उछल पड़ी (मोटी औरत के लिए)।[२] हृदय को जैसे रबर की गेंद की तरह बड़े जोरों से अत्यन्त निर्ममता के साथ नीचे पटककर ऊपर उछालता रहा हो।[३]

प-८.३.२. बैंड मास्टर—उत्प्रेक्षा—मानो बैण्डमास्टर ने अपनी छड़ी हिलाकर नया गायन प्रारम्भ कर दिया हो, उसी प्रकार सभी औरतें गाने लगीं।[४]

प-८.३.३. ट्रम्प—उपमा—ट्रम्प चाल की तरह उसका उपयोग।[५]

प-८.३.४. किंडरगार्टन—उपमा—शरद् जैसे कलाकारों की कला बच्चों के लिए किंडरगार्टन की तरह है।

प-८.४. अन्य दैनिक प्रयोग आने वाली सामग्री

प-८.४.१. डायरी—रूपक—दिल की डायरी में नोट था।[६]

प-८.४.२. अटेची—रूपकातिशयोक्ति—बगल में अटेची (स्त्री के लिए)।[७]

प-८.४.३. गाउन—रूपक—व्यक्तित्व का गाउन पहन कर।[८]

---

१. महादेवी वर्मा—स्मृति की रेखाएँ, सं० २०११, पृष्ठ ७६।
२. जी० पी० श्रीवास्तव—लालबुझक्कड़, सन् १९४८; पृष्ठ १०२।
३. इलाचन्द्र जोशी—निर्वासित, सं० २००३, पृष्ठ १०३-१०४।
४. मुंशी - अभिशाप—अनुवाद, पृष्ठ ८, तृतीय संस्करण।
५. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १९५५, पृष्ठ १४१, १६२।
६. यज्ञदत्त शर्मा—झुनिया की शादी, प्रथम सं०, पृष्ठ ११५।
७. रामवृक्ष बेनीपुरी—पैरों में पङ्ख बाँधकर, स० २००६, पृष्ठ ५६।
८. शान्तिप्रिय द्विवेदी—युग और साहित्य, सन् १९५०, पृष्ठ ६४।

प-८.४.४. स्पंज—उपमा—हृदय में फूल स्पंज की तरह पुलक उठा।[१] स्पंज के टुकड़े की तरह स्वर।[२] हमारी पद्धति एक स्पंज के समान है जो गंगा तट से सब अच्छी चीजें चूसकर टेम्स तट पर ला निचोड़ती है।[३]

प-८.४.५. फाइल—उपमा—फाइल सी भरी हुई आँखों के नीचे रातों जगी हुई कालस है।[४]

प-८.४.६. पाकेट डिक्शनरी—उपमा—आँख

प-८.४.७. लेडी फाउन्टेनपैन—उपमा—नाक

प-८.५. विविध

प-८.५.१. डायनेमाइट—डायनेमाइट की सी शक्ति।[५] इन्क्लाब का डायनामाइट।[६]

प-८.५.२. ३०३—थ्री नाट थ्री की टोपी।[७]

प-८.५.३. क्रिटिक—बनाने की देर न होगी कि कीट 'क्रिटिक' काटकर आधी से अधिक निगल जायेंगे।[८]

प-८.५.४. रोलर—हिन्दी को कांग्रेस अपनी हिन्दुस्तानी की काली राष्ट्रीयता के रोलर के नीचे पीस डालना चाहती है।[९]

---

१. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १९५५, पृष्ठ २२४।
२. सुमित्रानन्दन पन्त—गद्यपथ, प्रथम स०, १९५३, पृष्ठ २५।
३. सुधीन्द्र-हिन्दी कविता में युगान्तर, सन् १९५०, पृष्ठ ३७।
४. गिरिजाकुमार माथुर—मशीन का पुर्जा—कवि भारती, प्र० सं०, पृष्ठ ६९७।
५. इलाचन्द्र जोशी—निर्वासित, सं० २००३, पृष्ठ २०६।
६. कृष्णचन्द्र—फूल और पत्थर, सन् १९५२, पृष्ठ ८४।
७. राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १९५५, पृष्ठ ९६।
८. शिवनाथ—भारतेन्दुयुगीन निबन्ध, सं० २०१०, पृष्ठ ८१।
९. रविशंकर शुक्ल—हिन्दी वालो सावधान, सं० २००४, पृष्ठ १०९।

प-८. ५.५ पासपोर्ट—जैसे गङ्गा की एक डुबकी स्वर्ग के सभी रास्तों का पासपोर्ट देती है।[1]

प-८. ५.६ सीमेण्ट—सेवा ही वह सीमेण्ट है जो दम्पति को जीवनपर्यन्त स्नेह और साहचर्य से जोड़े रख सकता है जिस पर बड़े-बड़े आघातों का भी कोई असर नहीं होता।[2]

१. धर्मवीर भारती—निकष २, पृष्ठ ३५।

२. प्रेमचन्द—गोदान, ११ वाँ संस्करण, १६५०, पृष्ठ ३२०।

## परिशिष्ट संख्या ६

# सहायक ग्रन्थ-सूची

प. ६. १. १ जिन पुस्तकों से शब्द छाँटे गये :—


१ अज्ञेय—अज्ञेय की कहानियाँ, सन् १९५४।
२ अमृतराय—नयी समीक्षा, सन् १९५०।
३ अयोध्याप्रसाद—अभिशाप, सन् १९४८।
४ इलाचन्द्र जोशी— निर्वासित, संवत् २००३।
५ वही—प्रेत और छाया, सं०२००४।
६ वही—विवेचना, द्वितीय संस्करण, सं० २००७।
७ वही—सन्यासी, सं० २००१।
८ उग्र—चन्द हसीनों के खतूत, सातवाँ प्रकरण।
९ वही—शराबी, १९५४, आत्माराम एण्ड सन्स।
१० उदयशंकर भट्ट—पर्दे के पीछे, प्र० सं०, मसिजीवी प्रकाशन, देहली।
११ वही—नये मोड़, प्र० सं०, मसिजीवी प्रकाशन, दिहली।
१२ उपेन्द्रनाथ अश्क—पैंतरे ( केवल भूमिका ), सन् १९५५।
१३ उषादेवी मित्रा—वचन का मोल, प्रथम संस्करण।
१४ एफ० आर० वेस्ट—कोयले की खान से पार्लियामेण्ट, सन् १९३२।
१५ ओमप्रकाश अग्रवाल—हिन्दी गीतिकाव्य, सं० २००२।
१६ ऋषभचरण—तपोभूमि, १९५५।
१७ क० मा० मुन्शी—परदे की आड़ में, अनुवाद—मुकुन्दलाल गुप्त, सन् १९५५, सस्ता साहित्य पुस्तकमाला।
१८ वही—स्वप्नद्रष्टा, प्र० सं०।
१९ वही—अभिशाप, तृतीय सं०।

२० क० मा० मुन्शी—प्रतिशोध, अनुवाद—मुकुन्दलाल गुप्त, सन् १९५५, सस्ता साहित्य पुस्तकमाला, द्वितीय संस्करण।
२१ डॉ० कपिलदेव सिंह—ब्रजभाषा बनाम खड़ीबोली, १९५६।
२२ किशोरीलाल गोस्वामी—कुसुमकुमारी, १९०१।
२३ कृष्णचन्द्र—पत्थर और फूल, सन् १९५२।
२४ कृष्णदत्त बाजपेयी—मधु कलश, सन् १९५६।
२५ गंगाबख्श सिंह—द्विवेदीयुगीन निबन्ध-साहित्य, प्र० सं०।
२६ गुलाबराय—मेरे निबन्ध, सन् १९५५।
२७ गोपालकृष्ण कौल—साहित्यकार का दायित्व, सन् १९५५।
२८ गोपालप्रसाद व्यास—अजी सुनो, सन् १९५६।
२९ वही—मैंने कहा, सन् १९५१।
३० गोपालराम गहमरी—परिचय, सन् १९३५।
३१ गोविन्ददास—एकादशी, सं० १९९९।
३२ गोविन्दबल्लभ पन्त—मदारी, सं २०११।
३३ चण्डीप्रसाद हृदयेश—नन्दन निकुञ्ज, सं २००५।
३४ चन्द्रबली पाण्डेय—कचहरी की भाषा और लिपि, सं० १९९६।
३५ जयशङ्कर प्रसाद—आँधी, सं० २०१२।
३६ वही—कङ्काल, सं २००९।
३७ वही—काव्य, कला और निबन्ध, सं० २०१०।
३८ वही—तितली, सं० २००८।
३९ जी० पी० श्रीवास्तव—उलटफेर, सन् १९५२।
४० वही—भड़ामसिंह शर्मा, सन् १९५१।
४१ वही—लतखोरी लाल, सन् १९५१।
४२ वही—लालबुझक्कड़, सन् १९२९।
४३ जैनेन्द्र—कल्याणी, सन् १९५३।
४४ वही—कहानियाँ, भाग १, सन् १९५३।
४५ वही—कहानियाँ भाग २, सन् १९५३।
४६ वही—कहानियाँ भाग ३, सन् १९५३।
४७ वही—कहानियाँ भाग ५, सन् १९५३।
४८ वही—साहित्य का श्रेय और प्रेय, सन् १९५३।

४९ जैनेन्द्र--सुनीता, सन् १९३५ ।
५० ज्योतिर्मयी ठाकुर-स्त्री जीवन की समस्याएँ, सन् १९४९ ।
५१ झावरमल, बनारसीदास—गुप्त निबन्धावली, सन् १९४९ ।
५२ वही—बालमुकुन्द गुप्त स्मारक-ग्रन्थ, सं० २००७ ।
५३ टालस्टाय—अन्ना केरेनिना (अनुवाद सूरजनारायण) सन् १९५५ ।
५४ त्रिभुवन सिंह—हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, सन् १९५४ ।
५५ दिनकर—अर्धनारीश्वर, सन् १९५२ ।
५६ देवकीनन्दन खत्री—कुसुमकुमारी, सन् १९५३ ।
५७ धनञ्जय भट्ट—भट्ट निबन्धमाला, सं० २००४ ।
५८ वही—भट्ट निबन्धमाला भाग २, सं० २००४ ।
५९ धर्मवीर भारती – निकष२, सन् १९५६
६० नागार्जुन —नई पौध, सन् १९५३ ।
६१ नामवर सिंह – इतिहास और आलोचना, सन् १९५६ ।
६२ निराला – चाबुक, प्र० सं० ।
६३ वही--पन्त और पल्लव, प्र० सं० ।
६४ वही—सुकुल की बीबी, सं० २०१२ ।
६५ पहाड़ी—बया का घोंसला, सन् १९५१ ।
६६ प्रेमचन्द्र—कर्मभूमि, सन् १९३२ ।
६७ वही—कलम, तलवार और त्याग, १९५४, सरस्वती प्रेस बनारस ।
६८ वही – कायाकल्प, सन् १९५३ ।
६९ वही—ग़बन, ( तिथि नहीं ) हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ।
७० वही – गोदान, सन् १९५३, सरस्वती प्रकाशन ।
७१ वही—निर्मला, सन् १९५३, ।
७२ वही—प्रतिज्ञा, सन् १९५० ।
७३ वही—प्रेमाश्रम, सन् १९४८ ।
७४ वही--मानसरोवर भाग ३, सरस्वती प्रेस, सन् १९५४ ।
७५ वही—मानसरोवर भाग ४, सन् १९५५, ।
७६ वही—मानसरोवर भाग ५, सन् १९५५ ।
७७ वही—मानसरोवर भाग ६, सन् १९५५ ।
७८ वही—मानसरोवर भाग ७, सन १९५५ ।

७६ प्रेमचन्द—रंगभूमि, भाग १, सन् १९५५।
८० वही—भाग २, सन् १९५५।
८१ वही—वरदान ( तिथि नहीं ), हंस प्रकाशन।
८२ वही—सेवा सदन, सं० २०१०।
८३ फणीश्वरनाथ 'रेणु'—मैला आँचल, सन् १९५७।
८४ बदरीनाथ भट्ट—लबड़धोंधों, सं० २००२।
८५ बनारसीदास—संस्मरण, सन् १९५२।
८६ बालकृष्ण भट्ट—सौ अजान एक सुजान, सं० २००६।
८७ बालमुकुन्द—मुहावरे और कहावतें, सन् १९५७।
८८ ब्रजरत्नदास—भारतेन्दु ग्रन्थावली, सं० २००७।
८९ ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय—भारतेन्दुकालीन व्यंग्य परम्परा, सन् १९५६।
९० ब्रह्मस्वरूप दिनकर—हिन्दी मुहावरे, सन् १९५१।
९१ भगवतीचरण वर्मा—इन्स्टालमेण्ट, सं० २००६।
९२ वही—तीन वर्ष, सं० २०१०।
९३ भगवतीप्रसाद वाजपेयी—हिलोर, सन् १९५५।
९४ भारतेन्दु—भारतेन्दु ग्रन्थावली, दूसरा भाग, प्र० संस्करण।
९५ वही—भाग ३।
९६ भोलानाथ—हिन्दी साहित्य, सन् १९५४।
९७ महादेवी वर्मा—स्मृति की रेखाएँ, सं० २०११।
९८ महावीरप्रसाद द्विवेदी—वाग्विलास, सन् १९२८।
९९ वही—सङ्कलन, सं० १९८८।
१०० वही—समालोचना समुच्चय, सन् १९३०।
१०१ वही—साहित्य सीकर, सन् १९४०।
१०२ माताप्रसाद गुप्त—हिन्दी पुस्तक साहित्य—(भूमिका केवल)।
१०३ चगतई—फुल बूट, ( तिथि नहीं ) किताब महल, प्र० संस्करण।
१०४ मुल्कराज आनन्द—इन्सान की कहानी, प्र० संस्करण।
१०५ वही—कुली, प्र० संस्करण।
१०६ मोपांसा—कहानियाँ ( अनुवाद-सूरजनारायण) सन् १९५५।
१०७ यशपाल—दादा कामरेड, सन् १९५३।
१०८ वही—देशद्रोही, सन् १९५३।

१०९ यशपाल—धर्मयुद्ध, सन् १९५४ ।
११० रविशंकर शुक्ल —हिन्दी वालो सावधान, सं० २००४ ।
१११ राजेन्द्र यादव—उखड़े हुए लोग, सन् १९५५ ।
११२ रामकुमार वर्मा—ऋतुराज, प्र० संस्करण ।
११३ वही—रिमझिम, प्र० सं० ।
११४ रामचन्द्र शुक्ल—चिन्तामणि, भाग २, सं० २०१० ।
११५ वही—हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं० १९९९ ।
११६ रामजीलाल—ऋण की ओट में, प्र० संस्करण ।
११७ रामरतन भटनागर—हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि, सन्१९५१ ।
११८ रामवृक्ष बेनीपुरी—पैरों में पङ्ख बाँधकर, सं० २००९ ।
११९ रायकृष्णदास—अनास्था, सं० २००५ ।
१२० राहुल—आदि हिन्दी की कहानियाँ और गीतें, प्र० संस्करण ।
१२१ रूपनारायण पाण्डेय—मूर्ख मण्डली, सं० २०१० ।
१२२ लक्ष्मीनारायण मिश्र—सिन्दूर की होली, सं० २०११ ।
१२३ विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'—भिखारिणी, सन् १९५२ ।
१२४ वृन्दावनलाल वर्मा—निस्तार, सन् १९५५ ।
१२५ वही—प्रेम की भेंट, सं० २०१२ ।
१२६ वही—बाँस की फाँस, सन् १९५३ ।
१२७ शान्तिप्रिय द्विवेदी—युग और साहित्य, सन् १९५० ।
१२८ शिवनाथ—भारतेन्दुयुगीन निबन्ध, सं० २०१० ।
१२९ शिवपूजन सहाय—शिवपूजन रचनावली, सं २०१२ ।
१३० श्रीकृष्णलाल—आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, सन् १९४२ ।
१३१ श्रीनारायण चतुर्वेदी—विनोद शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ, सं० २०१३ ।
१३२ सत्येन्द्र—समीक्षा के सिद्धान्त, सन् १९४२ ।
१३३ सुधीन्द्र—हिन्दी कविता में युगान्तर, सन् १९५० ।
१३४ सुमित्रानन्दन पन्त—गद्य-पथ, १९५३ ।
१३५ सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'—निरुपमा, सं० २०११ ।
१३६ हजारीप्रसाद द्विवेदी—मध्यकालीन धर्मसाधना, सन् १९५२ ।
१३७ वही—विचार और वितर्क, सन् १९५४ ।

१३८ हरिकृष्ण प्रेमी—बादलों के पार, सन् १९५२।
१३९ पहाड़ी—प्रतिनिधि कहानियाँ, नवीन सं०।

९.१.२ जिन पत्र-पत्रिकाओं के शब्द छाँटे गये:—

१. दैनिक : नवभारत, जुलाई १९५६। दिसम्बर १९५६ से अप्रैल १९५७ तक सम्पादकीय।
: सैनिक, जुलाई १९५६।
: हिन्दुस्तान, जुलाई १९५६ से दिसम्बर १९५६ तक सम्पादकीय।
: नवप्रभात, जुलाई १९५६।

२. साप्ताहिक—धर्मयुग १०-६-१९५६,४-११-५६,२१-१-५७,१७-३-१९५७।
—हिन्दुस्तान २१-१०-१९५६,३-२-१९५७,१७-३-१९५७।

३. मासिक—अरुण, भाग २५, अङ्क ९।
—मनोरमा, फरवरी १९५७।
—मनोहर कहानियाँ, जनवरी १९५७।
—भारती, वर्ष १, अङ्क १२।
—माया, सितम्बर १९५६ तथा मार्च १९५७।
—युगचेतना सितम्बर १९५६

प—९.२ जिन पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली गई :—

प—९.२.१ हिन्दी प्राकृतादि की पुस्तकें :

१ अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी—हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव, सं० २००६, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
२ अयोध्याप्रसाद वर्मा—खड़ीबोली का पद्य, दूसरा भाग, सन् १८८७ ;
—खत्री स्मारक ग्रन्थ, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना १९६०।
३ इन्द्र विद्यावाचस्पति—भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय और अस्त, आत्माराम एण्ड सन्स, देहली।
४ इन्शाअल्ला खाँ—रानी केतकी की कहानी, सं० २००७, ना० प्र० सभा, काशी।
५ उदयनारायण तिवारी—हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, सं० २०११, भारती भण्डार, प्रयाग।
६ कपिलदेव द्विवेदी—अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन. सन् १९५१, हिन्दुस्तानी ऐकेडमी प्रयाग।

७ कामताप्रसाद गुरु—हिन्दी व्याकरण, ना० प्र०, सभा काशी।
८ किशोरीदास वाजपेयी—ब्रजभाषा व्याकरण, सं० २०००।
९ कृष्णकुमार सिन्हा—पन्त, प्र० सं०।
१० कृष्णशङ्कर शुक्ल—कविवर रत्नाकर, सं० १९९२।
११ कृष्णाजी पाण्डुरंग कुलकर्णी—मराठी व्युत्पत्ति-कोश, १९४६।
१२ गोरखनाथ—राजकीय कोश, १९४८।
१३ गोलोकबिहारी धल—ध्वनि-विज्ञान, १९५८।
१४ धीरेन्द्र वर्मा—ब्रजभाषा, १९५४, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।
१५ वही—हिन्दी भाषा का इतिहास, १९४९, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।
१६ नन्ददुलारे वाजपेयी—बीसवीं शताब्दी, प्रथम संस्करण।
१७ नलिनीमोहन सान्याल—भाषा-विज्ञान, सं० १९९५।
१८ पन्त—आधुनिक कवि की भूमिका केवल, सं० २००६, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
१९ पाइअ-सद्द-महण्णावो; (प्राकृत) सं० १९८५, कलकत्ता।
२० पादरी एथरिङ्गटन— भाषा भास्कर, सन् १९०५।
२१ प्राणजीवन मेहता—शिक्षा का माध्यम, सन् १९२७।
२२ ब्रजवल्लभ मिश्र—वल्लभ त्रैमासिक कचहरी कोश, सं० १९७७।
२३ बाबूराम सक्सेना—सामान्य भाषाविज्ञान, सं० २०१३, हि० सा० स० प्रयाग।
२४ भोलानाथ तिवारी—शब्दों का जीवन, प्र० सं०, राजकमल प्र०, दिल्ली।
२५ मीर अम्मन—बाग़ोबहार, द्वि० सं०, १८४९।
२६ रविशङ्कर शुक्ल— हिन्दी वालो सावधान, सं० २००४, ना० प्र० सभा, काशी।
२७ रामचन्द्र वर्मा— अच्छी हिन्दी, सं० २००७, साहित्य-रत्नमाला, बनारस।
२८ वही—शब्द साधना, सन् १९५५,।
२९ वही—संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर, सं० १९९६, वही २००८, ना० प्र० सभा, काशी।
३० रामचन्द्र शुक्ल—हिन्दी साहित्य का इतिहास, सं० २००२, ना० प्रा० सभा, काशी।
३१ लल्लूजी लाल—प्रेमसागर, सं० १९७९, ना० प्र० सभा, काशी।

३२ लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय—फ़ोर्ट विलियम कालेज, सं० २००४, हिन्दी परिषद्, प्र० वि० वि०, प्रयाग ।

३३ वही—आधुनिक हिन्दी साहित्य, सन् १९५४ ।

३४ वही—हिन्दी साहित्य की भूमिका, सन् १९५२ ।

३५ विश्वनाथप्रसाद—भाषा-विज्ञान का कोश, प्रथम सं०, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

३६ शंकरनाथ शुक्ल- उपन्यासकार प्रेमचन्द, ( अप्रकाशित ) थीसिस, सन् १९५२ ।

३७ शारदा वेदालंकार—भारतेन्दु से पूर्व हिन्दी, ( थीसिस, लन्दन विश्वविद्यालय) अप्रकाशित, अनुवाद से ।

३८ शिवकुमार मिश्र—कामायनी और प्रसाद की कविता गङ्गा, सन् १९५४ ।

३९ राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द—हिन्दी व्याकरण, सन् १८७६ ।

४० श्यामसुन्दर दास—भाषा रहस्य, सं० १९९२,हिन्दी भाषा, सन् १९५४ । इण्डियन प्रेस, प्रयाग ।

४१ श्रीकृष्ण लाल—आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास, १९४२ ई० ।

४२ श्रीधरनाथ मुकर्जी—भारत में अँग्रेजी शिक्षा का इतिहास, वोरा एण्ड कम्पनी, १९४९ ।

४३ बाबूराम सक्सेना—अर्थ विचार, सन् १९५१, पटना विश्वविद्यालय ।

४४ सदलमिश्र—नासिकेतोपाख्यान, सं० २००७, ना० प्र० सभा, काशी ।

४५ सी० एस० श्रीनिवासाचारी—आधुनिक भारत, सन् १९५३, राम नारायणलाल प्रयाग ।

४६ सुनीतिकुमार चटर्जी—आर्यभाषा और हिन्दी, द्वि० सं०, राजकमल, दिल्ली ।

### प-९. २. १. २ पत्र-पत्रिकाएँ

४७ आजकल : भोलानाथ तिवारी—कुछ शब्दों की कहानी, आजकल, फरवरी, १९ ६ ।

४८ हिन्दी और पञ्जाबी में पुर्तगीज़ शब्द, आजकल, वर्ष ३, सं० १ ।

४६ उ० प्र० पं० राज्य पत्रिका : पत्रिका दिनांक १५-५-१६५६ ।

५० कल्पना : ओङ्कारनाथ श्रीवास्तव—अंग्रेजी में पूर्वी भाषा के कुछ शब्द, कल्पना, अक्टूबर १६५२ ।

५१ कविवचन सुधा : बनारस चुंगी के नियम— जिल्द १, नं० १, सं० १६२७ ।

५२ चाँद : चतुरसेन शास्त्री—आजकल की हिन्दी पर अंग्रेजी-संस्कृत का असर, चाँद, वर्ष १४, खंड २; सं० ४ ।

५३ दक्षिण भारत : नयन—हिन्दी और तमिल, नवम्बर, अक्टूबर, सितम्बर, अगस्त, जुलाई १६५७ ।

५४ ज्ञानोदय : भोलानाथ तिवारी—शब्द जिन्हें समझकर समझें, सितम्बर १६५६, मई १६५६ ।

५५ ना०प्र० सभा पत्रिका : अमरनाथ झा—अध्यक्षपदीय भाषण शिकोहाबाद सम्मेलन, अङ्क ३-४, भाग ६७, सं० २०११ ।

५६ राजबली पाण्डेय—हिन्दी भाषा के स्वरूप पर आघात की समस्या, हीरक जयन्ती अङ्क ।

५७ राममूर्ति मेहरोत्रा —स्वदेशी तथा विदेशी हिन्दी शब्दों में ध्वनि-परिवर्तन, वर्ष ४७, अङ्क २ ।

५८ वासुदेवशरण—कुछ हिन्दी शब्दों की निरुक्ति, वर्ष ४६, सं० १६६८ । तुर्की शब्द, वर्ष ४६, सं० १६६८ ।

५६ विश्वनाथ शास्त्री—हिन्दी में पारिभाषिक शब्द, वर्ष ५७, अङ्क ४ ।

६० हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली, गत ६० वर्षों का सिंहावलोकन ।

६१ प० अ० बारान्निकोव—हिन्दी शब्दावली में अंग्रेजी से आये शब्दों का स्थान, चन्द्रबली पाण्डेय स्मृति-अङ्क, वर्ष २०१५, अङ्क ३-४, पृष्ठ ३५७-३६६ ।

६२ भारतीय साहित्य : गोलोकबिहारी धल—अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त भारतीय शब्दावली, अप्रैल १६५७ ।

६३ विश्वनाथप्रसाद—'यकार' औ 'वकार' के रागात्मक स्वरूप, वर्ष २, अङ्क २ ।

६४ माधुरी : गोविन्द लाल शर्मा—हिन्दी लिपि में अङ्गरेजी शब्द, वर्ष १०, खण्ड १, सं० ३ ।
६५ मंगलदेव—ब्रजभाषा में पौरस्त्य भाषाओं का समावेश, वर्ष १०, खण्ड १, सं० ३ ।
६६ विज्ञान : उमेश मिश्र—हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली, विज्ञान, भाग ८३, सं० २–३–४ ।
६७ ओङ्कारनाथ शर्मा—भारत सरकार की वैज्ञानिक शब्दावली, भाग ८३, अङ्क १ ।
६८ विधि पत्रिका : विधि-पत्रिका, भाग २, अङ्क २ ।
६९ विशाल भारत : भगवानदास अवस्थी—कुछ विशिष्ट शब्दों का निर्णय, सितम्बर १९४० ।
७० मूत्तत—पारिभाषिक शब्द, मई १९४८ ।
७१ राहुल—हिन्दी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण, जून १९४८ ।
७२ वीणा : गङ्गानाथ झा—भाषा में बाह्य-शब्द प्रयोग, वीणा, नवम्बर १९३५ ।
७३ श्यामसुन्दर भँवर—पारिभाषिक शब्दों का निर्माण, वही, अप्रैल १९४९।
७४. सबकी बोली : काका कालेलकर—कुछ विचारणीय शब्द, वही, वर्ष १, अङ्क ४ ।
७५ सम्मेलन पत्रिका : कन्हैयालाल सहल—कहावतों का उद्गम और विकास, स० पत्रिका, भाग ४१, सं० ४ ।
७६ त्रिलोकीनारायण दीक्षित—हिन्दी पर अन्य भाषाओं का प्रभाव, वही भाग ३४, अङ्क १०३ ।
७७ भोलानाथ तिवारी—कुछ हिन्दी शब्दों की व्युत्पत्ति, वही, भाग ४०, सं० ३ ।
७८ सम्पादकीय, हिन्दी भाषा में विदेशी शब्द, भाग १, सं० ४-५ ।
७९ सरस्वती : निरंकुश—चतुरानन की पदच्युति, सितम्बर १९५७ ।
८० साप्ताहिक हिन्दुस्तान : हरिश्चन्द्र—कुछ हिन्दी सेवियों का उत्साहातिरेक, २१-४-१९५७ ।
८१ सारङ्ग : अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी—हिन्दी पत्रकरिता का विकास, वर्ष, २६, अङ्क ९ ।
८२ साहित्य : कन्हैयालाल सहल—विदेशी कहावतों का इतिहास, साहित्य, वर्ष ६, अङ्क ७ ।

८३. साहित्य संदेश : बाबूराम सक्सेना—परिवर्तनशील हिन्दी, साहित्य सन्देश, वर्ष १६, अङ्क १-२ ।
८४. धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी प्रदेश और उसकी उपभाषाएँ, वही, भाग १६, अङ्क १-२ ।
८५. राममूर्ति मेहरोत्रा – शब्दों का इतिहास, बही, वर्ष ८, अङ्क १२ ।
८६. सुधा : सत्यप्रकाश—इंगलिस्तानी या खिचड़ी बोली, सुधा, वर्ष १२, खण्ड १, सं० १ ।
८७. हंस : प्रभाकर माचवे—पारिभाषिक शब्दावली, हंस, वर्ष १८, अङ्क १ ।
८८. हिन्दी अनुशीलन : हरदेव बाहरी—देशी शब्द-तत्त्व, हिन्दी अनुशीलन, वर्ष ८, अङ्क ४ ।
८९ वही—शब्द और संस्कृति, वर्ष १, अङ्क ३ ।
९०. वही—हिन्दी में लिङ्ग-विचार, वर्ष २, अङ्क ३ ।
९१. हिन्दुस्तानी : ओङ्कार प्रसाद भटनागर—कम्पनी सरकार के जमाने में समाचार-पत्र, हिदुस्तानी, भाग ६, अङ्क ४ ।

विविध :

९२. धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी व्याकरण की समस्याएँ, रेडियो वार्ता ।
९३. रामचन्द्र वर्मा—वार्ता आकाशवाणी प्रयाग, १०-१ ५६ (अनुवाद), ।
९४. रामकुमार वर्मा—अध्यक्षपदीय भाषण, साहित्य परिषद्, उदयपुर अधिवेशन ।
९५. सम्पूर्णानन्द—हिन्दी में विज्ञान सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द, नवम हिन्दी साहित्य सम्मेलन सं० १९७६, रिपोर्ट ।
९६. रघुवीर—भाषण, हिन्दी विद्यापीठ, आगरा, २५-१२-१९५६ ।
९७. जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी—हिन्दी में लिङ्ग-विचार, नवम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, बम्बई, सं० १९७६ ।
९८. हिन्दी शब्द सागर, ना० प्र० सभा, काशी, खंड १-८ ।
९९. नालन्दा विशाल शब्द सागर ।
१००. वृहद् हिन्दी कोश, ज्ञान मण्डल, काशी ।
१०१. हिन्दुस्तान, दैनिक, यत्र-तत्र, वर्ष २५. सं० ३३६ ।

।———

प० ६.२.२.१. अंग्रेजी की पुस्तकें


1. Agra Gazetteer, Vol VIII, 1921.
2. Barfield, Owen--History of English Words, 1926.
3. Bhagwat Dayal—The Development of Modern Indian Education, 1955.
4. Bloomfield, L.--Language,1956, Henry Holt and Co., New York.
5. Bradley, Henry—The Making of English —1955, Macmillan, London.
6. Brin, Joseph G.—Applied Semantics, 1949, Bruce Humphries.
7. Burrow, T,--Sanskrit (non-Aryan influence on Sanskrit), First Edition--Faber and Faber.
8. Carroll, John B.—The Study of Language, 1955, Harvard University Press.
9. Cassirer, Ernest—Language and Myth, Dover, New York, 1946.
10. Chase Stuart—Power of words, Phoenix House Ltd., 1955.
11. Chatterji, S. K.-A Bengali Phonetic Reader, University of London Press-1928.
12. Chatterji, S. K.—The Origin and Development of Bengali Language, First Edition, 1926, Calcutta University.

13. Chomsky, Noam—Syntactic Structure, 1957, Mouton and Co.
14. Cohen—The Phonemes of English, 1952.
15. Dumville—Science of Speech, 1921, University Tutorial Press.
16. Fallon, S.W.-A New Hindustani Dictionary, 1879.
17. Firth, J. R.—The Tongues of Men, Watts and Co., Ist Ed.
18. Foster—English Factories in India, 1618.
19. Fries, C. C.—The Structure of English, 1952, Harcourt, Brace and Co., New York.
20. Gardiner. A. H.--The Theory of Speech and Language, 1932.
21. Gleason, H.A.-An Introduction to Descriptive Linguistics, Henry Holt and Co, 1956.
22. Graff, William L.—Language and Languages, 1932, N. Y. and London.
23. Gray, Louis H.--Foundation of Language, 1939, N. Y. Macmillan.
24. Greenough, J. B. and Kittredge, G. L.—Words and their ways in English Speech, 1953, London.
25. Groom, Bernard—A Short History of English Words, 1953, Macmillan.
26. Grove Victor—The Language Bar, 1949, Routledge and Kegan Paul.
27. Gune, P. D.—Introduction to Comparative Philology, 1950, Poona Oriental Book House.

28. Harley, A. H.—Colloquial Hindustani, 1944, Kegan Paul, London.

29. Haugen, Einar—The Norwegian Language in America—First Ed., Vol. I and II, The American Institute, University of Oslo.

30. Heffner, R. M. S.—General Phonetics, 1949, Madison, University of Wisconsin Press.

31. History of St. John's College [1850-1930], 1932.

32. Hobson Jobson—Yule and Burnell, New Ed., 1903, John Murray, Albemar'e Street, London.

33. Hockett, C.—Manual of Phonology, 1955, Waverly Press, Baltimore.

34. Hyatt—English Syntax for Foreign Students, 1955, Longmans.

35. Imperial Gazetteer, Vol. I, 1908.

36. Imperial Gazetteer, Vol. VI, 1886, Trubner and Co., London.

37. Jakobson, Roman and Hallé, Morris Fundamental of Language, 1956.

38. Jespersen, O.—Analytic Syntax, 1937.

39. Jespersen, O.—English Phonetics, 1950.

40. Jespersen, O.—Essentials of English Grammar, 1937, Ed. 1954, George Allen and Unwin, London.

41. Jespersen, O.—Growth [and Structure of English, 1954—Basil Blackwell, Oxford.

42. Jespersen, O.—Language, its nature, Development and Origin 1950, Ed. 1954, George Allen and Unwin Ltd., London.

43. Jespersen, O—Philosophy of Grammar—1948, Allen and Unwin.

44. Jones, D.—The Phoneme; Its nature and use, Cambridge. W. Heffer and Sons. Ltd. 1950.

45. Jones, D.—The Pronunciation of English, 1955, Cambridge University Press.

46. Jones, D.—An English Pronouncing Dictionary, 1956—Dent, London.

47. Jones, D.—An Outline of English Phonetics, 1956, Heffer, Cambridge.

48. Kadri, Mahiuddin- Hindustani Phonetic Reader, Ist Ed.

49. Kellogg—Grammar of Hindi Language, 1955, Routledge and Kegan Paul Co.

50. Kittel—Kannada Eng. Dictionary, Ist Ed.

51. Lindguist, Lilly and Wachner, Clarence—General Language : English and its Foreign Relations, Henry Holt and Co., 1952.

52. Locke, J. Courtenay—The First Englishman in India, 1930, George Routledge and Sons, London.

53. MacBridge, Rev. N. J.—Sikandra (1840-1940), 1940, C. M. S. Press, Sikandra.

54. MacCarthy, A. D.—English Pronunciation, 1952, Cambridge, W. Heffer and Sons.

55. Madan Gopal—This Hindi and Dev nagri, Delhi, I Edition.

56. Masud Husain--A Phonetic and Phonological Study of the Word in Urdu, Ist Edition, Aligarh M. University.
57. Miller, George A.--Language and communication, 1951, MacGraio Hill, New York.
58. Nida, E. A.—Bible Translating, 1947, Bible Society of America.
59. Nida, Eugene A.—God's Words in Man's Language, 1952, Harper and Bros.
60. Nida, Eugene A.--Linguistic Interludes—1947.
61. Ogden, C. K. and Richards A.--The Meaning of Meaning, 1952, Routledge and Kegan Paul.
62. The Oxford Concise Dictionary, 1942, Oxford Press.
63. Oxford English Dictionary; Pt. I-II, 1933 Oxford.
64. Palmer, Harold E.-What is Phonetics, Ist Ed.
65. Partridge, Eric-Words at War and Words at Peace, 1948.
66. Partridge, Eric-Words, Words and Words, 1933.
67. Partridge, Eric-The World of Words, 1937.
68. Paul Hermann--Principles of the History of Language (Translated by H. A. Strong), 1888.
69. Pei, Mario—Linguistic Dictionary, New York, 1954.

70. Pei, Mario,—The Story of English, George Allen and Unwin, London, 1955.
71. Pike, K. L.—Phonemics, U. M. Press, Ann. Arbor, 1949.
72. Pittman, Dean-Practical Linguistics, 1948.
73. Plates, J. T.—Hindustani Dictionary, 1911.
74. Rao, G. Subba—Indian Words in English, 1954, Oxford.
75. Report of the Official Language Commission, 1956.
76. Ripman, Walter—English Phonetics and Specimens of English, London, Dent and Co., 1955.
77. Roebuck, Thomas—Laskari Dictionary, 1881.
78. Sack, F. L.—The Structure of English, 1954, W. Heffer and Sons.
79. Sanki Ichikawa—The Eng. Influence on Japenese, 1928.
80. Sapir, Edward—Language—A Harvest Book; Harcourt, Brace and Company, New York, 1949.
81. Savory, T. H.—The Language of Science, 1953, Andre Deutsch.
82. Saxena, Babu Ram—Evolution of Awadhi, 1937, Indian Press Ltd.
83. Sayce, A. H.—Introduction to the Science of Language.
84. Selections from Educational Records, Pt. I.

85. Shakespeare,John—Hindustani Dictionary, 1866.
86. Skeat, W. W.—Principles of English Etymology, 1891.
87. Skeat, W. W.—Science of Etymology, Oxford, 1912.
88. Smith Arnold—Grammar and the use of words, 1948.
89. Smith, L. P.—The English Language, Oxford, 1948.
90. Smith, V. A.—Oxford S. History of India, 1954.
91. Soares, A. X.—Influence of Portuguese Vocables in Asiatic Languages, 1936. Oriental Institute, Baroda.
92. Stene, Aasta—English Loan Words in Modern Norwegian, Oxford, 1945.
93. Stetson, R. H.—Motor Phonetics, 1951, North Holland Publishing.
94. Sturtevant, Edgar H.—An Introduction to Linguistic Science, New Haven, Yale University, 1947.
95. Sweet, Henry—The History of Language, London, 1900.
96. Sweet—A New English Grammar, 1950.
97. Taraporewala, I. J. S.—Elements of the Science of Language, 1951 Calcutta University.
98. Temple, G.—Glossory of Indian Terms, 1897.

99. Trager, George and Smith, Henry—An Outline of English Structure, 1951.
100. Turner, R. L.—Comparative Dictionary of Nepali, 1931, Kegan Paul.
101. Ullman, Stephen—Words and their Use 1951, Frederick Muller.
102. Vallins, G.H.—The Making and Meaning of Words. 1949, Adam and Charles.
103. Vendreys, J.—Language, 1952, Routledge and Kegan Paul.
104. Verma, Sidhheshwar—Critical Studies in the Phonetic Observations of Indian Grammarians, 1929, The Royal Society of London.
105. Vishwanath—Influence of English on Hindi Language and Literature (1870-1920) Allahabad University, 1950.
106. Vogt, Hans—Language Contacts—Linguistics To-Day, 1954 Linguistic Circle of New York.
107. Walpole, Hugh—Semantics, 1941, Harvard University.
108. Ward, IDA C.—The Phonetics of English, 1956, Heffer and sons.
109. Weekley, Ernest—The English Languages 1952, Andre Deutsch.
110. Weekley, Ernest—Words Ancient and Modern, 1946, John Murray.
111. Weinreich, Uriel—Languages in Contact, 1953, Linguistic Circle of New York.

112. Whitney, William Dwight—Language and Study of Language, 1867, London.

113. Whitworth, G. C.- An Anglo-Indian Dictionary, 1885.

114. Wilson, H. H.—Glossory of Judicial and Revenue Terms, 1855

115. Welseley, R. E.--Journalism in Modern India, 1954.

116. Wrenn, C. L.--The English Language, 1954 Methuen London.

117. Wyld, H. C.—The Historical Study of the Mother Tongue, 1907, John Murray.

## प—९·२·२·२ अँग्रेजी की पत्रिकाएँ

**Allahabad University Studies :**

118. Bahari, Hardev—The Persian Influence on Hindi, A. U. S., 1943, Hindi Section.
119. Verma, Dhirendra—English Loan Words in Hindi, A. U. S., 1932, Part I.

**Annamalai University Journal :**

120. Meenakshisundaram, T. P.—Portuguese Influence revealed by the Tamil Words, A. U. J., Vol. XVI.

**Bulletin of School of Oriental and African Studies, London :**

121. Bailey, T. Grahame—English Words in Panjabi, B. S. O. A. S., Vol. IV, V 1926-28.
122. Master, A.—Some English Loan Words in Gujrati, B. S. O. A. S., Vol. X.
123. Clark, T.W.—The Languages of Calcutta, B. S. O. A. S., Vol. XVIII.

**Indian Antiquary :**

124. Berlin, A. Weber—Hindu Pronunciation of Greek and Greek Pronunciation of Hindu Words, I. A. 1873.
125. Hodivala—Notes on Hobson Jobson, Vol. LX, LXI.
126. Summary of Important Dates, Vol. XXXII.

127. Temple, R.C.—Corruption of English. I.A. Vol. XII.

128. Temple, R. C.—Some Corruptions of English from Port Blair, I. A., Vol. XXX.

129. Temple, R. C.—Notes, Vol 57, 1928.

130. Temple, R. C.—Corruption of English Words, I. A., Vol. 30.

131. Temple, R. C.—Corruption of English, I. A., Vol. XII.

132. Notes on English Words in Vol. VIII.

**International Journal of American Linguistics.**

133. Casagrande, Joseph B.—Comanche Linguistics Acculturation—I. J. A. L. 1954.

134. Trager, G. L.—Spanish and English Loan Words, I. J. A. L. Vol. X.

**Indian Linguistics :**

135. Subramanian, S. V.—Telugu Loans in Tamil, Vol. XVI.

136. Verma, Sidhheshwar—The Pronunciation of English in North Western India, I. L. Bagachi Vol.

137. Dhall, G. B.—Observation of Some Common Peculiarities in the Eng. Speech of the People of Orissa. I. L. Vol. XVI.

**Journal of American Oriental Society :**

138. Allen, David O.—State and Prospects of the English in India—J. A. O. S. Vol. IV, 1853.

**Journal of Bombay University :**

139. Khadye. K. M.—The Foundation of English. J. B. U., Vol. X, Pt. II.

**Journal of Royal Asiatic Society of Great Britain :**

140. Grierson, G. A.--Folk Etymology and its Consequences, J. R. A. S., 1909.

**Language :**

141. Dillon, Myles—Linguistic Borrowing and Historical Evidence, Lang. Vol. 21, 1945.
142. Fries, C. C. and Pike, K. L.—Co-existent Phonemic System, Lang., Vol. 25.
143. Hall, Robert A.—English Loan Words in Micronesian Languages, Lang , Vol. 21.
144. Haugen, Einar—The Analysis of Linguistic Borrowing, Lang., Vol. 26.
145. Haugen, Einar--Phonological Shifting in American Norwegian, Lang Vol. 14.
146. Haugen, Einar--Review of Languages in Contact, 1953 Lang; Vol. 30.
147. Hoenigswald, H. M.--Sound Change and Linguistic Structure, Lang Vol. 22.
148. Joos, Martin--Review of the Norwegian Language in America, Lang. Vol. 30.
149. Senn, Alfred—Polish Influence upon Lithunian, Lang. Vol. 14.
150. Swadesh, Morris—On the Analysis of English Syllables, Lang. Vol. 23.
151. Trager, G. L.--The Syllabic Phonemes of English, Lang. Vol. 17.

**R. on Linguistics and Language Teaching :**

152. Haugen Einar—Bilingualism and Mixed Languages, L. L. T. 1954.

**Lingua :**

153. Haugen, Einar—Problem of Bilingualism, Ling. Vol. II.

**Misc. Phonetics :**

154. Jones, D.—Falling and Rising Diphthongs in Southern English, Misc. Phon. II, 1954.

**Speech :**

155. Schach, Paul--Semantic Borrowing in Pennsylvania German,. Sp. Vol. XXVI

156. Schorea, C. E.—English Loan Words in Puerto Rico, Sp. Vol. XXVIII.

**Transactions of Philological Society :**

157. Firth, J. R.—Sounds and Prosodies, T. P. S., 1948.

**Word :**

158. O'Conner, Trim, and J.D. J.L.M.—Vowel, Consonant and Syllable, Word 9.

159. Henderson, E. J. A.—The Phonology of Loan Words in Some South-East Asian Languages, T. P. S. 1951.

**Studies in Linguistics ;**

160. Whorf, Benjamin Lee—Loan Words in Ancient Mexico. St. in Ling. Vol. 5.

**Report of Oriental Conference :**

161. Saxena, Baburam—The Suffixwala in Modern Indo-Aryan Languages, 7th All India Conf., 1933.

**Misc :**

162. Saxena, Baburam—Standard Hindi, Speech, Dehradun, June 1957.

# अनुक्रमणिका

## लेखक

ग्रन्थ तथा पत्र-पत्रिकाएँ

# शुद्धि-पत्र

| पृष्ठसंख्या | पंक्तिसंख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १४ | ५ | विलियन | विलियम |
| २५ | १६ | १·४ | १·५ |
| ३७ | १२ | संस्थाएँ | संख्याएँ |
| ५३ | अन्तिम पंक्ति | ६१ | ६·१ |
| ६७ | १२ | संक्षिप्त | संबंधित |
| | २६ | Hodirala | Hodivala |
| ७५ | २८ | प्फैट्टन | प्लैट्टन |
| ७७ | ३० | Santar | Centre |
| ८६ | ८ | निम्नांङ्कित | निम्नाङ्कित |
| | १० | u^ | ^ |
| | ११ | एं | एं |
| ९० | अन्तिम पंक्ति | पृष्ठ ४४६ | पृष्ठ ३४४-४५ |
| ९३ | १२ | fi-phi | fi ṭ-phi ṭ |
| | २६ | bɛəriɛ | bɛərin, |
| | | bɛrəɛg | bɛ.rətn,g |
| ९५ | ४ | ɛ.di:tər | ɛ.ḍi: ṭər |
| | १० | ['epjuti] | ['depjuti] |
| | १० | [ḍipti:] | [ḍip ṭi:] |
| | १४ | ['Premrə] | ['premiə] |
| | | [pri:myər] | [pri:miyər] |
| ९६ | ७ | [əkæptin] | [Kæptin] |
| | ११ | [ṭraa-m] | [ṭra:m] |

| पृष्ठसंख्या | पंक्तिसंख्या | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २३५ | १२ | रूप मैं | रूप में |
| २३७ | ५ | बालू | चोल् |
| २३८ | ३ | 'बाहक' | 'बाइक' |
| | ५ | अभिव्यंजनों | अभिव्यंजनाओं |
| २३९ | २० | ओर | ओर |
| २४० | ११ | अर्थी | आर्थी |
| २४१ | २१ | अनूभूत्याभास | अनुभुत्याभास |
| २४३ | २७ | आसन 'विद्या' | 'शासन विद्या' |
| २५२ | १६ | speeker | speaker |
| | २६ | ,, | ,, |
| २५६ | २६ | अथिका रूढ | अधिकारारूढ़ |
| २५८ | ११ | स्वपन | स्वप्न। |
| | १२ | ,, | ,, |
| २६६ | अन्तिम | पृ० ६८ | पृ० ७४ |